प्रकाशक ·
एलाइड पब्लिशर्स प्राइवेट लिमिटेड,
आसफ अली रोड,
नयी दिल्ली।

मूल्य . छः रुपये पच्चीस नये पैसे

मुद्रक .
श्री गोपीनाथ सेठ,
नवीन प्रेस,
दिल्ली।

आभार-पदर्शन

इस सकलन मे सम्मिलित रचानाओ का अनुवाद करने की अनुमति के लिए प्रकाशक निम्नलिखित लोगों तथा प्रकाशको के आभारी हैं।

• रक से राजा

A PENNY FROM HEAVEN *by* Max Winkler

• चिकित्सा का चमत्कार

MIRACLE AT CARVILLE *by* Betty Martin

उन्नीस सौ चौरासी

NINETEEN EIGHTY-FOUR *by* George Orwell

• बेटी का ब्याह

FATHER OF THE BRIDE *by* Edward Streeter

• पादरी पीटर की कहानी

A MAN CALLED PETER *by* Catherine Marshall

• समुद्र के रहस्य

THE SEA AROUND US *by* Rachel L Carson

• स्वतन्त्रता का सरक्षक

YANKEE FROM OLYMPUS *by* Catherine Drinker Bowen

• एक आदर्श अमरीकी मजदूर

LIFE OF AN AMERICAN WORKMAN *by* Walter P Chrysler

• दीर्घायु का सकल्प

THE WILL TO LIVE *by* Dr Arnold A Hutschnecker

• ..वच्चो से गोदी भरी रहे

CHEAPER BY THE DOZEN *by* Frank B Gilbreth Jr & Ernestine Gilbreth Carey

परिचय

यह सकलन हिन्दी पुस्तक-प्रकाशन के क्षेत्र मे एक नई दिशा का द्योतक है। आज के ससार की गति इतनी तेज हो गई है, जीवन इतना व्यस्त रहने लगा है कि हर आदमी को क़दम-क़दम पर समय के अभाव का अनुभव होता है। कितने ही काम समय के अभाव के कारण अधूरे रह जाते हैं; जीवन के कितने ही सुख स्थगित रखना पडते हैं। कितनी ही ऐसी उपयोगी पुस्तकें होती हैं जिन्हें हम समय के अभाव के कारण पढ नहीं पाते और जीवन भर हमे इसका खेद रहता है। ज्ञान की कितनी बहुमूल्य निधि से हम इस प्रकार वचित रह जाते हैं।

इस अभाव को पूरा करने के लिए पहले पुस्तकों के सक्षिप्त सस्करण प्रकाशित होने लगे और फिर पुस्तकें सार-रूप मे प्रकाशित होने लगी। इस प्रकार की योजनाओ मे सबसे सफल और सबसे लोकप्रिय योजना 'रीडर्स डायजेस्ट' की है। 'रीडर्स डायजेस्ट' अग्रेजी की सबसे अधिक बिकनेवाली पत्रिकाओ मे से है। केवल सयुक्त राज्य अमरीका तथा कनाडा मे इसके बीस करोड से अधिक पाठक हैं। इसके अतिरिक्त वह ससार की १३ दूसरी भाषाओ में प्रकाशित होता है और इसका एक सस्करण अन्धों के लिए ब्रेल लिपि में भी निकलता है। भारत मे भी उस पत्रिका की लगभग ७०,००० प्रतियाँ बिकती हैं। 'रीडर्स डायजेस्ट' में नियमित रूप से ससार की सर्वश्रेष्ठ तथा सबसे लोकप्रिय रचनाएँ सार-रूप में प्रकाशित होती रहती हैं। फिर इनमें से जिन रचनाओं को पाठक सबसे अधिक पसन्द करते हैं वे अलग से वर्ष में

चार बार एक सग्रह के रूप मे प्रकाशित की जाती हैं। इन सग्रहो के भी २५ लाख के लगभग स्थायी ग्राहक हैं। इस प्रकार यदि हम यह कहे कि 'रीडर्स डायजेस्ट' द्वारा सार-रूप मे प्रकाशित होनेवाली पुस्तको को किसी-न-किसी रूप मे पांच करोड से अधिक लोग पढते हैं तो यह अतिशयोक्ति न होगी।

इस पुस्तक मे जिन रचनाओ का अनुवाद सार-रूप में प्रकाशित किया गया है उनके सजिल्द मूल सस्करणो की प्रतियो की सख्या से आपको इस बात का अनुमान हो जायेगा कि ये पुस्तकें कितनी लोकप्रिय रही हैं। प्रस्तुत सकलन मे प्रकाशित कैथरिन मार्शल कृत 'पादरी पीटर की कहानी' ('ए मैन काल्ड पीटर') के सजिल्द सस्करण की १३ लाख से अधिक प्रतियां, जार्ज आर्वेल की पुस्तक 'उन्नीस सौ चौरासी' ('नाइन्टीन एटी फोर') की ७½ लाख प्रतियां, रैशेल एल० कार्सन की पुस्तक 'समुद्र के रहस्य' ('दि सी एराउड अस') की १० लाख मे अधिक प्रतियां, फ्रैंक वी० गिलब्रेथ तथा अर्नेस्टीन गिलब्रेथ केरी की पुस्तक '· बच्चो से गोदी भरी रहे' ('चीपर बाई दि डजन') की ५ लाख से अधिक प्रतियां प्रकाशित हुई थी। अन्य पुस्तको के भी ऐसे ही बडे-बडे सस्करण प्रकाशित हुए थे। ये आंकडे तो इन पुस्तको के मूल सस्करणो के हैं, और सो भी १९५५ तक के। उसके बाद से इनमे से कई पुस्तको के नये सस्करण निकल चुके हैं। फिर यदि हम इस बात को ध्यान में रखें कि लाखो प्रतियो की सख्या मे इनके सस्ते सस्करण प्रकाशित होते हैं, इनमे से अधिकाश के आधार पर फिल्मे बनती हैं और फिल्म के अनुसार इन पुस्तको के फिल्म-सस्करण प्रकाशित होते हैं, तो हमे अनुमान हो जायेगा कि 'रीडर्स डायजेस्ट' मे जो पुस्तकें सार-रूप मे प्रकाशित की जाती हैं वे कितनी लोकप्रिय होती हैं।

केवल पाठको की सख्या की दृष्टि मे ही नही बल्कि अपनी विषय-वस्तु की दृष्टि से भी ये पुस्तकें हमारे लिए अत्यन्त उपयोगी हैं। उदाहरण के लिए इस सकलन मे सम्मिलित एक रचना है 'चिकित्सा का

मत्कार' जो वेट्टी मार्टिन की प्रख्यात पुस्तक 'मिरैकिल ऐट कारविल' का सार-रूप मे अनुवाद है। इसमे कुष्ठ-रोग तथा उसकी चिकित्सा की समस्या पर अत्यन्त रोचक ढग से प्रकाश डाला गया है और समाज मे इस रोग के बारे मे प्रचलित अन्ध-विश्वासो तथा मिथ्या धारणाओ का खण्डन किया गया है। कुष्ठ-रोग की समस्या हमारे देश के सामने भी अत्यन्त उग्र रूप मे मौजूद है और इस रचना को पढकर हम इस समस्या के बारे मे एक सही रवैया बना सकते हैं और उसको हल करने के उपाय कर सकते हैं। इसी प्रकार रैशेल एल० कार्सन की रचना 'समुद्र के रहस्य' ('दि सी एराउन्ड अस') से हमें बहुमूल्य वैज्ञानिक जानकारी प्राप्त होती है। कैथरिन ड्रिंकर बोवेन की रचना 'स्वतन्त्रता का सरक्षक' ('याकी फ्राम ओलम्पस'), जो अमरीका के सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीश ओलिवर वेंडल होम्स की जीवनी है, हममे जीवन के प्रति उत्साह तथा आशा की भावना का सचार करती है, जब हम ओलिवर वेंडल होम्स का ९० वर्ष की अवस्था में प्लेटो के दर्शन का अध्ययन करते देखते हैं तो हमें वृद्धावस्था मे भी जीवन के प्रति उत्साह बनाये रखने की प्रेरणा मिलती है। डा० आर्नल्ड ए० हुशनेकर की रचना 'दीर्घायु का संकल्प' ('दि विल टु लिव') हर आदमी के लिए एक अत्यन्त उपयोगी रचना है। इसमे डा० हुशनेकर ने अपने वैज्ञानिक अध्ययन और डाक्टरी अनुभव के आधार पर अनेक सच्चे उदाहरणो द्वारा यह सिद्ध किया है कि दीर्घायु के लिए शारीरिक स्वास्थ्य से अधिक महत्त्व मानसिक स्वास्थ्य और भावनाओ तथा विचारो के स्वस्थ होने का है, और सबसे बडी बात तो यह है कि दीर्घायु प्राप्त करने के लिए हममे दीर्घायु का सकल्प होना चाहिए। जार्ज आर्वेल की पुस्तक 'उन्नीस सौ चौरासी' ('नाइन्टीन एटी फोर') एक अत्यन्त तीखा और प्रभावशाली राजनीतिक व्यग है, इस रचना की गणना इस युग की सबसे महवत्पूर्ण रचनाओ मे की जाती है। मैक्स विक्लर की आत्म-कथा 'रंक से राजा' ('ए पेनी फ्राम हेवेन') और प्रख्यात क्राइसलर मोटरो के निर्माता वाल्टर

पी० क्राइसलर की आत्म-कथा 'एक आदर्श अमरीकी मजदूर' ('लाइफ आफ ऐन अमेरिकन वर्कमैन') ऐसे दो व्यक्तियो की जीवनियां हैं जो अपने परिश्रम और सूझ-बूझ के बल पर अवसरो का लाभ उठाकर बहुत निम्न स्तर से जीवन के उच्चतम शिखर पर पहुँच गये। इस सकलन की दो रचनाएँ—एडवर्ड स्ट्रीटर की रचना 'बेटी का व्याह' ('फादर आफ द ब्राइड') और फ्रैंक बी० गिलब्रेथ तथा अर्नेस्टीन गिलब्रेथ केरी की रचना ' बच्चो से गोदी भरी रहे' ('चीपर बाई द डजन')—पढकर आपका यथेष्ट मनोरजन होगा, पर इस मनोरजन के पीछे आप बहुत गहरा सामाजिक उद्देश्य भी छुपा हुआ पायेंगे, क्योकि इनमे जीवन के दो ऐसे पहलुओ पर प्रकाश डाला गया है जिनका अनुभव हर व्यक्ति को थोडा-बहुत अवश्य हुआ होगा।

इस सकलन मे दस ऐसी रचनाएँ आपके सामने सार-रूप मे प्रस्तुत की जा रही हैं जिन्हें यदि पूरा प्रकाशित किया जाये तो वे कम-से-कम ५,००० पृष्ठ मे आयेगी। परन्तु इनका सार निकालने मे मूल के सभी आवश्यक तत्व, उनका पूरा रस और रचनाओं के आधारभूत उद्देश्य पूरी तरह सुरक्षित रखे गए हैं। सही मानो मे यह 'गागर मे सागर' है। पुस्तको को सार-रूप मे तैयार करने का काम 'रीडर्स डायजेस्ट' के योग्य तथा अनुभवी सम्पादको ने किया है। इनमे मे हर रचना अपने ढग की निराली रचना है। यह कहना कठिन है कि कौन-सी रचना सबमे उपयोगी, महत्त्वपूर्ण या रोचक है। आप किसी भी रचना को सबसे महत्त्वपूर्ण अथवा रोचक समझकर पढना आरम्भ कर दें, आपका निर्णय ठीक ही साबित होगा।

हमे पूरा विश्वास है कि जिन रचनाओ को अग्रेजी तथा ससार की दूसरी भाषाओ के करोडो पाठको ने विभिन्न रूपो मे पढकर सराहा है, उन्हे आप भी रोचक तथा उपयोगी पायेंगे। इसी विश्वास के साथ हम यह सकलन आपके सामने प्रस्तुत कर रहे हैं।

विषय-सूची

रंक से राजा

(मैक्स विकलर की आत्म-कथा 'ए पेनी फ्राम हेवेन' का सार)

मैक्स विकलर वेलविन इनकार्पोरेटेड नामक संसार की एक प्रमुखतम संगीत-प्रकाशन संस्था के प्रधान हैं। १९१८ में इस संस्था की स्थापना के समय उनके पास आशा, आस्था और बहुत थोड़े धन के अतिरिक्त कोई साधन न थे। १९०७ में जब यह अमरीका आये थे उस समय उनके पास फूटी कौड़ी न थी। उनकी आत्म-कथा 'ए पेनी फ्राम हेवेन' अमरीका मे उनके जीवन के प्रारम्भिक वर्षों की रोचक कहानी है। यह उस देश के प्रति एक श्रद्धांजलि भी है जहाँ इस प्रकार की सफलताएँ सम्भव हैं।

रंक से राजा

आज उस शुभ दिवस का वार्षिकोत्सव है, जब अमरीका मे मैंने प्रवेश किया।

अपने भवन के उपर्ले खण्ड मे बैठे हुए मुझे निचले खण्ड की चहल-पहल सुनाई दे रही है, जहाँ मेरी पत्नी क्लारा रसोईघर मे भोजन की तैयारी मे व्यस्त हैं। मेरे बच्चे और पोते-पोती यहाँ आज के उत्सव मे सम्मिलित होने के लिए शीघ्र ही पहुँच जायेंगे। बडी पुरानी बात है, परन्तु इस समय मुझे वह घटना कल ही की जान पड रही है, जब मैं १८ वर्ष का नवयुवक अपने दो हाथ ही लिये सुदूर रूमानिया के जगलों मे अमरीका की पुण्य-भूमि मे पहुँचा। आज मेरे अधिकार मे एक भारी व्यवसाय है, मैं एक भवन का स्वामी हूँ, एक बडे परिवार का सरक्षक भी हूँ। सच्चे अमरीकी नागरिक के नाते इस देश मे अपने प्रथम दिवस की स्मृति मुझे जितना कृत कृत्य करती है, उसे देखते हुए उस पुण्य-दिवस के स्मरण के लिए वर्ष मे एक ही उत्सव पर्याप्त नही है।

पुत्र-पौत्रो की जीवन-चर्या सुसस्कृत और सुरक्षित रही है, अपनी मोटर मे स्कूल जाते-आते हैं, भवन के निकट ही सडक के कोने पर औषधालय है, जन्मजात स्वतन्त्रता और सुख उनके भाग्य मे है, इन्हे ये नव सुख स्वाभाविक ही जँचते है, परन्तु मुझे वे भगवान के अपूर्व आशीर्वाद प्रतीत होते हैं। इसीलिए आज अकेले बैठकर मैंने अपने सस्मरण लिखना प्रारम्भ किया है।

मेरी मेज की दराज मे अभी तक आस्ट्रिया की सरकार से प्राप्त पासपोर्ट सुरक्षित है। उसकी मैली जिल्द पर आस्ट्रिया का गरुड राज्य-चिह्न कुछ धुंधला पड गया है। भीतर लिखा है—जन्मभूमि बुकोविना प्रान्त का रिजका नामक ग्राम, जन्मतिथि . १५ मार्च, १८८८। उस समय रिजका कारपेथिया की पर्वतश्रेणी के मध्य एक छोटा-सा गाँव था, जहाँ न सडकें थी, न स्कूल था, न कोई रेलवे स्टेशन ही था। यदि कोई चिट्ठी डाक मे छोडनी हो या एक जोडी जूता ही खरीदना हो, तो घोडा-गाडी मे चार घण्टे के सफर के पश्चात् ही कोई कस्बा मिलता था। परन्तु रिजका के निवासियों को शायद ही कभी कोई चिट्ठी भेजने की जरूरत पडती हो, और जूतो की कैफियत यह थी कि गर्मियो मे तो हम नंगे पैर घूमते, और जाडो मे छोटे वडो की उतरन पहनते।

गाँव मे झोपडियो के अतिरिक्त सात ही आठ पक्के घर थे और इनमे हमारे परिवार का घर सबसे अच्छा था। तो भी वह एक ही खण्ड का था और उसमे कोई तहखाना न था। जब शरद मे वर्षा होती या वसन्त मे वरफ पिघलती तो हमारे कमरो में काई, ककड और अनगिनत काले कीडे लिये जल भर जाता और बहिया उतरने पर भी कमरो मे जल भरा रहता। बिस्तरों की जगह हमारे लिए भूसा भरे टाट के गद्दे थे।

हमारे कस्बे मे सुख का अभाव अवश्य था, परन्तु उसकी स्थिति बहुत अच्छी थी। चारो ओर मीलो तक पहाडो और घाटियो को चीर के घने, ऊँचे, हरे और सुन्दर जगल ढके हुए थे। मेरे पिता लकडी चीरने के एक बडे कारखाने के सचालक थे, जिसमे पाँच हजार मजदूर लगे हुए थे। इनमे अधिकाश आस-पास के गाँवो के निवासी थे। परन्तु उनमे से कुछ निकट ही डंडो पर तने खेमो मे रहते थे, जो वहाँ 'कोलीवस' कहे जाते थे। सप्ताह मे छ दिन और दिन के चौबीस घण्टे काम चालू रहता। यह सब काम दो पालियो मे ही होता, एक दिन की और दूसरी रात की।

मेरी माता बहुत नेक और सुशील थी। उनकी जैसी पतिव्रता नारी मेरे देखने मे अभी तक नही आई है। मेरे पिता अक्षरश उनके स्वामी थे। कोई निर्णय वह स्वय न करती, वह हममे से किसी को पिता के पास जगल मे यह पूछने के लिए भी भेज देती थी कि भोजन के लिए मटर पके कि सेम। मेरे पिता का लौह-शासन अपने हजारो मजदूरो पर ही न था, उनकी पत्नी तथा पाँचो बच्चो ने अपने जीवन मे शीघ्र ही परन्तु कष्टमय अनुभव के पश्चात् सीख लिया था कि घर का स्वामी कौन है?

● ● ●

मेरे साधारण जीवन को सौभाग्य-दिवस तब प्राप्त हुआ, जब मेरे पिता ने मुझे एक सारगी खरीद दी। पचास वर्ष से बहुमूल्य निधि की भाँति यह सारगी मेरे पास रखी है। मैं उसे अब बजाता नही, परन्तु सौभाग्य की प्रतीक के रूप मे वह अभी तक मेरे भवन की अटिया मे सुरक्षित है।

जीवन मे समयानुसार प्रणय ने भी प्रवेश किया। उसका नाम हुल्दा था। उसके सिर के बाल गहरे सुनहरे थे, और उसे देखते ही मैं उस पर आसक्त हो गया। किशोरावस्था तक पहुँचते ही मैं उससे कहने लगा कि बडे होने पर हम दोनो का व्याह हो जायेगा।

एक दिन उमग और उल्लास की लाली अपने गालो पर लिये हुल्दा स्कूल पहुँची और उसने खबर सुनाई कि वह सपरिवार अमरीका जा रही है। मैं नैराश्य मे डूब गया।

परन्तु एक आकस्मिक विचार से मैं शीघ्र ही स्फूर्त हुआ। यदि हुल्दा अमरीका जा सकती है तो मैं भी जा सकता हूँ। मेरे पास एक पैसा न था, मुझे यह भी नही मालूम था कि अमरीका है कहाँ, परन्तु एकाएक मुझे अपने मे असीम विश्वास हो गया।

हुल्दा की विदाई के दो वर्ष पश्चात् जब मैं और मेरा जुडवा भाई

दवे १६ वर्ष के हो गये, तो पिता ने हमे जगल मे काम शुरू करने का आदेश दिया।

मुझे रूमानिया के तीन सौ ऐसे लकडहारो से जगल के पेड काट गिराने का काम लेने का दायित्व सौंपा गया, जिनकी शक्ति और नीचता बेमिसाल थी। मेरे प्रति उनकी घृणा असभ्य लोगो जैसी थी। मैं नगर से नया-नया आने के कारण काम लेने मे बहुत जल्दी दिखाता था और इनके स्वामी का पुत्र भी था। इसलिए मेरे प्रति इनकी घृणा और भी बढ गई थी। इन्होने मेरे ऊपर "सयोगवश" पेड गिराने का षडयन्त्र रचा। मैं कैसे बच गया, इस चमत्कार की याद मुझे अभी तक है। एक बार जत्थे के सबसे अधिक सशक्त और नीच व्यक्ति से मेरी लडाई हुई और क्रुद्ध होकर बलपूर्वक मैं उसे सात गज दूर एक हिमानी जलाशय मे फेक आया। इसके बाद मेरा रोब उन पर जम गया। बहुत समय बाद जब इनसे कही अधिक सभ्य, सशक्त और नीच प्रवृत्तियो से मुझे सामना करना पडा तो मुझे कृतज्ञतापूर्वक उस कठोर प्रशिक्षण की याद आती रही जो मुझे कारपेथिया की पर्वतश्रेणियो मे प्राप्त हो चुका था।

मेरे और दवे के वेतन पिताजी अपने ही पास जमा कर लेते थे। शिक्षा और आय-व्यय के सम्बन्ध मे उनके कुछ अपने लौह-सिद्धान्त थे, जिनके अनुसार जेब-खर्च के लिए वह हमे प्रति सप्ताह एक क्राउन ही देते थे।

हुल्दा अमरीका से पत्र लिखा करती, जिनमे देश और वहां के जीवन का विवरण रहता—आश्चर्यजनक नगर, पहाड जैसे ऊचे भवन और नगर के ऊपर विशाल पुलो पर दौडनेवाली रेलगाडियां। ऐसे समृद्ध देश पहुंचने की कल्पना और इच्छा दिन-रात बढती जाती, जहां मुझे अपने सौभाग्य की परीक्षा का अवसर प्राप्त करने की आशा थी।

एक दिन मेरी नानी का देहान्त हुआ। उनकी जायदाद का तिहाई मेरी माता को मिला और यह रकम नौ सौ क्रोनेन तक पहुंची। यह रकम मेरे पिता के मासिक वेतन की ढाई गुनी थी। तब तक

बैंक मे जमा करने के लिए उनके पास कोई बचत नही हुई थी। अकस्मात् इतना धन पाकर वह बहुत प्रफुल्लित हुए और उसके उपयोग की योजनाएँ बनाने लगे। कभी नगर की सैर की चर्चा चलती, कभी नई और बढिया पोशाक की बात होती। एक बार ऐसी तम्बाकू खरीदने की भी चर्चा हुई, जिसका स्वाद पिता को एक ही बार मिला था।

परन्तु मेरा विचार दूसरा ही था। जो बात तब तक मेरी पहुँच के बाहर रही थी, वह एकाएक अब मेरी पकड मे आ गई थी, केवल साहसपूर्वक कहना ही आवश्यक था। अतएव यथाशक्ति विनम्रता और शान्ति से मैंने कहा, 'पापा, मुझे और दवे को आप अमरीका जाने दें। इस विषय मे आपका क्या आदेश है ?"

कमरे मे अकस्मात् सन्नाटा छा गया। माँ पीली पड गईं और भयभीत होकर उन्होने अपना हाथ मुख पर रख लिया, मानो जो उन्होने सुना था, उसे वह अनसुना कर देना चाहती हो। पिता भी भौचक होकर चुप रहे।

आशा और विश्वास बटोरकर मैंने कह डाला, "यदि मुझे और दवे को अमरीका जाना नसीब हुआ, तो पापा, हम सफल अवश्य होगे, हमे काम मिलेंगे, हम रुपया पैदा करेंगे और तब माँ सहित आपको बुला लेंगे। हम आपको भूलेगे नही, भूल सकते भी नही।"

हम सब पिता की ओर देखने लगे। थोडी देर वह खामोश रहे, फिर अकस्मात् बोल उठे, "मैं इसका प्रबन्ध करूँगा।"

अगले कुछ दिनो की घटनाएँ मेरी कामना के पक्ष मे ही घटी। पिता ने निर्णय कर लिया था तो उससे सम्बन्धित प्रत्येक बात का दायित्व भी उन्होंने संभाल लिया था। उन्होने निर्णय कर लिया कि यदि मेरे साथ दवे जा रहा है तो दो वर्ष छोटे जैक को भी हमारे साथ हो लेना चाहिये। पिता ने एलिक नामक अपने मित्र को यात्रा का प्रबन्ध करने के लिए लिखा। 'एलिक' के अर्थ हैं ईमानदार। इन मित्र के गुण नाम के अर्थ के विपरीत थे। कुछ सप्ताह भीतर टिकट

आ गये। हमे ट्रिएस्ट के बन्दरगाह से 'गेर्टी' नामक जहाज द्वारा सफर करने का आदेश मिला। एलिक का कहना था कि 'गेर्टी' की गणना अटलांटिक महासागर की यात्रा मे लगे सर्वोत्तम जहाजो मे है।

इस प्रकार सिर से पैर तक सजकर हम तीनो ५ जनवरी, १९०७ को रवाना हुए। सामान मे हमारे साथ चार चमडे के थैले, दो बेंत की टोकरियाँ और खाने के चार बडे-बडे बण्डल थे। माता-पिता दोनो छोटे बच्चो और दो कुत्तो को लिये हमारे पीछे दूसरी गाडी मे सवार हुए।

स्टेशन पहुँचकर पिताजी चुपचाप एक बेंच पर जा बैठे। हम लोग एक सुदूर और विचित्र देश की यात्रा पर जाने को थे, परन्तु वह हमसे कुछ बोले नही। हम सोच रहे थे कि क्या कारण है। इतने ही मे अकस्मात् उठकर वह हमारे पास आ गये और बोले, "बेटो! मुझे पता है कि बहुत दिनो से तुम मेरी तम्बाकू चुराते रहे हो और घर के पीछे उसकी सिगरटें बनाकर पीते रहे हो।"

हम दोनो घबराकर उठ खडे हुए। सोचा, क्या पिता के प्रसिद्ध व्याख्यानो का यही सुअवसर है, क्या कहना चाहते हैं। इतने ही मे उन्होने अपनी जेब से सिगरेट की दो डिब्बियाँ निकाली, और एक-एक मुझे तथा दवे को देकर बोले, "तुम दोनो के लिए मैंने सिगरेट की एक-एक डिब्बी खरीदी है, आओ बैठकर हम सब पियें।"

मैं भूलता नही कि मेरी माता की मुखमुद्रा कितनी चमत्कृत हुई, जब उन्होने अपने दो बडे बेटो को अपने पिता के सामने बैठकर सिगरेट पीते देखा। जो पिता कहना चाहते थे, सो हम समझ गये। उन्होने मान लिया था कि हम वयस्क हो गये हैं।

यथासमय रेलगाडी आ गई, और पिता के संकेत का महत्त्व भली प्रकार समझने के पहले ही हम रवाना हो गये। यो हमारी महत्त्वपूर्ण साहसिक यात्रा प्रारम्भ हुई।

● ● ●

जब हम अन्तत ट्रिएस्ट पहुँचे तो जिस 'गेर्टी' को अटलाण्टिक महासागर की यात्रा का सर्वोत्तम मुसाफिरी जहाज बताया गया था, वह एक छोटा-सा माल लादनेवाला जहाज ही निकला, जिसके अगले भाग मे सामान्य यात्रियो के लिए थोडे-से कमरे ही थे। पीछे की ओर नीचे का एक भाग बडी-सी खुली बारिक मे परिवर्तित कर दिया गया था, जहाँ एक सौ बीस नर-नारियो और बच्चो का बेपर्दगी मे सोने का प्रबन्ध था।

जहाज पर एक ही छत थी, और उसके दोनो सिरो पर जहाज के धोबी-घर और पाखाने थे। बीच में रसोईघर था, और उसके पीछे करीब बीस मवेशी बँधे हुए थे, जो आवश्यकतानुसार मास के लिए काटे जाने को थे। छत का वही भाग यात्रियो के काम का था, जो पाखानो, रसोईघर के कूडे या मवेशियों से बचा हुआ था। उस पर बैठने के लिए न कुर्सियाँ थी, न बेंचें, पर जगह मिले तो बैठने की मनाही न थी।

जहाज मे अत्यधिक भीड और गन्दगी थी। गन्दी और खुली थालियो मे बहुत ही बुरा खाना कलछियो से हमे परोसा जाता था। गन्दगी बेतरह बढी हुई थी, और जहाज के छोटे होने के कारण यात्रा खतरे से खाली न थी। परन्तु इन सब बातो से हम अधिक क्षुब्ध न हुए। हम योरप से नीले और शान्त सागर पर अमरीका के लिए जा रहे थे, यही क्या कम उमग की बात थी।

यात्रा मे पैंतीस दिन लगे। मैं उन कडवे दिनो की याद नही करना चाहता जब मुसाफिरो मे लडाई छिड जाती और मल्लाहो की मार से ही शात होती, उन दिनो की भी जब स्त्रियाँ अपने रोगी बच्चो की चिकित्सा के लिए चिल्लाती और जहाज पर डाक्टर या औषधि का पता न था। उस दिन के सस्मरण भी बडे कटु हैं जब तूफान उठने पर हम सब एक सौ बीस यात्री जहाज के भीतर कर दिये गये, और सभी द्वार तथा छिद्र कसकर बन्द कर दिये गये। हममे से कुछ तो घुटने टेककर प्रार्थना करते रहे, बाकी अपनी-अपनी खाटो पर ढेर हो गये। बहुत-से तो इतने बीमार हो गये कि भगवान से मौत माँगने लगे।

उस दिन की याद भी महत्त्वपूर्ण है, जब १९०७ के फरवरी मास मे हमने पहली बार अमरीकी तट देखा। शीघ्र ही हमे अपने नये देश की विशालता, शक्ति और महत्व की प्रतीक स्वतन्त्रता की मूर्ति के दर्शन हुए तो अधिकाश यात्री घुटने टेककर ईश्वर को धन्यवाद देने लगे, और जहाज की छत पर हास्य, आनन्दपूर्ण अश्रु और पारस्परिक सम्मिलन, चुम्बन और नृत्य की लहरें बढने लगी। ज्यो ही हमारी चकित और अविश्वस्त आँखो के सामने मैनहाटन अपना अपूर्व महत्व लिये क्षितिज पर प्रकट हुआ तो हमे पहले से भी अधिक विचित्र अनुभव हुआ। हम सबने अकस्मात् नाचना, हँसना, रोना या चूमना बन्द कर दिया। हम सब आश्चर्य से स्तब्ध जैसे होकर खडे देखते रहे। आनन्द और आश्चर्य ने हमारी वाक्-शक्ति मानो छीन ली थी। वह दिवस और उसकी वह घडी स्मरण रखने योग्य है।

● ● ●

१९०७ तक सयुक्त राज्य अमरीका ने आप्रवासियो की वार्षिक सख्या निर्धारित नही की थी। आप्रवासियो की वार्षिक सख्या लाखो तक पहुँचती थी। यदि आप्रवासी की आँख मे कोई रोग न होता, आप्रवासियो का निरीक्षक पुट्ठो पर हाथ रखकर उनकी पुष्टता का कुछ अनुमान लगा लेता, यदि आप्रवासी साधारण प्रश्नो का, जैसे तुम्हारा नाम क्या है, उत्तर दे पाता, यदि उसके हाथ-पैर साबुत होते, और यदि वह इतना कह भर देता कि अमरीका में उसके कुछ सम्बन्धी हैं और उनकी जेब मे पाँच डालर है (सौभाग्यवश सम्बन्धियो को सामने लाने या डालरो को दिखाने की जरूरत न थी), तो मृत्यु-लोक के प्रत्यक्ष स्वर्ग मे आप्रवासी का प्रवेश सभव हो जाता।

जब सरकारी अफसर हमसे निपट चुके तो हम तट पर उतरे और बैटरी पार्क की एक बेंच पर बैठकर चारो ओर देखने लगे। महान कोलाहलपूर्ण और भयावह नगर मेरी आँखो के सामने था। इसकी

कल्पना हममे से कोई भी न कर सका था। हम कैसे कभी भी इस भयावह और विचित्र समार के अग हो सकेंगे, ऐसे लोग जो अकारण इधर-उधर दौडते दिखाई देते हैं और जिनकी भाषा हमारी समझ के बाहर है, किस प्रकार और कब हमे अपने घर के जैसे लगेगे, इन्ही कल्पनाओ मे हम डूबे हुए थे। पहले कभी भी मैंने इतने अकेलेपन का अनुभव नहीं किया था।

पिता ने जो हमे दिया था उसमे केवल बारह डालर और अट्ठारह सेंट हमारे पास बच रहे थे, और हमारे पास मेरी बुआ मिन्नी का पता भी था। परन्तु वहाँ पहुँचें कैसे ?

डडा घुमाते हुए एक पुलिस का सिपाही हमारी बेच के सामने आ खडा हुआ। हम भय के मारे उठ खडे हुए, क्योकि अपने जीवन भर हमे पुलिस के सिपाही से अपनी मुसीबत का सन्देश ही मिला था। हम समझे कि हमसे कोई अपराध हो गया है और राज-दड हमारे सामने है।

सिपाही ने जर्मन भाषा मे हमसे पूछा, "तुम लोग कहाँ जाना चाहते हो ?"

मैं कृतज्ञता की भावना से विभोर हो गया। कितना प्रिय प्रश्न था, और सिपाही यह कैसे जान गया कि हमे अग्रेजी आती नही।

मैंने अपनी छोटी-सी काली जिल्द की कापी निकालकर मिन्नी बुआ का पता उसे दिखाया। उत्तर मिला, "यह तो यहाँ से बहुत दूर है, तुम लोगो के पास १५ सेंट हैं न ?"

हम सब एक-दूसरे के बाद "जी हाँ, जी हाँ" बोल पडे।

सयुक्त राज्य अमरीका के कई नगरो मे कुछ रेलगाडियाँ धरती से कई गज ऊपर खम्भो पर बने पुलो पर दौडती हैं। उनके स्टेशन भी उतनी ही ऊँचाई पर बने होते हैं। ऐसे ही एक स्टेशन तक सिपाही हमे ले गया और हमें बता दिया कि हम लोग किस गाडी को पकडें और कहाँ उतरें। गाडी गरजती हुई स्टेशन पर रुकी। हम भीड चीरते गाडी

पर चढ गये, तो सिपाही ने नमस्कार करते हुए हमे आशीर्वाद दिया। मैं सोचता रहा कि इस नये महादेश मे अनजाने विदेशियो का कितना सुन्दर स्वागत होता है।

मिन्नी बुआ एक छोटे-से किराये के मकान मे रहती थी। उन्होंने बडे हर्ष से हमे गले लगाया। पडोसी इधर-उधर से आ गये, और आधी रात तक बैठे हम सब खाते-पीते और बाते करते रहे। फिर बुआ हम तीनों को एक छोटे कमरे मे सोने के लिए पहुँचा आई। उस रात मुझे बडी देर मे नीद आई।

सवेरा होते ही हम अपने नये जीवन मे ग़ोते लगाने के लिए तैयार हो गये। नीचे के एक दयालु किराएदार ने हमे जर्मन भाषा मे प्रकाशित समाचार-पत्र का एक अक दिया और उसमें वर्गीकृत विज्ञापनो की सूची दिखा दी, जिनकी सख्या अनन्त जान पडती थी। बात बहुत सरल-सी मालूम हुई। जाकर काम को छाँटना और पसन्द ही कर लेना था, मानो वे सब हमारी ही प्रतीक्षा कर रहे हो।

रात को थका-हारा घर पहुँचा तो मैं सीख चुका था कि काम पाना उतना सरल नहीं। मेरे जैसे हजारो लोग समाचार-पत्र से विज्ञापन काटकर उसके सहारे एक काम के बाद दूसरे काम के लिए न्यूयार्क की सडकों का चक्कर लगाते फिरते। जिस काम से इन्कार मिलता उस पर अपने कागज मे निशान लगाकर आगे बढते और इस प्रकार अपनी सूची के अन्तिम विज्ञापन मे निशान लगाये निराश होकर घर लौटते। मैं लोहे के बर्तनो की दूकान के सामने पहुँचा। काम की तलाश मे वहाँ जो लोग खडे थे, उनमे मेरा नम्बर छब्बीसवाँ था। दूकान के मालिक ने हमारी कतार का चक्कर लगाया, मानो हम बिकनेवाले मवेशी हो। काम के लिए वह प्रार्थी नही पसन्द किया गया, जो सबसे पहले पहुँचा था। सत्रहवें नम्बर पर खड़े प्रार्थी के ही भाग्य जागे। किराने की दूकान पर पहुँचा, तो कतार इससे भी अधिक लम्बी थी। एक घंटा चलने के बाद भी तीसरे विज्ञापनदाता

का पता नही पा सका। चौथे तक पहुँचा तो सामने सकेत देखा कि जगह भर गई है। इसी प्रकार चलते-चलते दिन वीत गया।

परन्तु दवे घर पहुँच चुका था और हमे यह सुखद समाचार सुनाने की प्रतीक्षा कर रहा था कि उसे काम मिल गया है। यह काम था, किसी फेरीवाले के घोडे और गाडी को सँभालना। दूसरे दिन सवेरे जैक से भी इस आशय का पत्र मिल गया कि उसे पोर्ट जर्विस की एरी रेलवे मे मिस्त्री की जगह मिल गई है।

दूसरे दिन प्रात काल मैं साढे चार वजे ही एक जूते की दूकान के सामने जा खडा हुआ। इसलिए कतार मे मैं ही पहला प्रार्थी था। मालिक ने कहा, "तुम जरूरत से ज्यादा वडे हो, मुझे लडका चाहिये, मर्द नही।" मैं 'हुजूर, हुजूर" कहकर गिडगिडाने को हुआ तो "भाग जाओ, भाग जाओ" कहता हुआ वह चला गया।

अव मैंने कतार मे खडे होकर प्रतीक्षा न करने का निश्चय किया, और यो ही पूछते-पूछते कोई काम पाने के प्रयत्न मे लगा। एक अग्रेजी-जर्मन शब्द-कोप खरीदकर मैंने अग्रेजी शब्द सीखने प्रारम्भ किये, परन्तु कई दिनो की तलाश के वाद मुझे कुछ घटो का ही काम मिल पाया। यह था, एक अस्तवल का सामान एक जगह से दूसरी जगह रखना, और आधे दर्जन घोडो को नहलाना। दवे किराया चुकाता रहा और मिन्नी वुआ मुझे उधार खिलाती रही।

• • •

एक दिन प्रात काल मुझे वाजा सुनाई दिया। घर के पिछवाडे कई आदमी अपने-अपने वाजे वजाते जमा थे। अकस्मात् मुझे भी धुन सवार हुई। मैं भागकर अपने कमरे मे गया। वक्स का ढकना खोलकर अपनी सारगी निकाली और इन लोगो मे मिलकर स्वय भी सारगी वजाने लगा। शीघ्र ही मुझ पर पैसे वरसने लगे। वाजेवालो का जत्था आगे वढा, तो उनका नेता वडी सारगी लिये मुझे कडी चेतावनी

दे गया, "यदि तुम फिर कभी मेरे धंधे में दखल दोगे तो मैं तुम्हें मार डालूँगा।"

मैं बेहद थका और दुखी घर वापस आया, परन्तु मुझे अपनी हैट में कोई वस्तु खटकती-सी मालूम हुई। टटोलकर मैंने उसे निकाल लिया। देखा तो एक पेनी ही थी।

विश्वास की मुस्कराहट एकाएक मेरे मुख पर दौड़ गई। मुझे आभास-सा हो गया कि न्यूयार्क का मुझे कुछ और अनुभव करना है, कोई-न-कोई जगह मेरी प्रतीक्षा कर रही है, आकाश से पैसे मुझ पर बरसते हैं, तो चिन्ता की कोई बात नहीं। मैं सिर झुकाकर धूप खाने बैठ गया।

जर्मन समाचार-पत्र का एक विज्ञापन दिखाते हुए एक पड़ोसी ने मुझसे कहा, "तुम सारंगी बजाना जानते हो? लो, यह काम तुम्हारे मतलब का है। एक संगीत-प्रकाशन संस्था को लड़के की जरूरत है, लिखकर अर्जी दो।"

पड़ोस की एक दुकान तक जाकर मैंने अपनी पेनी निकाली, और मन में कहा, 'यह पेनी मेरे सौभाग्य का संदेश लायेगी।" दुकान में खड़ी औरत मेरी ओर आश्चर्य से देखने लगी। मैंने उसे पेनी देकर कहा, "मुझे टिकट दे दो, चिट्ठी लिखनी है।"

उसने उत्तर दिया, "एक पेनी में चिट्ठी नहीं जाती।" उसने मेरे चेहरे को उदासी से उतरते देखा, तो बोली, "लो, एक पेनी का पोस्ट-कार्ड ले जाओ।"

मैं यह पोस्टकार्ड लेकर पास ही पड़ी हुई छोटी-सी संगमरमर की मेज के पास बैठ गया। देर तक सोचता रहा तो अपने सीमित ज्ञान के अनुसार बढ़िया-से-बढ़िया शब्द लिखे। गम्भीर मुद्रा में "महोदय" से प्रारम्भ किया, "विनीत" लिखकर समाप्त किया, और बीच में यह बयान दिया कि गवैया हूँ और मुझे जो कोई भी काम दिया जाये उसको करने पर तैयार हूँ। 'कोई' शब्द को रेखांकित भी कर दिया।

का पना नही पा सका । चौथे तक पहुँचा तो सामने सकेत देखा कि जगह भर गई है । इसी प्रकार चलते-चलते दिन बीत गया ।

परन्तु दवे घर पहुँच चुका था और हमे यह सुखद समाचार सुनाने की प्रतीक्षा कर रहा था कि उसे काम मिल गया है । यह काम था, किसी फेरीवाले के घोडे और गाडी को सँभालना । दूसरे दिन सवेरे जैक से भी इस आशय का पत्र मिल गया कि उसे पोर्ट जर्विस की एरी रेलवे मे मिस्त्री की जगह मिल गई है ।

दूसरे दिन प्रात काल मैं साढे चार बजे ही एक जूते की दूकान के सामने जा खडा हुआ । इसलिए कतार मे मैं ही पहला प्रार्थी था । मालिक ने कहा, "तुम जरूरत से ज्यादा बडे हो, मुझे लडका चाहिये, मर्द नही ।" मैं 'हुजूर, हुजूर" कहकर गिडगिडाने को हुआ तो "भाग जाओ, भाग जाओ" कहता हुआ वह चला गया ।

अब मैंने कतार मे खडे होकर प्रतीक्षा न करने का निश्चय किया, और यो ही पूछते-पूछते कोई काम पाने के प्रयत्न मे लगा । एक अग्रेजी-जर्मन शब्द-कोष खरीदकर मैंने अग्रेजी शब्द सीखने प्रारम्भ किये, परन्तु कई दिनो की तलाश के बाद मुझे कुछ घटो का ही काम मिल पाया । यह था, एक अस्तबल का सामान एक जगह से दूसरी जगह रखना, और आधे दर्जन घोडो को नहलाना । दवे किराया चुकाता रहा और मिन्नी बुआ मुझे उधार खिलाती रही ।

• • •

एक दिन प्रात काल मुझे बाजा सुनाई दिया । घर के पिछवाडे कई आदमी अपने-अपने बाजे बजाते जमा थे । अकस्मात् मुझे भी धुन सवार हुई । मैं भागकर अपने कमरे मे गया । बक्स का ढकना खोलकर अपनी सारगी निकाली और इन लोगो मे मिलकर स्वय भी सारगी बजाने लगा । शीघ्र ही मुझ पर पैसे बरसने लगे । बाजेवालो का जत्था आगे बढा, तो उनका नेता बडी सारगी लिये मुझे कडी चेतावनी

इस बार पहुँचने पर मेरा हृदय धडकने लगा और धडकन बन्द होने पर ही मैं भीतर घुसा ।

दफ्तर मे बैठे एक क्लर्क को मैंने बुलावे का पत्र दे दिया । पत्र लेकर वह गायब हो गया । बीस मिनट तक मैं सामने लगी घड़ी की सुई चलते देखता रहा, तब सुन्दर दाढी रखाये नाटे कद का एक पुष्ट व्यक्ति तेज कदम मे चलता हुआ मेरे पास पहुँचा और डपटकर बोला, "तुम्ही मैक्स विक्लर हो ?"

मैंने कांपते हुए जर्मन मे उत्तर दिया, "जी हुजूर ।" उसने भी शुद्ध जर्मन मे कहा, "बडी खुशी हुई कि तुम आ गये । मैं केवल देखना चाहता था कि किस व्यक्ति ने पोस्टकार्ड पर अर्जी देने की धृष्टता की है ।" इतना कहकर वह तेजी मे वापस होने लगे ।

मुझे ऐसा लगा मानो मेरा सिर फट गया हो । मैं चिल्लाया, "एक क्षण रुकिये ।" क्लर्क पीछे फिरकर देखने लगे, काम पर आते-जाते लडके रुक गये और ग्राहक अपनी कुर्सियो से उठ खडे हुए । दढियल महाशय भी चलते-चलते जम-से गये और पीछे फिरकर मेरी ओर देखा । उनकी जैसी चकित मुद्रा मैंने कभी न देखी थी और न देखी है ।

मैंने अपना सब कुछ दाँव पर लगाकर कह डाला, "मैं आपसे केवल यह कहना चाहता था कि काम के लिए पोस्टकार्ड पर मैंने क्यो अर्जी दी । सीधी-सी बात है, मेरे पास एक ही पेनी थी और पत्र के लिए दो आवश्यक थी ।"

महाशय ने मेरी ओर फिर देखा और बोले, "हमने लडका मांगा था, मर्द नही ।" इस बार उनकी बोली मे सहानुभूति का किंचित अश था ।

मैंने निश्चय कर लिया था कि जब तक निकाल न दिया जाऊँगा तब तक प्रार्थना करता रहूँगा । बोला, "लडके का काम मर्द तो कर ही सकता है । मैं यहाँ काम करना चाहता हूँ । मुझे संगीत-प्रकाशन के काम मे विशेष रुचि है । महाशय, मुझे मौका तो दीजिये ।"

फिर ध्यानपूर्वक पता लिखा और कोने मे लगे हुए लेटरबाक्स के भीतर पोस्टकार्ड सरका दिया।

इस बार कतार मे खडे होकर प्रतीक्षा करने की बात न थी। कही किसी चमाचम दफ्तर मे एक सगीत-प्रकाशक कह रहा है, "हमें ऐसे ही आदमी की जरूरत है। मिस क्राफर्ड, मैक्स विक्लर को पत्र लिख दो— "महोदय ? हम बहुत प्रसन्न होगे यदि—"

तीन दिन बीत गये, डाकिए की प्रतीक्षा मे बेकार के तीन दिन। इस डर के मारे घर से बाहर निकलने का साहस न होता कि मेरी अनुपस्थिति मे सन्देश आया तो गजब हो जायेगा। मेरी आवारागर्दी से दबे झुँझला गया। मिन्नी बुआ ने मुझसे कुछ कहा नही, परन्तु मेरे विरुद्ध उनकी मनोभावना का अनुमान लगाना कठिन न था। पोस्टकार्ड मे मेरा विश्वास बच्चो जैसा था, न हटना था न हटा।

इन्ही दिनो मैं घण्टो अपने कोष को देखता रहा और एक पुस्तिका भी पढ डाली, जिसमे बताया गया था कि विदेशी किस प्रकार सयुक्त राज्य अमरीका का नागरिक हो सकता है। मैंने उसमे पढा कि नागरिकता के अधिकारी होने मे पाँच वर्ष लगेगे। परन्तु मुझे विश्वास हो गया था कि स्वाधीनता की भूमि मे निश्चित रूप से भरती होने के लिए पाँच वर्ष का सेवा-काल बहुत अधिक नही है।

कई दिन की प्रतीक्षा के बाद डाकिया प्रातःकाल मकान के सामने रुककर पूछने लगा, "यहाँ कोई 'मैक्स विक्लर' रहता है ?"

मेरे हृदय मे पताकाएँ फहराने लगी और विजय के नगाडे मुझे सडक भर पर बजते सुनाई देने लगे।

● ● ●

कार्ल फिशर की सगीत-प्रकाशन सस्था मेरे घर से थोडी ही दूर थी। बीच मे दो-तीन ही भवन पडते थे। शीशे की खिडकियो मे लगे बाजो को देखने के लिए मैं कई बार दुकान के सामने रुक चुका था। परन्तु

इस बार पहुँचने पर मेरा हृदय धडकने लगा और धडकन बन्द होने पर ही मैं भीतर घुसा।

दफ्तर मे बैठे एक क्लर्क को मैंने बुलावे का पत्र दे दिया। पत्र लेकर वह गायब हो गया। बीस मिनट तक मैं सामने लगी घडी की सुई चलते देखता रहा, तब सुन्दर दाढी रखाये नाटे कद का एक पुष्ट व्यक्ति तेज कदम से चलता हुआ मेरे पास पहुँचा और डपटकर बोला, "तुम्ही मैक्स विक्लर हो ?"

मैंने कांपते हुए जर्मन मे उत्तर दिया, "जी हुजूर।" उसने भी शुद्ध जर्मन मे कहा, "बडी खुशी हुई कि तुम आ गये। मैं केवल देखना चाहता था कि किस व्यक्ति ने पोस्टकार्ड पर अर्जी देने की धृष्टता की है।" इतना कहकर वह तेजी से वापस होने लगे।

मुझे ऐसा लगा मानो मेरा सिर फट गया हो। मैं चिल्लाया, "एक क्षण रुकिये।" क्लर्क पीछे फिरकर देखने लगे, काम पर आते-जाते लडके रुक गये और ग्राहक अपनी कुर्सियो से उठ खडे हुए। दढियल महाशय भी चलते-चलते जम-से गये और पीछे फिरकर मेरी ओर देखा। उनकी जैसी चकित मुद्रा मैंने कभी न देखी थी और न देखी है।

मैंने अपना सब कुछ दांव पर लगाकर कह डाला, "मैं आपसे केवल यह कहना चाहता था कि काम के लिए पोस्टकार्ड पर मैंने क्यो अर्जी दी। सीधी-सी बात है, मेरे पास एक ही पेनी थी और पत्र के लिए दो आवश्यक थी।"

महाशय ने मेरी ओर फिर देखा और बोले, "हमने लडका मांगा था, मर्द नही।" इस बार उनकी बोली मे सहानुभूति का किंचित अंश था।

मैंने निश्चय कर लिया था कि जब तक निकाल न दिया जाऊँगा तब तक प्रार्थना करता रहूँगा। बोला, "लड़के का काम मर्द तो कर ही सकता है। मैं यहाँ काम करना चाहता हूँ। मुझे संगीत-प्रकाशन के काम मे विशेष रुचि है। महाशय, मुझे मौका तो दीजिये।"

महाशय ने पूछा, "लड़के के वेतन पर काम करने के लिए तैयार हो ?"

"मुझे कोई भी वेतन दीजिये।"

"सोमवार को आओ, तुम्हे काम मिलेगा।"

"मैं सोमवार तक प्रतीक्षा नही कर सकता।"

मैं समझा कि महाशय फिर क्रुद्ध हो जायेंगे। उलटे, उन्होने हाफमैन नामक कर्मचारी को बुलाकर कहा, "यह नया लड़का तुम्हें मिलता है। काम लेना शुरू कर दो। इसे प्रति सप्ताह ६ डालर मिलेंगे।"

● ● ●

मैं हाफमैन के पीछे हो लिया और चरचराती सीढियो से उतरकर तहखाने मे पहुँचा जहाँ अलमारियो की भूलभुलैयाँ तहखाने का प्राय सभी भाग घेरे हुए थी। फिर हम एक कमरे मे घुसे जहाँ लकडी की बडी मेजो पर चार-पाँच व्यक्ति सगीत के पन्ने छाँट रहे थे। हाफमैन ने गोज नामक व्यक्ति को मुझे काम पर लगाने के लिए कह दिया।

भूलभुलैया के किसी दूसरे कोने पर पहुँचकर गोज ने मुझे गीतो का एक गड्डा दिखाया, जिसकी सभी प्रतियाँ एक ही प्रसिद्ध गीत की थी। गोज ने मुझे काम समझा दिया, "प्रत्येक प्रति को गिनकर रखते चलो, भूलना नही। शुरू करो।" वह चल दिया। मैंने गीतो की पहली गड्डी उठाई, लिपटा कागज हटाया और तेजी से काम शुरू कर दिया।

पता नही, काम करते-करते कितनी देर बाद अकस्मात् हाफमैन मुझे दिखाई दिया, क्या बात है ? एक छोटे-से गीत की कुछ हजार प्रतियाँ एक पहर के भीतर नही गिन सकते ?"

इतना कहकर वह रुक गया। उसका मुख कुछ गम्भीर हुआ और फिर एक दम जोर से हँसकर गोज से बोला, "देखो तो।"

मैं समझ नही पाया कि हँसी की कौन-सी बात थी। मैं घण्टो से बैठा एक साँस से बिना खाये-पिये काम कर रहा था, और लगभग

४० पन्ने मेरे सामने थे। प्रत्येक पर मैंने सुन्दर अक्षरो मे गीत का शीर्षक लिखकर प्रति का नम्बर चढा दिया था।

१ तुम्हारी सुन्दर आँखें मुझ पर मुस्करा रही हैं।
२ " " "
३ " " "

हाफमैन ने जब मुझे बुरी तरह टोका था, तब तक मैं ३०वे पृष्ठ के नीचे लिख चुका था

२७६३. तुम्हारी सुन्दर आँखें मुझ पर मुस्करा रही हैं।

यो सगीत के व्यवसाय मे मेरा पहला दिन बीता।

एक ही सप्ताह पश्चात् मैं तहखाने के कर्मचारी-दल का पक्का सदस्य मान लिया गया। इन दिनो लगातार मुझ पर हँसी और गालियो की बौछार पड़ती रही और मैं सहन करता गया। कई साथी तो स्वागत करने के लिए मेरे आते-जाते अपने नथुने बन्द कर लेते, मानो मैं दुर्गन्ध की प्रतिमूर्ति था। हाफ़मैन और गोज मुझसे रात तक इतना भारी काम लेते कि छुट्टी पाने पर तहखाने की सीढियाँ चढ़ना मुझे दूभर हो जाता। मैं भारी-भारी मेजे उठाता, लम्बे-चौडे फर्शों पर झाड़ू लगाता, गीतो के हजारो पन्ने गिनकर अलमारियो मे चुनता, और पाखाने साफ कराने होते तो यह काम भी मेरे ही सुपुर्द होता—मैं उनका 'किचहड़ा पोनक' जो था।

फिलाडेल्फिया नगर मे सगीत-प्रकाशन की एक दुकान का काम बन्द हुआ और बुधवार को उस दुकान का सब माल हमारी दुकान के सामने लगा, तो हाफमैन ने माल उतारने और पाँच खण्ड ऊँचे गोदाम तक लाद ले जाने का काम मेरे सुपुर्द किया। प्रत्येक बण्डल दो मन के लगभग था। वर्षों से रखे बण्डलो पर गर्द की अच्छी-खासी तह जम गई थी। बण्डल उठाकर ले जाते समय यह गर्द मेरे फेफडो मे घुसती रहती। तीसरे पहर चार बजे तक मैंने यह काम भी समाप्त किया। मैंने यह सब क्यो किया, मुझे अब याद नहीं। तब तक असहनीय

परिश्रम के पुरस्कार मे अपमान ही मिला था परन्तु मैंने निश्चय कर लिया था कि यथाशक्ति काम मे चिपका ही रहूँगा, भागूँगा नही।

क्रमश अपमान और आक्रमण का सिलसिला समाप्त हुआ। लोग मुझे 'जम्बो' के नाम से याद करने लगे। मैं हाथी जैसा सशक्त और परिश्रमी जँचा, तो यह सम्बोधन मुझे प्रिय भी लगा। जीवन-यात्रा का सबसे कठिन सप्ताह समाप्त हुआ और मेरी जेब मे छ डालर आ गये।

• • •

मैंने अपनी काली कापी मे हुल्दा का अमरीकी पता लिखकर उसके चारो ओर लाल पेन्सिल से रेखा खीच दी थी, बहुत दिनो तक उसे ढूँढने का साहस नही बटोर सका था। परन्तु एक रविवार ऐसा आया जब हुल्दा को ढूँढने का साहस हुआ। मैंने यथासम्भव अपने फटे कपडे ब्रश से साफ किये और उन्हें सी-सिलाकर दुरुस्त किया और गीत गुन-गुनाते हुल्दा की तलाश मे तीसरे पहर निकल पडा। सोचता जाता था हुल्दा मेरा स्वागत भी करेगी, इतने वर्ष बाद वह पहले जैसी भली भी लगेगी? यो ही सोचते-सोचते उसका घर आ गया। सुनहरे परन्तु बिखरे बालोवाली एक लम्बी-मोटी युवती ने द्वार खोलकर मुझे देखा तो चिल्ला पडी, "कौन? तुम! अरे, मैं तो समझी थी कि तुम मर चुके हो।" वह हुल्दा थी।

कमरा मेहमानो से भरा था। कोई दावत हो रही थी। हुल्दा मुझे छोडकर शीघ्र ही चली गई, और किसी ने भी मेरी उपस्थिति की पर-वाह न की। मुझे वहाँ पहुँचने का बहुत खेद हुआ। मैं रसोईघर मे जाकर वहाँ दोनो हाथों से अपना मुँह ढके अकेला बैठा नीची गर्दन किये फर्श ताकता रहा।

पैरो की आहट सुनाई दी। गोल और मुस्कराते मुख मे मुझे दो स्नेहपूर्ण आँखें दिखाई दी। लडकी बोली, "आप हुल्दा के पुराने मित्र

हूँ ?" खिन्नता से भरा था ही, मन मे आया कि हुल्दा की मित्रता से इन्कार कर दूँ, कह दूँ कि भूले से यहाँ पहुँच गया। परन्तु बोलने के पहले ही उनके दर्शन ने मुझे प्रभावित कर दिया था, उत्तर दिया, "जी हाँ !" लडकी ने अपना परिचय दिया, "मैं क्लारा हूँ। निकट ही नीचे को कमरे मे रहती हूँ।"

हम दोनों मुस्कराने लगे। मैं हुल्दा को भूल गया और उसके मेहमानों को भी। मैंने अपना परिचय दिया—सुदूर जन्मभूमि और 'गेर्टी' जहाज की बात हुई। जुडवाँ भाई दवे का नाम भी बात मे सम्मिलित हुआ।

वह अकस्मात् पूछ बैठी, "आपकी वास्कट के बटन टूटे हैं, हो तो टाँक दूँ।"

मैं पुलकित हो गया, बोला, "जेब मे हैं—ये लीजिये।" क्लारा सुई-डोरा माँग लाई और बटन टाँकने लगी। मैं बैठा रहा, उसका हाथ मेरे हृदय से लगता रहा। क्यों न यहाँ आने के पहले मैंने अपनी वास्कट के दो बटन और तोड डाले ! इस मधुर स्पर्श का कुछ और देर तक आनन्द मिलता।

मालूम हुआ कि फ्रिशर की दुकान होती हुई क्लारा नित्य प्रातःकाल अपने काम पर जाती है। उसने नित्य अपनी झलक दिखाने का मुझे वचन दिया।

मगन होकर सीटी बजाते मार्ग पार करने लगा। मुझे काम मिल गया था, लडकी मिल गई थी, बैंक मे बचत जमा होने लगी थी। अब मैं चिन्तामुक्त था।

• • •

दवे मोटर बस का कण्डक्टर हो गया। प्रति सोमवार को हम दोनों गार्ड डाक सेविंग्स बैंक मे अपनी बचत जमा करने एक साथ जाते।

मेरा साप्ताहिक वेतन अब साढे आठ डालर हो गया था, और मेरे साप्ताहिक व्यय का ब्यौरा इस प्रकार था

बीमारी का बीमा	...	५ सेंट
किराया और नाश्ता	.	डेढ डालर
बुआ मिन्नी के घर रात का खाना		ढाई डालर
दोपहर का खाना (इतनी कम रकम इस प्रकार—दो सेंट मे दो दिन की बासी पाव रोटी का भाग, और एक सेंट मे तीन दागी सेब—प्रतिदिन के तीन सेंट)		१८ सेंट
सिगरेट	..	१२ सेंट
फुटकर जेब-खर्च		२५ सेंट
कुल		४ डालर ६० सेंट

यो प्रति सप्ताह बैक मे जमा करने के लिए १० सेंट कम चार डालर निकल आते। जीवन यथेष्ट सुखी था।

फिशर के तहखाने मे महीनो तक कमरतोड काम करने पर मुझे पदोन्नति का पहला सुअवसर मिला। मुझे गीतो के परीक्षा-विभाग का काम सुपुर्द हुआ। अब बण्डल उठाने ही का काम न था, उन्हे खोलकर पढने और मिलान करने का काम भी मेरे जिम्मे हुआ।

मेरा काम यह था कि आर्केस्ट्रा-सगीत के बडे-बडे बण्डलो मे से छाँटकर एक-एक गीत की पूरी स्वर-लिपियो के छोटे-छोटे बण्डल बना दू । बडे बण्डल इस प्रकार बँधे होते थे कि किसी मे, उदाहरण के लिए सौसा के प्रसिद्ध फौजी कूच के गीत मे टेनोर ट्राबोन पर बजाये जाने-वाले अश की ५०० प्रतियाँ होती थी। दूसरे मे पिकोलो वाद्य पर बजाई जानेवाली धुन की ५०० प्रतियाँ होती थी। काम का ढग यह था कि एक लम्बी मेज पर विभिन्न स्वर-लिपियाँ सजा दी जाती थी और मैं मेज का चक्कर लगाकर हर बण्डल मे से एक-एक पन्ना

परन्तु उनके लम्बे बरान कोट और नये जूते मे कारपेथिया के पर्वतीय जीवन की दहकानियत का पता न था। उनके विशालकाय व्यक्तित्व से एक भद्र अमरीकी का शील और सौजन्य प्रत्यक्ष होता था।

हमारी वापसी के एक घण्टे भीतर हमारा कमरा उनके दर्शनार्थियो से भर गया। इनमे कई सम्बन्धी और मित्र भी थे, जिनका तब तक हमे कोई पता न था। मैं यहाँ पहुँचा, तब ये सब कहाँ थे ?

जान पडता था कि पिता ने यहाँ आने के पहले अमरीकी रहन-सहन के सम्बन्ध मे बहुत कुछ पढ लिया था। यहाँ का जीवन किस प्रकार सफल हो—इस पर उनका एक प्रभावपूर्ण व्याख्यान हो गया। जो श्रोता यहाँ जन्मे थे या कई वर्षो से अमरीका के निवासी थे, वे भी मान गये कि जो कुछ वे करते आ रहे थे वह सब गलत था।

जब सब मेहमान पिताजी को सादर नमस्कार करके चले गये तो हम उन्हे घेरकर मेज के चारो ओर बैठ गये। पिता ने पूछा, "तुमने कितना रुपया बचाया है ?"

मैं और दवे उठकर अपनी-अपनी पास-बुकें ले आये। पिताजी ने दोनो को देखा—मेरी किताब मे लगभग २०० डालर जमा थे—और टीका-टिप्पणी किये बिना दोनो को अपनी जेब के हवाले किया।

आदेश हुआ, "मिलकर काम करो और बचत बढाओ, अब सोने का समय है।"

थोडे ही दिनो के भीतर हमारी जीवन-चर्या बदल गई। प्रति सप्ताह वेतन पाने के दिन पिता को हमारे वेतनो के लिफाफे मिल जाते और हमे जेब-खर्च के लिए एक-एक डालर मिल जाता।

एक वर्ष की स्वतन्त्रता के पश्चात् यह परिवर्तन हमे खला अवश्य, परन्तु हमे इतना मानना पडा कि पिता के लौह अनुशासन और असीम अधिकार मे रहकर हम सेवा के लिए बहुत सुन्दर प्रकार से सगठित हो गये। उन्होंने उसी भवन मे बुआ मिन्नी के घर से लगा दूसरा घर किराए पर ले लिया और उसके लिए पुराने माल की दूकानो से टूटा-

फूटा सामान खरीद लाये। जैक ने धृष्टतापूर्वक लिखा कि उसे पोर्ट जर्विस मे ही रहना पसन्द है, तो पिता वहाँ गये और २१४ डालर ले आये, जो उस अभागे ने बचाये थे। उससे वचन भी ले आये कि अपने वेतन से प्रति सप्ताह आठ डालर वह भेजेगा। अमरीका पहुँचने के एक सप्ताह पश्चात् अपने तीनो पुत्रो के तीन मस्तिष्क और छ हाथ इस वृद्ध ने अपने अधिकार मे कर लिये।

• • •

केवल एक छोटी-सी बात पिता के अधिकार के बाहर रह गई थी—और वह थी क्लारा जिससे मेरा प्रणय प्रारम्भ हो गया था। कैसे उनसे कहूँ, कैसे उन्हे समझाऊँ ? यही मुसीबत दवे की भी थी। उसकी प्रणयिनी का नाम एन था। हम दोनों ने निश्चय किया कि एक साथ अपनी बात पिता से करेंगे। निश्चय देखने मे तो सरल लगा, परन्तु प्रात काल नाश्ते पर जब हमारा सामना पिता से हुआ तो हमारा साहस रफूचक्कर हो गया।

तैयार किया हुआ व्याख्यान विस्मृत हो गया, मुख से अटपटी और धृष्ट बात ही निकल गई, "पापा, मैं अब २० वर्ष का हुआ। मुझे अभी व्याह की आशा नही, व्याह के लिए कदाचित् पाँच वर्ष या आगे तक भी प्रतीक्षा करनी पडे। आपकी राय क्या है ?"

बात पूरी होने के पहले ही पिताजी दाहिने हाथ मे अपना बेंत लिये उछल पडे। एक क्षण समझा कि मैं पिटा। परन्तु तुरन्त ही वह बैठ गये। उनका चेहरा जर्द पड गया और आवेश मे उनकी दाहिनी मूँछ फडकने लगी। मुझे बहुत दु ख हुआ। अकस्मात् उनके प्रति मेरी श्रद्धा पहले से कही अधिक बढ गई।

पिता के हृदय को आघात पहुँचाने की बात मेरे मन मे कदापि न थी। उनके सस्कार दूसरे ही थे। पिता जिस देश से आये थे वहाँ प्रत्येक सेवक माता के हाथ चूमता, प्रत्येक श्रमिक पिता को देखते ही

हाथ मे हैट लेकर नत-मस्तक होता। यहाँ आकर भी उनके सस्कार मे परिवर्तन नही हुआ था। वह विवश थे। बोले, "मैं कोई ऐसा विद्रोह न सहन कर सकूँगा, जिससे मेरी योजनाओ मे बाधा पडे। तुम्हे चेतावनी देनी है। इस घर मे लडकियाँ न लाना। लाओगे तो मैं उन्हे निकाल बाहर करूँगा। तुम जर्मन समझते हो न, या अपनी मातृ-भाषा भी भूल गये ?"

मैं अपने को रोक न सका, "पापा, आप भूलते हैं। हमारे हृदय मे अभी तक आपके प्रति श्रद्धा है। मैंने आपको—माता जी को भी—वचन दे दिया था कि आजीवन आपका आज्ञाकारी रहूँगा। परन्तु मैंने इस लडकी को भी वचन दे दिया है और इस वचन से भी आजीवन मैं टलने का नही। यह मेरी सहयोगिनी उस समय बनी जब मैं बिलकुल अकेला ही था। यह उस समय भी मेरी सगिनी रही, जब मैं इतना निर्धन था कि उसे सिनेमा दिखाने के लिए मेरे पास एक पैसा न था। आपने उसे देखा तक नही और अस्वीकृत कर दिया। आप कहते हैं कि आप उसे इस घर से निकाल बाहर कर देंगे। यह घर"—मेरी आँखो से आँसू निकल आये—"क्या यह हमारा घर नही होनेवाला था ?"

पिताजी अकस्मात् उठकर कमरे के बाहर चले गये। दवे और मैं स्तब्ध होकर जम-से गये। बडी देर तक बैठे रहे। फिर रसोईघर मे गये। वहाँ पिता एक खिडकी के सहारे खडे थे। उनका चेहरा बहुत उतरा हुआ था। उनकी आँखें बन्द थी। वह अस्सी वर्ष के वृद्ध जैसे दिखाई देने लगे।

बोले, "मैं इस विचित्र और भ्रामक स्वप्न-जाल मे भटक-सा गया हूँ। काश कि तुम्हारी माँ यहाँ होती।"

स्नेह और श्रद्धा से परिपूर्ण होकर मैंने पिता के कधे स्पर्श किये और कहा, "पापा, उन्हे तुरन्त बुलाइये। उनका किराया देने के लिए आपकी तीनों पास-बुको मे यथेष्ट पैसे हैं।"

"परन्तु खाना-रहना कैसे चलेगा।"

"आप चिन्ता न करें। आपके तीन लडके हैं। हम सब प्रबन्ध कर लेंगे।"

उन्होने स्नेह और विश्वास से हमारी ओर देखकर कहा, "अच्छा, तुम कहते हो तो कल ही जहाज के दफ्तर किराया जमा करने जाऊँगा।"

पिता ने पास-बुक बार-बार खोलकर पढी और हिसाब लगाते रहे। फिर अपनी जेब में हाथ डाला और बोले, "आज रविवार है। यह लो एक-एक डालर—अपनी प्रेमिकाओ को सिनेमा दिखाने के लिए।"

• • •

माताजी अपने बाकी दो बच्चो, रोज और हर्मन को लेकर आ गई। उनकी जीवन-चर्या पहले जैसी रही—कभी पैसा नही छुआ, खरीदारी करने कभी नही गईं, घर के बाहर शायद ही कभी निकली। खाना पहली ही जैसी लगन से बनाती रहीं; परन्तु सामग्री उन्हे बहुत ही निम्न श्रेणी की मिलती—पहले जैसी नही। पिताजी सस्ते-से-सस्ता मांस लाते। सब्जी-मास के अजीब से शोरबे तथा अन्य खाने बनते और उन्हे हम खाते, स्वाद के लिए नहीं, केवल इसलिए कि भूख शात करनी थी, खाने के लिए वही चीजें हमारे सामने थी और पापा का अनुशासन था।

पिताजी का अधिकार पहले जैसा अक्षुण्ण रहा। उनके रवैये से हम सबको भली प्रकार विदित हो गया कि स्थान-परिवर्तन से उनके अधिकार मे कोई परिवर्तन नही हुआ है। गृह-प्रबन्ध मे, गृह-सदस्यों पर अनुशासन में, उनका असीम अधिकार बढ ही गया था, क्योकि उनकी जो शक्ति ५,००० लकडहारो पर अनुशासन मे लगी थी, उससे ही अब घर के सात सदस्य अनुशासित हुए—हमे कम-से-कम समय मे अधिक-से-अधिक बचाना था।

माता को यहाँ आये एक वर्ष भी न बीता था कि पिता ने किराने की दुकान खोलने के निर्णय की सूचना दी—उस रकम से जो हम तीनो की कमाई से बचाई गई थी। हम चुपचाप बैठे पिता को इस निर्णय के विरुद्ध समझाने की बात सोचते ही रह गये—यद्यपि हमे समझाने का कोई ढग दिखाई नही दे रहा था—कि उन्होंने अकाट्य निश्चय के साथ हमे सूचित कर दिया, "दो सप्ताह के भीतर मैं दुकान खोल लूँगा।"

पिता को किराने का कोई अनुभव नही था। दुकान कुछ ही दिन चली। ग्राहको से बहस करते, व्यापारियो से लडते। अधिक दाम देकर नीचे दरजे का माल खरीद लाते। आदि से अन्त तक यह दुकान एक दु खान्त नाटक ही रही।

हममे से कोई कभी न जान सका कि दुकान मे कितनी रकम लगी है, कितना दुकान पर कर्ज है, कितना हमारी पास-बुको मे बचा है। पिता ही खरीदारी करते, बहस करते, रार बढाते और थोडा-बहुत बेचते भी। दुकान खुलने के दस महीने बाद महाजनो की पकड मे आ गये। जब सब समाप्त हो चुका तो माता के पास आडू के सात डिब्बे ही रह गये। यही किराने की दुकान की बचत थी।

● ● ●

दूसरे दिन प्रात काल पिता ने हमे हमारी पास-बुकें लौटा दी। उनके चेहरे पर उदासी छाई हुई थी। तीनो पास-बुको मे बचत का जोड १३ डालर ४७ सेंट रह गया था। जिस पास-बुक ने मेरे चार वर्ष से अधिक के परिश्रम के फल हजम कर लिये थे, उसमे मुझे ४ डालर १ सेंट की बचत दिखाई दी, सोचा कदाचित चार डालर के बाद अकेला सेंट मेरे खुलते भाग्य का दूसरा प्रतीक हो। जेब मे रखकर अपने काम पर चल दिया।

मुझे थकान सी मालूम होने लगी। नित्य भारी काम करना पडता

और बहुत देर तक, तिस पर सस्ता और अपौष्टिक भोजन खाने को मिलता जिस कारण मेरा स्वास्थ्य गिरने लगा। प्राण-रक्षा के लिए निरन्तर सघर्षशील रहा था। अब मुझे हार दिखाई देने लगी।

मालूम नही, मैं कैसे बच गया, कदाचित् जुटे रहने के दृढ निश्चय ने ही मेरी रक्षा की। जब कभी शारीरिक या मानसिक पीडा से उद्विग्न होता तो क्लारा के साथ सुखी जीवन की आशा ही मेरी रक्षा करती। किसी दिन भी अपने काम से मैं गैरहाजिर नही रहा।

अन्तत. एक दिन फिशर के तहखाने की गर्द और अँधेरे की लम्बी अवधि भी समाप्त हुई। एक दिन प्रात हाफमैन सीढी से उतर-कर मेरे पास आया और घबराकर बोला, "मिस्टर वाल्टर फिशर तुरन्त मिलने के लिए तुम्हे बुला रहे हैं।" स्वामी के तीनों लडके अब अपने पिता का व्यवसाय सँभालने लगे थे। उनमे एक था वाल्टर फ़िशर।

सीढी चढकर फिशर के दफ्तर की ओर बढा, तो मुझे सुदूर अतीत की एक छोटी-सी घटना याद आई, जब झाड़ू लगाने और पाखाने साफ करने के काम मेरे सुपुर्द होते थे। घटना साधारण-सी ही थी, परन्तु इसके स्मरण ने ही सेवा के अन्तिम चार वर्षो मे मेरी प्राण-रक्षा की थी। मैं झाड़ू दे रहा था, जब वाल्टर फिशर उधर से होकर गुजरे। वह मुस्कराये और सहज-सौहार्द से उन्होंने मुझे नमस्कार किया।

मैं बहुत प्रभावित हुआ। मेरी आँखो मे आँसू भर आये। जिस झाड़ू के कारण मेरे जैसे नौसिखिये को देखकर अन्य व्यक्ति दुर्गन्धयुक्त अन्त्यक समझते, उसे इस बडे व्यवसाय के स्वामी के सुपुत्र ने नमस्कार किया।

मेरा आत्माभिमान कुछ जागृत हुआ। मैं मानव हूँ, मेरा पद निम्न है, तो भी मानवो के मध्य मानवता मे मेरा सबके समान पद है। यह समानता मेरी जन्मभूमि मे सम्भव न थी, जहाँ भगी हाथ में हैट लिये

स्वामी के सुपुत्र के मार्ग से निकल जाने की प्रतीक्षा करते। यह दूसरी ही दुनिया थी।

बहुत दिनो बाद, जीवन-मार्ग की अब से कठिन मजिल पर, मुझे यह घटना फिर याद आई, और वाल्टर फिशर की मुस्कराती आँखें भी, क्योकि तब भी आगे हाथ बढाकर उन्होने मुझे सहायता दी। इस दूसरे अवसर पर वह मेरे स्वामी न होकर मेरे मित्र हुए। परन्तु यह दूर की बात अभी भविष्य के गर्भ मे ही थी।

हाँ, ज्यो ही मैं दफ्तर मे घुसा उन्होने मुझे बैठ जाने को कहा। सक्षेप मे उन्होने मुझे तहखाने से मुख्य फर्श पर मेरी पदोन्नति का आदेश दिया और आर्केस्ट्रा विभाग का प्रकाशन-भण्डार मुझे सुपुर्द हुआ। पहले मुझे अपने कानो पर विश्वास नही हुआ। परन्तु शीघ्र ही सुचित्त होकर मैंने अटपटाते शब्दो मे उन्हे धन्यवाद दिया। उस समय यह कम ही समझ मे आया कि निचली काल-कोठरी की लम्बी अवधि अब सदैव के लिए समाप्त हो गई है।

क्रमश' ही मुझे बीती बात का महत्व प्रत्यक्ष हुआ। जो कुछ मैंने कूडे के ढेरो के मध्य, स्वर-लिपियो के कमरतोड बोझ उठाकर, और सकलन के लिए मेज के असख्य चक्कर लगाकर सीखा था, उसका महत्व मेरे सामने आया।

खबर सुनते ही तहखाने के कर्मचारी स्तब्ध हो गये। मैंने अपना उल्लास छिपाने का भरसक प्रयत्न किया। अक्सर बहस होती रहती और मेरी महत्वाकाक्षा की हँसी उडाई जाती। जो भी काम मुझे मिले, उसे यदि मैं दिल लगाकर और सही करूँ तो परिश्रम और कर्तव्यपरता का पुरस्कार मुझे अवश्य मिलेगा। मेरे इस अटूट विश्वास को साथी मेरा खब्त समझते। वे स्वामी को दोष देते, सभी कुछ उनकी दृष्टि मे दोषपूर्ण रहता, केवल अपनी ओर वे न देखते। मेरी सादी-सी धारणा थी कि यदि मुझे तहखाने से निकलना है, तो मुझे यथेष्ट मात्रा मे वह सब काम भी जानना है, जो तहखाने मे नही होता। वे कहते, "तुम

कभी सफल न होगे।" मैं उनकी बात न मानता और अब मेरी सफलता उन्हें प्रत्यक्ष हुई।

तहखाने मे मैंने फ़िशर-प्रकाशन-सूची का प्रत्येक अक याद कर लिया था। मुख्य फर्श पर पहुँचकर अपनी जानकारी का प्रयोग मैंने संगीत के अन्य प्रकाशनो के जानने के लिए किया। मेरा प्रशिक्षण बहुत पक्का हुआ था। और शीघ्र ही इसका आशा से अधिक प्रसाद मुझे मिलना था।

• • •

अमरीकी मनोरजन का सबसे बडा और समृद्ध युग १९१२ से प्रारम्भ हुआ। संगीत के छपे पन्ने विशाल सख्या मे बिकने लगे। चल-चित्र चुप चलते थे, तो मृतक ही मालूम पडते थे। उनमे जीवन-संचार के लिए सगीत का सहयोग आवश्यक हुआ। बडे नगरों के सिनेमाघरो मे बडे-बडे आर्केस्ट्रा बिठाये गये, तो छोटे कस्बों मे अरगन या पियानो बजानेवाले ही नियुक्त हुए। चलचित्र मे सगीत का सहयोग सरल न था। चित्र बदलते जाते और दर्शको की भावनाएँ उनके साथ बदलती तो इन भावनाओ को मूर्त करने के लिए सगीत आवश्यक होता और गीत भी चित्र के साथ-साथ बदलने आवश्यक थे। परन्तु बाजेवालों को चित्र के अनुकूल वाद्य-गति बदलने के साधन उपलब्ध न थे। चिन्तित सचालको के सामने जो धुनें आतीं उन्हीं को वे किसी प्रकार बिठाते जाते।

थियेटर सचालक उपयुक्त सुझावो की ताबडतोड मांग करने लगे। ऐसे प्रश्न पूछने लगे, जैसे ऐसे दृश्य मे जहाँ मालगुजारी के गुमाश्ते ह्विस्की फेंक रहे हो, किस गति का सगीत होना चाहिये, चार्ली चैप-लिन की सांड से लडाई के दृश्य में कौन सगीत उपयुक्त होगा? हमारा व्यवसाय इन प्रश्नो और उनके उत्तरो से खूब चमका। परन्तु भविष्य के लिए मेरी कल्पना इनसे अधिक चमत्कारपूर्ण थी।

एक रात मुझे नींद नही आई। सैकडो-हजारो गीतो की टेकें और उनकी स्वर-लिपियो की विशाल सूचियाँ मेरे मस्तिष्क मे चक्कर मारती रही। यदि हम बाजेवालो को बता पायें कि दृश्य के अनुकूल हमारे पास कौन-कौन स्वर-लिपियाँ हैं, तो मनो नही, गाडियो भर अपने प्रकाशन इनके हाथ बेच सकते हैं।

बिजली की भाँति तुरन्त ही उपयुक्त योजना मेरे मस्तिष्क मे बन गई। रोशनी खोलकर मैंने कागज का एक ताव निकाला और काल्पनिक दृश्यो के अनुकूल स्वर-लिपियो की सूची घसीट डाली।

अगले दिन मैंने यूनीवर्सल फिल्म कम्पनी को अपनी बनाई सूची उपयुक्त स्वर-लिपियो सहित भेज दी, और उन्हें बता दिया कि जितने भी फिल्म प्रकाशित हो तो दृश्यो के अनुकूल स्वर-लिपियाँ हमारी सस्था स्थानीय थियेटरो को तमाशे के पहले ही भेज सकती है।

दो दिन पश्चात् यूनीवर्सल के सचालक पाल गुलिक ने मुझे अपने दफ्तर बुलाया और पूछा, "आप ऐसा क्यो समझते हैं कि चित्रों के अनुकूल स्वर-लिपियाँ आप दे सकते है?" मैंने कहा, "मौका देकर परीक्षा कर लीजिये।"

आवश्यक मौका शीघ्र ही उन्होने मुझे दिया। सात बजे सध्या से आधी रात तक १६ मेल के चलचित्र उन्होने मुझे दिखा दिये। छोटे-छोटे प्रहसन, खबरें, पश्चिमी जीवन के दृश्य—सभी इस सूची मे सम्मिलित थे। मेरे सामने एक छोटी-सी मेज रख दी गई। मुझे एक घडी दे दी गई जिसे मैं जब चाहता तब रोक सकता था, और मेज पर कागज तथा पेंसिलो की गड्डी ढेर कर दी गई। चित्र परदे पर चलते जाते और फिशर द्वारा प्रकाशित निधि से उपयुक्त स्वर-लिपियाँ मेरी आँखो के सामने आती जाती। सामने चित्र मे ऊँटों का काफिला रेगिस्तान पार करता दिखता है, तो अपनी कल्पना मे मुझे उपयुक्त सगीत ही नही सुनाई देता, अपने स्टाक का वह ढेर भी दिखाई देता है, जहाँ रूसी सगीतकार चैकोवस्की के 'अरब नृत्य' की प्रतियाँ बँधी रखी हैं।

अपना काम समाप्त कर चुका तो भी मेरी थकी आँखो के सामने दृश्य चक्कर लगाते रहे। गुलिक ने मेरे लिखे ताव ले लिये और जम्हाई लेते हुए कहा, "हम आपको सूचना देंगे—नमस्कार।"

दूसरे दिन चार सप्ताह की स्वर-लिपियाँ तैयार करने का काम मुझे सुपर्द किया गया। प्रति मगल की रात को दृश्य के अनुसार स्वर-लिपियाँ मुझे तैयार करनी थीं और एक सूची के ३० डालर मुझे मिलने थे।

जब फिशर की दुकान पर मुझे इस नये काम का आदेश पहुँचा, तो मैं तहखाने मे पहुँचकर तंग मार्गों के चक्कर लगाता उस छोटी मेज पर पहुँचा जहाँ अपने काम के पहले दिन मैंने "तुम्हारी सुन्दर आँखें मुझ पर मुस्करा रही हैं" की २७६३ प्रतियाँ गिनी थीं। मैं बैठ गया। दोनो हाथो से मुँह ढक लिया, और ईश्वर के प्रति कृतज्ञता के आँसू मेरी आँखों से बहने लगे। लगन और परिश्रम का फल मुझे मिलने लगा था।

• • •

हास्य, भीषण हत्या और तीव्र भय या करुणा से भरे जितने चलचित्र मैंने अगले सप्ताहो मे देखे उतने कदाचित् ही किसी मानव को देखने पडे हो। परन्तु मुझे जो आनन्द आया वह कदाचित् ही किसी को प्राप्त हुआ हो। यूनीवर्सल में मेरा रात्रिकालीन परिश्रम ज्यो ही समाप्त होता कि मेरी टेढी-मेढी लिखी हुई स्वर-लिपियाँ तुरन्त ही छपने चली जातीं, और दूसरे दिन हजारो प्रतियाँ अमरीका के सिनेमाघरो के संगीत-कारो को बँटने रवाना हो जाती। माँग को पूरा करना कठिन हो गया। स्वर-लिपियों के लिए चारो ओर से प्रार्थनाएँ यूनीवर्सल के दफ्तर मे ढेर होने लगीं। गुलिक ने मुझसे वृहस्पतिवार की रात को भी आने के लिए कहा और मेरा पारिश्रमिक बढाकर ४० डालर कर दिया।

आयरिश स्वीपस्टेक्स नामक लाटरी की बहुत प्रसिद्धि है। सर्वोच्च

पुरस्कार की मात्रा बहुत अधिक होती है। जब कभी समाचार-पत्रो मे पुरस्कृतो के चित्रो मे उनकी घबराहट का आभास मिलता है तो मुझे उनकी आन्तरिक भावना का पता लग जाता है। ये भावनाएँ वही होती हैं, जिनका अनुभव मुझे ४० डालर का पहला चेक पाने पर हुआ।

मैंने कोई लाटरी नही जीती थी, परन्तु अपनी काल्पनिक शक्ति के उपयोग से मैंने अपनी साप्ताहिक आय दूनी से अधिक कर ली थी। मुझे बताया गया था कि अमरीका अवसर का देश है। अवसर ने मेरा द्वार खटखटाया तो मैंने सुनते ही द्वार खोल दिया, और उसे भीतर बुला लिया। आनन्द और गर्व से अब मैं परिपूर्ण था।

● ● ●

एक दिन ब्रुकलिन की जिला कचहरी से मेरे नाम पत्र आया। उसमे मुझे आदेश मिला कि अगले बुधवार को दस बजे कचहरी पहुँचकर अपने नागरिकता-सम्बन्धी कागज ले जाओ। नागरिकता प्राप्त करने का शुभ दिन आने पर क्लारा ने और मैंने अपने सर्वोत्तम कपडे पहने। रास्ते मे मैंने अपनी सब बात उससे कहना उचित समझा और अन्त मे उसे बता दिया, "बैंक मे मेरी बचत अब तुम्हारे और मेरे सयुक्त नामो से जमा है।"

"मैक्स, क्या कह रहे हो ?"

"क्लारा, अब हमारा विवाह हो जाना चाहिये।"

एक घण्टे बाद मैंने हाथ उठाकर सौगन्ध के शब्दो का उच्चारण किया, और क्लर्क ने अमरीकी नागरिकता का दस्तावेज मेरे हाथ मे दिया, जिसमे मेरा नाम बडे और सुन्दर अक्षरो मे लिखा था। यो मैं अमरीकी नागरिक बन गया।

उसी रात को मैंने अपने सब कागजात पिताजी को दिखाये। मेरे अमरीकी अधिकार-पत्र को वह देर तक देखते रहे। अन्त मे शान्त समादर की भावना से उन्होने पत्र को चूम लिया।

फिर मैंने माता-पिता से क्लारा के साथ विवाह की बात कही। पहले मुझे कोई उत्तर नही मिला। माताजी अपने स्वभाव के अनुसार पिताजी के निर्णय की प्रतीक्षा करने लगी। अपना पुराना डर मुझे याद आया—क्या पिताजी मेरे जीवन-मार्ग पर फिर अपना निर्णय थोप देंगे ? मैंने निश्चय कर लिया था कि अब इस सम्बन्ध मे मुझसे उनका आज्ञा-पालन न हो सकेगा।

पिताजी ने कहा, "मैं जरूरत से ज्यादा फैसले कर चुका और वे गलत निकले। अब कोई फैसला मुझे नही करना, तो तुम्हारे मामलों मे मुझे दखल भी नही देना। तुम्हारा निर्णय मुझे और तुम्हारी मां को मान्य होगा।"

जिस व्यक्ति को परामर्श सुनना भी असहनीय रहा था, उससे मुझे ऐसा उत्तर मिला। मैं स्तब्ध हो गया।

अगले दिन प्रात काल ससार मे सर्वत्र मुझे वसन्त की प्रफुल्लता ही दिखाई देने लगी। न्यूयार्क मे रेलगाडियाँ आकाश मे दौड़ती हैं तो पाताल मे भी। ऐसे ही पाताली रेल-मार्ग से चला तो ऐसा लगा, मानो मैं निनेवा की स्वप्निल वाटिकाओं मे भ्रमण कर रहा हूँ। फिशर के दफ्तर पहुँचा तो बात करते सभी पर मुस्कराहट बिखेरता रहा। क्लारा का दफ्तर थर्ड ऐवेन्यू नामक सडक पर था। लच की छुट्टी होते ही मैं क्लारा से मिलने चला तो मार्ग गुलाब की सुगन्ध से परिपूर्ण लगा। पिताजी की बात मैंने क्लारा को सुनाई।

"खूब, मैक्स, बहुत खुशी हुई।"

"अवश्य, अब आनन्द ही आनन्द के दिन सामने हैं।"

"मैक्स ! एक परेशानी है। हम रहेगे कहाँ ?"

मैंने कहा, "चिन्ता की बात नही। हल बिलकुल सरल है—हम एक मकान मोल ले लेंगे।"

"मजाक न करो, मैक्स ! हमारे पास पांवदान खरीदने तक के लिए तो पैसा है नही।"

"मैं मजाक बिलकुल नही कर रहा। मकान अवश्य खरीदेंगे।"

निजी घर की समस्या मेरे सामने कभी नही आई थी। कुछ ही सप्ताह पहले मकान मोल लेने की बात मन मे आनी असम्भव होती। अब अकस्मात् मुझे सब सम्भव दिखाई देने लगा। विवाह का निश्चय हो चुका था, माता-पिता की सेवा भी करनी थी। दो घरो का किराया देना मेरे लिए असम्भव था। पूरे परिवार की परवरिश मेरे जिम्मे थी। तो मकान खरीदना आवश्यक हो गया।

जब मैंने पिताजी को अपनी योजना बताई, तो उनकी आँखें चमक उठी। बोले, "मकान मालिक साहब, आपके पास रकम कितनी है?"

"बैंक मे २६५ डालर जमा हैं, मुझे विश्वास है कि बाकी मैं उधार—"

"तुम्हे किसी से उधार माँगने की जरूरत न होगी।"

मैं चिल्ला पडा, "तो घर का मूल्य कौन चुकायेगा?"

पिताजी बोले, "मैं।"

चकित चुप्पी साधे हम दोनो, माँ-बेटे, पिताजी की ओर देखने लगे। पिताजी का पूरा नाम था—हर बर्ल्टर बर्नार्ड विक्लर। रूमानिया के जगलात से अपनी रकम सीधी करके हाल ही मे लौटे थे। अपनी पुरानी अलमारी खोलकर उन्होने तीन पास-बुकें निकाली। मैं साँस रोके इनके पृष्ठ पलटने लगा।

रकम का जोड ५८७ डालर तक पहुँचता था।

पिताजी बोले, "मैंने किराने की दुकान बन्द होने के पहले कुछ बचा लिया था। फिर तुम्हारी माँ के लिए खरीदारी करने निकलता था तो कतर-ब्योत करके एक-दो डालर बचा लेता। लो, यह सब अब तुम्हारा है।"

• • •

हमने ब्रुकलिन मे दो परिवारों के रहने योग्य एक घर मोल लिया। ५०० डालर नकद देने पड़े और दो किस्तो मे बाकी रकम की अदायगी की रेहन लिख दी। कमरो मे बिजली का प्रबन्ध न था। उन्हे गरम रखने की व्यवस्था मे कुछ गडबड़ी थी। परदो के होते हुए भी पड़ोस के दोनो घरो से काफी वेपर्दगी थी। वहाँ कहवा पिसता तो हमें सुनाई देता। पडोसियो की खाँसी और खर्राटे भी हमे सुनाई देते। तो भी छोटे-से घर को अपना समझने पर हम लखपती जैसे सुखी हुए।

२४ नवम्बर, १६१२ को क्लारा से मेरा विवाह हुआ। उसके बाद से घर की बिलकुल काया ही पलट गई। अब क्लारा ही उस घर मे सब कुछ थी। जो कुछ मैं करता, उसकी प्रेरणा मुझे क्लारा से मिलती। मेरा आना-जाना, मेरे कर्म और विचार—सभी क्लारा के व्यक्तित्व से प्रभावित रहते। मैं अब बूढा हूँ, परन्तु उस घर में अपने प्रथम वर्ष का स्मरण करके मुझमें यौवन की स्फूर्ति आ जाती है।

१६१४ के वसन्त मे हमारी पहली सन्तान एथेल का जन्म हुआ। अब मेरी आय प्रति सप्ताह ६५ डालर थी। परन्तु घर के रेहन की अदायगी और सामान की किश्तें देकर बचत प्राय नही के बराबर रहती। एक दिन पिताजी ने मुझे बुला भेजा। वह सदैव आत्मविश्वासी और गर्वीले रहे थे। आज उनकी आँखो मे आँसू थे। धीरे से उन्होंने कहा, "तुम्हारी माँ बहुत बीमार हैं।"

मैं धक् से रह गया। पूछा, "आपने डाक्टर को बुलाया ?"

"नहीं, जानता हूँ कि आपरेशन जरूरी है और यह भी जानता हूँ कि हमारे पास उसके लिए रुपया नही। क्या करें, मैक्स ?"

क्लारा ने सहज निश्चय से कहा, "जो करना है सो हम अवश्य करेंगे।" आनन्द के अतिरेक मे मैंने उसका हाथ अपने हाथ मे ले लिया।

डॉक्टर ने माता के रोग की जांच की और बताया कि भीतरी

फोडा बन रहा है। बोले, "खून का प्राण-घातक बहाव जारी है। ऑपरेशन के अतिरिक्त कोई चारा नही। अस्पताल मे पहले सप्ताह का किराया पेशगी देना होगा। सर्जन की फीस ३०० डालर होगी, २५० डालर और रख लो—नर्सो, औषधि तथा ऑपरेशन के फुटकर खर्च के लिए, फीस मुझे बाद को दे देना।"

डॉक्टर के जाने के पश्चात् मैं चिन्ता-मग्न हो गया। मैंने हाल ही मे लगभग ७०० डालर निकालने का वचन दिया था। मेरी समझ मे नही आया कि अन्य खर्च बहुत दूर, अस्पताल के किराए के ६० डालर तो तुरन्त देने हैं—यह रकम कहाँ से आयेगी। परन्तु क्लारा का विश्वास अटल रहा और उसे निराश करना मैं जानता नही था।

आजीवन मुझे यह अनुभव होता रहा कि जब मेरा दम घोटने के लिए छ रस्सियाँ लाई गई, तो पता लगा कि सात होनी चाहिये। और ऐसा कुछ हुआ कि सातवी रस्सी आ न सकी और मैं बच गया। मैंने निश्चय कर लिया कि मुझे ऑपरेशन के लिए खर्च करना है, चाहे इसके लिए मुझे आमरण परिश्रम करना पडे।

अगले प्रात काल यूनीवर्सल के पास जाकर मैंने ८० डालर पेशगी माँगे। कोई प्रश्न नही, माँग तुरन्त पूरी की गई। मैं किराए की मोटर मे माँ को अस्पताल पहुँचा आया और कमरे का किराया अदा कर दिया। तीन दिन बाद सफल ऑपरेशन भी हो गया। परन्तु जब मैं अपने काम पर पहुँचा, तभी मुझे अपनी परिस्थिति का पूरा अनुमान हुआ। तो भी चमत्कारो मे मेरा विश्वास रहा ही। अब मेरी आँख दफ्तर के द्वार से हटती न थी। मैं इसी द्वार से किसी ऐसे सुहृद् व्यक्ति के भीतर आने की आशा मे लगा, जो मुझे अकस्मात् आर्थिक कष्ट की भँवर से उबार ले, जो मेरी पहली चामत्कारिक पेनी फिर मेरे हाथ मे रखे।

तीसरे पहर साढे चार बजे किसी थियेटर का सचालक उसी द्वार से मेरे सामने पेश हुआ।

आते ही उसने सूचित किया, "मैंने हाल ही मे 'कारमेन' नामक नृत्य पर आधारित फिल्म दिखाने का ठेका ले लिया है। हम यथासंभव उसके साथ विज़े का मौलिक सगीत चाहते हैं। परन्तु ऐसे व्यक्ति की जरूरत है जो सगीत का चलचित्र से साम्य कर सके।"

मेरा वाक्-चातुर्य मालूम नही कहाँ से उभर आया। मैंने उसे भली भाँति समझा दिया कि इस मेल का काम मैं बहुत दिनो से यूनीवर्सल के लिए कर रहा हूँ। अभ्यागत ध्यानपूर्वक सुनता रहा और रात का चलचित्र देखने के लिए उसने मुझे निमन्त्रण दिया। बोला, "आप इस काम के लिए लेगे क्या ?"

मैं उत्तर क्या देता। मेरे उलझे मस्तिष्क मे नर्सें, सर्जन और अस्पताल के खजाची जो चक्कर मार रहे थे। मैं चुप रहा।

अभ्यागत मेरी उलझन भाँप नही पाया। उसने शान्तिपूर्वक मेरी ओर देखकर कहा, "देश का एक प्रमुख विशेषज्ञ एक हजार डालर पर यह काम करने के लिए तैयार है। परन्तु एक महीने तक उसे फुरसत नही और चलचित्र का प्रदर्शन तीन सप्ताह समाप्त होते ही प्रारम्भ होना है।"

एक क्षण तक मुझे अपने दोनो हाथो को मेज का सहारा देना पडा। हर्षातिरेक मे मेरा सिर चक्कर खाने लगा। एक हजार डालर। मैं सोच रहा था कि सौ ही कहूँगा तो भाग जायेगा। भाग्य का चमत्कार इसको कहते हैं।

मेरा ध्यान कही और था, परन्तु तो भी कह ही गया, "मुझे पहले चित्र देख लेने दीजिये। दाम की बात बाद मे हो जावेगी।"

उसी रात मैं उस कमरे मे घडी, पेंसिलें और कागज लेकर बैठ गया, जहाँ से चलचित्र का सचालन होने को था। एकाग्र ध्यान से मैंने अपना काम प्रारम्भ किया। तीन घटे मे मैंने चलचित्र के सब दृश्यो की अवधि नोट कर ली। अँधेरा करके फिर चित्र देखने की जरूरत नही मालूम हुई।

मैंने कहा 'मेरा विश्वास है, मैं आपका काम कर सकता हूं। चित्र-प्रदर्शन के पहले स्वर-लिपियां पूरी करके मैं आपको दे दूंगा।"

प्रबन्धक ने कहा, "बहुत खूब ! अब बताइये, आप लेंगे क्या ?"

मैंने कहा, 'इसके लिए कुछ नही कहना। इसे आप ही तय करें। क्योकि आप देखें, यह काम इस समय मेरे लिए अत्यधिक आवश्यक है।"

मैंने अपनी मुसीबत बयान करनी शुरू की, पिछले सप्ताह मुझ पर क्या गुजरी और किस आशा तथा प्रार्थना से मैंने उस देवदूत की प्रतीक्षा की जो अब मेरे सामने था। मैंने सब सत्य ही कहा। वह बडे आश्चर्य से मुझे देखता रहा। अन्त मे मैंने यह भी कह दिया कि रकम के लिए तीन सप्ताह तक मैं प्रतीक्षा नही कर सकता।

कही उसने मुझे टोका नही, चुपचाप बैठा मेरी आंख की ओर देखता रहा।

एक क्षण पश्चात् उसने कहा, "ऐसी बात मैंने आजन्म कभी नही सुनी। विश्वास नही होता, परन्तु आप पर मुझे विश्वास करना है। मैं आपको ७५० डालर दे दूंगा, यदि आप तीन सप्ताह के भीतर अपना काम पूरा करने का वचन दें। प्रात काल उठने पर आपकी चेक बनाना मेरा पहला काम होगा।"

मुझे सदैव सर्वद्रष्टा सर्वज्ञ परमात्मा के अस्तित्व मे विश्वास रहा। अब मेरा विश्वास प्रत्यक्ष भी हुआ। रात की पाताल गाडी से लौटते समय आंखें बन्द किये भगवान को उसकी अनुकम्पा के लिए धन्यवाद देता रहा।

कुछ दिनो बाद डेट्रायट से मुझे तार मिला—कारमेन संगीत और चित्र की भारी सफलता। मिलूंगा अगले कामों के लिए तैयार हो जाओ।

मैं आकाश की ओर देर तक देखता रहा।

• • •

इसके बाद कई वर्षों तक यह कैफियत रही कि दफ्तर से आकर वर्ष के अधिकाश दिनो बाहर जाकर चलचित्रों की जाँच करता और स्वर-लिपियाँ तैयार करता। अधिकाश लिपियाँ फ़िशर-सूची से ही ली जातीं। इसलिए फ़िशर के प्रकाशनो की बिक्री अपूर्व बढी, तो मेरी सेवा से स्वामी की हित-रक्षा भी हुई। पहली बार मुझे भी रुपया पैदा करने का अनुभव होने लगा।

परन्तु एक दिन जुलाई १९१८ मे कार्ल फिशर साहब ने मुझे बुला भेजा। बूढे का मिजाज बिगडा हुआ था, "सुना है, तुम फिल्म-कम्पनियो का काम करते हो। मुझसे वेतन लेते हो और उनसे रुपया बनाते हो। यह नही होने का। इधर रहो या उधर।"

बहस का मौका न था। वह चाहते थे कि उनसे जो मुझे २१ डालर प्रति सप्ताह मिलते थे उसके बदले मे फिल्म-कम्पनियो से जो १२५ डालर बनाता था, उन्हें मैं त्याग दूँ। मुझे उनकी अन्तिम धमकी से दबना था या नौकरी छोडनी थी।

मैं बाहर निकल आया। उलझन और नैराश्य अवश्य था, परन्तु उत्साह में कमी न थी। अपना जीवन-मार्ग बदलने का निर्णय करने की समस्या अकस्मात् मेरे सामने आ गई। सोचने लगा—क्या मैं इसके लिए तैयार हूँ? बँधा वेतन भी मिलता है। जाना बूझा और प्रिय काम है, सयमित जीवन है। क्या यह सब त्यागने के लिए मैं तैयार हूँ? फिर करूँगा क्या? रवैया बदलना सम्भव न था, यदि सभव भी होता तो क्या उचित भी होगा?

यह स्थान और वहाँ के लोग मेरे जीवन के अग हो गये थे। यहाँ मैं नौसिखिया ही आया था, यही कष्ट और सघर्ष के पश्चात् सफल हुआ। अब यह क्या! समस्या का कोई हल भी है?

मुझे कोई हल दिखाई नही दिया। बूढा घड़ी का पाबन्द सेवक चाहता था, और मुझे समझ मे आया कि अब मैं घड़ी का पाबन्द नहीं रह गया। यो मुझे यह भयानक निर्णय करना पड़ा कि मैं संगीत-

प्रकाशन का धंधा स्वयं प्रारम्भ करूँ। अब से मेरा काम अपना ही काम होगा।

मैंने बूढ़े को अपना निर्णय नही बताया। उनसे मिलकर उनके पुत्र वाल्टर फिशर से मिला। वह कई वर्ष से मेरा निकटस्थ अफसर ही नहीं था, बल्कि जब से मुझे नमस्कार करके उसने मुझे तहखाने की कैद से निकाला था, तभी से मेरे हृदय मे उसके प्रति असीम श्रद्धा थी और मुझे उससे प्रोत्साहन मिलता रहा था। मेरी उसके प्रति हार्दिक स्नेह और कृतज्ञता की भावना थी।

वाल्टर फिशर ने सुहृद मुस्कान से मेरी बात सुनी। उसने मुझसे हाथ मिलाकर कहा, "यदि कभी भी कोई कठिनाई सामने आवे, तो मेरे पास अवश्य आना।"

थोडे ही समय के पश्चात् मुझे इस वचन के याद करने की जरूरत पडी।

• • •

प्रकाशन का धन्धा शुरू करने पर मैंने एस० एम० बर्ग नामक एक व्यक्ति से साझा किया क्योकि फिल्मो के लिए स्वर-लिपि बनाने की कला में वह मेरे प्रारम्भिक अनुगामियो मे रहा था। हमारी दुकान शीघ्र ही चलने लगी और काम भली प्रकार जम गया। परन्तु कुछ समय पश्चात् मेरी समझ मे आया कि बर्ग से मेरा सहयोग निभने का नही। हमारे पारस्परिक मतभेद बढने लगे और साझा समाप्त करने मे ही मतभेद का हल हमें दिखाई दिया। अन्तत हम दोनो ने यह तय किया कि हम मे से कोई अपना हिस्सा दूसरे के हाथ १०,००० डालर मे बेच दे, और रकम ३० दिन के भीतर अदा कर दी जाये।

प्रात काल मैं वाल्टर फिशर से मिला, "आपने कहा था कि कठिनाई सामने आने पर मिलना। कठिनाई सामने है। आप से १०,००० डालर उधार माँगने हैं।"

कुर्सी की पीठ पर सहारा देकर उन्होंने छत की ओर देखते हुए निश्चयात्मक भाव से पूछा, "रकम चाहते हो किस लिए ?"

मैंने फिशर का काम छोडने के बाद का पूरा अनुभव उन्हे बताया, और वह ध्यानपूर्वक सुनते रहे। सुहृदय मुस्कान के साथ बोले, "व्यवसाय में मैं तुम्हारा प्रतिद्वन्द्वी हूं। कभी किसी और ने अपने प्रतिद्वन्द्वी से आर्थिक सहायता की प्रार्थना नही की। तो भी, जमानत की बात कहो।"

मैंने कहा, "मेरे पास जमानत कहां ?" परन्तु एक घण्टे बाद, वापस होने के पहले १०,००० डालर मुझे मिल गये। मैंने ५,००० डालर पर अपने धन्धे का ४६ प्रतिशत उनके हाथ बेच दिया था, और मेरे ही विश्वास पर उन्होंने मुझे बाकी ५,००० डालर उधार दे दिये थे।

फिशर साहब ने जो कुछ मेरे लिए किया, उस पर अफसोस करने का मौका मैंने उन्हे नही दिया। वर्षो तक तो जो लाभ मैं उन्हे बांटता रहा उसका जोड उनकी लागत का कम-से-कम पन्द्रह गुना पहुंचा और जब १९४६ मे उनकी मृत्यु के पश्चात् मैंने उनके शेयर वापस लिये तो एक बडी अतिरिक्त रकम मैंने उनके उत्तराधिकारियों को अदा की।

● ● ●

आज मेरी प्रकाशन-सस्था का सगीत-क्षेत्र मे एक स्वतन्त्र महत्त्व है। हम दोनो—क्लारा और मैं—धन से सम्पन्न हैं। हमारे बच्चो को अच्छी शिक्षा मिली है। उनके वैवाहिक जीवन सुखी हैं, उनके अपने बच्चे हैं, अपने-अपने घर भी हैं।

परन्तु भौतिक सफलता, शारीरिक सुख और बाहरी तडक-भड़क का कोई महत्व नही यदि साथ ही हार्दिक और मानसिक आनन्द न हो और आध्यात्मिक शान्ति का अभाव हो। क्लारा से विवाहित होकर मुझे हार्दिक आनन्द मिला है और सयमित जीवन तथा स्वर्गीय माता-पिता के पावन स्मरण मे मुझे आध्यात्मिक शान्ति मिलती है।

ब्रुकलिन के वाशिंगटन कब्रिस्तान मे एक दूसरे को स्पर्श करते दो विशाल प्रस्तर-स्मारक हैं। एक पर अंकित है--**तुम अभी तक बर्नार्ड विक्लर की धर्मपत्नी हो।** और दूसरे के शब्द इस प्रकार हैं—**मैं अभी तक फैनी विक्लर का पति हूँ।**

कारपेथिया के पर्वतीय प्रदेश से यहाँ और आज तक का मार्ग (देश और काल के नाते) बहुत लम्बा रहा। परन्तु इस मार्ग मे मैंने जो कुछ कष्ट पाये या जो भी मेरी परीक्षाएँ हुई, तो उनका पुरस्कार भी मुझे मिला। मेरी जीवन-यात्रा कठिन रही, तो आनन्दमय भी रही। आज पुण्य-दिवस के प्रातःकाल जब अपने अतीत का स्मरण करता हूँ तो मुझे विश्वास होता है कि जो अतीत मेरा रहा, वह प्रत्येक अमरीकी नागरिक के लिए सम्भव था, है और रहेगा। संसार का कोई अन्य देश कठिन परिश्रम का इतना भारी पुरस्कार नही देता।

चिकित्सा का चमत्कार
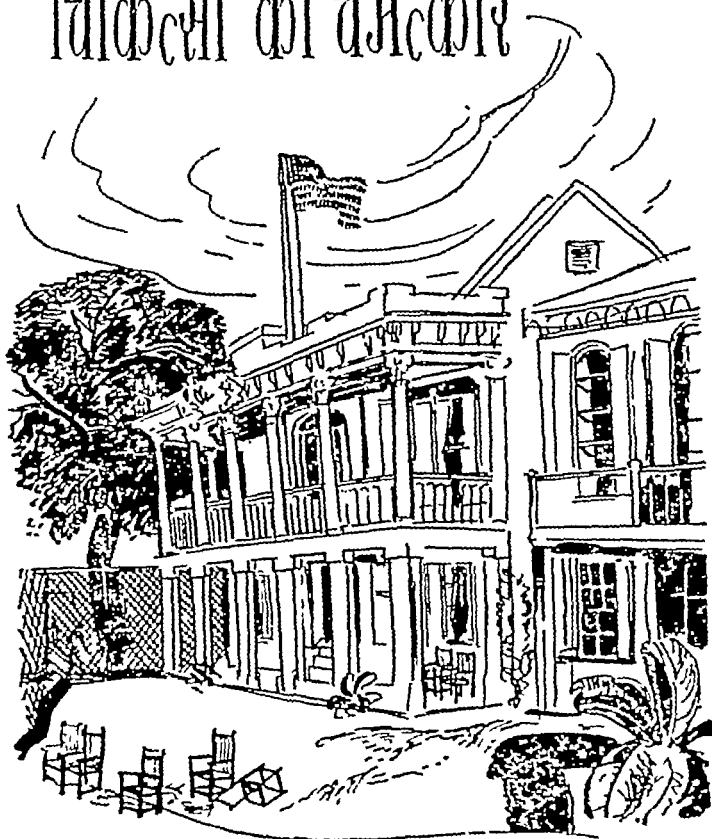
(वेट्टी मार्टिन की पुस्तक 'मिरैकिल ऐट कारविल' का सार)

लेखिका को १६ वर्ष की अवस्था में जब मालूम हुआ कि उन्हें कुष्ठ-रोग है तो उन पर वज्र-सा गिर पड़ा। पर सराहनीय साहस के साथ वह निराशा और उन बर्बरतापूर्ण पूर्वाग्रहों के विरुद्ध लड़ीं जो चारों ओर से उन्हें घेरे हुए थे। इस पुस्तक के बारे में न्यूयार्क 'टाइम्स' ने लिखा था : "यह मनुष्य की आशाओं, अस्थायी विफलताओं, नैराश्य और उसकी विजय की मर्मस्पर्शी तथा रोमांचकारी कहानी है।"

चिकित्सा का चमत्कार

अमरीका की विशाल मिसिसिपी नदी के मुहाने के निकट न्यू आर्लियस नामक नगर है। यही मेरे १६ वर्ष के होने पर बडे दिन के समारोह से मेरी आत्मकथा प्रारम्भ होती है। इस बडे दिन का उत्सव मुझे सबसे अधिक उल्लासपूर्ण लगा, क्योकि मुझे पहली बार एक सुहृद युवक के प्रणय का अपूर्व आनन्द प्राप्त हुआ। युवक का नाम था रावर्ट। वह उस समय मेडिकल कॉलिज का विद्यार्थी था। उससे मेरी सगाई हो चुकी थी। इसलिए वह हमारे पारिवारिक भोज मे सम्मिलित था और सगाई के पश्चात् यह प्रथम सहभोज था, अतएव रौनक भी विशेप मात्रा मे थी। भोजन के पश्चात् हम लोगो ने बडे दिन पर गाये जानेवाले प्राचीन गीत गाये। फिर अपने-अपने धन्धो की बातें करने या ताश खेलने के लिए पुरुप एक ओर हुए और बच्चे पटाखे छुटाने घर के बाहर निकल गये। हम दोनो—रावर्ट और मैं—मर्डी ग्रास मे होने-वाले अपने विवाह की बातें करने लगे।

एक ही घटना छाया जैसी मेरे ऊपर से निकल गई। पियरे चाचा डॉक्टर थे। वह आये, परन्तु माँ से टूटे-फूटे शब्दो मे क्षमा-याचना की, मेरा विशेप रूप से चुम्बन किया और तुरन्त ही चले गये। उसी सध्या को उन्होने पिता को फोन किया कि आकर हमसे मिलो। पिता को हम सब एक स्वर से मना भी करते रहे, परन्तु वह तुरन्त चल दिये और रात को बहुत देर मे लौटे। कई वर्षो बाद माँ ने मुझे बताया कि जब

वह घर लौटे, तब मेरी माँ से लिपटकर रोने के अतिरिक्त वह कुछ कह न सके। कहती थी कि उनकी दो दिन और दो रातें बराबर रोते ही बीती।

मैं एक सप्ताह पहले थोडी देर के लिए एक डॉक्टर से मिलने गई थी। कई महीनो से जाँघ के पिछले भाग मे कुछ हलके गुलाबी धब्बों ने मैं परेशान थी। बहुत सफाई-पसन्द रही थी और शरीर पर किसी प्रकार के धब्बे मुझे कभी देखने मे नही आये थे। इसलिए त्वचा के विशेषज्ञ डॉक्टर फैरे से मैं मिली। उन्होंने मुझे एक रक्त-निरीक्षक के पास भेजा। मैंने अपने धब्बे उन्हे दिखाये। उन्होने वहाँ से रक्त की एक-दो बूँदें अपने शीशे के प्लेट पर ली। फिर कान के निचले भाग मे हलका-सा नश्तर किया। मुझे कुछ आश्चर्य हुआ।

उन्होंने पूछा, "इधर इसमे खुजली तो नही मालूम हुई ?"

मुझे याद आया कि कभी-कभी अनजाने ही मैंने कान इतना खुजला डाला था कि उसमे खून छलछला आया।

नश्तर के पश्चात् जब डाक्टर ने भीतरी भाग खुरचना प्रारम्भ किया, तो बडी चतुराई से बोले, "या तो तुम बहुत सहनशील हो या खुरचने से तुम्हें कोई कष्ट नहीं हो रहा।" जब मैंने उन्हे विश्वास दिलाया कि मुझे कोई कष्ट नही मालूम होता तो अपने अणुवीक्षण यन्त्र के नीचे मेरे रक्त से प्राप्त जिन कीटाणुओ को वह देख चुके थे, उनके विषय मे उनका मत पक्का हो गया। परन्तु डाक्टर साहब की मुख-मुद्रा मे कोई फर्क नहीं आया। विदा होते समय उन्होंने मुझसे हाथ मिलाया और साधारण ढग से कह दिया कि डाक्टर फैरे को रिपोर्ट भेज दूँगा। बडे दिन पर चाचा पियरे के विचार-व्यवहार का सम्बन्ध मैं इन घटनाओ से नही जोड सकी।

कई वर्षों पश्चात् मुझे पता लगा कि डाक्टर फैरे ने पियरे चाचा को कितना कठिन और दुखद निर्णय सुनाया था। उनका आदेश हुआ

कि लडकी को तुरन्त न्यू ग्रार्लियस के बाहर ले जाग्रो, नही तो रोग की छूत सारे नगर मे फैल जायेगी।

मुझे ग्रपने दुर्भाग्य का पता न था। राबर्ट ही ग्रन्तत मुझे उसकी सूचना देने के लिए प्रस्तुत हुग्रा। वह मुझे ग्रार्लियस क्लब के एक नृत्य मे ले गया, जिसमे केवल उस क्लब के सदस्य ही भाग ले सकते थे। मुझे याद है कि नृत्य के लिए मैंने ग्रपनी ग्रादत के ग्रनुसार किनारी टँका छोटा ही फ्राक पहना ग्रौर राबर्ट ने गुलाबी फूलो से मुझे सजाकर कहा कि तुम बहुत सुन्दर लगती हो। इसमे कोई सन्देह नही कि देखने में मैं बहुत ही स्वस्थ लगती थी। नृत्य के पश्चात् बाजार जाकर जलपान करना हम लोगो की ग्रादत थी। सो न करके मोटर पर सीधे हम घर पहुँचे।

घर मे शान्ति थी। माता पिता सोने चले गये थे। बैठक मे हलकी रोशनी हो रही थी। राबर्ट ने ग्रपनी बाँहे मेरे गले में डाल दी। मैं समझ गई कि कुछ कहने को है। वह वडे धैर्य से बोला, "प्रिये, तुम्हे कुष्ठ हो गया है।" बात करते-करते उसका मुख बेतरह उतर गया था।

उसे मुझे सँभालना पडा। पूर्ण रूप से मैं बेहोश नही हुई। क्या कहा—कुष्ठ? ऐसा लगा मानो धब्बे मेरे मस्तिष्क मे फैल गये हो। नही, नही, कुष्ठ रोग भारत मे होता हो या चीन मे, परन्तु इस देश मे ग्रौर मुझे—नही।

इस उलझन मे राबर्ट बराबर मुझे भयभीत दृष्टि से निहारता रहा। वह डाक्टरी का विद्यार्थी था ही, परन्तु जब मुझे उसने साँस लेते देखा तो डाक्टरी लहजा छोडकर वह शीघ्रता से कह गया, "प्रिये, तुम्हे बाहर जाना है, थोडे ही दिनो मे तुम चगी हो जाग्रोगी, तब ग्रा जाना।" उसने मुझे कसकर छाती से लगा लिया ग्रौर बोला, "मैं तुम्हारी प्रतीक्षा करता रहूँगा।"

राबर्ट के जाने के पश्चात् हलके पैरो ग्रधेरा घर पार करके मैं ग्रपने कमरे मे पहुँची ग्रौर पलग पर लेट गई। चैतन्यता प्राप्त हुई

और परिस्थिति का ज्ञान हुआ, तो शरीर की नस-नस मे ऐंठन होने लगी। समझ मे कुछ आता न था। भय से पराभूत मैं एक कांपती गठरी-सी हो गई। मुझे कोढ़ की कोई जानकारी न थी। किसी का पता भी न था जो मुझे उसके विषय मे बता सके। अपनी बाइबिल की याद आई जहां फटे कपडे पहने, घण्टी बजाकर आस-पास के लोगों को सचेत करते, रोगग्रस्त यात्रियो का विवरण है। वे कहते कि हम अस्वच्छ हैं—हमसे बचो। तो क्या मैं अस्वच्छ हूं। मैं तो नित्य गरम जल मे देर तक स्नान करती थी और घण्टो अपने नाखूनो तथा बालों को सँवारा करती थी। स्वजन तो मुझे अपनी सजी गुडिया जैसा चाहते रहे।

रात-भर नींद नहीं आई। रोती और कांपती रही। रह-रहकर मैं अपने से यही पुराने प्रश्न पूछती रहती। यह रोग कैसे हुआ और मुझे ही क्यो हुआ? मैंने अपने १९ वर्ष के सुखमय जीवन मे कौन-सा ऐसा पाप किया जो मैं अन्धकारमय अतीत के इस नरक मे ठेल दी गई? अपने जीवन मार्ग की याद करती, और मुझे कोई स्थान या समय याद न आता जब यह दुष्ट छूत आगे बढकर मेरे गले लगी।

• • •

न्यू आर्लियस से कई मील दूर मिसिसिपी नदी के किनारे एक निर्जन स्थान पर बैटन रूज के नीचे कुष्ठ-रोगियो के लिए कारविल का राष्ट्रीय चिकित्सालय है। १५ जनवरी, १९२८ को इस चिकित्सालय मे अलग रहकर चिकित्सा के लिए मेरी यात्रा प्रारम्भ हुई। धूप खिली हुई थी, मां मुझे ले जा रही थी और राबर्ट हम दोनों के साथ था। मैंने कभी कारविल का नाम भी नहीं सुना था, नाम ही से मैं डरी हुई थी। परन्तु अपने सगे-सम्बन्धियो से अलग होने के लिए मैं आतुर थी, क्योंकि मुझे अपने रोग से उनकी रक्षा करनी थी।

हमारी यात्रा गुप्त रखी गई। मेरे रोग से समाज की दृष्टि मे हमारा पूरा परिवार पतित हो जाता। अतएव परिवार के सदस्यो के अतिरिक्त परिवार के अन्य अभिन्न मित्र रावर्ट को ही मेरा पता रहा। अन्य हितैषियो को यही बताया गया कि यक्ष्मा के सन्देह के कारण ही मैं बाहर स्वास्थ्य-सुधार के लिए भेज दी गई हूँ। मेरी एक चाची सयुक्त राज्य अमरीका के अन्य प्रदेश मे रहती थी। मेरा पता सबको उन्ही की मारफत बताया गया। मेरे नाम की चिट्ठियाँ उन्हे पहुँचती और वह उन्हे मुझे भेज देती।

यो उस कपट-जाल का सिलसिला चला जिसके भीतर मुझे अपने जीवन के वहुत से दुखद वर्ष बिताने पडे।

कारविल की यात्रा काफी लम्बी थी। सडक पर खाँचो की कमी न थी। मोटर उछलती चलती तो राबर्ट अपनी बाँह का सहारा मुझे देता चलता, जिससे मुझे असीम सुख का अनुभव होता। समुद्रतट पर मिसिसिपी का जल-त्रिकोण किसी समय समृद्ध रहा था। नदी के किनारे जमीदारो के विशाल भवन बने थे। इनमे अधिकाश उजड गये थे। नदी तट के माथ-साथ घूमती सडक से उजडे भवनो के दृश्य मुझे बहुत भले लगते थे। परन्तु इस समय हृदय मे अन्धकार के कारण मैंने कुछ देखा नही। सडक भयानक मालूम होती और भावी दण्ड की कल्पना से क्षीण होती विमूढ दृष्टि से मैं अपने भावी कारागार की प्रतीक्षा मे आगे की ओर ताकती ही रही।

नदी के किनारे-किनारे लगभग ८० मील की यात्रा के पश्चात् एक सुन्दर मोड पार करने पर हमे कुष्ठ रोग का राष्ट्रीय चिकित्सालय दिखाई पडा। शानदार वाँझ के पेडो से घिरे पुराने ढग के विशाल भवन मे चिकित्सालय है। इस चिकित्सालय के चारो ओर लकडी की इधर-उधर विखरी कुटियाँ और दो गिर्जाघर हैं, और ये सव इमारतें पग-डडियो द्वारा चिकित्सालय से सम्वन्धित हैं। एक चहारदीवारी इन्हे घेरे है, और दीवार के ऊपर भी काँटेदार तार का जाल है, जिससे रोगी

आसानी से भाग न निकलें। मिसिसिपी के एक घुमाव मे वसी इस छोटी-सी दुनिया का नाम कारविल है।

चिकित्सालय के शासन विभाग मे नर्सो की अध्यक्षा सिस्टर कैथरिन ने हमारा स्वागत किया। इन्होने मुझे छाती से लगाया और वडी कोमलता से चूमा, फिर उन्होने मुझे गिर्जाघर चलने को कहा, जहाँ मैंने उन्हे प्रार्थना करते सुना कि मैं शीघ्र चगी हो जाऊँ। उनके साथ हम भी चुपचाप प्रार्थना करते रहे। मुझे जो कुटी दी गई, उसकी एक कोठरी में मैंने असवाव रख दिया और माँ तथा रावर्ट को विदाई का नमस्कार किया। मैंने वचन दिया कि मैं अपना मिजाज ठीक रखूँगी, आदेशो का पालन करूँगी, और चगी होते ही घर वापस आ जाऊँगी। हम 'थोडे ही दिनो के लिए' एक दूसरे से अलग हुए।

दोनो को मोटर पर विदा होते देखने के लिए मैं पगडडी पर आगे वढकर अकेली खडी हो गई। इसके वाद आँखों मे आँसू भरे अपनी कुटी को लौट आई। प्रत्येक कुटी मे १२ रोगियो के रहने की व्यवस्था थी, और मैंने देखा कि कुटी के आगे सदर दरवाजे पर पहले मेरी कुछ ही सगिनियाँ इकट्ठी हुई थी। सो अव वाकी भी वहाँ पहुँच गई थी। मैंने सगिनियो की ओर देखा, जिनके साथ मुझे कारविल मे जीवन व्यतीत करना था और पहली वार मुझे विगडे चेहरो की झलक मिली। छोटी ही सी वात थी, परन्तु मेरे होश उड गये, और मैं वैठक से दौड़ती हुई अपने कमरे मे जा वैठी।

एक औरत मेरे पीछे पीछे थी, और मेरे साथ ही घर के भीतर चली आई। मैं उसकी ओर ध्यानपूर्वक न देख सकी, परन्तु उसकी दशा मुझसे छिपी न थी। रोग से उसकी दृष्टि और वोली मे फर्क आ गया था और उसने काँपते स्वर मे कहा, "मैं जव यहाँ आई थी तो तुम्हारी जैसी थी और अव मेरी हालत देखो।"

उस रात दु स्वप्न से घिरी मेरी दृष्टि ने इस स्त्री का विगडा मुख हटता नही दिखता था और उसका अन्तिम वाक्य वरावर मेरे कान मे

गूँजता रहा, 'अब मेरी हालत देखो !' जब से मुझे अपने रोग का पता लगा था तभी से एक रात भी मुझे नींद नहीं आई थी। भावना की उलझनों ने जब मुझे भली-भाँति थका दिया, तब मुझे एकाएक गहरी नींद आ गई। कदाचित् मेरी सहनशक्ति तब तक समाप्त हो चुकी थी।

• • •

प्रातःकाल साढे छः बजे यह दृढ निश्चय लेकर उठी कि मैं चंगी हो जाऊँगी और कारविल की घृणात्मक कठिनाइयाँ मुझे थोडे ही समय तक सहनी हैं—किसी ने कह दिया था कि अधिक-से-अधिक छः महीने। मैंने निश्चय कर लिया कि नियमों की पाबन्दी करूँगी, चिकित्सा मन लगाकर कराऊँगी, और प्रार्थना का सर्वोपरि महत्त्व मानूँगी।

नित्यकर्म का सब सामान लेकर मैं स्नानघर की ओर गई। दिन के प्रकाश में कुटी मुझे गन्दी और बदबूदार जान पडी। सफाई का काम एक नौकरानी के सुपुर्द था, परन्तु उसका रोग बहुत बढ़ गया था, जिस कारण उसका काम पूरा होने से रह जाता था। मैं सोचने लगी, कब तक इतनी गन्दगी मैं सहन कर सकूँगी।

सात बजे नाश्ते की घण्टी बजी और हम भोजनालय की ओर चले। पहली बार रोगी मुझे बडी संख्या में दिखाई पडे। किसी के चेहरे बिगड गये थे, किसी के कान विकृत हो गये थे, कुछ की दृष्टि लोप हो रही थी, कुछ की उँगलियाँ गल चुकी थीं और बहुतों के हाथ टेढे पड गये थे—और ये सब रोग के प्रत्यक्ष और नियमित लक्षण थे। जिन रोगियों की हालत बहुत बुरी थी, जो अन्धे थे या पलंग से उठने योग्य न थे, उन्हें भोजन उनके स्थान ही पर पहुँचाया जाता था। मुझे कुछ सन्तोष हुआ कि जिस भयावह दशा की मैंने कल्पना की थी, उतनी मुझे दिखाई नहीं दी। परन्तु इतना तो कष्टमय आभास मुझे हुआ ही कि सब लोग मुझे ही देख रहे हैं। अतएव वहाँ भोजन करना मैं सहन

न कर सकी। अपना भोजन लेकर मैं कमरे मे चली आई जहाँ अकेले भोजन करना मेरे लिए सम्भव था।

एक घण्टे बाद अपने रोग का ब्यौरा देने के लिए मुझे दफ्तर जाना पडा। सिस्टर लौरा ब्यौरा लिखने के काम पर नियुक्त थी। देखकर ही मैं उसके प्रति आकृष्ट हुई। वह अभी नवयौवना ही थी और उसकी सुन्दर नीली आँखें वैसी ही आत्मा की परिचायक थी। उसने मेरा नाम पूछा तो अपरिचित 'वेट्टी पार्कर' मेरे मुख से अटपटा निकला। परिवार ने निर्णय किया था कि मैं इसी नाम से कारविल में रहूँ। उसने कोई सन्देह प्रकट नही किया, यद्यपि समझ तो वह गई ही। न्यू आर्लियन्स के एक डाक्टर के पते को अपना पता बताया। उन्होने मुझे अनुमति दे दी थी, क्योकि वे नही चाहते थे कि मेरे दुर्भाग्य से मेरा परिवार किसी प्रकार कलंकित हो। आरम्भ ही से मेरा निश्चय था कि किसी को मेरा पता न लगे।

सो मेरे विषय में जो बातें मेरे ब्यौरे मे गई वे असत्य थी। यही कैफ़ियत अन्य रोगियो की भी थी।

इसके बाद मुझे प्रबन्धक से मिलना पडा। यह थे डॉक्टर फ्रेडरिक ऐन्ड्र जो हैंसन जो आगे चलकर मेरे परम हितैषी हुए। उस समय तो मैंने यही जाना कि डॉक्टर 'जो' निजी तौर पर मेरी कुशल कामना करते हैं, जिससे उन पर मुझे पूरा विश्वास हो गया। उन्होने देखा कि मैं बहुत भयभीत हूँ तो उन्होने सहानुभूतिपूर्वक कहा "कोई बात परेशानी की नही।" ध्यानपूर्वक परीक्षा करने के पश्चात् उन्होने सप्ताह मे दो बार मेरे लिए चालमूगरा तेल की सुई लिख दी, क्योकि उस समय चिकित्सा-शास्त्र मे रोग का कोई और इलाज न था। भोजन के साथ इस तेल की कुछ बूँदें भी मेरे लिए लिखी गईं।

जब ११ बजे भोजन की घण्टी बजी तो प्रतीक्षा मे खडी कई महिलाओ से मैं बात करने लग गई। एक ने टिप्पणी की, "भोजन कमरे मे ले जाकर खाना मुझे कुछ बेढगा-सा मालूम होता है।" मुझमे

गूँजता रहा, 'अब मेरी हालत देखो !' जब से मुझे अपने रोग का पता लगा था तभी से एक रात भी मुझे नीद नही आई थी। भावना की उलझनो ने जब मुझे भली-भाँति थका दिया, तब मुझे एकाएक गहरी नीद आ गई। कदाचित् मेरी सहनशक्ति तब तक समाप्त हो चुकी थी।

• • •

प्रातःकाल साढे छ बजे यह दृढ निश्चय लेकर उठी कि मैं चगी हो जाऊँगी और कारविल की घृणात्मक कठिनाइयाँ मुझे थोडे ही समय तक सहनी हैं—किसी ने कह दिया था कि अधिक-से-अधिक छ महीने। मैंने निश्चय कर लिया कि नियमो की पाबन्दी करूँगी, चिकित्सा मन लगाकर कराऊँगी, और प्रार्थना का सर्वोपरि महत्त्व मानूँगी।

नित्यकर्म का सब सामान लेकर मैं स्नानघर की ओर गई। दिन के प्रकाश मे कुटी मुझे गन्दी और बदबूदार जान पडी। सफाई का काम एक नौकरानी के सुपुर्द था, परन्तु उसका रोग बहुत बढ़ गया था, जिस कारण उसका काम पूरा होने से रह जाता था। मैं सोचने लगी, कब तक इतनी गन्दगी मैं सहन कर सकूँगी।

सात बजे नाश्ते की घण्टी बजी और हम भोजनालय की ओर चले। पहली बार रोगी मुझे बडी सख्या में दिखाई पडे। किसी के चेहरे बिगड गये थे, किसी के कान विकृत हो गये थे, कुछ की दृष्टि लोप हो रही थी, कुछ की उँगलियाँ गल चुकी थी और बहुतो के हाथ टेढे पड गये थे—और ये सब रोग के प्रत्यक्ष और नियमित लक्षण थे। जिन रोगियो की हालत बहुत बुरी थी, जो अन्धे थे या पलग से उठने योग्य न थे, उन्हे भोजन उनके स्थान ही पर पहुँचाया जाता था। मुझे कुछ सन्तोष हुआ कि जिस भयावह दशा की मैंने कल्पना की थी, उतनी मुझे दिखाई नही दी। परन्तु इतना तो कष्टमय आभास मुझे हुआ ही कि सब लोग मुझे ही देख रहे हैं। अतएव वहाँ भोजन करना मैं सहन

न कर सकी। अपना भोजन लेकर मैं कमरे मे चली आई जहाँ अकेले भोजन करना मेरे लिए सम्भव था।

एक घण्टे वाद अपने रोग का व्योरा देने के लिए मुझे दफ्तर जाना पडा। सिस्टर लौरा व्योरा लिखने के काम पर नियुक्त थी। देखकर ही मैं उसके प्रति आकृष्ट हुई। वह अभी नवयौवना ही थी और उसकी सुन्दर नीली आँखें वैसी ही आत्मा की परिचायक थी। उसने मेरा नाम पूछा तो अपरिचित 'वेट्टी पार्कर' मेरे मुख से अटपटा निकला। परिवार ने निर्णय किया था कि मैं इसी नाम से कारविल मे रहूँ। उसने कोई सन्देह प्रकट नही किया, यद्यपि समझ तो वह गई ही। न्यू आर्लियन्स के एक डाक्टर के पते को अपना पता वताया। उन्होने मुझे अनुमति दे दी थी, क्योकि वे नही चाहते थे कि मेरे दुर्भाग्य से मेरा परिवार किसी प्रकार कलंकित हो। आरम्भ हा से मेरा निश्चय था कि किसी को मेरा पता न लगे।

सो मेरे विषय मे जो बातें मेरे व्योरे मे गई वे असत्य थी। यही कैफियत अन्य रोगियो की भी थी।

इसके वाद मुझे प्रवन्धक से मिलना पडा। यह थे डॉक्टर फ्रेडरिक ऐन्ड्र जो हँसन जो आगे चलकर मेरे परम हितैषी हुए। उस समय तो मैंने यही जाना कि डॉक्टर 'जो' निजी तौर पर मेरी कुशल कामना करते हैं, जिससे उन पर मुझे पूरा विश्वास हो गया। उन्होंने देखा कि मैं वहुत भयभीत हूँ तो उन्होने सहानुभूतिपूर्वक कहा, "कोई वात परेशानी की नही।" ध्यानपूर्वक परीक्षा करने के पश्चात् उन्होने सप्ताह मे दो वार मेरे लिए चालमूगरा तेल की सुई लिख दी, क्योकि उस समय चिकित्सा-शास्त्र मे रोग का कोई और इलाज न था। भोजन के साथ इस तेल की कुछ वूँदें भी मेरे लिए लिखो गई।

जव ११ वजे भोजन की घण्टी वजी तो प्रतीक्षा मे खडी कई महिलाओ से मैं वात करने लग गई। एक ने टिप्पणी की, "भोजन कमरे में ले जाकर खाना मुझे कुछ वेढगा-सा मालूम होता है।" मुझने

कोई उत्तर नही बना तो यह कहकर टाल दिया कि डॉक्टर ने मुझे कह दिया है कि मुझे यहाँ छ महीने से अधिक नही रहना।

उनकी आँखें एक साथ चमकी जब एक ने कहा, "यह तो डॉक्टर सदैव ही कहते हैं।"

मैंने पूछा, "यहाँ आप कब से हैं ?" उनका उत्तर पाने के पहले ही अपनी अन्तर्दृष्टि से मैं समझ गई कि यह महिला वहाँ कम-से-कम बीस वर्ष से अर्थात् मेरे जन्म के पहले से हैं। उनके वाल सफेद हो गये थे और उनके मुँह पर मुहाँसे जैसे दाग थे।

परन्तु अपने कमरे मे जाकर मैं अपने को समझाने लगी कि इतना समय मुझे नही लगने का क्योकि मैं तो भगवान् की शरण में हूँ। मैं मन लगाकर चिकित्सा कराऊँगी और प्रत्येक आज्ञा का हृदय से पालन करूँगी। विशेष रूप से शात रहूँगी, भोजन मे सयम बरतूँगी और उस शरीर के बारे मे अपना ज्ञान बढाऊँगी जिसने मुझे धोखा दिया है। राबर्ट को चिट्ठी लिखने बैठी। यह उसके नाम मेरा पहला पत्र था। मैंने अपना हृदय खोलकर उसके सामने रख दिया। लिखा, मेरा शरीर ही कारविल मे है, हृदय नही।

● ● ●

कारविल मे मेरा प्रथम मास कष्टदायक ही रहा और वहाँ की जीवन-चर्या मे मैं भली प्रकार खप नही सकी। मैं प्रत्येक आदेश का अक्षरश पालन करती। मैंने कुष्ठ के विपय मे वहुत कुछ पढा। इस रोग का आधुनिक और वैज्ञानिक नाम है—"हैंसन" अन्वेषित रोग। मुझे यह पढकर आश्चर्य हुआ कि इस रोग की छूत वहुत जल्दी नही फैल पाती। १४५ से अधिक व्यक्तियो के रोग-कीटाणुओ की सुइयाँ लगी, परन्तु किसी को यह रोग नही हुआ। कारविल के किसी चिकित्सक या परिचारिका को कभी भी इस रोग की छूत नही लग पाई। वयस्को की अपेक्षा वच्चो को छूत अधिक शीघ्र लग जाती है। विशेपज्ञो का

विश्वास है कि बचपन मे किसी रोगी के सम्पर्क मे बहुत अधिक रहने पर रोग की छूत लग जाती है।

जब प्रति मास रक्त की जाँच होने पर लगातार बारह परीक्षाओ में रोग के कीटाणु न मिलें तो रोगी चगे मान लिये जाते हैं।

डॉक्टर जो मुझसे बोले, "तुम भाग्यशालिनी हो, तुम्हारा रोग प्रारम्भिक अवस्था मे ही है। परीक्षा का नकारात्मक फल कदाचित् शीघ्र ही मिलने लगे। परीक्षाएँ आम तौर से एक वर्ष तक चिकित्सा करने के पश्चात् प्रारम्भ होती हैं। तुम्हारी परीक्षा छ महीने की चिकित्सा के पश्चात् ही प्रारम्भ कर दी जायेगी।"

डॉक्टर जो प्रसन्न दिखाई दिये। अपनी समझ से उन्होंने मुझे बहुत प्रिय खबर सुनाई, परन्तु यदि उनकी आशानुसार ही चिकित्सा का प्रभाव हो, तो भी कारविल मे डेढ वर्ष लगेगा ही। सगाई के पश्चात् इतनी लम्बी प्रतीक्षा बहुत हुई।

मैं यह सुनकर प्रोत्साहित हुई कि श्रीमती ब्लेक नामक एक रोगिणी, जिनसे मैं मिल चुकी थी, चगी होकर कारविल-निवास से मुक्त की जा रही हैं। वह सुशील और कुशाग्र बुद्धि थी और कारविल के रोगी बच्चो को पढ़ाती थी। सिस्टर मर्था के जिम्मे रोगियो को धधे से लगाने का काम था। मैं चकित हुई जब उन्होने मुझे बच्चो को पढाने का काम लेने के लिए कहा। कुछ हिचकिचाहट के पश्चात् मैंने स्वीकार कर लिया। अकस्मात् मैं मास्टरनी हो गई और रोज प्रात काल दो घटे पढाने के मुझे २५ डालर प्रतिमास मिलने लगे।

क्रमश दैनिक चर्या की अभ्यस्त हो गई। राबर्ट के पत्र मैं बार-बार पढती और घर को पत्र लिखती तो वे भी आशापूर्ण होते। शिक्षण-कार्य मुझे रोचक लगा, दिन मे यथेष्ट लेटती और पढ़ती, या अपने से बडी एक रोगिणी से बातें करने चली जाती। वह न्यू आर्लियस की थी और मेरी माता की सहपाठिना रह चुकी थी, इस कारण मेरी उनसे घनिष्ठता बढ़ गई थी। न्यू आर्लियन्स मे उनके मित्रो का विश्वास

था कि वह योरप की सैर कर रही हैं, यद्यपि थी वह मेरे साथ। अधिकाश रोगी पुराने चलचित्र देखने जाते जो सप्ताह मे तीन बार गदे और झीगुरो से भरे मनोरजन-भवन मे दिखाये जाते थे। मैं इन्हे देखने नही जाती थी। अकसर नाच होते तो उनमे भी मैं न जाती, यद्यपि नाचघर के पास होकर जब गुजरती और बाजे सुनती तो मेरे पैर नृत्य के लिए मचलने लगते। परन्तु फिर सोचती कि कारविल मे कौन है जिसके साथ मैं नाचूँ।

इस समय तक मुझे पता लग गया था कि जो ऊँची चहारदीवारी ससार से कारविल को अलग किये हुए थी, वह अपने भीतर परनिन्दा और प्रणय के पचडे भी घेरे हुए थी। कारविल के भीतर प्रणय चलता रहता, प्रेमियो की जोडियाँ कभी कभी रात के समय मुझे सामने से निकलते दिखाई देती और मैं लडकियो के कौमार्य और लोकाचार की रक्षा के अभाव के विरुद्ध होठ दबाकर अपनी भावना व्यक्त करती। थोडे समय पश्चात् मेरी समझ परिष्कृत हुई तो दोष देना कम हुआ।

० ० ०

कारविल के अप्राकृतिक वातावरण मे समय बीतता गया। वसन्त आया, बडे-बडे पेडो मे कोपलें चमकने लगी, और वायु चमेली तथा मेगनोलिया से सुगन्धित हुई, टेनिस और विभिन्न खेलो जैसे नये-नये मनोरजनो मे रोगी नर-नारी व्यस्त रहने लगे, परन्तु मैंने इनमे कोई भाग नही लिया।

जून का अन्तिम सप्ताह आया, उमस के कारण पसीना वहने लगा, और उत्साह भग होने लगा, अस्पताल वहाँ है जहाँ पहले एक दलदल था और मिसिसिपी नदी उसे तीन ओर से घेरे हुए है। इस कारण वहाँ नमी वहुत रहती है। मुझे लम्वे और गरम दिन वहुत बुरे लगते थे। कोई भी भोजन सामने आता तो अरुचि के कारण मुझसे खाते न वनता। और चालमूगरा तेल से तो इतनी घृणा हो

गई कि वह कठिनाई से मेरे गले से उतरता। मैं रात-दिन अपने पारिवारिक जीवन की याद करती और अकेले मे बहुत कुछ रोती भी।

बडे दिन पर मुझे एक सप्ताह की छुट्टी दी गई। कारविल के रोगियो को किसी विशेष कारणवश ही (जैसे घर मे बीमारी या मृत्यु) छुट्टी दी जाती, रोगी के साथ अस्पताल का चौकीदार रहता और उसका व्यय रोगी को देना पडता। मैं कारविल के उन थोडे से रोगियो में थी, जिनके साथ छुट्टी की रियायत की गई।

राबर्ट मुझे लेने आया, क्योकि किसी ऐसी गाडी से सफर करना मेरे लिए वर्जित था जिसमे सभी मुसाफिर बैठ सकते हों। वह हाल ही मे डॉक्टर हो गया था और मेरे रोग से वह भयभीत न था। हम दोनो मोटर पर बैठे चिडियो की भांति चहचहाते और गाते न्यू आलियस पहुँचे। इस लम्बी यात्रा मे हम दोनो को नैसर्गिक आनन्द प्राप्त हुआ। यही मुझे अब याद आता है। जब अन्तत हमारी मोटर वहाँ पहुँची तो हमे दक्षिणी वाटिका से घिरा अपना पुराना घर ससार मे सर्वोत्तम दिखाई दिया। छोटे बच्चो को मेरे रोग की बात नही बताई गई थी, तो मुझसे चिपटकर वे मुझे इतने दिन तक बाहर रहने का उलाहना देने लगे। उनका दुलार करने के लिए बहुत आतुर होकर भी उनसे अलग रहने पर मैं विवश हुई। मैंने उनसे बात बनाई, "तुम्हारी बहन के जुकाम हुआ है ! प्यारे बच्चो, मुझे अभी चूमो नही।" इसके बाद जो थोडी देर तक शाति रही, तो मुझे जान पडा कि घर पर मुझे अपने पिछले जीवन का सुख वापस मिलना अब असम्भव है।

यद्यपि रोग बहुत सक्रामक नही होता, परन्तु सावधानी की मैंने हद कर दी। मैं जिस कमरे मे सोती थी उसमे मेरी बहन 'सू' भी सोती थी, मैंने उसमे सोने से इन्कार कर दिया और एक छोटे-से कमरे मे अकेली सोने लगी। जो तश्तरी मैं छूती उसे पानी मे उबालकर शुद्ध करती। स्नानघर जब भी जाती तो उसके बाद उसे औषधि से शुद्ध करती। इतना सब करने पर भी मुझे शान्ति न होती।

इस प्रकार मेरी तपस्या का एक सप्ताह बीता। माता-पिता ने सगे-सम्बन्धियो से आनन्दमय पुनर्मिलन की योजना बनाई थी, परन्तु मुझे झूठ बोलना न आता था और मुझसे टेक्साज राज्य की सैर के प्रश्न पूछे जाते तो मैं क्या उत्तर देती ? इस प्रकार जब उनकी योजनाएँ मैंने खण्डित होती देखी, तो उनके साथ मेरा भी आनन्द समाप्त हुआ और मैं भाग निकलने की प्रतीक्षा करने लगी। जब मैं कारविल पहुँची तो सस्था के परिचित भवन मुझे जितने बुरे पहली बार लगे थे उतने अब नही लगे।

● ● ●

अगले बडे दिन तक घृणित चालमूगरा का प्रभाव मुझ पर प्रत्यक्ष होने लगा। मासिक परीक्षाएँ तब तक रोग का अस्तित्व बताती रही, परन्तु गुलाबी धब्बे बिलकुल गायब हो गये थे, और मुझे पूर्ण आशा हुई कि मैं रोगमुक्त हो जाऊँगी।

परन्तु थोडे ही सप्ताह पश्चात् मेरे वैरी कीटाणु फिर अपनी विजय प्रत्यक्ष करने लगे, मेरी टाँगें खुजलाने लगी और कुछ ही घण्टो के भीतर त्वचा के नीचे गरम फफोले जैसे प्रत्यक्ष होने लगे।

डाक्टर जो ने मुझे विश्वास दिलाया, "घबराओ नही, ये सब गायब हो जायेंगे।" परन्तु वह मुझे विफल जैसे दिखाई दिये। अपना उत्साह और रोग से लडते रहने का दृढ निश्चय बनाये रखने के अतिरिक्त मेरे सामने कोई चारा न था।

कारविल मे मेरे तीसरे वर्ष का वसन्त समाप्त होने को था, जब रोगियो को धन्धे से लगानेवाली सिस्टर मर्था ने मुझे फिर बुलाया। उसने मुझे बताया कि अनुसन्धान का काम बढाने की योजना है, जिस कारण अनुसन्धानालय में मेरे लिए एक नया काम आ गया है। उसने आशा प्रकट की कि काम मेरे योग्य होगा, और मैं उसे पसन्द करूँगी। जितना समय मैं नित्य पढाई के काम को देती थी, उसका दूना समय

मुझे देना पड़ेगा, परन्तु वेतन में पांच डालर ही बढ़ेंगे अर्थात् वेतन २५ डालर से ३० डालर प्रतिमास हो जायेगा। परन्तु यह सोचकर कि मुझे अपने वैरी के विषय मे सीखने और समझदारी से स्वय उसके विरुद्ध लडने का मौका मिलेगा, मैंने यह नया काम करना स्वीकार कर लिया।

अनुसन्धान मे औषधियो की विशेषज्ञ सिस्टर हिलारी ने मुझे काम सिखाना प्रारम्भ किया। उनकी वैज्ञानिक सूझ बहुत अच्छी थी और मैं उनके आदेश मन लगाकर सुनने लगी। सबसे पहले उन्होने वह सब बताया जिसकी तब तक हैंसन रोग के विषय मे जानकारी हो चुकी थी।

योरप के नार्वे देश मे गेरहार्ड हेनरिक आर्मर हैंसन नामक वैज्ञानिक ने १८७३ मे पहली बार उस कीटाणु का पता लगाया जो कुष्ठ नामक रोग का कारण है। अणुवीक्षण यन्त्र से देखने पर यह गुलाबी रग का डडेनुमा दिखाई देता है, और यक्ष्मा के कीटाणु से इतना मिलता-जुलता है कि एक का दूसरे से भेद बताना बहुत कठिन हो जाता है। ससार के विभिन्न भागों मे इस कीटाणु को किसी अप्राकृतिक माध्यम मे बढाने के सैकडो प्रयोग हुए, परन्तु अभी तक सभी विफल हुए हैं। पशुओ पर इस कीटाणु के टीके लगाये गये तो वे भी सब विफल हुए।

इस रोग के विषय मे एक विशेषज्ञ का कहना है कि यह छिपे-छिपे बढता है, उमडता है और अपनी अवधि पूरी करके समाप्त हो जाता है। रोगी आप ही आप अच्छा हो जाता है। यदि रोगी की अन्य व्याधियो से रक्षा की जा सके तो उसका चगा हो जाना बहुत कुछ सम्भव है। कारविल मे जो रोगी मरते हैं, वे एक प्रतिशत से कम सख्या मे कुष्ठ-रोग से मरते हैं। शारीरिक शक्ति के घटने पर कोई न कोई नई व्याधि उठ खडी होती है, गुर्दे की हो, हृदय की हो या फेफडे की या कोई और ही उपद्रव हो जाये।

आतशक रोग की पहचान के लिए एक रक्त परीक्षा होती है, जो आविष्कारक वासरमैन के नाम से प्रसिद्ध है। कुष्ठ रोग के विषय मे मुसीबत की बात यह है कि रक्त-परीक्षा होने पर चिकित्सक को आतशक का धोखा हो जाता है और आतशक की चिकित्सा प्रारम्भ हो जाती है तो कुष्ठ-रोग और भी उग्र हो जाता है। कभी-कभी दस वर्ष तक गलत इलाज होता है। कोई चिकित्सक वास्तविक रोग की पहचान कर भी लेता है तो पुराना पडने पर रोग असाध्य ही हो जाता है।

रक्त प्रवाह मे चूने का अश घटने लगता है और हड्डी मे चूने के अश की ही विशेष मात्रा रहती है। अतएव रोग के परिणामस्वरूप हड्डियाँ गलने लगती है। जनता मे यह अन्ध धारणा है कि इस रोग मे हाथ-पैर की उँगलियो की हड्डियो के गल जाने से वे सिकुड जाती हैं।

चिकित्सा के लिए एक यन्त्र होता है जिसके प्रकाश मे शरीर की हड्डियाँ साफ दिखाई देने लगती हैं। सिस्टर हिलारी ने ऐसे ही यन्त्र द्वारा मुझे अपने हाथो और पैरो की हड्डियो को देखने का अवसर दिया, ऊपर से मेरे हाथ और पैर बिलकुल ठीक थे, परन्तु मुझे यह देखकर आश्चर्य हुआ कि उनकी हड्डियो मे परिवर्तन होना प्रारम्भ हो गया था। मुझे बताया गया कि लक्षण के प्रत्यक्ष होने मे दस वर्ष लगें या इससे भी अधिक और मुझे आशा थी कि तब तक विज्ञान मेरी रक्षा करने मे सफल हो जायेगा। सिस्टर हिलारी के प्रशिक्षण मे मैंने चिकित्सा सम्बन्धी परीक्षण के कई काम सीख लिये—जैसे अनुवीक्षण यन्त्र के लिए शीशे के प्लेट पर रक्त के एक दो बूँद लेना, मूत्र परीक्षा, रक्त मे लाल और श्वेत जीवाणुओ को गिनना, वासरमैन परीक्षा, यक्ष्मा के लिए बलगम की परीक्षा। अनुसन्धानालय का काम मुझे उत्तेजक जान पडा और रोचक भी। जब मैं अपने इस काम मे खो गई, तो मुझे कारविल की मानवीय समस्याओ मे भी रुचि होने लगी। मैं सब रोगियो को जान गई और प्रत्येक की हार्दिक व्यथा का मुझे पता था। कारविल मे जब मेरा जीवन प्रारम्भ हुआ, तब मैं न्यू आर्लियस से आई हुई एक

गर्वीली और शर्मीली लड़की ही मानी जाती थी। अब मैं सब की प्रिय हो गई और आदरणीय भी।

इन सब में मैं हैरी मार्टिन नामक रोगी की ओर विशेष रूप से आकृष्ट हुई। यह बीस वर्ष का लम्बा और हृष्ट-पुष्ट पुरुष मेरे कारविल पहुँचने के कुछ ही महीने पहले यहाँ आया था। अपने दुर्भाग्य के प्रति उसका विद्रोह उतना ही प्रत्यक्ष था जितना कि मेरा। प्रतिमास उसके रक्त की परीक्षा होने पर जब उसमे कीटाणु दिखाई देते रहते, तो इस सशक्त और सुन्दर युवक की उदासी देखकर मैं भी दु खी होती। क्रमश पता लगा कि कारविल मे वह सबका प्यारा है।

उसने मुझे अपने विषय में कुछ नही बताया, परन्तु मुझे पता लग गया कि उसके पास पैसा नहीं और सप्ताह मे छ दिन उसे अपना पूरा समय शरीरक्रिया-सम्बन्धी चिकित्सा को देना पडता है। इतना पौरुष पाकर भी पगु या दृष्टिहीन रोगी के प्रति उसकी सुशील नारी जैसी करुणा रहती। भोजनालय के सजाने और रोगियो के प्रति सहभोजो का प्रबन्ध करने के लिए वह सदैव तत्पर रहता। अधिकाश रोगियो की भाँति वह रोगिनियो के घरो के चक्कर न लगाता, और समान भाव से सबके प्रति उसकी सहानुभूति रहती। उसके प्रति मेरे आदर और सम्मान की भावना बढ़ने लगी।

● ● ●

बड़े दिन की तीसरी छुट्टी मे जब मैं अपने घर गई तो मेरे हृदय को एक भारी धक्का लगा। मैं लम्बे और उत्साहपूर्ण पत्र राबर्ट को लिखा करती थी, जिनमे अक्सर अनुसन्धानालय से सम्बन्धित बातें रहती, परन्तु उसके उत्तर उलझे-से रहते और उसका मेरे घर आना-जाना भी कम हो गया था। माँ ने मुझे लिखा कि राबर्ट पर काम का भार बहुत है, इसीलिए वह कम आता-जाता है। परन्तु मुझे तो सही बात मालूम करनी थी। अतएव न्यू ऑर्लियस में अपने अल्प प्रवास के अन्तिम दिन

मैंने उससे पूछा, "क्या अभी तक तुम मुझसे प्रेम करते हो ?" रावर्ट ने साफ-साफ परन्तु भटकी-सी भावना से उत्तर दिया, "नहीं ! मैं चाहता हूँ कि मेरा प्रेम तुम्हारे प्रति बना रहे, परन्तु विवश हूँ !"

मैंने सोच रखा था कि मुझे ऐसे उत्तर के लिए तैयार रहना चाहिए। परन्तु उत्तर मिलने पर मेरे हृदय को भारी धक्का पहुँचा। मैंने उसे उलाहना दिया कि उसने पहले मुझसे क्यो नही कहा। परन्तु उस पर क्रोध करना मेरे लिए असम्भव था। जब दो वर्ष से और पहले उसने सदैव प्रतीक्षा करने का वचन दिया था, तब उसका वचन हार्दिक ही था। यदि उसका हृदय-परिवर्तन हो चुका था, तो यह एक ऐसी बात थी जिसके लिए हम दोनो विवश थे।

वह मेरा पहला प्रेमी था और एक लडकी की भाँति मैंने उसे अपना प्रणय-दान किया। जब मेरा दुर्भाग्य सामने आया तो बराबर वह मेरा विश्वासपात्र और सहायक रहा। मैं हृदय से उसकी कृतज्ञ रही, और सदैव रहूँगी।

रावर्ट से जो मुझे अनुभव प्राप्त हुआ, वही प्राय प्रत्येक कारविल के रोगी का रहा, वह विवाहित हो या अकेला। प्यारो से विछोह हर हालत में हुआ। रोगी, नर या नारी, आकर मुझसे अपनी हार्दिक व्यथा सुनाते। वाहर पति है या पत्नी और सम्बन्ध-विच्छेद के लिए रोगी के पास सन्देश आता है। कितनी ही वार मुझे अपने सहयोगी या सह-योगिनी को सान्त्वना देने के लिए शब्द ढूँढ़ने पडे। मुझे भली प्रकार मालूम था कि जो प्रेम काँटेदार तारों के पीछे अनिश्चित काल के लिए वन्द कर दिया गया हो, उससे चिपके रहना सरल नही है। कुष्ठ-रोगियो को अपराधियो की भाँति समाज से अलग कर देने की जो निर्दय प्रथा है, उसके परिणामस्वरूप अधिकाश का पारिवारिक जीवन नष्ट ही हो जाता है।

अब मुझे भली प्रकार मालूम हो गया कि मेरा स्थान कहाँ है।

मेरा स्थान था कारविल की इकत्तीसवी कुटी मे, जहाँ मेरी सगिनियो को वही दुख, दर्द और दया प्राप्त थी जो मेरे भाग्य मे थी।

• • •

अब हैरी मार्टिन के साथ मैं अक्सर सध्या के समय टहलने निकल जाती। हमे पता लगा कि हम दोनो को एक ही सी वस्तुएँ पसन्द हैं और हमारी कामनाएँ भी एक-सी हैं। कभी-कभी जब कारविल से होती कोई मोटरकार निकल जाती तो उसके धुएँ की गन्ध सूँघते हम दोनों खडे हो जाते। एक-दूसरे को देखते और आहे भरकर कहते कि कब हमारा इसी भाँति छुटकारा होगा और हम भाग निकलेंगे।

हैरी कहता, "किसी दिन मेरे पास भी कार होगी।"

और हम बहस करते कि किस मेल की कार होगी, उसके दाम क्या होंगे और पहली बार घुमाने वह मुझे कहाँ ले जायेगा। बातें फिजूल ही थी। परन्तु हमारा वार्तालाप हार्दिक ही होता।

जब हमारा साथ बढा तो हैरी को अपनी बीती सुनाने की भी इच्छा हुई। उसने मुझे सुनाना प्रारम्भ किया कि कैसे उसे यह रोग हो गया, जिसे वह असम्भव समझे हुआ था। उसकी दुख-गाथा से मेरा भी हृदय दुखने लगा।

अमरीका मे लुइसियाना राज्य और उसका गैरीविल नामक कस्बा कुष्ठ-रोग के लिए सबसे अधिक बदनाम है। हैरी का जन्म यही हुआ। अपने हाई स्कूल मे उसकी गिनती सर्वोच्च खिलाडियो मे रही, और वह फुटबाल टीम का कप्तान रहा। दर्द-भरे शब्दो मे उसने कहा, "खेलो मे भाग लेना मुझे सबसे अधिक प्रिय रहा।"

लुइसियाना विश्वविद्यालय मे सैनिक अफसरो की भरती के लिए कठिन शारीरिक परीक्षा होती थी। वह इस परीक्षा मे उत्तीर्ण हुआ, परन्तु कुछ समय पहले उसे अपनी जाँध मे एक छोटा-सा धब्बा दिखाई देने लगा था, और वह अच्छा होने नही आ रहा था। जिस विशेषज्ञ

डॉक्टर फैरे ने मेरी परीक्षा की थी, उसने ही सबसे पहले हैरी का रोग भी पहचाना।

हैरी ने उदास होकर कहा, "डॉक्टर का निर्णय सुनने पर पिताजी की मुखमुद्रा जिस प्रकार बदली, उसे मैं कभी भूल नही सकता।"

हैरी के पिता एक छोटी-सी दुकान रखे हुए थे। पुत्र को कारविल पहुँचा चुके तब आर्थिक हानि उठाते हुए भी अपना घर-बार बेचकर न्यू आर्लियन्स मे बस गये। यदि पुत्र के रोग का पता चल जाता, तो पिता सपरिवार समाज के बाहर हो जाते और उनकी दुकान का बहिष्कार होता। छ सदस्यो के परिवार का पोषण उनके जिम्मे था। हैरी ने पांच हजार डालर पर अपना बीमा करा लिया था, जिसमे एक शर्त यह भी थी कि यदि वह किसी कारणवश अपाहिज हो जाये तो बीमे का रुपया मिल सकता है। कुष्ठ की गणना ऐसे रोगो मे है जिनसे ग्रस्त व्यक्ति पूर्ण रूप से अपाहिज माना जाता है। पिता अपने पुत्र के रोग की सूचना देकर बीमे की रकम वसूल कर सकते थे, परन्तु लम्बे वाद-विवाद के पश्चात् पिता-पुत्र का निर्णय हुआ कि बीमे का रुपया वसूल करने की अपेक्षा समाज मे परिवार का मान बनाये रखना बेहतर होगा।

मेरी भांति यथाशक्ति हैरी भी आत्म-निर्भर था। अपने व्यय के लिए उसे अपने परिश्रम का ही सहारा था। शरीरक्रिया-सम्बन्धी चिकित्सा मे उसके काम का अनुसन्धानालय मे मेरे काम से घनिष्ठ सम्पर्क था। यो दिन मे कई बार रोगियो, उनकी चिकित्सा और अपने प्रयोगों से सम्बन्धित अन्य बातो के लिए हम एक-दूसरे से मिलते रहते। कारविल मे हम दोनो बहुत कुछ कर रहे थे, इसलिए हमे समय अधिक तेजी से बीतता जान पडने लगा।

● ● ●

१६३१ के वसन्त मे हमारे मध्य स्टैनले-स्टाइन नामक एक असाधारण रोगी आया, जिसकी सेवाओ से कारविल का कायापलट हो गया। मैं कभी-कभी सोचती हूँ कि उसके आने के पहले हममे से कोई जानता भी न था कि जीवन शक्ति का कितना महत्व हो सकता है। कई वर्षो तक वह हमे प्रेरणा देनेवाला अपूर्व मित्र रहा। जब कभी मैंने उससे बात की या उसके साथ काम किया तो उसकी उपस्थिति से मैं अवश्य प्रभावित हुई। उसका रोग बहुत तेजी से बढ़ा और इसके परिणाम उसके लिए बहुत कष्टदायक हुए। परन्तु इनके बावजूद स्टैनले ने कारविल मे क्रान्तिकारी परिवर्तन कराये। उसके प्रभाव से हमे कारविल का जीवन सुन्दर बनाने की सम्भावनाएँ दिखाई देने लगी, और हम सबकी निहित शक्तियो को प्रत्यक्ष होने का मौका मिला। वह अपने घर शौकिया नाटको मे क्रियाशील रह चुका था। इसलिए यहाँ आने के एक महीने के भीतर ही वह साधु मण्डली का नाट्य अभिनय कराने मे सफल हुआ। ग्रीष्म ऋतु के मध्य तक उसने कारविल मे एक नाट्यशाला स्थापित करा दी। हमारा पहला अभिनय आशा से अधिक सफल हुआ, और तत्पश्चात् हम अभिनय की तैयारी करने में पागल से दिखने लगे।

परन्तु स्टैनले की सबसे बडी और स्थायी प्रभावशाली देन रही, कारविल से ही 'स्टार' नामक समाचारपत्र का प्रकाशन। पहले यह एक छोटे-से साप्ताहिक पत्र के रूप मे प्रकाशित हुआ, जिसमें स्थानीय खबरें ही रहती थी, और जिसकी प्रतियां साइक्लोस्टाइल से निकाली जाती थी। उसके पाठक पहले तो कारविल के रोगी और कर्मचारी ही रहे। फिर यह पत्र दूर-दूर के हितैषियो और डाक्टरो तक पहुँचने लगा। छोटा होकर भी उसने बडे समाचारपत्र की तरह अपना प्रभाव प्रत्यक्ष कर दिया, जब कारविल की जीवन-चर्या का सुधार-आन्दोलन सफल होने लगा। शीघ्र ही कारविल मे सहकारिता की भावना का

इतनी भारी आशा बँधने के पश्चात् दसवी परीक्षा मे कुष्ठ-कीटाणु फिर दिखाई दिये। हमारी आशाओ पर वज्रपात हो गया। थोडी देर तक तो हम दोनो से बोलते भी न बना। कई दिनो तक हैरी के मुख पर अपने काम के समय भी उदासी छाई रही। जब वह मेरे पास आया, तो अपने विषय मे निर्णय करके उसने कहा, "मैं अभी जवान हूँ शरीर बिगडा भी नही है, तो कारविल छोडकर किसी धधे मे लगने का मेरे लिए यही समय है। इस परीक्षा से मेरे छुटकारे की अवधि कम-से-कम एक वर्ष और बढ गई। कुष्ठ के विशेषज्ञ चालमूगरा तेल को बेकार मानते है। कारविल के बाहर किसी भी अत्तार की दुकान पर यह खरीदा जा सकता है और कारविल मे इस तेल के अतिरिक्त कोई और चिकित्सा नही। चाहता हूँ, तुम भी मेरे साथ निकल चलो।"

मैं कोई उत्तर न दे सकी।

जब हम लोग नये नये आये थे, तो जो रोगी कारविल से मुक्त होते थे, उनके प्रति हमारी श्रद्धा होती थी, और नियम के प्रतिकूल निकल भागने के हम विरुद्ध थे। पर बहुत दिनो से हमारी ये भावनाएँ समाप्त हो चुकी थी। तो भी अब हम जानते थे कि कारविल से मुक्त होना बहुत से रोग-मुक्त व्यक्तियों के लिए निरर्थक था। मुक्त रोगी इतने बूढे या अपाहिज हो चुके होते थे कि बाहर जाकर रोजी कमाना उनके लिए कठिन हो जाता था। बहुत से रोगी इतने वर्ष तक कारविल मे बन्द रहे थे कि बाहर उनका कोई नही रह गया था। इसलिए वे सब प्रकार से निराश और अपाहिज होकर आमरण कारविल मे ही रहने का निश्चय कर लेते थे। ये दुखी और परित्यक्त व्यक्ति स्वास्थ्य-लाभ प्राप्त करके भी अपने जीवन सुख से हाथ धो बैठे थे। कारविल की बस्ती का यही सबसे अधिक करुणाजनक दृश्य था। हम दोनो—हैरी और मैं—इस बस्ती के उपर्युक्त दुखान्त दृश्य मे सम्मिलित होने से बचना चाहते थे।

यह विचार हमारे सामने आया कि भाग निकलने पर समाचार-

पत्रों मे उत्तेजनात्मक शीर्षकों के नीचे कदाचित् घटना की चर्चा हो। मुझे यह भी मालूम था कि कुछ स्थानीय अधिकारी अपराधियों की भांति भाग निकले रोगियों को ढूंढते थे, और गोली मारने की धमकी देकर उन्हें कारविल मे फिर बन्द करा देते थे। परन्तु हैरी को और मुझे ढूंढे जाकर पकड़ जाने की विशेष चिन्ता न थी, क्योंकि कारविल आकर हम दोनों ने जाली नाम और पते लिखवाये थे, और हमारे हुलिये तथा पते का कोई लेखा कारविल मे न था। हमे अपने दायित्व से बचने का कोई खयाल न था, क्योंकि हम जानते थे कि यथेष्ट संयम करने पर हमारे जैसे सच्चे व्यक्ति दूसरों को अपने खतरे से बचा सकते थे। ये सयम ऐसे थे, जैसे एक ही थाली पर अपने अतिरिक्त अन्य व्यक्ति को न बैठने देना, स्नानघर के हौज की शुद्धि करते रहना।

यों हमारे बाहर रहने पर समाज की कोई हानि सम्भव न थी। अमरीका के कुछ राज्यों मे कुष्ठ रोगी अछूत नहीं माने जाते थे। उदाहरणतया न्यूयार्क मे कुष्ठ-रोगी स्वतन्त्र हैं। मुझे ऐसा लगा कि अब मेरा धैर्य समाप्त हो चुका, मेरा रोग सक्रामक नहीं रह गया और भाग निकलने पर अपने अतिरिक्त किसी और को हानि पहुँचाना मेरे लिए असम्भव था।

कुछ समय पश्चात् मुझे वास्तविक हिचकिचाहट मालूम हुई। हैरी ने जब मुझे बताया कि अगले जून मास मे उसने भाग निकलने की योजना बना ली है, तो मैंने अपने माता-पिता को लिखा। लौटती डाक से मेरे पास चिट्ठी आ गई, "तुम भी आ जाओ।" अब मेरा निश्चय पक्का हो गया, और भाग निकलने की तैयारी मैंने भी प्रारम्भ कर दी।

डॉक्टर जो और कारविल के अन्य मित्रों के नाम अपने पत्र कमरे मे छोड़कर रात के निश्चित समय हैरी और मैं गोल्फ का मैदान पार करके कांटेदार तार की सीमा तक पहुंचे। मिस्टर साबे ने अपने प्लास से तार काट दिये। हम दोनों छेद से किसी प्रकार निकले, चुपके-से कारविल को विदाई का नमस्कार किया, और शीघ्रता से सड़क पार

करके प्रतीक्षा मे खडी मोटरकार तक पहुँच गये। कार मे हम दोनो के पिता थे, और जब कार घर की ओर रवाना हुई तो हमे अपने किये पर सन्तोष था।

• • •

नि सन्देह हम वास्तविक स्वतन्त्रता नही प्राप्त कर सके थे। हमे बराबर यह डर रहा कि हमे कोई ऐसा व्यक्ति न मिल जाये, जिसने कारविल मे मुझे देखा हो। ऐसे व्यक्ति अकसर मिल ही जाते हैं।

तो भी, घर पहुँचकर मैं अपने बिछुडे स्वजनो से मिलकर बहुत प्रसन्न हुई। माता-पिता के साथ नाश्ता करने और खुली खिडकियो से सुगधित फूलो से भरती वायु मे मुझे अवर्णनीय आनन्द प्राप्त हुआ।

हैरी एक व्यावसायिक कालेज चलाने लगा और मुझे स्टेनोग्राफर का काम मिल गया। जब मैं काम पर पहुँची तो दुकान के मालिक मेरे स्वास्थ्य को देखकर बहुत प्रसन्न हुए। उनकी तारीफ से मैं प्रोत्साहित हुई, क्योकि मैं वास्तव मे चगी जान पडती थी। मेरे शरीर पर रोग का कही कोई लक्षरण न था। अपनी त्वचा मे मुझे कोई धब्बा नही दीखता था। अपने कानों को कोचकर और जांघो को भली-भांति देख-कर मुझे सन्तोष हो गया था कि कुष्ठ के कोई बाहरी लक्षरण मेरे शरीर पर नही रह गये थे।

एक दिन कैनाल स्ट्रीट की एक दुकान पर कारविल की एक परि-चारिका से मेरा सामना हो गया। वह एक क्षरण तक उलझी-सी रही परन्तु शीघ्र ही चल दी। उसने मुझे पहचानकर दया का निर्णय कर लिया हो, या शृङ्गार मे भेद हो जाने पर मुझमे वह रूप न पहचान पाई हो जिससे कारविल मे वह परिचित थी। बात यही समाप्त हुई।

इसके बाद मैं सदैव के लिए सतर्क हो गई। जब कभी मैं कारविल के किसी डॉक्टर, कर्मचारी या मुक्ति-प्राप्त रोगी को देखती तो मैं अपना मुँह फेरकर तेजी से निकल जाती। भाग निकलने का कलक

सदैव मेरे सामने रहा। एक बार न्यू ऑर्लियंस की एक प्रमुख समाज-सेविका से एक मित्र ने मेरा परिचय कराया। वह बड़ी सहानुभूति से और शान्तिपूर्वक मुझसे मिली। कारविल में उसके दो सम्बन्धी रहते थे, जिनसे मिलने वह अकसर जाती थी। यों मैं उससे कई बार मिल चुकी थी। परन्तु इसका उसने कोई संकेत नहीं होने दिया। मेरी भांति वह भी भयग्रस्त थी, क्योंकि वह यह नहीं प्रकट होने देना चाहती थी कि उसके परिवार का कोई सदस्य कुष्ठ-रोगी हो गया था। भेद खुलने पर उसके परिवार की भी बदनामी होती।

एक दिन हमारे दफ्तर के चपरासी ने एक रोग का जिक्र किया जिसमें पैर पहलवान के जैसे दिखाई देते हैं, बोला, "हमारे पड़ोस में एक लड़के का पैर इतना फूला हुआ है कि सब लोग उसे कोढ़ी समझने लगे हैं।" उसने जिस लहजे में 'कोढ़ी' शब्द का उच्चारण किया उससे ऐसा लगा मानो कोढ़ी शारीरिक और नैतिक पतन की प्रतिमूर्ति हो। यह कलंक आजीवन मेरे पीछे भी लगा था, क्योंकि मेरे बारे में यह बताया जाता रहा कि मुझे एक प्रकार का त्वचा का रोग है।

कारविल से भाग निकलने के एक वर्ष के भीतर हैरी के चंगे होने की सब आशाएँ समाप्त हो गईं। अपने पिता की सहायता से उसने लोहे-लक्कड़ की एक छोटी-सी दुकान खोल ली थी। पहले ही दिन से उसकी दुकान चलने लगी, परन्तु उसकी सफलता कुष्ठ-कीटाणुओं को हैरी की आंखों पर हमला करने से न रोक सकी। पहले तो उसकी आंखें कुछ सूजी और लाल-सी रहीं, परन्तु उसकी पलकें रोग की प्रगति के अनुकूल फूलते देखकर मैं भयभीत हुई। एक कान भी प्रत्यक्ष रूप में फूलने लगा। वह अपना साहस बनाये रखता, और उसकी मुख-मुद्रा में प्रसन्नता दिखाई देती, परन्तु उसके आन्तरिक संघर्ष का अनुमान करके उसके प्रति प्रेम और तरस से मैं विह्वल होती।

मैं समझ गई कि उसके रोग की प्रगति उसको अन्धा करके ही छोड़ेगी, और जब कभी वह मुझे छोड़कर अपने घर मोटर पर जाता,

तो मैं उस भावी की कल्पना करके बहुत त्रस्त होती, जब हैरी दृष्टिहीन हो जायेगा। मैंने कारविल मे ऐसे बहुत से अभागे अपनी कुर्सियो पर विवश पडे देखे थे। जब वह समय आयेगा, तब उसे एक सहायिका और सरक्षिका की बहुत आवश्यकता होगी। यदि मैं उसके निकट नही होऊँगी तो और कौन होगा।

कारविल से लौटने के लगभग चार वर्ष बाद एक रात भगवान् ने मेरी पथ-प्रदर्शन की प्रार्थना सुन ली। मुझे अकस्मात् ज्ञान हुआ कि ईश्वर का भरोसा करके मैं सत्य-मार्ग ग्रहण करूँ। मैंने हैरी को अपना निश्चय बताया कि हम दोनो का विवाह हो जाना चाहिए।

अब उसे अपनी ओर से उज्र करने का मौका था। प्रकट रूप से मैं चगी थी, और वह अस्वस्थ था। अपने स्तर तक मुझे गिराना उसे मजूर न था। बहस चलती रही जिसका अन्त मैने यह कहकर किया कि उसे मेरे साथ विवाह करना होगा। अब सुशील हैरी उस स्थिति मे आ गया, जिसमे इन्कार करना उसके लिए असम्भव हो गया।

जब मैंने अपने पादरी से सन्तति की समस्या पर बात की, तो उसने मुझे बताया कि रोग होते हुए भी अप्राकृतिक सन्तति-निरोध वर्जित है। मासिक धर्म के पश्चात् कुछ ऐसे दिन होते हैं, जब सम्भोग से बचने पर सन्तति-निरोध सम्भव होता है। ऐसे ही निरोध की अन-

हमारा निवास-कक्ष छोटा ही था, परन्तु हमारी दृष्टि मे वह महल के समान था। अपना ही घर प्राप्त करने का यह हम दोनो का अपूर्व अनुभव था और हम खुश थे, उतने ही जितना भावी शका मे खुश रहने का हम साहस कर सकते थे।

हैरी के साथ दुकान पर काम करने के लिए मैंने अपनी नौकरी छोड दी। हमे देर तक काम मे लगे रहना पडता तथा सामाजिक मनोरजन हमे नसीब न था। हम केवल अपने माता-पिता से ही मिलने जाते। सप्ताह मे एक वार चलचित्र देखने भी चले जाते। रोग के वाहरी लक्षण हैरी पर जितने प्रत्यक्ष होते गये, उतनी ही वाहरी लोगो की उपस्थिति हमें बुरी मालूम होने लगी। हम तभी थोडे-बहुत प्रसन्न रहते जब अकेले एक-दूसरे के साथ होते।

हम कभी कारविल की बात न करते, परन्तु उसकी याद हमे सदैव आती रहती। हैरी बराबर उस डॉक्टर से मिलने जाता जिसे उसके रोग की पहचान हो गई थी और वह यथाशक्ति सेवा भी करता। परन्तु दयालु होकर भी वह हैरी को प्रोत्साहित नही कर पाता था। इतना ही कहता रहता कि हालत क्रमश और भी बुरी होगी।

उस वर्ष का ग्रीष्म न्यू आर्लियस मे विशेष रूप से गर्म रहा। हमारे निवास-कक्ष मे नमी बहुत थी, और दुकान का काम भी हम दोनो को थका डालता था। ग्राहको को हैरी का 'चर्मरोग' प्रत्यक्ष होने लगा और उनके प्रश्नो के उत्तर देने मे उसे मानसिक पीडा का अनुभव होता। कुछ महीने पश्चात् उसके दाँतो की हड्डियाँ गलने लगी। इस नये उपद्रव की उसने अपने डॉक्टर से चर्चा की। उसने यही आशा दिलाई कि स्वास्थ्य सुधार होने पर यह उपद्रव भी शान्त हो जायेगा।

जब हैरी के कई दाँत पोले पड़ गये और उनका भरा जाना आवश्यक हो गया तो डाक्टर ने अपने दाँत-साज को बुलाया, हैरी के रोग की बात उसे बताई और चिकित्सा का समय उनसे नियत किया। परन्तु जब हैरी वहाँ पहुँचा, तो दाँत-साज ने सेवा मे इन्कार किया।

तो मैं उस भावी की कल्पना करके बहुत त्रस्त होती, जब हैरी दृष्टिहीन हो जायेगा। मैंने कारविल मे ऐसे बहुत से अभागे अपनी कुर्सियो पर विवश पडे देखे थे। जब वह समय आयेगा, तब उसे एक सहायिका और सरक्षिका की बहुत आवश्यकता होगी। यदि मैं उसके निकट नही होऊँगी तो और कौन होगा।

कारविल से लौटने के लगभग चार वर्ष बाद एक रात भगवान् ने मेरी पथ-प्रदर्शन की प्रार्थना सुन ली। मुझे अकस्मात् ज्ञ न हुआ कि ईश्वर का भरोसा करके मैं सत्य-मार्ग ग्रहण करूँ। मैंने हैरी को अपना निश्चय बताया कि हम दोनो का विवाह हो जाना चाहिए।

अब उसे अपनी ओर से उज्र करने का मौका था। प्रकट रूप से मैं चगी थी, और वह अस्वस्थ था। अपने स्तर तक मुझे गिराना उसे मजूर न था। बहस चलती रही जिसका अन्त मैंने यह कहकर किया कि उसे मेरे साथ विवाह करना होगा। अब सुशील हैरी उस स्थिति मे आ गया, जिसमे इन्कार करना उसके लिए असम्भव हो गया।

जब मैंने अपने पादरी से सन्तति की समस्या पर बात की, तो उसने मुझे बताया कि रोग होते हुए भी अप्राकृतिक सन्तति-निरोध वर्जित है। मासिक धर्म के पश्चात् कुछ ऐसे दिन होते है, जब सम्भोग से बचने पर सन्तति-निरोध सम्भव होता है। ऐसे ही निरोध की अनुमति मुझे अपने पादरी से मिल सकी।

वसन्त मे हम दोनो की शादी हुई और विवाह मे हम दोनो के निकटस्थ सम्बन्धियो की ही उपस्थिति थी। दोनो के एक सूत्र मे बँधने पर मुझे अन्तरतम तथा स्थायी स्नेह का अनुभव हुआ, और हमारे जीवन का उद्देश्य पहली बार स्थिर हुआ। सुख-दु ख मे एक-दूसरे के लिए अब हम जीने लगे। अपनी जीवन-यात्रा मे हम दोनो ने नया तथा एक ही मार्ग ग्रहण किया।

• • •

भगवान् को धन्यवाद ही दिया कि हम कारविल से निकल भागे थे।

कारागार की अवधि पूरी होने पर मुझे पहले की कुटी नम्बर ३१ मिली और हैरी को २०० गज के फासले पर पुरुष रोगियो की कुटी मे रहने भेजा गया। मिस्टर सावे चंगा होकर मुक्त हो चुका था, परन्तु वह शल्य-चिकित्सालय मे चपरासी का काम करता रहा और उसने हम दोनों को "लकी विला" मे अपने साथ रहने के लिए निमन्त्रित किया। वह उन थोड़े से रोगियो मे था जिनकी दशा हमारी अनुपस्थिति मे सुधरी थी। जब चिकित्सा के लिए वह आया था तब उसका रोग बहुत बढा हुआ था। अच्छा होकर अब वह नये रोगियो को अपनी रोग-मुक्ति बताकर प्रोत्साहित करने लगा। उसकी कुटी मे हम यथेष्ट समय बिताते और प्रति सध्या मैं तीनो के लिए खाना पकाती। हम दोनो की दिनचर्या का यह भाग हमे सबसे अधिक भला लगता, क्योंकि ऐसे ही समय हम गार्हस्थ्य सुख का थोडा-बहुत अनुभव कर लेते।

परन्तु अब हम दोनो का रोग बढने लगा। पहला ग्रीष्म बीतता जाता और हम दोनो अपनी निराशा और चिन्ता एक-दूसरे से छिपाते। एक बार ऐसी ही स्थिति मे मैं समझी कि मुझे गर्भ रह गया है। हम दोनो अत्यन्त ही दुखी हुए और भगवान् से प्रार्थना करने लगे कि हमे इस स्थिति मे संतान न प्राप्त हो, क्योंकि वह जन्म से ही हमारी भांति समाज से बहिष्कृत होगी। गर्भ का भय मुझ पर दो सप्ताह तक सवार रहा। फिर मालूम हुआ कि गर्भ का धोखा ही था। यो एक भारी चिन्ता से हम मुक्त हुए। रात के दस बजे थे। मैंने चिट्ठी लिखकर हैरी को बुला लिया। हम दोनों ने भगवान को हार्दिक धन्यवाद दिया।

हैरी बच्चो का प्रेमी था। उसने कहा, "हमारी स्थिति कितनी अभागी है कि लोग सन्तति के लिए प्रार्थना करते हैं और हम अपने प्रणय के परिणाम से बचना चाहते हैं।"

• • •

ने जो सैनिक रह चुके थे, अपने ही मध्य एक पद का निर्माण किया। कई वर्ष तक स्टैनले स्टाइन इस पद पर अकेले काम करता रहा, और उसने अमरीकी सेना के बडे-बडे नेताओ को अस्पताल के निरीक्षण के लिए निमन्त्रित किया। वे उसके व्यक्तित्व से तो प्रभावित हुए ही, उन सुधारो से भी प्रभावित हुए जिनके लिए उसका प्रयत्न चल रहा था। उनकी दिलचस्पी से कारविल बहुत लाभान्वित हुआ।

नई-नई उन्नतियो मे कुछ तो छोटी ही थी, परन्तु रोगियो के लिए बहुमूल्य थी। उदाहरणतया एक बाहरी सैनिक ने भोजन-गृह मे रोगियो के लिए एक टेलीफोन लगवा दिया जिससे वे दूरस्थ मित्रो तथा सम्बन्धियो से बात कर सकें। अनिश्चित काल तक अपने सगे-सम्बन्धियो से बिछुडे रोगी ही उस सुख का अनुमान कर सके जो उन्हे फोन पर अपने प्यारो की बोली सुनकर प्राप्त हुआ।

परन्तु कुछ परिवर्तन ऐसे भी थे जिनसे किसी को कोई विशेष लाभ नहीं हुआ। जो रोगी बहुत पुराने हो गये थे, उनकी दशा देखकर हम दोनो दु खी होते थे। बहुतो की हालत बिगडती जा रही थी, बहुतो का रोग अधिक बढ गया था। बहुत से अधे हो गये थे। प्रात काल जब जल-चिकित्सा के लिए हम एक-दूसरे से मिलते, तो दोनो मे कोई व्यथित स्वर मे पूछ लेता, "तुमने अमुक को देखा है ?"

स्टैनले अपनी प्रकृति के अनुकूल प्रसन्नचित्त दिखाई देता था, परन्तु आंखो मे महीनो पीडा के पश्चात् वह अब दृष्टिहीन हो गया था। हम लोगो की अनुपस्थिति मे एक बालक और एक नवयुवती ही रोग-मुक्त होकर कारविल छोड चुके थे। बाकी लडके-लडकियाँ मर चुके थे, या उनके रोग बढ गये थे।

हैरी ने पूछा, "ऐसा हुआ क्यो ?" उसे पता लगा कि सन् १९३५ मे वहाँ मलेरिया का भारी प्रकोप फैला था, जिस कारण कुष्ठ के कीटाणुओ को रोगियो पर हावी होने का मौका मिल गया था। जो रोगी कारविल मे थे, उनकी अपेक्षा हैरी की हालत अच्छी थी। हमने

भगवान् को धन्यवाद ही दिया कि हम कारविल से निकल भागे थे।

कारागार की अवधि पूरी होने पर मुझे पहले की कुटी नम्बर ३१ मिली और हैरी को २०० गज के फासले पर पुरुष रोगियो की कुटी मे रहने भेजा गया। मिस्टर सावे चगा होकर मुक्त हो चुका था, परन्तु वह शल्य-चिकित्सालय में चपरासी का काम करता रहा और उसने हम दोनो को "लकी विला" मे अपने साथ रहने के लिए निमन्त्रित किया। वह उन थोडे से रोगियो मे था जिनकी दशा हमारी अनुपस्थिति मे सुधरी थी। जब चिकित्सा के लिए वह आया था तब उसका रोग बहुत बढा हुआ था। अच्छा होकर अब वह नये रोगियो को अपनी रोग-मुक्ति बताकर प्रोत्साहित करने लगा। उसकी कुटी मे हम यथेष्ट समय बिताते और प्रति सध्या मैं तीनो के लिए खाना पकाती। हम दोनो की दिनचर्या का यह भाग हमे सबसे अधिक भला लगता, क्योंकि ऐसे ही समय हम गार्हस्थ्य सुख का थोडा-बहुत अनुभव कर लेते।

परन्तु अब हम दोनो का रोग बढने लगा। पहला ग्रीष्म बीतता जाता और हम दोनो अपनी निराशा और चिन्ता एक-दूसरे से छिपाते। एक बार ऐसी ही स्थिति मे मैं समझी कि मुझे गर्भ रह गया है। हम दोनो अत्यन्त ही दुखी हुए और भगवान् से प्रार्थना करने लगे कि हमे इस स्थिति मे सतान न प्राप्त हो, क्योंकि वह जन्म से ही हमारी भाँति समाज से बहिष्कृत होगी। गर्भ का भय मुझ पर दो सप्ताह तक सवार रहा। फिर मालूम हुआ कि गर्भ का धोखा ही था। यो एक भारी चिन्ता से हम मुक्त हुए। रात के दस बजे थे। मैंने चिट्ठी लिखकर हैरी को बुला लिया। हम दोनों ने भगवान को हार्दिक धन्यवाद दिया।

हैरी बच्चो का प्रेमी था। उसने कहा, "हमारी स्थिति कितनी अभागी है कि लोग सन्तति के लिए प्रार्थना करते हैं और हम अपने प्रणय के परिणाम से बचना चाहते हैं।"

● ● ●

एक दिन हैरी ने मुझसे कहा, "प्रिये, मेरे पैर का अँगूठा तो देखो।" मैंने देखा कि उसका रग गहरा बैजनी हो गया था। ऐसे ही अन्य बैजनी धब्बे उसकी टांगो मे प्रकट होने लगे थे। ऐसा जान पडता था कि कुष्ठ-कीटाणुओ का रक्त की बाहरी नसो पर आक्रमण प्रारम्भ हो गया था। इसके आगे पुट्ठो के फटने और उनसे खून बहने की बारी थी।

हैरी बहुत निर्बल हो गया और घाव खुले ही रहे, तत्पश्चात् उसके मुँह मे इतने घाव हो गये कि मुलायम रोटी भी चबाना उसके लिए कठिन हो गया। उसके होठ सूजकर तिगुने हो गये और उसके कान भी इसी प्रकार सूज गये। उसके हाथ सूज गये तो स्पर्श से उसे पीडा मालूम होने लगी। उसकी टांगो में घाव-ही-घाव हो गये। मैं इन्हे भली प्रकार धोकर इन पर दवा लगाती और पट्टी बांधती, परन्तु कोई घाव भरता नही था। उसके नथुने बन्द हो गये, मानो उसे जोर का जुकाम हो गया हो। उसका चेहरा मोटा हो गया, जिससे उसकी सूरत—जैसा कि आम तौर से इस रोग मे होता है—सिह जैसी हो गई। जिस मुख को देखकर मैं सुखी होती थी, उसकी इतनी दुर्गति देखकर मुझे पीडा होती। मैं अपना दु ख छिपा न पाती तो हैरी भी मेरे दु ख को देखकर निरुत्साह होता जाता, और अपने को कोसने लगता।

कुष्ठ-रोग की सल्फानिलामाइड (Sulfanilamide) नामक एक दवा नई-नई निकली थी। तीन महीने तक नौ रोगियो पर उसके प्रयोग का निश्चय हुआ। इन नौ मे से एक हैरी भी था, जिस कारण कुछ समय के लिए आशा बँधी। कारविल के डाक्टरो ने कुष्ठ-रोग की चिकित्सा के बहुत-से प्रयोग किये थे, जिसमे एक प्रयोग ज्वर उभारकर चगा करने का था। यह प्रसिद्ध किया गया था कि इस प्रयोग से सभी प्रकार के रोगी चगे किये जा सकेंगे। इस प्रयोग का खब्त समाप्त हो गया था, तो अब सल्फा औषधियो के प्रयोग की बारी आई और डाक्टर जो इस प्रयोग के लिए बहुत उत्सुक थे।

मैं डरी हुई थी, क्योंकि मैं जानती थी कि सल्फा औषधियाँ कुछ

जहरीली और खतरनाक भी होती है। परन्तु हैरी हठ पकडे रहा और बोला, "मुझे किसी औषधि से लाभ की थोडी ही आशा हो तो भी मुझे प्रयोग करना है।"

मेरी आशका के अनुसार मुझे चिकित्सा के दुष्परिणाम दिखाई देने लगे। हैरी के स्नायु बहुत उत्तेजित हो गये, और हुल्लड़ से वह घबराने लगा। तो भी उसके मुख और नाक की दशा बहुत कुछ सुधरी। कुछ सप्ताह पश्चात् उसकी आँखें लाल हो गईं, उनमे कठिन पीडा होने लगी और उसे ज्वर भी चढ आया। यह सब औषधि के उपद्रव थे। वह अस्पताल मे भरती हुआ। इसी प्रकार जिन नौ पर प्रयोग चल रहा था उनमे छ और भी अस्पताल मे भरती हुए। जब औषधि का विषैला प्रभाव इतना भारी दिखाई दिया कि लम्बी अवधि तक उसका प्रयोग असम्भव माना गया, तब इस औषधि का प्रयोग बन्द हुआ।

जब औषधि देनी बन्द हुई तो आँख का कष्ट समाप्त हुआ। परन्तु मुख और नाक की दशा मे जो सुधार हुआ था, वह भी समाप्त हुआ। क्रमश उसकी दशा पहले जैसी हो गई।

● ● ●

जब हैरी कुछ अच्छा होने लगा तो हम फिर अपने विभिन्न मनोरजनो में यथासम्भव भाग लेने लगे। हम चलचित्र देखने जाते, गोष्ठियो मे सम्मिलित होने, और अन्य रोगियो से मिलने जाते। हैरी कोई काम नहीं कर सकता था, तो दस डालर मासिक वेतन पर वह रोगी-सघ का मन्त्री बना दिया गया और मैं अनुपस्थित कर्मचारियो की एवजी करके थोडे से डालर प्रतिमास बना लेती। यो हम दोनो मिलकर अपना काम चला लेते। सीमेंट, पत्थर की रोडी और लोहे की सहायता से नये मकान बन रहे थे। जब ऐसा ही एक मकान बन गया, तो हैरी के मना करने पर भी मैंने उसके ऊपरले खण्ड पर पन्द्रह डालर प्रतिमास के

हिसाब से नौकरानी का काम करना स्वीकार कर लिया, और वहीं रहने भी लगी।

"लकी विला" मे हमे शरण मिलती रही। उसके पडोस ही मे "विट्स एण्ड" नाम से स्टैनले ने एक कुटी बना ली थी, तो उससे मिलने भी हम अक्सर चले जाते थे। जब स्टैनले दृष्टिहीन जीवनचर्या का आदी हो गया, तो रोगियो की स्थिति सुधारने की ओर उसके विचार केन्द्रित हुए। उसने कुष्ठ के प्रसिद्ध विशेषज्ञो के वे सब लेख जमा किये, जिनमें इस रोग के सक्रमण की निर्वलता पर जोर दिया गया था। उसने बहुत से प्रामाणिक विवरण भी इकट्ठे किये, जिनमे गोली से मारने की धमकी देकर जजीरो मे बंधे रोगी कारविल लाये गये या जिनके साथ अपने ही सार्वजनिक अस्पतालो मे ऐसा व्यवहार किया गया, मानो वे पागल कुत्ते हो। हम निरन्तर ऐसे ही प्रश्नो पर वाद-विवाद करते रहते—जैसे रोग मे खराबी क्या है, रोग से अधिक भीषण उसका कलक है, तो इस कलक के शिकार हम क्यो बनाये जाते हैं।

अन्तत स्टैनले अपना धैर्य बनाये न रख सका। इस कलक से लडने का एक ही मार्ग था, और वह था उसके विरुद्ध व्यापक प्रचार। उसके रोग के कारण 'स्टार' नामक पत्र [illegible] न। बन्द हो गया था। उसने

यह एक नया संघर्ष था, जिसके थोड़े ही संचालक थे, जिनमें अधिकांश बीमार रहकर भी अस्पताल के कामों में लगे हुए थे। सम्भवतः स्टैनले को ही यह पता था कि उसका संघर्ष कहाँ तक सफल होगा।

● ● ●

हैरी की टाँगें अब इतनी सूज गई थीं और उनमें घाव इतने बढ़ गये थे कि चिकित्सा के लिए अपनी कुटी से अस्पताल तक चलकर जाना उसके लिए असम्भव हो गया। परन्तु इससे भी भारी धक्का मुझे तब लगा, जब मैं अचानक उसके कमरे में पहुँच गई, और उसे अपनी बाँह खोले हुए एक नये धब्बे पर गौर करते देखा। यह उसी बैंजनी रंग का भद्दा-सा धब्बा था, जो पहले उसके पैर में प्रकट हो चुका था। मैं समझ गई कि कुछ ही समय में उसकी बाँहें भी इसी प्रकार पक जायेंगी। वह मुझसे कुछ बोले कि मैं मानसिक पीड़ा से विह्वल होकर रोती हुई भागी और अपने कमरे में जा छिपी।

मैं एक लम्बे समय से आशा-ही-आशा में जी रही थी, परन्तु अब मेरी आशाएँ टूट गईं। रोते-रोते मैं प्रार्थना के शब्द ढूँढ़ने लगी। मैंने प्रार्थना की कि मुझे अपना अन्धकारमय भविष्य अब दिखाई देने लगा है, मुझे यथेष्ट सहन शक्ति दो।

मेरी भी दशा अब बिगड़ती जा रही थी, मेरे मस्तक और ठोढ़ी पर गुलाबी धब्बे प्रत्यक्ष होने लगे थे। जब कभी हमारे परिवार के सदस्य आते तो आशा और प्रसन्नता की मुद्रा बनाये रखने का प्रयत्न मैं करती रहती, पाउडर लगाकर मैं अपने धब्बे छिपाती और कठिन-से-कठिन ग्रीष्म में लम्बी आस्तीन की कमीज पहनकर हैरी अपना बढ़ता रोग छिपाने का प्रयत्न करता। माता-पिता को यह आभास होने देना मैं सहन न कर पाती कि हमारा लम्बा संघर्ष अब जीवन के साथ समाप्ति के निकट है।

चामत्कारिक औषधियों की झूठी आशाएँ एक-एक करके मुरझा

चुकी थी। मुझे डर था कि जब तक वास्तव मे कोई चामत्कारिक औषधि आयेगी, उसके पहले ही हैरी चिकित्सा के योग्य न रह जायेगा। परन्तु डॉक्टर जी को एक और सुझाव दिखाई दिया। उन्होने कहा, "प्रोमिन (Promin) का प्रयोग बाकी रह गया है।" इस प्रकार अक्तूबर १९४१ से नित्य हैरी को प्रोमिन की सुइयां लगने लगी।

बड़े दिन तक औषधि का कोई प्रभाव प्रत्यक्ष नही हुआ। परन्तु वर्ष की अन्तिम सध्या से उसकी आँखें लाल हो गई और उनमें कठिन पीडा होने लगी, जिस कारण वह पलग ही पर लेटा रहा। मैं आधी रात तक उसके कमरे मे रही। उसके शरीर का ताप वढता गया और वह बहुत शिथिल दिखाई देने लगा। बहुत से रोगी पुराने वर्ष को भगाने के लिए नये नाच-घर में नाच रहे थे। नृत्य-वाद्य के स्वर हमे सुनाई दे रहे थे और मुझे याद है कि मन मे निराशा तथा भय के कारण आनन्द-दायक स्वर भी कितने दु खदायी लग रहे थे।

प्रात काल में जल्दी ही उठी और भागकर उसके पास पहुँची। उसका चेहरा बहुत लाल होकर लगभग दूना सूज गया था और उसके शरीर का ताप १०४ डिग्री तक पहुँच गया था। डॉक्टर जी ने प्रोमिन वन्द कर दिया और सल्फाथियाज़ोल (Sulfathiazole) की टिकियां लिखी। मैंने वडे ध्यान से औषधि की खुराकें उसे खिलाई और कई घण्टे तक बैठी हैरी के चेहरे की सूजन और लाली बढती देखती रही, यहां तक कि उसे पहचानना असम्भव हो गया। उसके परिवार का कोई भी सदस्य इस हालत मे उसे पहचान नही सकता था।

मैं आदेश के अनुसार खुराक-पर खुराक देती चली गई और भगवान् से प्रार्थना करती रही। अन्तत मैंने लाली और सूजन को कम होते देखा। औषधि के प्रभाव की भयानकता रुक गई और हैरी का सूजा चेहरा फिर मानव जैसा दिखाई देने लगा।

एक सप्ताह के भीतर हैरी पलग से उठकर चलने-फिरने लगा। उसकी टांगें कांपती अवश्य थी, परन्तु कई महीनो तक जो उसकी

दशा रही थी उसमे प्रत्यक्ष आशाजनक परिवर्तन दिखाई देने लगा था। जब औषधि के प्रभाव से उत्पन्न सूजन समाप्त हो चुकी, तो हमे दिखाई दिया कि जो बडे-बडे घाव बहुत दिनों से खुले हुए थे, वे भी अब भरने लगे हैं।

सल्फोन प्रोमिन (Sulfone Promin) शुरू करने के दो महीने बाद ही हैरी मे यह परिवर्तन प्रत्यक्ष हुआ।

तब हमें पता लगा कि जिस चमत्कार की हम आशा लगाये थे, वह हमे प्राप्त हो गया है।

● ● ●

हैरी पूर्ण रूप से रोग-मुक्त न हो पाया था कि डाक्टरों ने उसे चपरासियों का जमादार नियुक्त कर दिया। इस काम पर उसे नित्य तीन-चार घंटे हाजिरी देनी पड़ती थी और सत्तर नौकरों के काम की निगरानी के लिए उस पर दिन के चौबीसों घंटों की जिम्मेदारी थी। मैंने मना किया, क्योंकि मैं चाहती थी कि वह आराम करे। परन्तु हैरी को काम की फिक्र थी और डाक्टर काम के लिए हैरी को पसन्द करते थे। यों मेरे प्रतिवाद की किसी ओर से सुनवाई नहीं हुई। हैरी तथा अन्य रोगियों पर प्रोमिन के प्रयोग की सफलता देखकर डाक्टर जो इतने प्रसन्न हुए कि उन्होंने मुझे भी इस चिकित्सा के पक्ष मे परामर्श दिया। मेरे शरीर पर नये धब्बे प्रत्यक्ष हो गये थे, और रक्त की जाँच करने पर पता लगा कि उसमें कुष्ठ के कीटाणु पहले से अधिक हैं। यों प्रतिदिन अर्थात् सप्ताह मे छः बार मुझे सुइयां लगने लगी। हमारे मध्य जिन-जिन पर प्रोमिन का प्रयोग हुआ, उन सबको चामत्कारिक लाभ हुआ—कुछ को दो-तीन महीने के भीतर, बाकी को छः महीने के भीतर। हममें नये जीवन का सचार हुआ। अब हम विवश होकर काम न करते, काम करने मे हमें उमंग जैसी जान पड़ने लगी।

थोड़े ही दिनों के भीतर लड़ाई के एक कारखाने में काम पाने पर

मिस्टर सावे ने कारविल छोड दिया और 'लकी विला' के भाग्यशाली स्वामी हम दोनो हो गये। महासमर मे विजय के उपलक्ष मे अस्पताल के भीतर जगह-जगह वाटिकाएँ बनने लगी थी। दिन का काम समाप्त करके हैरी अपना वाटिका की सेवा से मन बहलाने लगा। वाटिका से निकली सब्जियाँ स्वाद मे हमे बेजोड लगती और ग्रीष्म के सध्याकाल मैं विला के छोटे रसोईघर मे टमाटर, मकई और सेम डिब्बो मे भरकर बन्द करती।

हैरी का वेतन अब ५० डालर मासिक हो गया था और कारविल के रोगियो का यह सर्वोच्च वेतन था। तुरन्त ही हम साढे सैंतीस डालर बचाकर प्रतिमास 'वार-बांड' खरीदने लगे। उस समय की यह बहुत ही छोटी सेवा रही। अन्य रोगी भी वार-बांड खरीदने लगे और इनका जोड प्रतिमास ३००० डालर तक पहुँचा।

जब हैरी की चाल मे लचक और फुर्ती आने लगी और मैं उसे मुस्कराते देखती, तो बहुत ही प्रफुल्लित होती। उसका स्वास्थ्य उन्नति कर रहा था, और मैं भी चगी हो रही थी। सुरक्षित जगल की सीमा पर हम जो वाटिका बनाये हुए थे, वह अपनी न थी, परन्तु यहाँ हमे वह आनन्द मिला जो पहले कभी नही प्राप्त हुआ था। भगवान के प्रति मेरी असीम कृतज्ञता की भावना उमडती रही। उसकी देन से उऋण होना मैं असम्भव मानने लगी।

अभी हम पूर्ण रूप से रोगमुक्त नही हुए थे। परन्तु जब से हम रोग-ग्रस्त हुए थे, तब से पहली बार हमे यह जान पडने लगा था कि हम चगे हो रहे हैं। सो पहली बार उस भावी की योजना भी बनाने लगे, जब रोगमुक्त होकर हम स्वतन्त्र हो जायेगे।

अब हमे जान पडा कि सुखी जीवन के लिए हमे क्या चाहिए था। हम अकसर एक-दूसरे से आशापूर्वक कहते थे कि यदि हमे ऐसी ही कोई भूमि मिल जाये जहाँ हम अपने फल और सब्जियाँ पैदा कर सकें तो हम कितने सुखी हो। हम पत्रिकाओ से ऐसे छोटे घरो के चित्र काट

मैंने जिनके नमूने पर हमें अपना भावी घर बनाना था। अपने स्वप्नों को चरितार्थ करने के लिए ही हम पैसे बचाते और बांड खरीदते।

● ● ●

कारविल में हमारे अगले थोड़े से वर्ष यथेष्ट व्यस्त और आशापूर्ण रहे। स्थिति दिन-प्रतिदिन सुधरती गई। सल्फा-चिकित्सा प्राप्त करने पर रोग-मुक्ति की संख्या बढ़ने लगी। इधर रोग की चिकित्सा में सफलता बढ़ने लगी, तो उधर देश में स्टैनले-संचालित 'स्टार' पत्र द्वारा लगातार प्रचार से कुष्ठ-रोग के विषय में अन्धविश्वास कम होने लगा और हम दोनों स्टैनले की सेवा में सहयोग देते रहे। किसी अंक का एक लेख इस प्रकार समाप्त हुआ—यह पत्र और यहाँ की डाक अस्पताल से निकलने के पहले दवा से शुद्ध कर लिये जाते हैं। यह अन्ध-विश्वासियों की भावना की रक्षा के लिए ही किया जाता था, यद्यपि यहाँ छूत की कोई बात न थी और वैज्ञानिक दृष्टि से इसकी कोई आवश्यकता न थी।

चिकित्सा-सम्बन्धी लेखों से अपने उद्देश्य के अनुकूल अंश स्टैनले 'स्टार' में उद्धृत कराता। इनमें एक लेख अमरीका के प्रसिद्ध मेयो चिकित्सालय के डाक्टर एफ० सी० लैंड्स का लिखा हुआ था, जिसमें "कुष्ठ-रोग का दुःखदायक नाम" शीर्षक देकर, उन्होंने इस रोग का उल्लेख सरकारी विज्ञप्तियों में 'हैसन रोग' के नाम से करने की हिमायत की थी। लेख का आवश्यक अंश इस प्रकार था "हमारे मेयो चिकित्सालय में डाक्टर रोगियों से कैंसर, यक्ष्मा और आतशक जैसे रोगों की बात करने नहीं हिचकिचाते, परन्तु 'कुष्ठ' शब्द का उनसे उच्चारण नहीं करते बनता। नाम से जितने भय का संचार होता है, उसके देखते रोग की भीषणता चिकित्सा की दृष्टि से बहुत कम है, क्योंकि संक्रामक रोगों में यह सबसे कम संक्रामक है। किसी भी साधारण चिकित्सालय में इसकी चिकित्सा संभव है। नाम से लोग भयभीत अवश्य होते हैं, परन्तु यक्ष्मा जैसे रोग से यह कहीं कम संक्रामक है।

"इस समय सयुक्त राज्य अमरीका मे जितने कुष्ठ-रोगी अस्पतालो मे चिकित्सा करा रहे हैं, उनके दूने अपना रोग छिपाये स्वतन्त्रता से घूमा करते हैं। इस दुर्व्यवस्था का कारण रोग का भयावह नाम ही है। समाज से बहिष्कृत होने के भय से रोगी अपनी दशा छिपाये रहते हैं। उन्हें समाज से मुँह छिपाना मजूर है, बहिष्कृत होना नही।"

एक ओर प्रोमिन अपना प्रभाव हम पर कर रही थी और दूसरी ओर 'स्टार' द्वारा हमे समाज-सेवा का सन्तोष था। इस प्रकार हम चगे हो रहे थे, और अपना आत्माभिमान भी हमे वापस मिल रहा था। इसके अतिरिक्त अपने प्रचार के फल भी हमे प्रत्यक्ष होने लगे थे। हजारों डाक्टर, परिचारिकाएँ, पादरी, विश्वविद्यालय के विद्यार्थी और बहुत से साधारण व्यक्ति भी प्रतिवर्ष हमारा अस्पताल देखने आने लगे। प्रसिद्ध गवैये और तमाशे वाले भी आकर हमारा मनोरजन करने लगे।

● ● ●

सन् १९४५ मे हैरी की रक्त-परीक्षाएँ नकारात्मक होने लगी और हमारे हृदयों मे आशा का सचार फिर होने लगा। प्रतिमास धड़कते हृदय से परीक्षा के फल की प्रतीक्षा होती, और उत्तर सुनने के पहले मुख सूख जाता। छ परीक्षाएँ लगातार नकारात्मक निकली, परन्तु सातवी मे थोडे से कीटाणु दिखाई दे गये, जिसके अर्थ हुए कि अब हैरी को नये सिरे से लगातार १२ नकारात्मक परीक्षा-फल मिलने चाहिए थे।

अब हमे कारविल मे भरती हुए १७ वर्ष से अधिक हो गए थे।

अगले महीने जनवरी १९४६ मे हैरी का परीक्षाफल फिर नकारात्मक निकला, और मार्च में मेरी रक्त-परीक्षा भी नकारात्मक दिखाई दी। यों नकारात्मक परीक्षाफल मे हम दोनो की उत्तेजक दौड प्रारम्भ हुई, हैरी दो फल आगे और मैं उसके पीछे। हम दोनों एक-दूसरे की जीत की आशाएँ बाँधने लगे। कुष्ठ-रोग के प्रत्यक्ष लक्षण से हम दोनो मुक्त हो चुके थे।

परन्तु हम अपनी वैयक्तिक समस्याएँ भूल गये, जब एक ऐसी घटना घटी जिससे वह सब भलाई खतरे मे आ गई, जो स्टैनले अपने 'स्टार' द्वारा सम्पन्न कर चुका था। समाचारपत्रो मे यह सूचना प्रकाशित हुई कि मेजर हैम जार्ज हार्नवास्टेल की पत्नी गेर्ट्रयूड हार्नवास्टेल को फिलीपीन्स मे कुष्ठ-रोग हो गया है। वह कारविल भेजी जा रही हैं, और उनके पति ने यह सूचना दे दी थी कि अपनी पत्नी के साथ वह भी आजीवन कारविल के बन्दी रहेंगे।

वर्षों से इतनी सनसनी पैदा करनेवाली खबर नही प्रकाशित हुई थी। देश के समाचारपत्रो मे और रेडियो द्वारा भी कुष्ठ और कारविल के सम्बन्ध मे बहुत-सी अनाप-शनाप बातें प्रकाशित और प्रसारित होने लगी। 'स्टार' के दफ्तर मे देश भर के समाचारपत्रो से कुष्ठ सम्बन्धित लेखाश ढेर होने लगे, यद्यपि इनमे अधिकाश भारी अज्ञान से भरे थे। उदाहरणतया सैन-फ्रांसिस्को का एक डॉक्टर यह कहते सुना गया था कि श्रीमती हार्नवास्टेल के रोगमुक्त होने की आशा उतनी ही की जा सकती है, जितनी नरक की व्यापक जलन मे हिम की आशा हो। रोग से मुक्ति तो सम्भव नही, केवल उपद्रवो से कुछ रक्षा हो जाती है। यदि मेजर हार्नवास्टेल अपनी पत्नी के साथ रहते हैं, तो उनके भी छूत लगने की शत-प्रतिशत सम्भावना है।

स्टैनले के नेतृत्व मे कई सप्ताह तक हम रात-दिन इस दुष्प्रचार के खण्डन की चेष्टा मे लगे रहे।

स्टैनले ने देखा कि कुष्ठ-रोग के सम्बन्ध मे सत्य के प्रचार करने का यह सुवर्ण अवसर है। इसलिए उसने एसोसियेटेड प्रेस से एक लेखक और फोटोग्राफर कारविल का निरीक्षण करने के लिए भेजने का आग्रह किया। जब एसोसियेटेड प्रेस के भेजे हुए प्रतिनिधि यहाँ आये, तो सब कुछ देखकर बहुत चकित और प्रसन्न हुए। इनके निरीक्षण के परिणामस्वरूप एक सुन्दर तथा सचित्र लेखमाला प्रकाशित हुई, जिसमे रोगियो के चित्र ऐसे ढग से छपे कि वे पहचाने न जा सकें।

हार्नबास्टेल के कारण चर्चा फैली तो सयुक्त राज्य अमरीका क स्वास्थ्य विभाग से भी पत्रो मे रोग के विषय मे सच्ची जानकारी देने के लिए कई लेख प्रकाशित हुए। इस प्रकार कारविल मे हमारे लिए ये दिन बहुत व्यस्त और उमगपूर्ण रहे।

हार्नबास्टेल दम्पति को जो देखता सो उनसे प्रेम करने लगता। श्रीमती हार्नबास्टेल स्वस्थ तथा प्रसन्नवदन दिखाई देती थी और बात करते मुस्कराती थी। प्रशिक्षित दृष्टि से ध्यानपूर्वक देखने के पश्चात् ही उन पर रोग का प्रभाव दिखाई दे सकता था। उनकी निष्कपटता उनके बहुत काम आई, क्योकि ज्यो ही उन्हे अपने रोग का पता लगा वह कारविल आवश्यक चिकित्सा के लिए आ गई। और वह ऐसे अच्छे समय पहुँची, जब एक नया प्रयोग चालू होने को था।

पेनिसिलीन (Penicillin) नामक एक कीटाणु-नाशक औषधि का प्रयोग कारविल के सात रोगियो पर किया गया था। परन्तु कोई लाभ नही दिखाई दिया था। आँख की पीडाजनक लाली जो बहुत से रोगियों को हो जाती थी, इस औषधि से अवश्य रोकी जा सकी, और यो रोगी अधे होने से बच सके। अब कारविल के चिकित्सक स्ट्रेप्टो-माइसीन (Streptomycin) नामक दूसरी कीटाणु-नाशक औषधि का प्रयोग प्रारम्भ करने की तैयारी मे लगे थे। श्रीमती हार्नबास्टेल सहित १० रोगी इस औषधि के प्रयोग के लिए चुने गये। परन्तु शीघ्र अच्छा फल प्राप्त करने की आशा से इस औषधि के साथ डायासोन (Diasone) नामक औषधि का भी प्रयोग चालू किया गया, जो प्रोमिन के समान एक सल्फा-औषधि है।

श्रीमती हार्नबास्टेल की शक्ति को इस प्रयोग के दौरान मे कोई हानि नही पहुँची। उन्होंने 'स्टार' पत्र की सेवा करना तुरत प्रारम्भ कर दिया। वह भली पकार जानती थी कि वह एक शिक्षाप्रद प्रचार की केन्द्रीय पात्र हैं। इसलिए वह कुष्ठ-रोग के सबन्ध मे सत्य का प्रकाश फैलाने के उद्योग मे अपना सहयोग देने के लिए प्रस्तुत हुई। उनके

पति को लिखने और विज्ञापन का अनुभव रह चुका था। अस्पताल से एक मील दूर उन्होंने एक कमरा किराये पर ले लिया। परन्तु प्रतिदिन प्रातःकाल सात बजे वह अस्पताल आते और हम लोगों के साथ रात होने तक काम करते।

हार्नवास्टेल दंपति के व्यक्तित्व से कारविल की जीवनचर्या में चाव और उमंग की मात्रा बढ़ गई। श्रीमती हार्नवास्टेल को नित्य पत्रकारों से लेखों की प्रार्थना के लिये ढेरों पत्र मिलते। उनके आकर्षण से कारविल के दर्शकों की संख्या बढ़ गई। जो रोगी दर्शकों से मिलते झेंपते थे, वे भी परिवर्तित वातावरण से प्रभावित होकर अतिथियों को निमन्त्रण देकर उनका स्वागत करने लगे। कारविल-निरीक्षण की योजना कार्यान्वित हुई। कभी कोई दर्शक पथप्रदर्शिका से पूछ बैठता, "क्या आप यहाँ काम करते डरती नहीं?" तो प्रदर्शिका कहती, "मैं स्वयं रोगग्रस्त हूँ।"

इस प्रकार हार्नवास्टेल दंपति हमारे उद्योग के वरदान होकर हमें प्रत्यक्ष हुए। उनके साहस और उसके फलस्वरूप सार्वजनिक चर्चा के प्रसार से हमारे संघर्ष को सफलता का मोड़ मिला। मेरे लिखते समय (१९५० में) गेर्ट्रूड हार्नवास्टेल रोगमुक्त हो चुकी हैं, परन्तु कुष्ठ-रोग की सच्ची जानकारी के प्रचार में वह लगी हुई हैं।

न्यूयार्क के "टाइम्स" समाचारपत्र में उनका एक पत्र प्रकाशित हुआ, जिसमें उन्होंने कारविल मैरीन अस्पताल के वर्गीकरण और प्रबन्ध-विषयक असंगतियों की आलोचना की। इस पत्र पर १९ नवम्बर, १९४९ के अंक में "असत्य का स्थायित्व" शीर्षक से एक संपादकीय लेख प्रकाशित हुआ, जिसमें और बातों के अतिरिक्त कहा गया .

कारविल को जिस असमान का वातावरण प्राप्त है और इस वातावरण में जिस प्रकार वहां के अधिकारियों और कर्मचारियों को सेवा करनी पड़ रही है, वह किसी और रोग के निमित्त स्थान में असन्तोष होता। रोग की संक्रामकता और छूत के सम्बन्ध का भण्डाफोड़ हो गया है। कारविल चिकित्सालय को स्थापित हुए ५३ वर्ष हो चुके हैं।

इतने वर्षों के भीतर उसके किसी भी कर्मचारी को रोग की छूत नहीं लग सकी है। वैज्ञानिक आधार पर तुरत ही सुधार होना चाहिए। छूत के होने के कारण रोग, रोगी और चिकित्सालय के विषय में जो नियम पुराने समय से बने हुए हैं उनका तुरत सशोधन होना चाहिये। रोग साध्य है, तो इसकी चिकित्सा अधविश्वास के आधार पर नहीं, वैज्ञानिक आधार पर होनी चाहिए।

हम दोनो के परीक्षाफल फिर नकारात्मक होने लगे, तो भविष्य के विषय मे हमारी चेतना और चिन्ता बढने लगी, क्योकि हम जानते थे कि नकारात्मक परीक्षा-फलो का एक वर्ष पूरा होने पर रोगमुक्त के सामने नई और अकसर उतनी ही कठिन समस्याएँ आ जाती हैं। हम अपनी मौलिक आवश्यकताओ के सम्बन्ध मे अधिकाधिक चिंतित होने लगे। सबसे पहले हमें एक मोटर की आवश्यकता थी, जिस पर बैठकर हम रहने का कोई ऐसा स्थान ढूँढ लें, जहाँ का जलवायु अपेक्षाकृत अधिक स्वस्थ हो, और जहाँ हमे रोजी का सहारा भी मिल जाये। मैंने एक छोटी-सी तुकबदी में हैरी से ऐसे स्थान पर बसने की आकाक्षा प्रकट की थी, जो पेडो से आच्छादित किसी जलधारा के निकट हो। हैरी मुझसे सहमत था।

हम चाहते थे कि वह स्थान ऐसा हो जिसे हम अपना ही कह सकें। हमारे जीवन के बहुत से वर्ष बेकार बीत चुके थे, तो हम चाहते थे कि हमे कितना ही छोटा काम करना पडे, हम उसमे सफल होने का प्रयत्न करें। हम परिश्रम के लिए आतुर थे और यही आशा लगाये थे कि कोई ऐसा धन्धा मिल जाये, जिसमे हम दोनो एक-दूसरे के साथ रहकर काम कर सकें। हम एक-दूसरे के साथ थोडे से नियत घण्टों के लिए ही नही रहना चाहते थे, हमारी आकाक्षा तो प्रतिदिन के चौबीसो घण्टे एक-दूसरे के साथ रहने की थी।

हमारे दैनिक जीवन के वे क्षण हमे सर्वांग सुन्दर लगते, जिनमे हम अपने भविष्य के विषय में बातें करते, योजना बनाते और एक-दूसरे का मुख देखते। अपनी योजनाओ के लिए सामग्री इकट्ठी करने के फेर

में हम दोनों प्राय प्रतिदिन कोई नई पुस्तक, समाचार की कतरन या लेग सम्मिलन के अवसर पर एक-दूसरे को दिखाने के लिए जमा करते रहते। मिस्टर सावे के 'नकी विला' मे ललिता-मारविन दम्पति रहने लगे थे। हम दोनो थोडी देर के लिए एक-दूसरे से इसी विला मे मिलते, और वडी उमग मे अपनी योजनाओं पर बातें करते। ललिता और मारविन नवदम्पति ही थे। हम दोनो वहुत दिनो के व्याहे थे और अधेड हो चुके थे; दोनो हमारी सनक भरी बातो को स्नेहपूर्वक सुनकर मुस्कराते रहते।

स्टैनले वहुत दिनों से कुष्ठ-रोग पर एक राष्ट्रीय परामर्श समिति की नियुक्ति का हार्दिक प्रयत्न कर रहा था। इन्ही दिनो उसकी मुराद पूरी हुई। सर्जन-जनरल टामस परन ने प्रसिद्ध डाक्टरो, स्वास्थ्याधिकारियो और जनता के प्रतिनिधियो की एक समिति रोगियो से सबधित पुराने नियमो के संशोधन के लिए नियुक्त की।

जब राष्ट्रीय परामर्श समिति ने हमारी राय प्राप्त करने के लिए कारविल गाया के विचार की सूचना दी, तो रोगियो की सयुक्त समिति सुधारो के विषय मे परामर्श की योजना बनाने बैठी। कुष्ठ-रोगियो के प्रति वर्ताव के सम्बन्ध मे जब हमारी बैठको में विचार हुआ, तो मैंने यह सुझाव दिया कि ऐसे रोगियो को समाज से अलग कर देने का नियम हट जाना चाहिए। इस विषय पर मेरा विचार गहरा था और दृढ भी। क्योकि कारविल के अर्ध-शतीय लेखे की भनक से ही सिद्ध हो जाता है कि छूत का नियम असफल रहा है। जो रोगी कारविल मे भरती हुए उनमे अधिकाश रोग की पहचान होने से कम-से-कम चार वर्ष पहले से रोग-ग्रस्त रहे थे। इस प्रकार रोग की छूत फैलनी होती तो छूत फैलाने का प्रत्येक को यथेष्ट अवसर था। कई रोगी तो वर्षों तक डाक्टरो और चिकित्सा से वचते रहे, क्योकि उन्हें कारविल मे बन्द किये जाने का भय रहा।

जो लोग छूत के सन्दिग्ध नियम की रक्षा का हठ करते हैं, उन

उन्नीस सौ चौरासी

अप्रैल का महीना है, सर्दी पड रही है, धूप चारो ओर फैली है, दिन के एक बजे हैं। विंस्टन स्मिथ, दुष्ट वायु से बचने के प्रयत्न मे, अपनी ठोढी छाती से सटाये 'विजय भवन' के शीशे के दरवाजो से अन्दर जाता दिखाई देता है।

दालान मे उबली बन्द गोभी और पुराने चीथडो की दरियो की गध आ रही है। दालान के दूसरे छोर पर दीवार पर एक बडा परन्तु रगीन इश्तिहार लगा हुआ है। इसमे लगभग पैंतालीस वर्ष के एक पुरुष का एक गज से अधिक चौडे मुख का चित्र है। घनी काली मूँछें हैं और चेहरे की बनावट सुन्दर तथा शक्ति-द्योतक है। विंस्टन सीढियो की तरफ बढा क्योकि लिफ्ट की उम्मीद करना बेकार था। यो भी लिफ्ट शायद ही कभी काम करती हो और इस समय तो 'घृणा सप्ताह' की तैयारी मे, बचत के सिलसिले मे दिन के समय बिजली बन्द रहती थी।

विंस्टन का निवासकक्ष भवन के सातवें खण्ड पर है। उसकी अवस्था ३९ वर्ष है। परन्तु उसका स्वास्थ्य ठीक नहीं। इसलिए वह धीरे-धीरे और कई बार रुककर चढता है। प्रत्येक मजिल पर दीवार से इश्तिहार का विशाल मुख उसकी ओर निहारता दिखाई देता है। यह चित्र इस प्रकार बना हुआ है कि कोई जहाँ कही भी हो, चित्र की आँखें उसका पीछा करती दिखाई देती हैं। इश्तिहार के नीचे छपा है—बड़े भाई तुम्हें देख रहे हैं।

विन्स्टन के कमरे मे एक यन्त्र लगा है जिसे 'टेलीस्क्रीन' कहते हैं। इस यन्त्र से निकली आवाज और इसके चलते चित्र धीमे तो किये जा सकते हैं, परन्तु यह यन्त्र बन्द नहीं किया जा सकता। निवासकक्ष की दाहिनी दीवार मे लगी हुई दूधिया शीशे जैसी धातु की एक आयताकार तख्ती से मरम परन्तु तेज आवाज मे शुद्ध लोहे के उत्पादन के आकडे सुनाये जा रहे हैं। विंस्टन ने यन्त्र की चाभी घुमाई जिससे आवाज धीमी अवश्य पड गई, परन्तु बन्द नही हुई। विन्स्टन नाटा है तथा निर्बल भी। वह खिडकी की ओर बढा तो उसके ढीले और लम्बे चोगे मे उसकी क्षीणता और भी प्रत्यक्ष हो गई। यह नीला चोगा उसकी पार्टी की पोशाक है, (अर्थात् बाहरी पार्टी की, भीतरी पार्टी के सदस्यों को अधिक विशेषाधिकार प्राप्त हैं और वे काला चोगा पहनते हैं।)

खिडकी के बाहर निर्मल आकाश मे सूर्य अपनी स्वाभाविक तेजी से चमक रहा था, परन्तु हर जगह चिपके इश्तिहारो के अतिरिक्त दृश्य मे कोई रगीनी नहीं दिखाई देती। सब ओर व्यापक ठण्ड और सन्नाटा था। काली मूंछो वाला मुख प्रत्येक ऊंचे कोने से नीचे घूरता दिखाई देता था। सामनेवाले मकान पर भी इश्तिहार लगा हुआ था, उस पर भी वही शीर्षक था—बडे भाई तुम्हें देख रहे हैं, और उसकी काली आँखें विंस्टन की आँखो मे आँखें डालकर मानो उसे घूर रही थी। नीचे सडक के बाजू मे, एक कोने मे फटा एक और इश्तिहार हवा मे फडफडा रहा था जिससे उस पर अंकित एक ही शब्द कभी खुल जाता था और कभी बन्द हो जाता था। यह शब्द "इगलिश सोशलिज्म" (अंग्रेजी समाजवाद) का सक्षिप्त रूप 'इगसोक' था। दूर पर एक हेलीकाप्टर छतो के मध्य तेजी से नीचे उतरता था, कुछ देर नीली मक्खी की भांति मंडराता था और फिर तीर की तरह दूर की ओर निकल जाता था। वह सदनी पुलिस थी जो नगर-निवासियों की खिडकियो मे ताक-झांक करने के लिए चक्कर लगाती थी। इन पहरेदारो की विंस्टन को

कोई चिन्ता नही थी, उसे चिन्ता केवल उस पुलिस की थी जो विचारो के भेद की तलाश मे रहती थी।

विंस्टन स्मिथ के पीछे टेलीस्क्रीन की आवाज़ अभी तक लोहे के उत्पादन और नवी त्रिवर्षीय योजना की लक्ष्य से अधिक पूर्ति के आंकडे तेज़ी से सुनाती जा रही थी। कानाफूसी से अधिक ऊँची कोई भी आवाज विंस्टन के मुँह से निकलती तो टेलीस्क्रीन उसे बाहर पहुँचा सकता था और जब तक वह कही ऐसे स्थान पर रहता जहाँ से टेली-स्क्रीन की तख्ती उसे देख सकती तो यह यन्त्र उसे देखता भी रहता और सुनता भी। यह जानने का कोई उपाय न था कि किस समय किस पर निगरानी रखी जा रही है। कितने बार और किस यन्त्र द्वारा विचारो पर पहरा रखनेवाली पुलिस किसी व्यक्ति पर टेलीस्क्रीन द्वारा पहरा लगा देती है, इसका केवल अनुमान ही लगाया जा सकता था। यह भी सम्भव था कि वे हर समय सब पर कडी नजर रखते हो। परन्तु यह निश्चित था कि वे जब चाहे तब किसी के कमरे मे लगे टेलीस्क्रीन द्वारा उस पर निगरानी विठा सकते हैं। इसलिए स्वभावत हर आदमी को यह मान लेना पडता था कि उसके मुँह से जो भी आवाज निकलेगी और प्रकाश मे उसकी जो भी हरकत होगी वह देखी और सुनी जा सकती है। लोग इसी प्रकार जीवन व्यतीत करते थे यहाँ तक कि यह आदत उनका सहज स्वभाव वन जाती थी।

विंस्टन टेलीस्क्रीन की ओर अपनी पीठ किये रहा। इससे उसकी कुछ बचत रही, यद्यपि वह जानता था कि पीठ भी भेद की वात बता सकी है। घर से प्राय एक मील दूर काले और गदे वातावरण के मध्य "सत्य मन्त्रालय" की विशाल और श्वेत इमारत गर्व से अपना मस्तक ऊँचा किये खडी थी, यही वह काम करने जाता था। इगलिस्तान अब ओशियानिया नामक विशाल राष्ट्र का एक प्रान्त मात्र रह गया था और इसका नाम हवाई अड्डा नम्बर एक था। मन्त्रालय को देखकर अस्पष्ट अरुचि के साथ उसने लन्दन को इस नये प्रान्त का प्रधान नगर

मान लिया। बीसवीं शती के तीसरे चतुर्थांश में जो क्रान्तियाँ हुई थीं उनके परिणामस्वरूप रूस ने योरप को हजम कर लिया था और अमरीका ने ब्रिटिश साम्राज्य को। इस प्रकार संसार तीन विशाल राष्ट्रों में बँट गया—यूरेशिया, ईस्टेशिया, और ओशियानिया। तब से निरन्तर तीनों के बीच छोटी-बड़ी लड़ाइयाँ होती रहती थीं। विंस्टन को अपने बाल्यकाल में कुछ महीनों तक लन्दन की सड़कों पर होनेवाली लड़ाई की अस्पष्ट-सी याद थी, परन्तु इसके आगे उसे कोई पता न था कि यह सब कुछ कैसे हो गया।

अपने बाल्यकाल के कुछ टूटे-फूटे संस्मरणों की सहायता से विंस्टन यह मालूम करने का प्रयत्न कर रहा था कि क्या लन्दन सदैव ही ऐसा रहा था। क्या हमेशा से चारों ओर उन्नीसवीं शती के यही सड़े हुए घर थे जिनकी दीवारों को रोकने के लिए बल्लियाँ लगी हुई हैं, जिनकी खिड़कियों में शीशों की जगह दफ्तियाँ लगी हैं, छतें नालीदार टीन से ढकी हैं और वाटिकाओं की चहारदीवारियाँ सब ओर गिरती दिखाई देती हैं। जहाँ-जहाँ बम गिरे थे, वहाँ टूटी ईंटों के ढेरों पर जंगली घास और बेलें उग गई थीं। जहाँ इन ढेरों को हटाकर जमीन चौरस की गई थी, वहाँ मुर्गियों की डाबलियों के समान लकड़ी के घरों की गन्दी बस्तियाँ बन गई थीं। परन्तु उसे अपने बाल्यकाल के कुछ असंबद्ध चित्र ही याद आये।

अब ब्रिटेन जिस विशाल ओशियानिया का प्रान्त मात्र है वहाँ की सरकारी भाषा न्यूस्पीक (नई बोली) के नाम से प्रसिद्ध थी। इस बोली में सत्य मन्त्रालय का नाम था 'मिनीट्रू'। अन्य दृश्यों से इस मन्त्रालय की अस्वाभाविक भिन्नता इसे चौंका देती है। चमकती हुई सफेद सीमेंट का यह विशाल गुम्बजाकार भवन खण्ड-ऊपर-खण्ड एक हजार फुट की ऊँचाई तक चला गया था। जहाँ से खड़ा विंस्टन उसे देख रहा था वहाँ से उसे अपने सामने दल के तीन नारे सुन्दर अक्षरों में इस भवन के श्वेत मुख पर साफ-साफ अंकित दिखाई दे रहे थे

समर ही शान्ति है।

स्वतन्त्रता ही दासता है।

अज्ञान ही शक्ति है।

कहा जाता था कि इस सत्य मन्त्रालय में तीन हज़ार कमरे तो भूमि के ऊपर थे और कमरो का ऐसा ही जाल जमीन के नीचे था। इसी मेल के और इतने ही बडे तीन और भवन लन्दन के विभिन्न भागो मे थे। चारो ओर की इमारतें इनके सामने इतनी छोटी थी कि विजय-भवन की छत से चारो इमारतें एक साथ दिखाई पडती थी। शासन का पूरा सगठन इन्ही चार मन्त्रालय भवनो मे सन्निहित था। मिनीट्रू का क्षेत्र था समाचार, मनोरजन, शिक्षा और ललित-कला। शान्ति मन्त्रालय का सक्षिप्त नाम 'मिनीपैक्स' था और इसका कार्यक्षेत्र युद्ध था। प्रेम मन्त्रालय का नाम था 'मिनीलव' और इसका कार्यक्षेत्र आत-रिक सुव्यवस्था स्थापित रखना था। समृद्धि मन्त्रालय का नाम 'मिनी-प्लेंटी' था और शासन के आर्थिक विषय इस मन्त्रालय के जिम्मे थे।

इन मन्त्रालयो मे सचमुच भयानक प्रेम मन्त्रालय ही था। विंस्टन कभी उसके निकट भी नही गया था। इसमे खिडकियाँ नही थी, सरकारी काम के बिना इसमे घुसना असम्भव था और तब भी काटे-दार तारो की भूलभुलैयो, इस्पात के दरवाजो और छिपी मशीनगनो

कोई और खाने की चीज नही दिखाई दी, जिसे आगामी प्रातःकाल के नाश्ते के लिए बचाना आवश्यक था। इसलिए उसने पानी जैसे द्रव से भरी एक बोतल अलमारी में उठाई जिस पर 'विक्टरी जिन' (विजय-मदिरा) की चिप्पी लगी हुई थी। इस द्रव में तेल जैसी मतली लाने-वाली गंध आती थी, परन्तु विन्स्टन को तो किसी प्रकार अपनी क्षुधा शान्त करनी थी। उसने बोतल से इस द्रव को एक प्याले में उंडेला, मदिरापान का धक्का बर्दाश्त करने के लिए तैयार हुआ और एक ही घूंट में उसे पी गया।

पीते ही उसका चेहरा लाल हो गया। यह द्रव शोरे के तेजाब जैसा तेज था और गले में उसके उतरने पर ऐसा मालूम होता था जैसे सिर के पीछे किसी ने रबड़ की गदा मार दी हो। परन्तु क्षणमात्र में उसके पेट की जलन समाप्त हो गई और संसार उसे अधिक प्रफुल्लित दिखाई देने लगा। एक मिजी हुई डिब्बी से, जिस पर 'विजय सिगरेट' नाम की चिप्पी लगी थी, उसने एक सिगरेट निकाली, असावधानी से उसने सिगरेट को सीधा खड़ा कर दिया और सारी तम्बाकू फर्श पर बिखर गई। दूसरी सिगरेट के सम्बन्ध में इतनी गड़बड़ नहीं हुई। वह अपने कमरे की ओर वापस गया और टेलीस्क्रीन के बायीं ओर एक छोटे-से ताक में रखी मेज के सामने कुर्सी पर बैठ गया। मेज की दराज में उसने कलम, दावात और एक मोटी परन्तु छोटी और सुन्दर लाल जिल्दवाली नोटबुक निकाली जिसके सब पन्ने कोरे थे।

ताक किताबों की अलमारियों के लिए था। टेलीस्क्रीन की पहुँच इस ताक तक नहीं थी। भली भांति पीछे हटकर बैठने पर विन्स्टन टेलीस्क्रीन की पहुँच के बिलकुल बाहर हो गया था। उसकी बात तो सुनी जा सकती थी परन्तु जब तक वह अपनी इस जगह पर बैठा रहता, उसे देखा नहीं जा सकता था।

जो नोटबुक उसने दराज से निकाली वह विशेष रूप से सुन्दर थी। उसका चिकना मलाई कागज, पुराना होने के कारण पीला हो गया

समर ही शान्ति है।
स्वतन्त्रता ही दासता है।
अज्ञान ही शक्ति है।

कहा जाता था कि इस सत्य मन्त्रालय में तीन हजार कमरे तो भूमि के ऊपर थे और कमरो का ऐसा ही जाल जमीन के नीचे था। इसी मेल के और इतने ही बडे तीन और भवन लन्दन के विभिन्न भागों में थे। चारो ओर की इमारतें इनके सामने इतनी छोटी थी कि विजय-भवन की छत से चारो इमारतें एक साथ दिखाई पडती थी। शासन का पूरा सगठन इन्ही चार मन्त्रालय भवनों मे सन्निहित था। मिनीट्रू का क्षेत्र था समाचार, मनोरजन, शिक्षा और ललित-कला। शान्ति मन्त्रालय का सक्षिप्त नाम 'मिनीपैक्स' था और इसका कार्यक्षेत्र युद्ध था। प्रेम मन्त्रालय का नाम था 'मिनीलव' और इसका कार्यक्षेत्र आतरिक सुव्यवस्था स्थापित रखना था। समृद्धि मन्त्रालय का नाम 'मिनी-प्लेंटी' था और शासन के आर्थिक विषय इस मन्त्रालय के जिम्मे थे।

इन मन्त्रालयो मे सचमुच भयानक प्रेम मन्त्रालय ही था। विंस्टन कभी उसके निकट भी नही गया था। इसमे खिडकियाँ नही थी, सरकारी काम के विना इसमे घुसना असम्भव था और तव भी काटे-दार तारो की भूलभुलैयो, इस्पात के दरवाजो और छिपी मशीनगनो के वीच से होकर भीतर जाना होता था। उन सडको पर भी, जो इस भवन की वाहरी चौहद्दी तक जाती थी, बन्दर-मुँहे काली वर्दी पहने सिपाहियो का पहरा रहता था।

विंस्टन सहसा पीछे मुडा। वह अपने मुख पर शान्त आशा की झलक ले आया, क्योकि टेलीस्क्रीन के सामने आते समय ऐसी मुखमुद्रा वनाये रहना उचित था। कमरा पार करके वह अपनी छोटी-सी रसोई मे पहुँचा। मन्त्रालय को छोडकर यदि विंस्टन अपने घर न आता तो मन्त्रालय के कैंटीन मे ही उसे अपना खाना मिल जाता। परन्तु अपनी रसोई मे उसे वदरग पाव रोटी के एक वडे टुकडे के अतिरिक्त

कोई और खाने की चीज नहीं दिखाई दी, जिसे आगामी प्रातःकाल के नाश्ते के लिए बचाना आवश्यक था। इसलिए उसने पानी जैसे द्रव से भरी एक बोतल अलमारी से उठाई जिस पर 'विक्टरी जिन' (विजय-मदिरा) की चिप्पी लगी हुई थी। इस द्रव में तेल जैसी मतली लानेवाली गंध आती थी, परन्तु विंस्टन को तो किसी प्रकार अपनी क्षुधा शान्त करनी थी। उसने बोतल से इस द्रव को एक प्याले में उड़ेला, मदिरापान का धक्का बर्दाश्त करने के लिए तैयार हुआ और एक ही घूँट में उसे पी गया।

पीते ही उसका चेहरा लाल हो गया। यह द्रव शोरे के तेजाब जैसा तेज था और गले में उसके उतरने पर ऐसा मालूम होता था जैसे सिर के पीछे किसी ने रबड़ की गदा मार दी हो। परन्तु क्षणमात्र में उसके पेट की जलन समाप्त हो गई और संसार उसे अधिक प्रफुल्लित दिखाई देने लगा। एक पिची हुई डिब्बी से, जिस पर 'विजय सिगरेट' नाम की चिप्पी लगी थी, उसने एक सिगरेट निकाली, असावधानी से उसने सिगरेट को सीधा खड़ा कर दिया और सारी तम्बाकू फर्श पर बिखर गई। दूसरी सिगरेट के सम्बन्ध में इतनी गड़बड़ नहीं हुई। वह अपने कमरे की ओर वापस गया और टेलीस्क्रीन के बायीं ओर एक छोटे-से ताक में रखी मेज के सामने कुर्सी पर बैठ गया। मेज की दराज से उसने कलम, दावात और एक मोटी परन्तु छोटी और सुन्दर लाल जिल्दवाली नोटबुक निकाली जिसके सब पन्ने कोरे थे।

ताक किताबों की अलमारियों के लिए था। टेलीस्क्रीन की पहुँच इस ताक तक नहीं थी। भली भाँति पीछे हटकर बैठने पर विंस्टन टेलीस्क्रीन की पहुँच से बिलकुल बाहर हो गया था। उसकी बात तो सुनी जा सकती थी परन्तु जब तक वह अपनी इस जगह पर बैठा रहता, उसे देखा नहीं जा सकता था।

जो नोटबुक उसने दराज से निकाली वह विशेष रूप से सुन्दर थी। उसका चिकना [illegible] कागज, पुराना होने के कारण पीला हो गया

समर ही शान्ति है।
स्वतन्त्रता ही दासता है।
अज्ञान ही शक्ति है।

कहा जाता था कि इस सत्य मन्त्रालय में तीन हजार कमरे तो भूमि के ऊपर थे और कमरो का ऐसा ही जाल जमीन के नीचे था। इसी मेल के और इतने ही बडे तीन और भवन लन्दन के विभिन्न भागो मे थे। चारो ओर की इमारतें इनके सामने इतनी छोटी थी कि विजय-भवन की छत से चारो इमारतें एक साथ दिखाई पडती थी। शासन का पूरा सगठन इन्ही चार मन्त्रालय भवनो मे सन्निहित था। मिनीट्रू का क्षेत्र था समाचार, मनोरजन, शिक्षा और ललित-कला। शान्ति मन्त्रालय का सक्षिप्त नाम 'मिनीपैक्स' था और इसका कार्यक्षेत्र युद्ध था। प्रेम मन्त्रालय का नाम था 'मिनीलव' और इसका कार्यक्षेत्र आतरिक सुव्यवस्था स्थापित रखना था। समृद्धि मन्त्रालय का नाम 'मिनी-प्लेंटी' था और शासन के आर्थिक विपय इस मन्त्रालय के जिम्मे थे।

इन मन्त्रालयो मे सचमुच भयानक प्रेम मन्त्रालय ही था। विंस्टन कभी उसके निकट भी नही गया था। इसमे खिडकियाँ नही थी, सरकारी काम के विना इसमे घुसना असम्भव था और तब भी काटे-दार तारो की भूलभुलैयो, इस्पात के दरवाजो और छिपी मशीनगनो के वीच से होकर भीतर जाना होता था। उन सडको पर भी, जो इस भवन की वाहरी चौहद्दी तक जाती थी, बन्दर-मुँहे काली वर्दी पहने सिपाहियो का पहरा रहता था।

विंस्टन सहसा पीछे मुडा। वह अपने मुख पर शान्त आशा की झलक ले आया, क्योंकि टेलीस्क्रीन के सामने आते समय ऐसी मुखमुद्रा वनाये रहना उचित था। कमरा पार करके ,वह अपनी छोटी-सी रसोई मे पहुँचा। मत्रालय को छोडकर यदि विंस्टन अपने घर न आता तो मत्रालय के कैंटीन मे ही उसे अपना खाना मिल जाता। परन्तु अपनी रसोई मे उसे वदरग पाव रोटी के एक वडे टुकडे के अतिरिक्त

भिन्न एक घटना की स्मृति ने उसे घेर लिया जो आज ही सवेरे मत्रा-लय मे घटी थी।

दफ्तर के जिस मिसिल विभाग मे विस्टन काम करता था वहाँ लगभग ११ बजे अपने-अपने कमरो से कुर्सियाँ निकालकर 'दो मिनट की घृणा' सुनने और देखने के लिए कर्मचारीगण बडे टेलीस्क्रीन के सामने जमा हो गये थे। बीच की पक्तियो मे विस्टन बैठ ही रहा था कि गल्प विभाग से एक नवयुवती वहाँ आ गई। वह कभी उससे बोला न था और उसका नाम तक भी नही जानता था। परन्तु उसने कभी-कभी इस नवयुवती को तेल से सने हाथो मे एक रिंच लिये देखा था। इसलिए उसका अनुमान था कि वह गल्प लिखनेवाली किसी मशीन पर काम करती है। वह लगभग सत्ताईस वर्ष की एक चचल नवयुवती थी, उसके बाल घने काले रग के थे और चेहरे पर चित्तियाँ पडी थी तथा तेज चाल के कारण वह कसरतिन मालूम पडती थी। विस्टन पहले ही से उसे नापसन्द करता था। उसका ख्याल था कि स्त्रियाँ, और इनमे भी विशेष रूप से नवयुवतियाँ, दल की सबसे कट्टर अनुयायिनी होती थी, उन कट्टर विचारो से जरा भी हटकर सोचनेवालो पर जासूसी करना और चुगली खाना उनका शौकिया काम था। एक बार कमरे के बाहर दालान मे जाते हुए उसने विस्टन को तेज और चुभती हुई दृष्टि से घूरा था, जिस कारण विस्टन एक क्षण के लिए बहुत भयभीत हो गया था। उसको यह भी आभास हुआ था कि कदाचित् वह विचारो का भेद लेनेवाली पुलिस की ओर से नियुक्त हो।

ऐसे ही समय आन्तरिक दल का एक सदस्य कमरे मे आ गया था और नवयुवती की भाँति विस्टन से थोडी ही दूर पर बैठ गया था। वह काला चोगा पहने हुए था। उसके आते ही सब जान गये कि वह आन्तरिक दल का कोई ऊँचा अधिकारी है। इसलिए प्रतीक्षा करने-वाले सभी लोग थोडी देर के लिए बिलकुल स्तब्ध हो गये।

दूसरे ही क्षण एक भयानक चीख की ध्वनि बड़े टेलीस्क्रीन से निकली जो कमरे के सिरे पर रखा हुआ था। यह चीख ऐसी थी मानो कोई बहुत बड़ी मशीन तेल के बगैर चल रही हो। यह ऐसी ध्वनि थी जिसके सुनते ही श्रोताओं के दांत भिच गये और उनकी गुद्दी के बाल खड़े हो गये। इस प्रकार 'घृणा' का कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ।

पहले की भांति "जनता के दुश्मन" इमैनुअल गोल्डस्टाइन के मुख का चलचित्र टेलीस्क्रीन पर आ गया। दर्शकों के मुख से धिक्कारात्मक ध्वनियाँ निकलने लगी। किसी समय गोल्डस्टाइन की गिनती दल के प्रमुख सदस्यों में थी और उसका पद बड़े भाई के पद के प्राय बराबर था। पर ऐसे ही समय उसने क्रान्ति के विरुद्ध कार्यवाहियाँ प्रारम्भ कर दी थी, जिस कारण उसे मृत्यु-दण्ड मिला था। परन्तु दण्डित होने के पहले ही वह किसी प्रकार छिपकर निकल भागा था। दो मिनट का घृणासूचक कार्यक्रम प्रतिदिन बदलता रहता था परन्तु गोल्डस्टाइन हमेशा इसमें घृणा का प्रमुख पात्र रहता था। दल के विरुद्ध जितने अपराध, विश्वासघात, विनाशकारी षड्यन्त्र और पाप होते थे, वे सब उसके ही बहकाने पर होते थे। जीवित रहकर वह कहीं-न-कहीं से कोई-न-कोई षड्यन्त्र रचता ही रहता था।

गोल्डस्टाइन का चेहरा देखते ही विन्स्टन की आँतें ऐंठ गई। दुबले यहूदी मुख के चारों ओर श्वेत बालों की अस्पष्ट आभा और ठोड़ी के नीचे एक छोटी-सी दाढ़ी के कारण वह चतुर अवश्य मालूम होता था, तो भी किसी कारणवश वह जन्म ही से घृणा का पात्र मालूम होता था। उसका मुख तो भेड़ से मिलता ही था पर उसकी बोली भी भेड़ की जैसी ही थी। पहले की भांति दल के विरुद्ध वह ज़हर उगलने लगा। उसने इस दल की तानाशाही की निन्दा की, बड़े भाई को गालियाँ दी और यूरेशिया से तुरन्त सन्धि करने की मांग की। गोल्डस्टाइन ने इसलिए कि किसी के मन में कोई शंका न उत्पन्न होने पाये इसलिए टेलीस्क्रीन पर लगातार यूरेशियन सेना की पल्टनें एक दूसरे के

पीछे जाती हुई दिखाई जा रही थी। सब सैनिकों के एशियाई मुखो से जहाँ उनकी मजबूरी प्रत्यक्ष होती थी तो भावनाहीनता भी। एक ओर गोल्डस्टाइन की गालियो की मिमियाती ध्वनि थी तो उसकी पृष्ठभूमि मे सिपाहियो के फौजी जूतों की चाप एक विशेष लय लिये सुनाई दे रही थी।

घृणा के कार्यक्रम को शुरू हुए अभी आधा मिनट भी न हुआ था कि कमरे मे बैठे आधे श्रोताओ के मुख से अनियन्त्रित क्रोध के शब्द निकलने लगे। स्क्रीन पर एक ओर भेड जैसे मुख से सन्तोष की भावना और इसके पीछे यूरेशियन सेना की भयावनी शक्ति, ये दोनो दृश्य दर्शको के लिए असहनीय थे। एक बात यह भी थी कि गोल्डस्टाइन को देखना क्या, उसका ध्यान आते ही स्वभावत भय और क्रोध की भावनाएँ जाग्रत होती थी। यूरेशियनो से मिल जाने के अतिरिक्त कुछ व्यक्तियो ने उसके नियन्त्रण मे सगठित होकर गुप्त षड्यन्त्रो के विशाल जाल द्वारा ओशियानिया राज्य को उलट देने के निमित्त अपने को अर्पित कर दिया था। इस सगठन का नाम 'भ्रातृ सघ' बताया जाता था, यद्यपि यह सब अफवाह की ही बात थी क्योकि दल के सभी सदस्य यथासम्भव इस बात का उल्लेख करने से कतराते थे।

घृणा के कार्यक्रम के दूसरे मिनट मे उपस्थितजनो का उन्माद बढ गया। दर्शकगण परदे से निकलती मिमियाती आवाज को डुबो देने के लिए उछलने-कूदने और चिल्लाने लगे। काले बालोंवाली नवयुवती पहले तो "सुअर! सुअर! सुअर!" कहकर चिल्लाई और फिर अकस्मात् 'न्यूस्पीक' भाषा के कोष की एक भारी-सी प्रति उठाकर उसने परदे पर फेंकी। विंस्टन भी उन्माद के व्यापक वातावरण मे उन्मत्त हो गया। होश मे आने पर उसे मालूम हुआ कि वह भी अन्य लोगो के साथ चिल्ला रहा था और अपनी कुरसी के डण्डे पर बडे जोर से ठोकरें मार रहा था। 'दो मिनट की घृणा' के कार्यक्रम की सबसे बुरी बात यह न थी कि हर आदमी को मजबूर होकर घृणा का दिखावा करना

पड़ता था बल्कि यह कि उससे बचना असम्भव था। आधे मिनट के भीतर क्रोध-प्रदर्शन या दिखावा करना बिलकुल अनावश्यक हो जाता था। भय, बदला लेने की भावना, मारने, कष्ट देने, हथौड़े से मुख तोड़ने जैसी भावनाएँ बिजली की धारा के समान सभी दर्शकों में व्याप्त हो जाती थी और वे विवश होकर पागलों की भाँति चीखने-चिल्लाने लगते थे।

घृणा के अपनी चरम सीमा तक पहुँचने पर गोल्डस्टाइन की बोली भेड़ की बोली के समान हो गई और एक क्षण के लिए उसका मुख भेड़ की सूरत में परिवर्तित भी हो गया। तुरन्त ही वह दृश्य विलीन होकर एक यूरेशियन सिपाही के चित्र में बदल गया, जो विशाल और भयानक रूप में अपनी मशीनगन से गोलियाँ बरसाते हुए स्क्रीन की सतह से उछलकर बाहर निकलता मालूम होने लगा। परन्तु उसी समय वह चित्र बड़े भाई के मुख जैसा हो गया, जिसकी शक्ति और अवर्णनीय शान्ति से परदा करीब करीब पूरा भर गया और दर्शकों में सभी ने मुक्त कण्ठ से गहरी साँस ली। बड़े भाई क्या कह रहे थे, यह किसी ने नहीं सुना। वे कुछ ऐसे ही शब्द थे जो लड़ाई के हुल्लड़ में सिपाहियों का उत्साह बढ़ाने के लिए कहे जाते हैं, जो किसी व्यक्ति की समझ में नहीं आते, परन्तु जिनके बोलने मात्र से सैनिक आश्वस्त हो जाते हैं। इसके बाद बड़े भाई का मुख धीरे-धीरे विलुप्त हुआ और दल के तीनों नारे बड़े बड़े अक्षरों में प्रकट हुए :

समर ही शान्ति है।
स्वतन्त्रता ही दासता है।
अज्ञान ही शक्ति है।

इन नारों के प्रकट होते ही सभी दर्शक गहरी परन्तु मन्द लय में बार-बार 'बड़े भाई, बड़े भाई, बड़े भाई' का गीत जैसा गाने लगे। यह दृश्य कुछ ऐसा ही था, मानो जंगली लोग अपने नंगे पैरों की ताल और नगाड़ों की धम धम पर गा रहे हों।

विस्टन को अपनी आँखें ठंडी होती मालूम हुईं। दो मिनट के घृणा कार्यक्रम के व्यापक उन्माद में वह भी सम्मिलित होने में न बच सका था। परन्तु 'बडे भाई, बडे भाई' के जगली गीत में वह सदैव भयभीत हो जाता था, यद्यपि सबके साथ स्वयं भी गाता रहा क्योंकि अलग रहना असम्भव था। अपने भावों को छिपाना, अपनी आकृति को अपने वश में रखना, वही करना जो और सब कर रहे हो, यह सब स्वाभाविक है। परन्तु हो सकता है कि, एक क्षण के ही लिए सही, उसकी आँखें उसकी आनरिक भावनाओं को छिपाये रखने में असफल रही हो। यदि उसकी आँखे एक क्षण के लिए भी असावधान रह गई हो तो उसके विनाश का चिट्ठा बन गया है।

पहले पहर की घटना के उपर्युक्त सस्मरण से मुक्त होते ही विस्टन की आँखे फिर अपनी डायरी के पहले सफे पर पहुँच गई। देखता क्या है कि जिस समय वह अपनी असहायावस्था में विचारमग्न था, उसी समय उसका हाथ मस्तिष्क से स्वतन्त्र होकर बडे और साफ अक्षरों में बार-बार लिखता जा रहा था 'बडे भाई का नाश हो।'

थोडी देर के लिए वह भय की पीडा से तडप उठा। फिर इस भय की निरर्थकता भी उसकी समझ में आ गई, क्योंकि डायरी लिखना शुरू करने का प्रारम्भिक काम उतना ही खतरनाक था जितना कि इन विशेष शब्दों का लेखनी से निकलना। परन्तु एक क्षण के लिए उसके मन में यह विचार भी आया कि वह नोटबुक के लिखे हुए पृष्ठों को फाडकर डायरी लिखना बन्द कर दे।

तो भी उसने यह कुछ नही किया, क्योंकि वह मानता था कि यह सब बेकार है, वह 'बडे भाई का नाश हो' लिखे या ऐसा वाक्य लिखने से बाज रहे, उसकी सरकार की दृष्टि में कोई फर्क न पडेगा, विचारों का भेद लेनेवाली पुलिस की पकड में वह आ ही जायेगा। यदि उसने लेखनी को कागज पर कभी रखा भी न होता, तो भी इस पुलिस की दृष्टि में वह उस मौलिक अपराध का भागी तो था ही जिसका नाम

मानसिक अपराध था । यह मानसिक अपराध ऐसा नहीं जो सदैव छिपाये रखा जा सके । कुछ समय तक, कुछ वर्षों तक भी, सफलतापूर्वक इस पुलिस को धोखा दिया जा सकता था । परन्तु कभी-न-कभी तो उसकी पकड़ में आ ही जाना था ।

विन्स्टन सोचने लगा कि गिरफ्तारियाँ आम तौर से रात के समय ही की जाती हैं । अभियुक्त सो रहा है । पुलिस का एक जत्था बिजली की टार्चें लिए उसका बिस्तर घेर लेता है, कोई बेदर्दी से उसका कंधा हिलाकर उसे जगा देता है और सिपाही अपनी टार्चों की रोशनी उसके मुख पर फेंकते हैं । आम तौर से न गिरफ्तारी की सूचना प्रकाशित होती है और न कोई मुकदमा होता है । अभियुक्त केवल लापता हो जाते हैं । उनका नाम दल के रजिस्टरों से काट दिया जाता है और उनके अस्तित्व का जो कुछ भी लेखा रहा हो, वह नष्ट कर दिया जाता है । अभियुक्त का नाम निशान मिटा दिया जाता है, उसे भाप बनाकर उड़ा देना कहा जाता है ।

इस प्रकार का विचार करते-करते वह अपनी कुर्सी के पीछे विमूढ़ दशा में गरदन मेज पर रखकर लेट-सा गया । इतने में किसी ने दरवाजा खटखटाया ।

अरे, इतनी जल्दी ! विन्स्टन इस व्यर्थ आशा से चूहे की भांति दुबककर बैठ गया कि जो होगा चला जायेगा । परन्तु खटखटाहट जारी रही । उसने सोचा कि देर करूँगा तो और भी दुर्गति होगी । उसका हृदय नगाड़े की भांति धड़क रहा था, परन्तु आदत के अनुसार वह अपने मुख पर शांति की भावना बनाये रहा । उसने किसी प्रकार दरवाजे तक पहुँचकर उसे खोला । तुरन्त ही भय से उसकी मुक्ति हो गई । एक मुर्झाई हुई, बेरंग नेहरेवाली स्त्री उसके सामने खड़ी थी जिसके बाल बिखरे हुए थे, मुख पर झुर्रियाँ थीं और जो सिलवटों के बोझ से लदी हुई मालूम पड़ती थी ।

रसीली और भारी-सी बोली में उसने अपनी बात प्रारम्भ की,

विस्टन को अपनी आँखें ठंडी होती मालूम हुईं। दो मिनट के घृणा कार्यक्रम के व्यापक उन्माद में वह भी सम्मिलित होने से न बच सका था। परन्तु 'बडे भाई, बडे भाई' के जगली गीत मे वह सदैव भय-भीत हो जाता था, यद्यपि सबके साथ स्वय भी गाता रहा क्योंकि अलग रहना असम्भव था। अपने भावो को छिपाना, अपनी आकृति को अपने वश मे रखना, वही करना जो और सब कर रहे हो, यह सब स्वाभाविक है। परन्तु हो सकता है कि, एक क्षण के ही लिए नहीं, उसकी आँखें उसकी आतरिक भावनाओ को छिपाये रखने मे असफल रही हो। यदि उसकी आँखें एक क्षण के लिए भी असावधान रह गई हो तो उसके विनाश का चिट्ठा बन गया है।

पहले पहर की घटना के उपर्युक्त सस्मरण से मुक्त होते ही विस्टन की आँखें फिर अपनी डायरी के पहले सफे पर पहुँच गईं। देखता क्या है कि जिस समय वह अपनी असहायावस्था मे विचारमग्न था, उसी समय उसका हाथ मस्तिष्क से स्वतन्त्र होकर बडे और साफ अक्षरो मे बार-बार लिखता जा रहा था 'बडे भाई का नाश हो।'

थोडी देर के लिए वह भय की पीडा मे तडप उठा। फिर इस भय की निरर्थकता भी उसकी समझ मे आ गई, क्योकि डायरी लिखना शुरू करने का प्रारम्भिक काम उतना ही खतरनाक था जितना कि इन विशेष शब्दो का लेखनी से निकलना। परन्तु एक क्षण के लिए उसके मन मे यह विचार भी आया कि वह नोटबुक के लिखे हुए पृष्ठो को फाडकर डायरी लिखना बन्द कर दे।

तो भी उसने यह कुछ नही किया, क्योकि वह मानता था कि यह सब बेकार है, वह 'बडे भाई का नाश हो' लिखे या ऐसा वाक्य लिखने से बाज रहे, उसकी सरकार की दृष्टि मे कोई फर्क न पडेगा, विचारो का भेद लेनेवाली पुलिस की पकड मे वह आ ही जायेगा। यदि उसने लेखनी को कागज पर कभी रखा भी न होता, तो भी इस पुलिस की दृष्टि मे वह उस मौलिक अपराध का भागी तो था ही जिसका नाम

रत की तरह यहाँ भी, उबली बंद गोभी की गंध बसी हुई थी। अंदर के एक कमरे मे टेलीस्क्रीन लगा हुआ था जिससे सैनिक संगीत की ध्वनि आ रही थी और कोई कंघी तथा पतले कागज की मदद से टेलीस्क्रीन से निकले सैनिक संगीत की ताल-से-ताल मिला रहा है।

सन्देह की भावना से द्वार की ओर देखकर श्रीमती पार्संन्स बोलीं, "बच्चे ही हैं, आज घर के बाहर नहीं निकले, और वास्तव में—"

वह अपनी आदत के अनुसार बीच मे ही रुक गई। रसोईघर का हौज ऊपर तक गंदे बदबूदार और हरे पानी से भरा था। अपने हाथो काम करना और झुकना विंस्टन को नापसंद था, क्योकि ऐसा करने से उसे खाँसी आने लगती थी।

परन्तु इस समय विवश होकर वह झुका, और नल के जोड़ पर लगी डिबरी को टटोलकर ढूँढा। पूछा, "तुम्हारे पास रिंच है ?"

बेचारी को पता नहीं था, बोली, "मुझे मालूम नही, रिंच कहीं होगा तो। शायद बच्चो ने—"

बूटो की खटखट के साथ कंधे पर फिर किसी ने ताल दी और बच्चो ने सोने के कमरे पर धावा बोल दिया। श्रीमती पार्संन्स दूसरे कमरे मे जाकर थोडी देर मे रिंच ले आईं। इससे विंस्टन ने जोड़ खोल दिया और उसमे फँसे बालो की गाँठ निकाल देने पर हौज का सब पानी बह गया। इन गंदे काम से मुक्त होकर उसने नल के ठण्डे पानी मे किसी प्रकार अपनी उँगलियाँ साफ कीं और अपनी बैठक की ओर मुडा।

इतने ही मे एक जंगली आवाज में उसे हुक्म मिला, "अपने दोनो हाथ उठाओ !"

खेल का एक पिस्तौल लिए लगभग नौ वर्ष के एक सुन्दर और पुष्ट बालक ने मेज के पीछे से उचककर इस प्रकार उसको हुक्म दिया और उससे दो वर्ष छोटी उसकी बहन ने वैसा ही संकेत लकड़ी का एक टुकडा हाथ में लेकर किया। दोनो भेदियों के वेष में नीले जाँघिये और

"कामरेड, मैंने तुम्हे भीतर आते सुना, इसलिए आई हूँ। जरा चलकर रसोईघर का हौज तो देख लो, मालूम होता है कि कोई चीज अट गई है और—"

जिस सत्य मत्रालय मे विन्स्टन काम करता था उसी मे मोटा परन्तु फुर्तीला तथा बुद्धू प्रकृति का पार्सन्स नामक एक व्यक्ति काम करता था। यह उसी की पत्नी थी, जो उसी मजिल पर पडोस मे रहती थी। इसकी अवस्था तीस के लगभग थी, परन्तु देखने मे अधिक मालूम होती थी। इसके पति के बुद्धूपन से विन्स्टन परेशान था, इतना मेहनती और आज्ञाकारी था वह। दल की शक्ति जितनी विचारो के भेदियो पर निर्भर थी, उससे अधिक वह पार्सन्स जैसे भोले अध भक्त कर्मचारियो के परिश्रम पर भी टिकी थी।

विन्स्टन श्रीमती पार्सन्स के साथ हो लिया। बेगार के मरम्मती काम तो विजय-भवन के रहनेवालो को नित्य ही तग किया करते थे। इस भवन के निवासकक्ष लगभग सन् १९३० मे बने थे, परन्तु नियमानुकूल मरम्मत न होने के कारण गिराऊ हो गये थे। दीवारो और छतो से पलस्तर गिरा करता था। जब भी बर्फ गिरती तो छतें चूने लगती। नलो मे या तो किफायत के लिए भाप पहुँचाई ही नही जाती थी, या फिर आधी ही पहुँचाई जाती थी। मरम्मत का काम स्वय करो और यदि खिडकी के शीशे की मरम्मत जैसे छोटे काम के लिए मजूरी की अर्जी दो तो सुदूर समितियो की मजूरी आने मे कम-से-कम दो वर्ष लगते थे।

पार्सन्स का निवासकक्ष विस्टन के निवासकक्ष से बडा था और एक प्रकार से गदा भी। मालूम होता था जैसे किसी जगली पशु ने वहाँ चारो ओर तोड-फोड कर दी हो। हाकी स्टिकें, मुक्केबाजी के दस्ताने, फटा फुटबाल, पसीने से मैला जाँघिया—ऐसा सब खेल का सामान फर्श पर पडा था। दीवार पर एक ओर युवक सघ और भेदियो के लाल झण्डे लगे थे और दूसरी ओर बडे भाई का बडा इश्तिहार। पूरी इमा-

रत की तरह यहाँ भी, उबली बद गोभी की गंध बसी हुई थी। अंदर के एक कमरे मे टेलीस्क्रीन लगा हुआ था जिससे सैनिक संगीत की ध्वनि आ रही थी और कोई कघी तथा पतले कागज की मदद से टेलीस्क्रीन से निकले सैनिक सगीत की ताल-से-ताल मिला रहा है।

सन्देह की भावना से द्वार की ओर देखकर श्रीमती पार्सन्स बोलीं, "बच्चे ही हैं, आज घर के बाहर नही निकले, और वास्तव मे—"

वह अपनी आदत के अनुसार बीच में ही रुक गई। रसोईघर का हौज ऊपर तक गदे बदबूदार और हरे पानी से भरा था। अपने हाथो काम करना और झुकना विंस्टन को नापसद था, क्योंकि ऐसा करने से उसे खाँसी आने लगती थी।

परन्तु इस समय विवश होकर वह झुका, और नल के जोड पर लगी ढिबरी को टटोलकर ढूँढा। पूछा, "तुम्हारे पास रिंच है?"

बेचारी को पता नही था, बोली, "मुझे मालूम नही, रिंच कहीं होगा तो। शायद बच्चो ने—"

बूटो की खटखट के साथ कघे पर फिर किसी ने ताल दी और बच्चो ने सोने के कमरे पर धावा बोल दिया। श्रीमती पार्संस दूसरे कमरे मे जाकर थोडी देर मे रिंच ले आईं। इससे विंस्टन ने जोड खोल दिया और उसमे फँसे बालों की गाँठ निकाल देने पर हौज का सब पानी बह गया। इस गदे काम से मुक्त होकर उसने नल के ठण्डे पानी मे किसी प्रकार अपनी उँगलियाँ साफ की और अपनी बैठक की ओर मुडा।

इतने ही मे एक जगली आवाज में उसे हुक्म मिला, "अपने दोनो हाथ उठाओ!"

खेल का एक पिस्तौल लिए लगभग नौ वर्ष के एक सुन्दर और पुष्ट बालक ने मेज के पीछे से उचककर इस प्रकार उसको हुक्म दिया और उससे दो वर्ष छोटी उसकी बहन ने वैसा ही सकेत लकड़ी का एक टुकडा हाथ में लेकर किया। दोनो भेदियो के वेष मे नीले जाँघिये और

इन बच्चो के कारण तो इस बेचारी स्त्री का जीवन भय से ही भरा रहेगा। एक-दो वर्ष मे ये बच्चे रात-दिन इसी खोज मे रहेगे कि कहाँ पर वह निर्धारित पथ से हटती है। अब तो प्राय सभी बच्चे खतरनाक हो गये हैं। भेदिया सस्था के प्रशिक्षण मे ये अनियन्त्रित जगलियो मे परिवर्तित हो जाते हैं। तीस वर्ष मे ऊपर की अवस्था के प्राय सब नर-नारी अब अपने ही बच्चे से डरने लगे हैं, और उनकी यह भावना ठीक ही है, क्योंकि प्राय प्रति सप्ताह 'टाइम्स्' नामक दैनिक पत्र मे किसी वीर बालक की यशोगाथा प्रकाशित हो जाती है— किस प्रकार यह बाल-वीर अपने माता-पिता के अनुदार विचारो को सुन लेता है और विचार के भेदियों को उनके विरुद्ध सूचना दे देता है।

टेलीस्क्रीन की आवाज एक क्षण के लिए रुक गई। कमरे की बद वायु मे एक दुन्दुभी की साफ और सुन्दर आवाज गूज उठी और एक लडखडाती आवाज मे सुनाई दिया, "सावधान! मलाबार के मोर्चे से अभी यह खबर आई है कि दक्षिण भारत मे हमारी सेनाओ ने एक भारी विजय प्राप्त की है।"

विस्टन सोचने लगा कि अब कोई बुरी खबर आने को है और उसका अनुमान सही निकला क्योंकि पहले तो यूरेशियन सेना के विनाश का खूनी बयान आया और मारे जानेवालो तथा कैदियो की सख्या के भारी आंकडे सुनाये गये। फिर यह सूचना प्रसारित की गई कि अगले सप्ताह मे चाकलेट का राशन तीस माशे से घटकर बीस माशे कर दिया गया है।

टेलीस्क्रीन की ओर पीठ किये हुए विस्टन खिडकी की ओर चला गया। अभी तक ठड थी और आकाश भी निर्मल था। कही दूर पर एक स्वचालित (राकेट) बम के गिरकर फटने की धीमी गूंजती हुई गर्जना उसे सुनाई दी। इन दिनो लदन पर प्रति सप्ताह बीस-तीस ऐसे बम गिरकर फटा करते थे।

नीचे गली के मोड़ पर एक कोने से फटा इश्तिहार पहले की भाँति

हवा के झोके के साथ उड रहा था, जिससे उस पर लिखा हुआ 'इगसोश' शब्द कभी ढक जाता और कभी खुल जाता था। इगसोश के पवित्र सिद्धान्त ! विंस्टन को ऐसा मालूम हुआ जैसे वह गहरे समुद्र की तह के जगलो मे घूमता-फिरता हिंसक जीवो के बीच भटक गया हो। वह अपने को बिलकुल अकेला अनुभव करने लगा। अतीत मिट चुका था और भविष्य की कल्पना असम्भव थी। उसे विश्वास नही था कि कोई भी जीवित मानव अब उसकी ओर है। किस प्रकार वह मालूम करे कि दल का प्रभुत्व कभी समाप्त भी होगा कि नही। उत्तर के रूप मे सत्य-मन्त्रालय की श्वेत इमारत के सामने अकित तीनो नारे उसके सामने आ गये

समर ही शान्ति है।
स्वतन्त्रता ही दासता है।
अज्ञान ही शक्ति है।

अपनी जेब से उसने २५ सेंट का एक सिक्का निकाला, उसमे भी एक ओर छोटे और साफ अक्षरो मे यही तीनो नारे अकित थे और सिक्के की दूसरी ओर बडे भाई की शक्ल बनी थी। उनकी आँखें सिक्के से भी पीछा करती दिखाई देती थी। सिक्को पर, टिकटो पर, पुस्तको पर, झडो पर, इश्तिहारो मे, सिगरेट की डिब्बी तक पर—हर जगह यही आखें थी। ये आँखें सब पर हर समय नजर रखती थी और इन नजरो की ध्वनि चारों ओर गूँजती रहती थी। सोते-जागते, काम पर, खाते समय, भीतर-बाहर, कही भी इनसे बचाव न था।

टेलीस्क्रीन पर दो बजे। दस मिनट के भीतर उसे अपना घर छोड देना था और काम पर ढाई बजे पहुँच जाना था। अकस्मात् देखता क्या है कि उसके दाहिने हाथ की पहली दो उँगलियो मे कुछ स्याही लगी है। अरे, ऐसी ही साधारण बात से तो गल्प विभाग मे काम करनेवाली नवयुवती जैसी भेद का सुराग पाने की खोज मे रहनेवाली औरत को वह सकेत मिल सकता है जो उसकी आन्तरिक

भावनाओं का पर्दाफाश कर सकता है। तुरन्त स्नानघर में जाकर उसने एक मटीली साबुन से स्याही को भली प्रकार छुड़ाया। तभी वह अपना निवासकक्ष छोड़कर मिसिल विभाग में अपने काम की ओर तेजी से रवाना हुआ।

● ● ●

प्रातःकाल के सवा सात बजे कर्मचारियों के उठने का समय था। टेलीस्क्रीन से आधे मिनट तक एक तेज सीटी बजती रही। विंस्टन स्मिथ विवश होकर अपने बिस्तर से उठा। वह बिलकुल नंगा सोया था क्योंकि बाहरी दल के सदस्य को प्रतिवर्ष वस्त्र के लिए केवल तीन हजार कूपन मिलते थे और एक पैंजामा बनने में ही छः सौ कूपन कट जाते थे। लपककर उसने एक मैली बनियाइन और जांघिया लिया। तीन मिनट में ही व्यायाम प्रारम्भ होनेवाला था, परन्तु इतने में ही वह खांसी के दौरे से दोहरा हो गया, और यह खांसी उसे नित्य उठने ही आती थी।

एक तेज जनानी आवाज झटके के साथ बोली, "तीस से चालीस वर्ष के, तीस से चालीस वर्ष के सब लोग, अपनी-अपनी जगहों पर खड़े हो जायें! तीस से चालीस, तीस से चालीस!" टेलीस्क्रीन के सामने विंस्टन सावधान होकर खड़ा हो गया। तब तक एक जवान और दुबली परन्तु पुष्ट पुट्ठों वाली स्त्री कमीज और व्यायाम के उपयुक्त जूते पहने टेलीस्क्रीन के परदे पर दिखाई दी।

वह स्त्री कड़ककर आदेश देने लगी, "बाँहें मोड़ो और फैलाओ, एक, दो, तीन, चार! एक, दो, तीन, चार! शाबाश कामरेडो, कुछ मौर दिल से—एक, दो, तीन, चार! एक, दो, तीन, चार!..."

विंस्टन मशीन की भांति अपनी बाँहें आगे-पीछे करता रहा। व्यायाम के समय गम्भीर प्रसन्नता की जो मुखमुद्रा आवश्यक मानी जाती थी उसका भी वह दिखावा करता रहा, परन्तु उसके मस्तिष्क

मे विचारो की जो हलचल मची रहती थी, उसका सिलसिला कसरत के दौरान मे भी नही टूटा। वह प्रार्थना करता रहा कि उसे बाल्य-काल के धुँधले दृश्यो की कुछ याद आ जाये, परन्तु १९५६-५९ के पहले की कोई बात उसे याद ही नही आई। इतना ही वह जानता था कि तब का जीवन अब से बिलकुल भिन्न था, देशो के नाम और नक्शे पर उनकी सीमाएँ भी तब बिल्कुल भिन्न थी।

विंस्टन को किसी ऐसे समय की याद नही थी जब उसके देश की किसी से लडाई न चल रही हो। यद्यपि सही बात यह है कि लडाई के प्रतिपक्षी बदलते रहे थे। परन्तु इस समय शक्तियो का जो सयोजन था उसके अलावा किसी दूसरे सयोजन का न कोई लेखा था न कही जिक्र था। इसलिए इस पूरे काल का इतिहास बताना और यह कह सकना बिलकुल असम्भव था कि कब किससे लडाई रही। उदाहरण के लिए, १९८४ मे ओशियानिया का ईस्टेशिया से मेल, और यूरेशिया से लडाई थी। न किसी सार्वजनिक भाषण मे और न पारस्परिक बातचीत मे ही, कभी इस बात को माना जाता था कि ये तीनो शक्तियां कभी किसी दूसरे प्रकार भी एक-दूसरे से सम्बन्धित थी। विंस्टन अच्छी तरह जानता था कि वास्तव मे चार वर्ष पहले ही ओशियानिया और यूरेशिया मिलकर ईस्टेशिया से लडाई ठाने हुए थे। परन्तु विंस्टन की स्मरण-शक्ति अच्छी तरह नियन्त्रित नही हुई थी, जिस कारण यह जानकारी चोरी से उसके दिमाग मे रह गई थी। दल के पक्के सदस्य बिना अपनी शका प्रकट किये उन झूठो को मान लेते थे जो दल की ओर से उन पर लाद दिये जाते थे। सादी-सी बात यह थी कि हर आदमी स्वय अपनी स्मरण-शक्ति पर बराबर विजय प्राप्त करता रहे। इसे "वास्तविकता का नियन्त्रण" कहा जाता था, नई बोली मे इसके लिए जो शब्द था उसका अर्थ होता है "कपट-विचार"।

शिक्षिका कसरत करनेवालो को फिर सावधान कर रही थी। उसने उत्साह के साथ कहा, "अब देखना है कि हम मे से कौन अपने

पैर के अंगूठे छू सकते हैं। कामरेडो, कमर झुकाकर एक, दो ! एक, दो !"

विंस्टन को इस कसरत से नफरत थी क्योंकि इससे उसके शरीर मे कठिन पीडा होने लगती थी और अकसर खांसी का दौरा भी आ जाता था। इसलिए उसकी मधुर कल्पनाएं समाप्त हो जाती थी। उसकी समझ मे आता था कि अतीत बदला ही नही गया है। उदाहरणत, दल के इतिहास मे क्रांति के जन्मकाल से ही बडे भाई उसके नेता और सरक्षक माने जाते थे। कब से वह दल के नेता हुए इसकी तिथि पीछे बराबर हटाई जाती रही, यहां तक कि यह तिथि इस शती के पांचवें और चौथे दशक के सुदूर अतीत तक पहुंच गई। कोई नही कह सकता कि इस कहानी मे कितना अश सही था और कितना बनाया हुआ। विंस्टन को यह भी याद नही था कि दल का अस्तित्व कब से था। १९६० के पहले 'इगसोश' शब्द सुनने की उसे याद नहीं थी, परन्तु यह सम्भव है कि पुरानी बोली मे, अर्थात् 'इंगलिश-सोशलिज्म' के रूप मे, वह इनसे पहले भी चालू रहा हो। हर बात धुध मे विलीन थी। कभी-कभी कोई असत्य पकड मे आ जाता था, जैसे, दल के इतिहास की पुस्तको मे जो यह दावा किया जाता था कि वायुयान का आविष्कार दल ने किया था वह सही नही था क्योंकि उसे अपने सुदूर बाल्य-काल से वायुयानों की याद थी। परन्तु किसी बात को साबित करना असम्भव था, क्योकि कभी कोई प्रमाण ही न मिलता था।

विचारमग्न विंस्टन को टेलीस्क्रीन से कडकदार डांट का धक्का लगा : "स्मिथ ! नम्बर ६०७९ स्मिथ डबल ! हां तुम कुछ और झुको, कोशिश नही करते, बेहतर कर सकते हो, और नीचे।"

विंस्टन के सारे शरीर से गर्म पसीना निकलने लगा। मुख पर भय या क्रोध का भाव न आने दो, यदि तुम्हारी आंखें नियन्त्रित नहीं रहती तो वे तुम्हारी भावनाओ को प्रकट करके तुम्हें धोखा दे सकती हैं। इसलिए उसके चेहरे पर शिकन तक नहीं आई, वह जोर लगाकर

झुका और घुटना मोडे बिना अपने पैर के अँगूठे को छूने मे सफल हो गया।

• • •

विंस्टन अपने दफ्तर पहुँचा। टेलीस्क्रीन के निकट होते हुए भी काम शुरू होने के पहले उसके मुख से एक गहरी आह निकल गई। 'स्पीक-राइट' नामक यन्त्र उसने अपनी ओर घसीट लिया और उसके चोगे से गर्द झाडकर उसने ऐनक चढा ली। इसके पश्चात् उसने वे छोटे-छोटे कागज के लिपटे हुए टुकडे खोले जो हवाई-यन्त्र द्वारा उसकी मेज पर ढेर हो गये थे।

मेज के पास मे तीन छेद थे। 'स्पीक-राइट' के दाहिने ओर एक हवाई नल था जहाँ से लिखे आदेश निकलते थे। बाईं ओर का छेद कुछ बडा था और वह समाचारपत्रो के लिए था। निकट ही दीवार की बगल मे तार के चौकोर जाल से ढकी एक दरार थी जो बेकार कागजो के लिए थी। ऐसी ही दरारें हजारो की सख्या मे इमारत के भीतर प्रत्येक कमरे ही मे नही, थोडे-थोडे फासले पर बरामदे भर मे थी। किसी कारणवश इन्हे स्मरण-छिद्र कहा जाता था, यद्यपि वे थे विस्मृति-छिद्र ही। जब किसी लेख के नष्ट किये जाने की बारी आती तो स्वभावत निकटवर्ती स्मरण-छिद्र का ढक्कन उठाकर वह कागज छेद के भीतर डाल दिया जाता। भवन के भीतर कही बडी-बडी भट्ठियाँ जलती रहती थी, वही वह काग़ज जलने के लिए पहुँच जाता था।

विंस्टन ने कागज के उन टुकडों को पढा जो उसने खोलकर रखे थे। प्रत्येक मे एक या दो पक्तियो का आदेश था। भाषा नई बोली की भी नही है, उसमे नई बोली के कुछ शब्दो का सग्रह मात्र थी, जिनका प्रयोग इस मन्त्रालय मे होता थी। दो उदाहरण यहाँ दिये जाते हैं·

टाइम्स १७-३-८४ ब० भा० भाषण दु सूचित अफ्रीका शुद्धार्थ।

टाइम्स १४-२-८४ मिनीप्लेंटी दु उद्धरित चाकलेट शुद्धार्थ।

विंस्टन ने टेलीस्क्रीन पर लगे चक्र को 'टाइम्स' नामक समाचार-पत्र के उपयुक्त अंकों के लिए घुमाया और कुछ मिनटों के भीतर हवाई-नल से आवश्यक अंक मेज पर आ गये। जो आदेश उसे मिले थे, वे उन लेखों या खबरों को बदलने के थे, जिनकी शुद्धि सरकारी दृष्टि से आवश्यक हो गई थी। उदाहरणत. १७ मार्च के 'टाइम्स' में उससे पिछले दिन का बड़े भाई का वक्तव्य छपा था, जिसमें भविष्यवाणी की गई थी कि दक्षिणी भारत में शान्ति रहेगी, परन्तु उत्तरी अफ्रीका में यूरेशिया के विरुद्ध शीघ्र ही युद्ध छेड़ दिया जायेगा। हुआ यह कि यूरेशिया के सेनापति ने दक्षिणी भारत पर आक्रमण कर दिया और उत्तरी अफ्रीका को शांत रहने दिया। इसलिए बड़े भाई का वक्तव्य इस प्रकार संशोधित होना आवश्यक हो गया, जिससे उनकी भविष्यवाणी वास्तविक घटना के अनुकूल हो जाये। दूसरे आदेश में एक बहुत छोटी भूल का संकेत था जो दो मिनट के भीतर ठीक की जा सकती थी। समृद्धि-मन्त्रालय ने हाल ही के फरवरी मास में यह वादा (सरकारी शब्दों में 'स्पष्ट-प्रण') किया था कि १९८४ में चाकलेट का राशन घटाया नहीं जायेगा। वास्तव में वह तीस माशे से घटाकर बीस माशे कर दिया गया था। इतना ही आवश्यक था कि पिछले वादे की जगह एक चेतावनी दे दी जाती कि कदाचित् अप्रैल में किसी समय राशन का घटाना आवश्यक हो जाये।

सब आदेशों का पालन करने के बाद स्पीकराइट यन्त्र द्वारा तैयार किये हुए शुद्धि-पत्र 'टाइम्स' के आवश्यक अंकों के लिए उसने हवाई नल में डाल दिये। इसके बाद जो आदेश उसे मिले थे और जो छोटे-मोटे लेख उसने स्वयं लिखे थे, स्वभाव और नियम के अनुकूल उन सबको उसने तोड़-मरोड़कर भट्ठियों में जलने के लिए स्मरण-छिद्र में डाल दिया।

हवाई नलों की अदृश्य भूलभुलैया पार करने पर स्वनिर्मित संशोधनों का क्या उपयोग होता है, इसकी विंस्टन को मामूली जानकारी

ही थी। जब 'टाइम्स' के अक विशेष के सब आवश्यक सशोधन इकट्ठे हो जाते, तो पूरा अक फिर छापा जाता, पिछली प्रतिलिपि नष्ट कर दी जाती और फाइल मे उसकी जगह सशोधित प्रतिलिपि रख दी जाती। सशोधन का निरन्तर प्रयोग समाचारपत्रो पर ही नही होता, पुस्तकें, पत्रिकाएँ, पुस्तिकाएँ, इश्तिहार, फिल्मे, ग्रामोफोन रेकार्ड, व्यग-चित्र, फोटो इत्यादि साहित्य या सरकारी लेख के सभी अश जिनका कोई भी राज-नीतिक या विचारात्मक महत्व होता, उन सबका इसी प्रकार सशोधन होता रहता, अतीत की सभी घटनाएँ निरन्तर सशोधित होती हुई वर्तमान की आवश्यकतानुकूल सरकारी मिसिल मे दाखिल होती रहती। परि-णाम यह होता था कि दल की ओर से जो भी भविष्यवाणी होती थी, वह सरकारी मिसिल की गवाही से सही साबित कर दी जाती थी। कोई भी खबर, कोई भी राय, जो तत्कालीन आवश्यकता के विरुद्ध होती, सरकारी मिसिल मे रहने ही नही पाती थी। 'टाइम्स' के अक विशेष की तिथि नही बदली जाती थी, राजनीतिक सम्बन्धो के बदलने या बडे भाई की भविष्यवाणी मे भूल होने के कारण अक का सशोधन एक दर्जन बार क्यो न हो जाये, पर फाइल मे अक की तिथि वही रहती थी, और इस अक के किसी भी अमान्य सस्करण की प्रतिलिपि का अस्तित्व कही रहने नही पाता था, क्योकि ये सब प्रतिलिपियाँ बाकयदा जमा करके नष्ट कर दी जाती थी।

विस्टन के दफ्तर मे छोटी-छोटी काबुको की लम्बी और दोहरी कतार में बैठे विस्टन जैसे दर्जनो क्लर्क इसी मेल का काम किया करते थे। विस्टन इनमे बहुत थोडे सहयोगियो के नाम जानता था, यद्यपि वह नित्य-प्रति उन्हें बरामदो मे चक्कर लगाते या दो मिनट वाली घृणा मे अपने हाव-भाव करते देखता था।

वह जानता था कि उसके पडोस ही के कैबिन मे बैठी सूखे-रूखे बालोवाली छोटी-सी औरत नित्य-प्रति ऐसे व्यक्तियो के नामो को ढूँढ-कर छपे कागजो से काटने मे लगी रहती थी जो नष्ट किये जा चुके थे

और जिस कारण यह मान लिया जाता था कि उनका अस्तित्व कभी था ही नही। उसके इस काम मे कुछ औचित्य ही था, क्योकि दो-वर्ष पहले उसका पति भी इसी प्रकार नष्ट किया जा चुका था।

कुछ ही कैविनो के फासले पर ऐम्पुलफोर्थ नामक एक नम्र प्रकृति, प्रभाव-हीन और तन्द्रालु व्यक्ति अपने कानो के वाल वढाये उन कविताओ के भ्रष्ट सस्करण तैयार करने मे लगा रहता था जिनका चालू विचारधारा के विपरीत होते हुए भी काव्य-सग्रह मे वना रहना आवश्यक माना जाता था। इस काम मे वह निपुण माना जाता था क्योकि उसमे पदों और मात्राओ के साथ खिलवाड करने की अद्भुत क्षमता थी।

मिसिल-विभाग के जिस वडे कमरे मे विस्टन लगभग पचास सहयोगियो के साथ काम करता था, वह इस विभाग के पेचीदा सगठन का एक छोटा-सा ही अग था। आगे, ऊपर, नीचे वहुत-से कार्यकर्ता विभिन्न प्रकार के कामो मे लगे हुए थे। छपाई के वहुत-से कारखाने थे जिनमें वहुत-से उप-सम्पादक, छपाई के विशेपज्ञ और उपयुक्त यन्त्रो से लैस स्टूडियो मे फोटो-चित्रो को वदलनेवाले नियुक्त थे। टेलीविजन का कार्यक्रम प्रकाशित करने के लिए विभाग का एक अलग अग था, जिसमे इजीनियर, निर्माता और वोली के नक्काल अभिनेता लगे हुए थे। साथ ही वहुत वडी सख्या ऐसे क्लर्कों की भी थी, जिनका काम केवल उन पुस्तको और पत्रिकाओ की सूची वनाना था, जिनका सशोधन होना या नष्ट किया जाना अव आवश्यक समझा जाता था। भवन के किसी गुप्त भाग मे कुछ गुमनाम अधिकारी भी वैठे थे, जो पूरे प्रयत्न का समन्वय करते हुए यह निश्चय करते रहते थे कि अतीत के किस अश की रक्षा की जाये, किसका रूप वदल दिया जाये और कौन नष्ट कर दिया जाये।

मिसिल-विभाग सत्य-मन्त्रालय की एक छोटी-सी शाखा ही था जिसका मुख्य काम अतीत का सशोधन करना नही वल्कि ओशियानिया

के नागरिको को समाचारपत्र, फिल्म, पाठ्य-पुस्तकें, टेलीस्क्रीन कार्य-क्रम, नाटक, उपन्यास इत्यादि, मूर्ति से नारे तक, गीत-काव्य से जीव-विज्ञान तक, और बाल-बोध से नई बोली के कोष तक, सभी मेल की सूचना और ज्ञानार्जन अथवा मनोरजन की सामग्री पहुँचाना था। इस मन्त्रालय को दल की अनेक आवश्यकताओ की पूर्ति तो करनी ही होती थी। श्रमिको के हित के लिए, निम्न स्तर पर वे सब कार्यवाहियाँ भी दोहरानी पडती थी, जिनका उल्लेख ऊपर किया गया है।

ओशियानिया के श्रमिक-वर्ग की सख्या पूरी जनसख्या की ८५ प्रतिशत तक पहुँचती थी। इन तिरस्कृतों की भीड मे दल प्रचार नही करता था। विचारो पर निगरानी रखनेवाली पुलिस के कुछ कार्यकर्ता इन श्रमिको मे चक्कर लगाया करते थे और पीछा करके उन थोडे-से व्यक्तियो को पकड लेते थे, जिन्हें वे खतरनाक समझते थे। परन्तु दल की विचारधारा का उनमे प्रचार करने का कोई प्रयत्न नही किया जाता था, उनसे केवल एक दकियानूसी ढग की देशभक्ति की ही आशा की जाती थी ताकि वे कम राशन पर ज्यादा घण्टे काम करने के लिए राजी किये जा सकें। इनमे अधिकाश के घरों मे टेलीस्क्रीन भी नही था।

तो भी इन श्रमिको की बिलकुल उपेक्षा नही की जाती थी। विभागो की पूरी एक शृङ्खला थी जिसमे श्रमिको के लिए ही साहित्य, सगीत, नाटक और मनोरजन के अन्य साधन तैयार किये जाते थे। यहाँ से रद्दी किस्म के समाचारपत्र निकाले जाते थे, जिनमे खेल-कूद, अना-चार और भविष्यवाणियो के अतिरिक्त कुछ और पाठ्य-सामग्री नही होती थी। सस्ते और सनसनीखेज उपन्यास, कामोत्तेजक फिल्मे, कला-हीन तथा अश्लील गीत और निम्न स्तर का अन्य साहित्य इन श्रमिको के मनोरजन के लिए सत्य-मन्त्रालय के इन विभागो से प्रकाशित होता रहता था।

दफ्तर का अधिकाश काम लकीर की फकीरी ही था, परन्तु कुछ

काम ऐसे भी थे जो कर्मचारियों को अपनी कठिनाई और पेचीदगी से चक्कर मे डाल देते थे। जालसाजी के कुछ काम ऐसे भी होते थे, जिन्हें कलात्मक ढग से करना पडता था, 'इगसोश' के सिद्धान्तो तथा दल की आवश्यकताओ के अनुमान का ही सहारा रहता था। विस्टन ऐमे काम करने मे यथेष्ट चतुर था। कभी-कभी 'टाइम्स' के सम्पादकीय लेखों के सशोधन का कार्य भी उसके सुपुर्द होता था। उसे आदेश नई बोली मे ही मिलते थे। एक आदेश का नमूना इस प्रकार है·

टाइम्स ३-१२-८३ व० भा०
दिनादेश प्रदोहरा, अनच्छा
उल्लेख अव्यक्ति पुनर्लेख पूर्णांश
मनपेश पूर्व-फाइल

साधारण भाषा मे इसका अर्थ यह है—'टाइम्स' के ३ दिसम्बर, १९८३ वाले अक में बडे भाई का दैनिक आदेश जिस रूप में छपा है, वह अत्यन्त अशुद्ध है। उसमे ऐसे व्यक्तियो का उल्लेख है जिनका अस्तित्व ही नहीं है। फिर से लिखो और फाइल मे दाखिल करने के पहले मसविदे की मजूरी अपने अफसर से करा लो।

आदेश पाते ही विस्टन ने नियमानुसार 'टाइम्स' का उपर्युक्त अक मँगवाकर आपत्तिजनक लेख पढा। बडे भाई ने अपने दैनिक आदेश मे एक सस्था की तारीफ की थी जो जगी जहाजो के नाविको को सिगरेट-जैसी सुविधाओ की पूर्ति किया करती थी। दल के आतरिक अग का कामरेड विदर्स नामक एक प्रमुख सदस्य था। वक्तव्य मे उसकी विशेष प्रशसा के पश्चात् उसे पुरस्कृत करने की बात भी कही गई थी।

तीन महीने बाद प्रशसित सस्था एकदम तोड दी गई और तोड देने का कारण भी नही बताया गया। अनुमान यह किया गया कि विदर्स और उसके साथी पदच्युत कर दिये गये थे परतु इसकी कोई सूचना प्रकाशित नहीं हुई थी। ऐसा ही होता आया था, क्योंकि जिन व्यक्तियो के प्रति दल की नाराजगी होती थी, वे नष्ट कर दिये

जाते थे। विंस्टन को मालूम नहीं था कि विदर्स को पदच्युत क्यो किया गया था। विदर्स के भाग्य की कुंजी उसे, आदेश के 'उल्लेख अव्यक्ति' शब्दो में ही मिलती थी, जिससे वह समझ गया कि विदर्स मर चुका है। अव्यक्ति होने के कारण उसका अस्तित्व न है न कभी था। विंस्टन ने फैसला किया कि बडे भाई के वक्तव्य के रुख को पलट देने से काम न चलेगा, मौलिक विषय से बिल्कुल विपरीत एक कहानी गढकर उस की जगह पर चस्पां करनी होगी।

विश्वासघातको और विचारापराधियो की बुराई इतनी साधारण बात हो गई थी कि उसे चस्पां करने मे जाल की कलई खुल सकती थी। समर मे विजय या नवी त्रिवर्षीय योजना मे उत्पादन के आगे बढने की सूचना भी अनुपयुक्त होती, क्योकि मिसिलो का सिलसिला ऐसे जाल से बहुत अधिक बिगड जाता। इसलिए एक बिलकुल काल्पनिक कहानी ही चस्पाँ होनी चाहिए। अकस्मात् उसके मस्तिष्क मे कामरेड ओगिलवी नामक व्यक्ति का चित्र आया जो हाल ही मे वीर-गति को प्राप्त हुआ था। कभी-कभी बडे भाई अपने दैनिक आदेश मे दल के किसी साधारण सदस्य की महिमा का बखान करते थे और उसके जीवन तथा मृत्यु का आदर्श जनता के सामने रखते थे। इसलिए विंस्टन ने अब बडे भाई द्वारा कामरेड ओगिलवी की यशो-गाथा गढी। सच तो यह था कि कामरेड ओगिलवी नाम का कभी कोई व्यक्ति था ही नही परतु छापे की थोडी-सी पक्तियो और दो नकली फोटोचित्रो से उसका अस्तित्व प्रमाणित किया जा सकता था। विंस्टन ने एक क्षण सोचकर स्पीकराइट को अपनी तरफ घसीट लिया और बडे भाई की चिरपरिचित दभपूर्ण शैली मे बोलना शुरू कर दिया।

तीन वर्ष की अवस्था मे कामरेड ओगिलवी ने ढोल, छोटी मशीनगन और हेलीकाप्टर के अतिरिक्त और सब खिलौने नापसद किये, सात वर्ष की अवस्था से पहले बालक गुप्तचर भर्ती नही किये जाते थे, परतु

खास रियायत करके यह छ वर्ष की ही अवस्था मे गुप्तचर मे भरती कर लिये गये, नौ वर्ष की अवस्था मे यह अपनी टुकडी के नेता बना दिये गये, ग्यारह वर्ष की अवस्था मे अपने चाचा के मुख से एक आपत्ति-जनक वार्तालाप सुनने पर इन्होने विचार पर निगरानी रखनेवाली पुलिस को अपने चाचा के विरुद्ध सूचना दे दी, उन्नीस वर्ष की अवस्था मे वह एक दस्ती वम वनाने मे सफल हुए, जो शाति-मन्त्रालय द्वारा मान्य हुआ और जिसके पहले प्रयोग मे ३१ यूरेशियन कैदी मार दिये गये, २३ वर्ष की अवस्था मे वह वीर-गति को प्राप्त हुए । महत्वपूर्ण आदेश लिये हुए वह हिंद महासागर के ऊपर उड रहे थे कि शत्रु के हवाई जहाजो ने उनका पीछा करना प्रारम्भ कर दिया, अतएव आदेश-पत्रो की रक्षा के लिए अपने शरीर मे मशीनगन और आदेश-पत्र बांधकर वह हेलीकाप्टर से कूदकर सागर में डूब गये । एसी वीर-गति की जितनी भी प्रशसा की जाये, थोडी है ।

इस प्रकार वडे भाई का वक्तव्य तैयार करके विंस्टन ने उसे 'टाइम्स' के उपर्युक्त अक के लिये नियमानुसार रवाना कर दिया । जिस कामरेड ओगिलवी की एक घटा पहले कल्पना तक न थी, वह अब एक वास्तविक व्यक्ति हो गया । वर्तमान मे जिसका अस्तित्व न था उसका अतीत में अस्तित्व स्थापित कर दिया गया, उसी प्रामाणिकता के साथ जिससे शार्लमेन या जूलियस सीजर जैसे ऐतिहासिक व्यक्तियो का अस्तित्व मान्य है ।

● ● ●

दफ्तर के नीचे नीची छत के तहखाने मे कर्मचारियो को दोपहर का भोजन देने की व्यवस्था थी । कमरा अभी से भर गया था और हुल्लड इतना था कि कान-पडी आवाज सुनाई न देती थी । एक ओर उबले मास-मछली की खट्टी गन्ध आ रही थी और दूसरी ओर विजय-मदिरा से निकला धुआं इस गध को दबाये देता था । कमरे मे एक ओर

उबला मास खिलाने का प्रबन्ध था और दूसरी ओर मदिरा पिलाने का, जिसकी यथेष्ट मात्रा दस सेंट मे मिल सकती थी। लोग लाइन बनाये एक-दूसरे के पीछे खड़े थे। इनमे विंस्टन भी था।

पीछे से आवाज़ आई, "मैं तुम्हे ही ढूंढ रहा था।"

सुनते ही विंस्टन पीछे मुड़ा, तो उसे अन्वेषण-विभाग मे काम करनेवाला अपना मित्र साइम दिखाई दिया। कदाचित् 'मित्र' कहना सही नही है, क्योकि आजकल मित्र होते ही नही थे, सब 'कामरेड' ही थे, हां, कुछ साथी ऐसे जरूर होते थे, जिनकी सगत अन्य की अपेक्षा अधिक प्रिय होती थी। साइम भाषा-विज्ञान का पडित था, नई बोली का विशेषज्ञ था।

"मुझे पूछना था कि तुम्हारे पास कोई ब्लेड तो नही हैं।"

विंस्टन ने अपने पास दो नये ब्लेड जोड रखे थे। सत्य छिपाना था, सो तुरन्त ही कह गया, "एक भी नही, मैंने सब दुकानें छान डाली, कही एक भी नही है। जिसे देखो वह रेज़र ब्लेड मांगता फिरता है। अकसर ऐसा होता है कि कोई-न-कोई जरूरी चीज़ का स्टाक दल से नियुक्त दुकानो मे चुक जाता हैं, कभी बटन चुक जाते हैं, कभी बुनने का ऊन और कभी जूते के फीते। आजकल रेज़र ब्लेड का टोटा है।"

अपना झूठ पुष्ट करने के लिए विंस्टन ने कहा, "मैं छ सप्ताह से एक ही ब्लेड काम मे ला रहा हूं।"

खाना लेनेवालो की लाइन आगे बढी। दोनो ने सामने के ढेर से अपनी-अपनी थालियां उठा ली, जिनकी चिकनाई साफ नही की गई थी। साइम ने पूछा, "कल तुमने कैदियो की फांसी का दृश्य देखा ?"

विंस्टन को ऐसे दृश्य का कोई चाव न था, बोला, "मैं अपने काम मे व्यस्त था, सिनेमा मे ही देख लूंगा।"

साइम का स्वभाव दूसरा था, उसने कहा, "सिनेमा मे वह मजा कहां ?" और वह विंस्टन के मुंह की ओर तिरस्कार की दृष्टि से देखने लगा, मानो उसकी आंखें कह रही हों—मैं तुम्हे जानता हूं, मुझे तुम्हारे

ग्रान्तरिक भावो का पता है, मुझे भली भाँति मालूम है कि तुम कैदियों की फाँसी देखने क्यो नही गये। साइम के मस्तिष्क मे विषैली कट्टरता थी, उमे विचार के अपराधियों को पकडने की दौड मे और फाँसी जैसे दृश्यो को देखने मे अस्वाभाविक आनन्द आता था। दृश्य का स्मरण करते हुए उसने कहा, "फाँसी का दृश्य अच्छा रहा; कैदियो के पैर बांध दिये गए थे, इससे मजा कुछ किरकिरा हो गया। मुझे तो लटकते कैदी को अपने पैर फेंकते देखने मे मजा आता है।"

इतने मे सफेद एप्रन पहने रसोइया हाथ मे कलछी लिये चिल्लाया, "थाली सामने लाओ।"

विस्टन और साइम ने अपनी-अपनी थालियाँ सामने कर दी। प्रत्येक पर नियमानुकूल खाना परोस दिया गया प्रत्येक को गिलास-भर बदरग शोरवा, एक टुकडा पाव रोटी, एक लोंज पनीर, एक प्याला बिना दूध का कहवा और एक टिकिया सैकरीन (शक्कर नही)। मदिरालय के सामने पहुँचकर दोनो ने अपने-अपने लिए मदिरा से भरे चीनी के कटोरे ले लिये और भीड चीरते हुए टेलीस्क्रीन के नीचे धातु की मेज के पास कुर्सी लगाकर भोजन के लिए बैठ गये।

साइम आजकल नई बोली के कोष के नये सस्करण पर काम कर रहा था। इसलिए वह बडे जोश से उसके विषय मे बातें करने लगा।

बडे सन्तोष से बोला, "हम प्रतिदिन सैकडों पुराने शब्दो की हत्या कर डालते हैं।" बदरग रोटी का एक टुकडा मुँह मे डालकर उसने समझाना शुरू किया।

"विचार के क्षेत्र को सकीर्ण करना ही नई बोली का प्रमुख उद्देश्य है। अन्तत हम विचार के अपराध अक्षरश असम्भव कर देंगे, क्योंकि इन्हे प्रकट करने के लिए कोई शब्द ही न रह जायेंगे। अधिक-से-अधिक सन् २०५० तक कोई ऐसा मनुष्य न रह जायेगा, जो उस वार्तालाप को समझ सके जो हम इस समय कर रहे हैं। अतीत का सब साहित्य तब तक नष्ट कर दिया जायेगा। चौसर, शेक्सपियर, मिल्टन

और वाइरन जैसे कवियों के काव्य नई बोली मे ही प्रकाशित होगे। ये सस्करण केवल भिन्न ही नही होंगे, अपने वर्तमान रूप के विपरीत भी होंगे। दल का साहित्य और उसके नारे, सभी बदल जायेंगे। एक नारा है, स्वतन्त्रता ही दासता है, तो यह नारा कैसे सम्भव होगा, जब स्वतन्त्रता का विचार ही खत्म हो जायेगा। विचार का वातावरण भी विपरीत होगा। सच पूछो तो विचार होगा ही नही, उस अर्थ मे जो इस समय मान्य है। ये सब बडे भाई के ही मौलिक विचार हैं।

बडे भाई का नाम सुनते ही एक प्रकार की फीकी उत्सुकता विंस्टन के मुँह पर दौड गई। साइम दल का बहुत उग्र समर्थक था, फिर भी विंस्टन को सहसा विश्वास हो गया कि किसी दिन साइम भी उडा दिया जायेगा, क्योकि वह जरूरत से ज्यादा प्रतिभाशाली था। उसे जरूरत से ज्यादा दिखाई देता था, और उतनी ही सफाई से वह बोलता था। दल मे ऐसे लोग पसन्द नही किये जाते थे। एक दिन साइम को भी अन्तर्धान होना था, यह उसके भाग्य मे लिखा था।

विंस्टन ने अपनी रोटी और पनीर समाप्त की, फिर अपनी कुरसी पर एक ओर को मुडकर कहवा पीने लगा। उसके बाईं ओर एक व्यक्ति नि शक होकर बाते करने लगा। एक नवयुवती, जो कदाचित् उसकी सचिव थी, विंस्टन के पीछे बैठी हुई उसकी बात सुन रह थी और बडी उत्सुकता से उसकी सराहना करती मालूम पडती थी। यह व्यक्ति विंस्टन का देखा हुआ था, यद्यपि वह इसके बारे मे इससे अधिक कुछ नही जानता था कि वह कहानी-विभाग मे किसी ऊँचे पद पर था। वह लगभग तीस वर्ष का था। गले के पुट्ठे मजबूत दिखाई पडते थे, मुख बडा तथा चचल था, सिर कुछ पीछे की ओर झुका था, और जिस कोण पर वह बैठा था, उससे उसकी ऐनक पर जब रोशनी पडती थी, तो विंस्टन को आँखो की जगह दो सादी तख्तियाँ दिखाई देती थी। कुछ भयावह बात यह थी कि उसकी धारा-प्रवाह वाचालता मे

किसी शब्द को समझ लेना प्राय असम्भव था। सिर्फ एक बार विंस्टन एक वाक्यांश पकड पाया, "गोल्डस्टाइन मत का पूर्ण और अन्तिम बहिष्कार।" यह वाक्यांश इतनी तेजी के साथ उसके मुख से निकला मानो उसके सब अक्षर एक ही ढाँचे मे ढले हो। इसके अतिरिक्त उसका वक्तव्य बत्तख की बोली के समान ही था। उसकी कोई बात समझ मे नही आती थी, परन्तु बात के रुख से कोई सन्देह नही रह जाता था कि वह गोल्डस्टाइन की बुराई और विचार के अपराधियो तथा षड्यन्त्रकारियो के विरुद्ध कठिन दण्ड की माँग कर रहा था। वह यूरेशियन सेना के अत्याचारों के प्रति अपने क्रोध का प्रदर्शन करे या बडे भाई तथा मलाबार के मोर्चे पर वीरो की तारीफ करे—सुनने में ये सब बातें एक-सी लगती थी। जो कुछ भी वह कह रहा हो, इतना निश्चित था कि प्रत्येक शब्द शुद्ध 'इगसोश' की कट्टरता से भरा था। इस दृष्टिहीन मुख के जबडे को तेजी से ऊपर-नीचे हिलते देखकर विंस्टन कल्पना करने लगा कि यह कोई मानव नही, किसी मेल का पुतला है, उसकी बोली मे दिमाग का काम नही, गले ही का काम है। उसके मुख से जो निकल रहा है उसमे शब्द जरूर हैं, परन्तु उनके कोई अर्थ नहीं, मानो कोई बेहोशी मे हुल्लड मचा रहा हो, अथवा कोई बत्तख बोल रही हो।

साइम चुपचाप शोरबे मे अपने चम्मच से कुछ चित्र जैसे बना रहा था। परन्तु इस बत्तख जैसे व्यक्ति के व्याख्यान मे कोई रुकावट नही थी और उसकी आवाज इस हुल्लड मे भी सुनाई दे रही थी।

साइम को बोलने का मौका मिला, "तुम जानते नही, नई बोली मे एक शब्द है 'डक-स्पीक' अर्थात् बत्तख के समान टर्राना। इस रोचक शब्द के दो विपरीत अर्थ होते हैं। विरोधी के लिए कहिये तो गाली है, समर्थक के लिए कहिये तो प्रशसा है।"

निगाह ऊँची करके वह बोला, "यह देखो, पार्सस आ रहा है।"

तोदल पेट, मँझोला कद और हलके बालो से ढका मेढक जैसा

और बाइरन जैसे कवियों के काव्य नई बोली में ही प्रकाशित होगे। ये सस्करण केवल भिन्न ही नही होगे, अपने वर्तमान रूप के विपरीत भी होंगे। दल का साहित्य और उसके नारे, सभी बदल जायेंगे। एक नारा है, स्वतन्त्रता ही दासता है, तो यह नारा कैसे सम्भव होगा, जब स्वतन्त्रता का विचार ही खत्म हो जायेगा। विचार का वातावरण भी विपरीत होगा। सच पूछो तो विचार होगा ही नही, उस अर्थ मे जो इस समय मान्य है। ये सब बडे भाई के ही मौलिक विचार हैं।

बडे भाई का नाम सुनते ही एक प्रकार की फीकी उत्सुकता विंस्टन के मुँह पर दौड गई। साइम दल का बहुत उग्र समर्थक था, फिर भी विंस्टन को सहसा विश्वास हो गया कि किसी दिन साइम भी उडा दिया जायेगा, क्योकि वह जरूरत से ज्यादा प्रतिभाशाली था। उसे जरूरत से ज्यादा दिखाई देता था, और उतनी ही सफाई से वह बोलता था। दल मे ऐसे लोग पसन्द नही किये जाते थे। एक दिन साइम को भी अन्तर्धान होना था, यह उसके भाग्य मे लिखा था।

विंस्टन ने अपनी रोटी और पनीर समाप्त की, फिर अपनी कुरसी पर एक ओर को मुडकर कहवा पीने लगा। उसके बाँई ओर एक व्यक्ति नि शक होकर बाते करने लगा। एक नवयुवती, जो कदाचित् उसकी सचिव थी, विंस्टन के पीछे बैठी हुई उसकी बात सुन रह थी और बडी उत्सुकता से उसकी सराहना करती मालूम पडती थी। यह व्यक्ति विंस्टन का देखा हुआ था, यद्यपि वह इसके बारे मे इससे अधिक कुछ नही जानता था कि वह कहानी-विभाग मे किसी ऊँचे पद पर था। वह लगभग तीस वर्ष का था। गले के पुट्ठे मजबूत दिखाई पडते थे, मुख बडा तथा चचल था, सिर कुछ पीछे की ओर झुका था, और जिस कोण पर वह बैठा था, उससे उसकी ऐनक पर जब रोशनी पडती थी, तो विंस्टन को आँखो की जगह दो सादी तख्तियाँ दिखाई देती थी। कुछ भयावह बात यह थी कि उसकी धारा-प्रवाह वाचालता मे

किसी शब्द को समझ लेना प्राय असम्भव था। सिर्फ एक बार विंस्टन एक वाक्यांश पकड पाया, "गोल्डस्टाइन मत का पूर्ण और अन्तिम वहिष्कार।" यह वाक्यांश इतनी तेजी के साथ उसके मुख से निकला मानो उसके सब अक्षर एक ही ढाँचे मे ढले हो। इसके अतिरिक्त उसका वक्तव्य वत्तख की वोली के समान ही था। उसकी कोई वात समझ में नही आती थी, परन्तु वात के रुख से कोई सन्देह नही रह जाता था कि वह गोल्डस्टाइन की बुराई और विचार के अपराधियो तथा षड्यन्त्रकारियो के विरुद्ध कठिन दण्ड की माँग कर रहा था। वह यूरेशियन सेना के अत्याचारों के प्रति अपने क्रोध का प्रदर्शन करे या बडे भाई तथा मलावार के मोर्चे पर वीरो की तारीफ करे—सुनने में ये सब वातें एक-सी लगती थीं। जो कुछ भी वह कह रहा हो, इतना निश्चित था कि प्रत्येक शब्द शुद्ध 'इगसोश' की कट्टरता से भरा था। इस दृष्टिहीन मुख के जवडे को तेजी से ऊपर-नीचे हिलते देखकर विंस्टन कल्पना करने लगा कि यह कोई मानव नही, किसी मेल का पुतला है, उसकी वोली मे दिमाग का काम नही, गले ही का काम है। उसके मुख से जो निकल रहा है उसमें शब्द जरूर हैं, परन्तु उनके कोई अर्थ नही, मानो कोई वेहोशी मे हुल्लड मचा रहा हो, अथवा कोई वत्तख वोल रही हो।

साइम चुपचाप शोरवे मे अपने चम्मच से कुछ चित्र जैसे वना रहा था। परन्तु इस वत्तख जैसे व्यक्ति के व्याख्यान मे कोई रुकावट नहीं थी और उसकी आवाज इस हुल्लड मे भी सुनाई दे रही थी।

साइम को वोलने का मौका मिला, "तुम जानते नही, नई वोली मे एक शब्द है 'डक-स्पीक' अर्थात् वत्तख के समान टर्राना। इस रोचक शब्द के दो विपरीत अर्थ होते हैं। विरोधी के लिए कहिये तो गाली है, समर्थक के लिए कहिये तो प्रशसा है।"

निगाह ऊँची करके वह वोला, "यह देखो, पार्सस आ रहा है।"

तोदल पेट, मँझोला कद और हलके वालो से ढका मेढक जैसा

उबला मास खिलाने का प्रबन्ध था और दूसरी ओर मदिरा पिलाने का, जिसकी यथेष्ट मात्रा दस सेंट मे मिल सकती थी। लोग लाइन बनाये एक-दूसरे के पीछे खडे थे। इनमे विंस्टन भी था।

पीछे से आवाज़ आई, "मैं तुम्हे ही ढूँढ रहा था।"

सुनते ही विंस्टन पीछे मुडा, तो उसे अन्वेषण-विभाग मे काम करनेवाला अपना मित्र साइम दिखाई दिया। कदाचित् 'मित्र' कहना सही नही है, क्योंकि आजकल मित्र होते ही नही थे, सब 'कामरेड' ही थे, हाँ, कुछ साथी ऐसे जरूर होते थे, जिनकी सगत अन्य की अपेक्षा अधिक प्रिय होती थी। साइम भाषा-विज्ञान का पडित था, नई बोली का विशेषज्ञ था।

"मुझे पूछना था कि तुम्हारे पास कोई ब्लेड तो नही हैं।"

विंस्टन ने अपने पास दो नये ब्लेड जोड रखे थे। सत्य छिपाना था, सो तुरन्त ही कह गया, "एक भी नही, मैंने सब दुकानें छान डाली, कही एक भी नही है। जिसे देखो वह रेज़र ब्लेड माँगता फिरता है। अकसर ऐसा होता है कि कोई-न-कोई जरूरी चीज का स्टाक दल से नियुक्त दुकानो मे चुक जाता है, कभी बटन चुक जाते हैं, कभी बुनने का ऊन और कभी जूते के फीते। आजकल रेज़र ब्लेड का टोटा है।"

अपना झूठ पुष्ट करने के लिए विंस्टन ने कहा, "मैं छ सप्ताह से एक ही ब्लेड काम मे ला रहा हूँ।"

खाना लेनेवालो की लाइन आगे बढी। दोनो ने सामने के ढेर से अपनी-अपनी थालियाँ उठा ली, जिनकी चिकनाई साफ नही की गई थी। साइम ने पूछा, "कल तुमने कैदियों की फाँसी का दृश्य देखा ?"

विंस्टन को ऐसे दृश्य का कोई चाव न था, बोला, "मैं अपने काम मे व्यस्त था, सिनेमा मे ही देख लूँगा।"

साइम का स्वभाव दूसरा था, उसने कहा, "सिनेमा मे वह मजा कहाँ ?" और वह विंस्टन के मुँह की ओर तिरस्कार की दृष्टि से देखने लगा, मानो उसकी आँखें कह रही हो—मैं तुम्हे जानता हूँ, मुझे तुम्हारे

ग्रान्तरिक भावो का पता है, मुझे भली भाँति मालूम है कि तुम कैदियो की फाँसी देखने क्यो नही गये। साइम के मस्तिष्क मे विषैली कट्टरता थी, उसे विचार के अपराधियों को पकडने की दौड मे और फाँसी जैसे दृश्यो को देखने मे अस्वाभाविक ग्रानन्द ग्राता था। दृश्य का स्मरण करते हुए उसने कहा, "फाँसी का दृश्य अच्छा रहा; कैदियो के पैर बाँध दिये गए थे, इससे मजा कुछ किरकिरा हो गया। मुझे तो लटकते कैदी को अपने पैर फेंकते देखने मे मजा ग्राता है।"

इतने मे सफेद एप्रन पहने रसोइया हाथ मे कलछी लिये चिल्लाया, "थाली सामने लाग्रो।"

विंस्टन और साइम ने अपनी-अपनी थालियाँ सामने कर दी। प्रत्येक पर नियमानुकूल खाना परोस दिया गया · प्रत्येक को गिलास-भर बदरग शोरबा, एक टुकडा पाव रोटी, एक लौज पनीर, एक प्याला बिना दूध का कहवा और एक टिकिया सैकरीन (शक्कर नही)। मदिरालय के सामने पहुँचकर दोनों ने अपने-अपने लिए मदिरा से भरे चीनी के कटोरे ले लिये और भीड चीरते हुए टेलीस्क्रीन के नीचे धातु की मेज के पास कुर्सी लगाकर भोजन के लिए बैठ गये।

साइम ग्राजकल नई बोली के कोष के नये सस्करण पर काम कर रहा था। इसलिए वह बडे जोश से उसके विषय मे बातें करने लगा।

बडे सन्तोष से बोला, "हम प्रतिदिन सैकडों पुराने शब्दो की हत्या कर डालते हैं।" बदरग रोटी का एक टुकडा मुँह मे डालकर उसने समझाना शुरू किया।

"विचार के क्षेत्र को सकीर्ण करना ही नई बोली का प्रमुख उद्देश्य है। अन्तत हम विचार के अपराध अक्षरश असम्भव कर देंगे, क्योकि इन्हे प्रकट करने के लिए कोई शब्द ही न रह जायेंगे। अधिक-से-अधिक सन् २०५० तक कोई ऐसा मनुष्य न रह जायेगा, जो उस वार्तालाप को समझ सके जो हम इस समय कर रहे हैं। अतीत का सब साहित्य तब तक नष्ट कर दिया जायेगा। चौसर, शेक्सपियर, मिल्टन

और बाइरन जैसे कवियों के काव्य नई बोली में ही प्रकाशित होगे। ये सस्करण केवल भिन्न ही नही होंगे, अपने वर्तमान रूप के विपरीत भी होंगे। दल का साहित्य और उसके नारे, सभी वदल जायेंगे। एक नारा है, स्वतन्त्रता ही दासता है, तो यह नारा कैसे सम्भव होगा, जब स्वतन्त्रता का विचार ही खत्म हो जायेगा। विचार का वाता-वरण भी विपरीत होगा। सच पूछो तो विचार होगा ही नही, उस अर्थ मे जो इस समय मान्य है। ये सब बडे भाई के ही मौलिक विचार हैं।

बडे भाई का नाम सुनते ही एक प्रकार की फीकी उत्सुकता विंस्टन के मुंह पर दौड गई। साइम दल का बहुत उग्र समर्थक था, फिर भी विंस्टन को सहसा विश्वास हो गया कि किसी दिन साइम भी उडा दिया जायेगा, क्योकि वह जरूरत से ज्यादा प्रतिभाशाली था। उसे जरूरत से ज्यादा दिखाई देता था, और उतनी ही सफाई से वह बोलता था। दल मे ऐसे लोग पसन्द नही किये जाते थे। एक दिन साइम को भी अन्तर्धान होना था, यह उसके भाग्य मे लिखा था।

विंस्टन ने अपनी रोटी और पनीर समाप्त की, फिर अपनी कुरसी पर एक ओर को मुडकर कहवा पीने लगा। उसके बाँई ओर एक व्यक्ति नि शक होकर बाते करने लगा। एक नवयुवती, जो कदाचित् उसकी सचिव थी, विंस्टन के पीछे बैठी हुई उसकी बात सुन रह थी और बडी उत्सुकता से उसकी सराहना करती मालूम पडती थी। यह व्यक्ति विंस्टन का देखा हुआ था, यद्यपि वह इसके बारे मे इससे अधिक कुछ नही जानता था कि वह कहानी-विभाग मे किसी ऊंचे पद पर था। वह लगभग तीस वर्ष का था। गले के पुट्ठे मजबूत दिखाई पडते थे, मुख बडा तथा चचल था, सिर कुछ पीछे की ओर झुका था, और जिस कोण पर वह बैठा था, उससे उसकी ऐनक पर जब रोशनी पडती थी, तो विंस्टन को आँखो की जगह दो सादी तख्तियाँ दिखाई देती थी। कुछ भयावह बात यह थी कि उसकी धारा-प्रवाह वाचालता मे

किसी शब्द को समझ लेना प्राय असम्भव था। सिर्फ एक बार विंस्टन एक वाक्यांश पकड पाया, "गोल्डस्टाइन मत का पूर्ण और अन्तिम वहिष्कार।" यह वाक्यांश इतनी तेजी के साथ उसके मुख से निकला मानो उसके सब अक्षर एक ही ढांचे मे ढले हो। इसके अतिरिक्त उसका वक्तव्य वत्तख की वोली के समान ही था। उसकी कोई बात समझ मे नही आती थी, परन्तु बात के रुख से कोई सन्देह नही रह जाता था कि वह गोल्डस्टाइन की बुराई और विचार के अपराधियो तथा षड्यन्त्रकारियो के विरुद्ध कठिन दण्ड की मांग कर रहा था। वह यूरेशियन सेना के अत्याचारो के प्रति अपने क्रोध का प्रदर्शन करे या बडे भाई तथा मलावार के मोर्चे पर वीरो की तारीफ करे—सुनने में ये सब बातें एक-सी लगती थी। जो कुछ भी वह कह रहा हो, इतना निश्चित था कि प्रत्येक शब्द शुद्ध 'इगसोश' की कट्टरता से भरा था। इस दृष्टिहीन मुख के जबडे को तेजी से ऊपर-नीचे हिलते देखकर विंस्टन कल्पना करने लगा कि यह कोई मानव नही, किसी मेल का पुतला है, उसकी वोली मे दिमाग का काम नही, गले ही का काम है। उसके मुख से जो निकल रहा है उसमे शब्द जरूर हैं, परन्तु उनके कोई अर्थ नहीं, मानो कोई वेहोशी मे हुल्लड मचा रहा हो, अथवा कोई वत्तख वोल रही हो।

साइम चुपचाप शोरवे मे अपने चम्मच से कुछ चित्र जैसे बना रहा था। परन्तु इस वत्तख जैसे व्यक्ति के व्याख्यान मे कोई रुकावट नही थी और उसकी आवाज इस हुल्लड मे भी सुनाई दे रही थी।

साइम को वोलने का मौका मिला, "तुम जानते नही, नई वोली मे एक शब्द है 'डक-स्पीक' अर्थात् वत्तख के समान टर्राना। इस रोचक शब्द के दो विपरीत अर्थ होते हैं। विरोधी के लिए कहिये तो गाली है, समर्थक के लिए कहिये तो प्रशसा है।"

निगाह ऊंची करके वह वोला, "यह देखो, पार्सन आ रहा है।"

तोंदल पेट, मझोला कद और हलके वालो मे ढका मेढक जैसा

मुख लिये जो व्यक्ति उनकी ओर आ रहा था, उसका नाम था पार्संस, वही जो विजय-भवन मे विंस्टन का पडोसी किराएदार था। आते ही विंस्टन का हार्दिक स्वागत करते हुए उसने कहना शुरू किया, "बताऊँ, मैं तुम्हारा पीछा क्यो कर रहा हूँ। तुम मुझे चन्दा देना भूल गये।"

विंस्टन अपनी जेब टटोलने लगा, "चन्दा कौन-सा ?" असख्य चन्दो की याद रखना कितना कठिन था।

"अजी, घृणा सप्ताह के लिए। घर-घर से चन्दा जमा करना है। मैं अपने ब्लाक का खजाची हूँ। दिलोजान से लगा हूँ। बहुत बढिया सजावट दिखानी है। यदि सडक-भर पर पताकाओ की सबसे बढिया सजावट विजय-भवन पर न हा तो मेरा नाम नही। तुमने दो डालर का वादा किया था।"

विंस्टन ने चुपचाप यह रकम उसके हाथ मे थमा दी।

पार्संस को अपने लडके की शैतानी की याद आई, "सुना, कल लौंडे ने तुम्हारे पीछे गुलेल झाड दी। मैंने उसकी खूब मरम्मत कर दी है।"

विंस्टन को लडके की माँ के बयान की याद आई, "कोई बात नही, तुम्हारे लडके को फाँसी देखने जाने को नही मिला था, इसलिए कुछ बिगडा हुआ था।"

पार्संस को शेखी मारने का मौका मिला, "खैर, मेरा मतलब यह कि बच्चो के शौक मे तो कोई खराबी नही। शैतान तो ठहरे ही, लेकिन इनके जोश की क्या बात करूँ। तुम्हे मालूम नही, मेरी छोटी लडकी अपने दल के साथ पिछले शनिवार को बर्क हैमस्टेड की सैर करने गई, तो क्या किया कि वह तथा दो लडकियाँ और अपने दल से निकलकर एक अजनबी के पीछे दिन-भर लगी रही, और अन्तत उसे पुलिस के हवाले कर दिया। सात वर्ष की लौंडिया के लिए यह कितने कमाल की बात है।"

विंस्टन ने पूछा, "और अजनबी का क्या हुआ ?"

"इतना तो नही जानता, परन्तु कोई आश्चर्य नही यदि—" इतना कहकर पार्सस ने हाथ के इशारे से बन्दूक का निशाना साधने और मुख से गोली चलने की आवाज की नकल की।

साइम का ध्यान कही और था, अतएव उसने "अच्छा" कहकर ही पार्सन का समर्थन किया।

परन्तु विंस्टन को तो अपनी कर्तव्यनिष्ठा दिखानी थी, अतएव वह बोला, "ठीक ही है, हमें खतरे से तो हर वक्त होशियार रहना है।"

पार्सस सफाई देने के लिए बोला, "लडाई चल रही है, इसीलिए तो।"

इतने मे मानो उपर्युक्त वार्तालाप के समर्थन के लिए ही इन लोगो के सिरो के ऊपर लगे टेलीस्क्रीन से एक तुरुही बजनी प्रारम्भ हुई। समृद्धि-मन्त्रालय का सन्देश सुनाया जानेवाला था कि उत्पादन के क्षेत्र मे कौन नई-नई सफलताएँ प्राप्त की गई हैं।

सूचना यो चलती है कि सारे ओशियानिया मे श्रमिकों ने नया सुखी जीवन प्राप्त करने पर झण्डे लेकर बाजारों मे बडे भाई के प्रति अपनी हार्दिक कृतज्ञता प्रकट करने के लिए बडे-बडे स्व-सगठित प्रदर्शन किये, चाकलेट का राशन बढाकर प्रति सप्ताह बीस माशे कर देने के लिए बडे भाई के प्रति धन्यवाद के प्रदर्शन हुए। यह सुनकर विंस्टन सोचने लगा कि कल ही तो राशन को २० माशे तक घटा देने की सूचना प्रसारित हुई थी, क्या चौबीस घण्टे के बाद ही हम इस नई सूचना पर विश्वास कर लेंगे। आश्चर्य न कीजिये, इस सूचना पर विश्वास हो जाता है। विंस्टन ने देखा कि पार्सस ने तो विश्वास कर ही लिया।

टेलीस्क्रीन ने बडे-बडे आँकडो की झडी जारी थी, जिनका मतलब यह था कि गत वर्ष की अपेक्षा अब अधिक भोजन है, अधिक कपडे है, अधिक घर है, अधिक उनकी सजावटें हैं, अधिक बर्तन हैं, अधिक जहाज, अधिक हेलीकाप्टर अर्थात् सभी कुछ अधिक। वर्ष-प्रतिवर्ष,

बुन मे उसे टेलीस्क्रीन से काम पर वापस होने का आदेश देनेवाली सीटी सुनाई दी और तीनो व्यक्ति उठ खडे हुए।

● ○ ●

दल के सदस्यों के लिए सायकालीन मनोरजन की व्यवस्था, 'समाज-सगम' नामक एक सस्था मे रहती थी। सदस्यो के मनोरजन के लिए इस सस्था को ही मान्यता प्राप्त थी। तीन सप्ताह के भीतर दो बार विंस्टन इस सगम मे अपनी हाजिरी देने से चूक गया था। यह उसकी नासमझी थी, क्योकि सगम मे सदस्यो की उपस्थिति का लेखा बहुत नियमपूर्वक रखा जाता था। सिद्धान्त यह था कि दल के सदस्य का कोई फालतू समय नही होता, यह मान लिया जाता था कि भोजन या नीद से मुक्त होने पर उसे सामाजिक मनोरजन मे भाग लेना चाहिए। यदि वह कोई ऐसा काम करता है, जिससे उसके विरुद्ध व्यक्तिवादी होने का सन्देह हो, जैसे अकेले घूमने जाना, तो ऐसा करना उसके लिए सदैव ही थोडा-बहुत खतरनाक होता था।

परन्तु इस शाम को मन्त्रालय से निकलने पर अप्रैल मास की शीतल वायु उसे बहुत भली लगी। आकाश निर्मल था और सगम में गदी मदिरा के दौर तथा देर तक हुल्लड, बकवास, व्याख्यान और थकानेवाले खेलो की याद करके अकस्मात् सगम को ले जानेवाली बस से पलट पडा, और निरुद्देश्य भाव से गदी बस्ती की भूलभुलैयो की ओर चल दिया।

ऊबड-खाबड सडकें और उनके दोनो ओर टूटे-फूटे दोमजिले घर, यही निम्न वर्ग के श्रमिको की बस्ती का नकशा था। अँधेरे द्वारो और दोनो ओर की पतली गलियों के भीतर-बाहर असख्य स्त्री-पुरुष आते-जाते दिखाई दे रहे थे। इस भीड में एक ओर जहाँ भद्दी लिपिस्टिक से रगे ओठोवाली नवयुवतियो का पीछा करते हुए नवयुवक थे, तो मोटी भद्दी औरतें भी इस भीड मे थी, जिनसे हमे यह सकेत मिलता था कि

दस वर्ष बाद इन नवयुवतियो का क्या रूप-रग होगा। एक ओर कमर झुकाये बूढे लडखडाते चल रहे थे तो दूसरी ओर चिथडो मे टके बच्चे नगे पैरो नालियो की कीचड मे खेलते या अपनी माताओ की कडी डाँट खाकर भागते हुए दिखाई दे रहे थे। सडक की अधिकाश खिडकियाँ टूटने पर किसी प्रकार ढक दी गई थीं।

दल का दावा था कि उसने श्रमिको को पूँजीपतियो की दासता से मुक्त किया था। दिन-रात टेलीस्क्रीन आँकडे देकर यह साबित करता रहता था कि पचास वर्ष पहले की अपेक्षा जनता को अब अधिक भोजन, कपडा, घर और मनोरजन प्राप्त हैं। उन्हे कम घटे काम करना पडता है, वे अधिक स्वस्थ, प्रसन्न और शिक्षित हैं। ये आँकडे हमारे कान तो फाडा करते थे, परन्तु इनका एक शब्द भी प्रमाणित नहीं होता था और न अमान्य ही किया जा सकता था। साथ ही कपट-विचार सिद्धात के अनुकूल दल का यह प्रचार भी होता रहता था कि श्रमिक वर्ग स्वभावत निम्न है उसे पराश्रित रहना चाहिए।

इन गरीबो पर नियन्त्रण रखना कठिन नही था। बेचारे १२ वर्ष की अवस्था से काम पर जाने लगते थे, बीस तक ब्याह जाते थे, ३० तक अधेड हो जाते थे और ६० तक अधिकाश मर जाते थे। उनका मानसिक जीवन, कठिन शारीरिक श्रम, घरबार की चिन्ता व सिनेमा, फुटबाल, मदिरा और इन सबके ऊपर जुए से घिरा रहता था। साप्ताहिक लाटरी के सार्वजनिक महत्व से श्रमिक बहुत प्रभावित रहते थे। लाटरी और इसमे पुरस्कार पाने की आशा ही लाखो का जीवन-आधार था। इसके ही चिन्तन मे उन्हे आनन्द मिलता था, उनकी पीडा नष्ट होती थी, और उन्हे मानसिक स्फूर्ति प्राप्त होती थी। बहुत-से लोगो ने श्रमिको के हाथ लाटरी से पुरस्कार पाने का ढग बताने, भविष्यवाणी करने और तावीज बेचने का धधा चला रखा था। लाटरी के सचालन मे विन्स्टन का कोई दखल नहीं था, क्योकि उसका काम समृद्धि-मत्रालय के अधीन था। परन्तु वह क्या, दल के प्राय सभी सदस्य जानते थे कि

पुरस्कार बहुत कुछ काल्पनिक ही थे। पुरस्कार मे बहुत कम रकम बाँटा जाती थी और बडे पुरस्कार पानेवालो के केवल नाम ही होते थे,उनका कोई अस्तित्व नही होता था।

विस्टन इन अपरिचित सडको से होकर गुजरा, तो लोग सतर्क और द्वेषमय भावना से चुपचाप उसको ताकने लगे। ऐसी सडकों पर नीला चोगा पहने दल के सदस्य प्राय दिखाई नही देते थे। गश्ती पुलिस ऐसे लोगो को पूछताछ के लिए रोक लेती थी और यदि विचार पर निगरानी रखनेवाली पुलिस को सदस्य की ऐसी जगह उपस्थिति का पता लग जाता तो उस पर निगरानी होने लगती।

इतने ही मे सडक पर गडबड मच गई, चारो ओर से चेतावनी की चिल्लाहट होने लगी, खरहो की भाँति लोग घरो की ओर भागते दिखाई देने लगे। एक युवती ने द्वार से झपटकर कीचड मे खेलते बच्चे को उठा लिया और एक ही क्षण मे अपना एप्रन समेटकर कमरे के भीतर घुस गई।

इसी समय बगल की गली से एक आदमी निकलकर विस्टन के पास दौडा हुआ आया और आकाश की ओर घबराहट की मुद्रा मे सकेत करते हुए चिल्लाया, "स्टीमर! ऊपर देखिये! फौरन लेट जाइये!"

इन दिनो चलनेवाले राकेट बमो को किसी कारणवश ये श्रमिक 'स्टीमर' कहने लगे थे। चेतावनी सुनते ही विस्टन झटपट लेट गया। जब कभी ये श्रमिक ऐसी चेतावनी देते तो वह प्राय सही ही होती। इन्हे किसी प्रकार राकेट के आगमन का पूर्वाभास हो जाता था। एक धमाका सुनाई दिया, जिससे सडक की पटरी कांप गई और निकटवर्ती खिडकी से टूटे शीशे की बौछार उस पर गिरी।

विस्टन ने उठकर चलना प्रारम्भ कर दिया। दो सौ गज तक सडक के आगे बम से मकान नष्ट हो गये थे। आकाश की ओर धुएँ का काला बादल छाया हुआ था। नीचे पलस्तर की गर्द ने टूटे घरो के खण्डहरों

को घेर लिया था और उनके चारों ओर भीड़ इकट्ठी होने लगी थी। पटरी पर सामने पडे पलस्तर के मध्य उसे एक गहरी लाल धारा दिखाई दी। यह किसी आदमी का कलाई से कटा हाथ था। विंस्टन ने अपनी ठोकर मे उसे नाली मे फेंक दिया और भीड से बचने के लिए बगल की गली की ओर मुड गया।

तीन-चार मिनट के भीतर बाजार का गदी भीड से भरा जीवन फिर चालू हो गया, मानो कोई दुर्घटना हुई ही न हो। ऐसे राकेट बम प्राय नित्य ही गिरा करते थे। बहुत समय से अब ससार मे सर्वत्र कहीं अधिक शक्तिशाली आणविक अस्त्र शासनो को प्राप्त थे। अतएव यह सन्देह किया जाता था कि ये बम वैरी की ओर से नही गिराये जाते थे। जनता को लड़ाई मे आतकित और शात रखने के लिए ओशियानिया की सरकार स्वय इन बमो को छिपे ढग से उन पर गिराती थी।

जिस गली मे विंस्टन अब पहुँचा था, वह उसे परिचित-सी मालूम हुई। वह रुककर अन्धकार से ढके छोटे-छोटे घरो की ओर देखने लगा। ठीक अपने सिर के ऊपर उसे धातु के तीन बदरग गोले लटकते दिखाई दिये। भय की कँपकँपी उसके शरीर मे दौड गई, जब उसे याद आया कि वह उसी कबाडखाने के बाहर खडा है, जहां उसने डायरी खरीदी थी।

पिछली बार उसका उपर्युक्त पुस्तक का खरीदना यथेष्ट नासमझी का काम था, और ऐसी जगह फिर न आने की उसने कसम खा ली थी। तो भी अपने निश्चय के विरुद्ध उसे यहां फिर आना पडा। वह द्वार से कबाडखाने के भीतर चला गया, यह सोचकर कि पटरी पर मँडराने की अपेक्षा वह भीतर अधिक सुरक्षित रहेगा। यदि कोई उससे पूछेगा, तो उसे यह कहने का बहाना मिलेगा कि मैं तो वहां रेजर ब्लेड खरीदने की फिक्र मे गया था।

कबाड़खाने के मालिक की अवस्था लगभग ६० वर्ष थी। इस क्षीण-काय और झुकी कमर के व्यक्ति की उदारता का परिचय देने

वाली लम्बी-सी नाक के ऊपर उसकी विनम्र आँखो को एक मोटा चश्मा ढँके हुए था। वह पुराने काले मखमल की एक बण्डी पहने था और उसकी धीमी तथा आडम्बर-युक्त चाल से सन्देह होता था कि वह कोई बुद्धिजीवी है। उसका लहजा भी अपढ श्रमिको जैसा नीचे स्तर का नही था।

विंस्टन का स्वागत करते हुए वह तुरन्त ही बोला, "आप ही तो मुझसे एक छोटी-सी सादी पुस्तक मोल ले गये थे, जिसमे किसी युवती को अपने बहुमूल्य चित्र सुरक्षित रखने थे। उसका कागज बहुत सुन्दर था। किसी समय उसे 'क्रीमलेड' कहा जाता था। ५० वर्ष से तो अब ऐसा कागज कदाचित् बनता ही नही।" फिर विंस्टन की ओर अपनी ऐनक से झाँककर उसने पूछा, "मैं आपकी क्या सेवा कर सकता हूँ?"

विंस्टन ने निरुद्देश्य भाव से उत्तर किया, "मैं इधर से जा रहा था, यो ही भीतर आ गया, कुछ चाहिए नही।"

बूढे ने हाथ जोडकर क्षमा-प्रार्थना की मुद्रा मे कहा, "कोई हर्ज नही, आप अपने चारो ओर देखिये। आप कहेगे कि दुकान खाली ही है। आपस की बात है, पुरानी निधि की बिक्री का व्यापार प्राय: समाप्त हो गया है। इसकी कोई माँग नही रही इसलिए माल भी नही। आराइश का सामान, चीनी और शीशे के बर्तन धीरे-धीरे सभी टूट-फूट गये हैं, और धातु की चीजें तो प्राय सभी गला दी गई हैं। वर्षों से मैंने पीतल का शमादान भी नही देखा है।"

दुकान का भीतरी भाग छोटा होने के कारण बेतरह भरा दिखाई दिया। परन्तु उसमे काम की प्राय कोई वस्तु नही थी। बहुत-से गर्द भरे चित्रो के चौखटे, लोहे के पेंचो और ढिबरियो से भरे बर्तन, बेकार रुखानियाँ, टूटे चाकू, टूटी-फूटी और बदरंग घडियाँ थी जिनकी मरम्मत असम्भव थी। परन्तु इस पँचमेल कूडे के बीच मुलम्मा चढी सुँघनियो या सुलेमानी ब्रूचो जैसी कुछ आकर्षक वस्तुएँ भी थी, विंस्टन की

नजर एक गोल चिकनी वस्तु पर पहुँची जो लैम्प के प्रकाश मे चमकती दिखाई दी।

विस्टन ने उसे उठा लिया। वह एक ओर से गोल और दूसरी ओर से चपटी शीशे की एक भारी वस्तु थी। उसके भीतर लाल रग की अजीब से ऐंठी हुई कोई चीज थी जो वूढे की समझ मे मूँगा था।

वूढे ने वताया, "इसको वने कम-से-कम सौ वर्ष हुए, देखने मे तो इससे भी अधिक पुराना मालूम होता है। शीशे मे मूँगे को वन्द करके इसे वनाते थे।"

विस्टन आकृष्ट होकर वोला, "यह वास्तव मे वहुत सुन्दर है।"

वूढे ने प्रसन्न होकर कहा, "कोई सन्देह नही, परन्तु अव इसकी दाद देनेवालो की सख्या थोडी ही रह गई है।" दाम वताने आवश्यक थे, इसलिए कुछ खाँसकर वोला, "यदि आप इसे खरीदना चाहे तो आपको चार डालर मे मिल सकता है।"

विस्टन ने वूढे के हाथ मे रकम दे दी और वह प्रिय वस्तु अपनी जेव में डाल ली। वह उसकी सुन्दरता से इतना आकर्षित नही था, जितना इस भावना से कि वह उस काल की है जो वर्तमान से विलकुल भिन्न था। उसने सही अनुमान कर लिया था कि यह वस्तु किसी समय कागज दवाने के काम मे आती थी, परन्तु अव ऐसी वस्तु की स्पष्टत कोई जरूरत नही थी। इसीलिए उसका इस वस्तु के प्रति आकर्षण और भी वढ गया। उसको जेव मे वह वहुत भारी मालूम हुई पर सौभाग्यवश वह वडी नहीं थी। ऐसी वस्तु अपने पास रखने से दल के सदस्य के प्रति सन्देह हो सकता था। कोई वस्तु चाहे भी कितनी सुन्दर हो, पुरानी होने के कारण वह सदिग्ध थी।

रकम पाकर वूढा अधिक प्रसन्न दिखाई देने लगा और वोला, "सीढी चढकर एक और कमरा है, जिसे देखना आप कदाचित् पसन्द करें, यद्यपि उसमें कुछ चीजो के अतिरिक्त विशेष आकर्षण नही है।"

तेल का लैंप जलाकर धीरे-धीरे ऊँची और पुरानी सीढियो और

बूढे ने कहा, "ऐसे अनेक गिर्जाघर अब भी बाकी हैं, पर वे अब दूसरे कामो मे आ रहे हैं।"

विंस्टन ने वह चित्र मोल नही लिया, क्योकि इसका उसके पास रहना शीशे के पेपरवेट से भी अधिक असाधारण बात होती। वह तुरन्त अकेला सीढियो से उतरकर सडक की ओर चल दिया।

उसने सोचा, कभी फिर आऊँगा और कबाडखाने से कुछ सुन्दर चीजें खरीदूँगा। सेंट क्लीमेट्स डेन का चित्र खरीदना ही है। उसका चौखटा निकलवा दूँगा और अपने चोगे के भीतर छिपाकर उसे घर ले आऊँगा। एक बार उसके मस्तिष्क मे कबाडखाने के ऊपरवाला कमरा किराये पर लेने का खब्त भी आया। कुछ ही क्षरण के लिए, ऐसी ही सुखमय कल्पनाओ के मध्य, वह अपनी स्थिति भूल गया और खिडकी से सडक की ओर देखे बिना वह सडक की पटरी तक पहुँच गया।

अकस्मात् उसका दिल बैठ गया और पेट मे एक खलबली-सी मच गई। नीला चोगा पहने एक व्यक्ति कोई दस गज के फासले पर आता दिखाई दिया। यह वही काले बालोवाली कहानी-विभाग की कर्मचारिणी थी। अँधेरा होने लगा था, परन्तु उसको पहचानने मे विंस्टन को देर नही लगी। लडकी ने उसे घूरा, परन्तु तुरन्त ही तेजी के साथ आगे निकल गई मानो उसने विंस्टन को देखा ही न हो।

कुछ क्षरण तक विंस्टन इतना शिथिल रहा कि वह पैर भी आगे न बढा सकता था। किसी प्रकार उसने फिर चलना शुरू किया। सोचा, यह युवती मेरा पीछा यहाँ तक अवश्य कर रही होगी। यह सयोग ही की बात नही है कि हम दोनो एक ही समय ऐसी गली मे चलने के लिए निकले जो चलती नही। यह औरत खुफिया पुलिस से नियुक्त हो या शौकिया ही इसने मेरा भेद लेने की धृष्टता की हो, मेरे विरुद्ध उसका चुगली खाना ही मेरी मौत के पैगाम के लिए काफी है।

एक बार उसे खयाल आया, दौडकर शायद इस औरत को पकड सकूँ, उसका पीछा करता रहूँ और जब हम दोनो किसी सुनसान जगह

पर पहुँच जायें, तो मैं उसकी खोपडी तोड दूँ। मेरी जेब मे पडा शीशे का बट्टा इस कपाल-क्रिया के लिए यथेष्ट भारी होगा। परन्तु उसका यह विचार तुरन्त ही समाप्त हो गया, क्योंकि डर के मारे वह इतना शिथिल हो गया था कि कोई भी शारीरिक उद्योग करना उसके लिए असहनीय था। एक बार उसने सोचा, समाज-सगम दौड जाऊँ और उसके बन्द होते समय तक वहाँ रुका रहूँ। यो सध्या के समय सगम मे अपनी उपस्थिति का थोडा-बहुत प्रमाण तो मैं औरत की चुगली के विरुद्ध प्रस्तुत कर ही सकूँगा। परन्तु उसे यह कहना भी असम्भव मालूम हुआ। उसकी शिथिलता मृत्यु के समान हो गई थी। किसी प्रकार घर पहुँचकर शान्तिपूर्वक बैठने के अतिरिक्त उसके सामने कोई चारा नही था।

निवास-कक्ष तक पहुँचते-पहुँचते रात के दस बज गये। साढे ग्यारह बजे मेन स्विच द्वारा पूरे भवन की रोशनी बन्द होने को थी। इसलिए उसने रसोईघर मे जाकर विजय-मदिरा का एक प्याला पिया। फिर मेज के पास बैठकर अपनी डायरी निकाली पर उसे तुरन्त खोला नही, क्योंकि उसी समय टेलीस्क्रीन से देशभक्ति का एक सगीत किसी स्त्री के तेज स्वर मे उसे सुनाई देने लगा। वह डायरी की ओर घूरता रहा। परन्तु टेलीस्क्रीन की आवाज को भुला न सका।

भय की कल्पना विस्टन पर फिर सवार हो गई। सोचने लगा कि अपराधी रात ही को तो गिरफ्तार किये जाते हैं। चाहिए यह कि पकड मे आने के पहले ही वह आत्म-हत्या कर ले। कुछ लोग नि सदेह ऐसा ही करते थे, परन्तु भय की कल्पना ने विस्टन को इतना निस्तेज कर दिया था कि वह जैसे काले बालोवाली लडकी को ठण्डा करने की उत्तेजना की पूर्ति नहीं कर सका, वैसे ही उसने आत्म-हत्या के सम्बन्ध मे भी अपने को निष्क्रिय पाया।

टेलीस्क्रीन से एक औरत ने नया सगीत प्रारम्भ कर दिया था। उसकी आवाज शीशे के नुकीले टुकडो की तरह उसके मस्तिष्क को

पीडा पहुँचाने लगी। उसने सोचा कोई हर्ज नही यदि वे मुझे तुरन्त ही मार डालें, इसके लिए तो तैयार रहना ही चाहिए। परन्तु मरने के पहले अपराध को स्वीकार कराने का तमाशा भी किया जाता था। अपराधी को दीनतापूर्वक फर्श पर गिडगिडाना पडता था। दया के लिए वह चिल्लाता था, उसकी हड्डियाँ तोडी जाती थी, उसके दाँत तोड दिये जाते थे, और रक्तरजित बालो के गुच्छे उसके सिर से नोचे जाते थे। इन अनाचारों का कही जिक्र नही होता, यद्यपि सभी इन्हे जानते थे। फिर यह सब क्यो सहन किया जाये—जब अन्त सब कष्टो का एक ही है और वह यह कि सभी पकड मे आ जाते हैं और सभी अपने अपराध स्वीकार करते हैं। तो फिर आतक के इतने दृश्य क्यों, जब परिणाम मे कोई भेद नही होता।

परन्तु टेलीस्क्रीन से निकलती तेज आवाज से शृङ्खलाबद्ध विचार की प्रगति असम्भव हो गई। विंस्टन ने अपने मुँह मे एक सिगरेट लगाई ही थी कि आधी तम्बाकू उसकी जीभ पर ही गिर पडी और उसकी कडवी गर्द को थूकना भी मुश्किल हो गया। बडे भाई की मुखाकृति उसके मस्तक के सामने घूम गई। जैसा वह कुछ दिन पहले कर चुका था, वैसे ही उसने एक सिक्के को अपनी जेब से निकालकर उसे देखा। चित्र उसकी ओर निहारता दिखाई दिया। गम्भीरता, शान्ति और सरक्षण की मुस्कराहट लिये हुए परन्तु इन काली मूँछो के पीछे किस प्रकार की मुस्कराहट छिपी हुई थी। शव-यात्रा के समय के शोक-सगीत के समान दल के पुराने नारे उसे सुनाई देने लगे

युद्ध ही शान्ति है।
स्वतन्त्रता ही दासता है।
अज्ञान ही शक्ति है।

बेटी का ब्याह

(एडवर्ड स्ट्रीटर की पुस्तक का सार)

बेटी के ब्याह के समय बेचारे पिता की मानसिक तथा आर्थिक दुर्दशा का चित्रण बड़ी सहानुभूति के साथ एडवर्ड स्ट्रीटर ने इस पुस्तक में किया है जिसे पढ़कर हँसते-हँसते आपके पेट में बल पड़ जायेंगे।

बेटी का ब्याह

के अपने विवाह के बारे मे जो भी कदम उठाती, उससे उसके पिता मि० स्टैनले बैंक्स को कोई विशेष हर्ष न होता, इसका कारण केवल यह था कि वह अपनी पहली सन्तान से उससे कही अधिक प्यार करते थे जितना कि उन्हें स्वय आभास था।

उसकी किशोरावस्था मे उसके पिता ने उसके साथ विवाह की इच्छा रखनेवाले हर युवक को बडे तिरस्कार के साथ नामजूर कर दिया था। बाहर को निकले हुए अपने बडे-बडे दांत ठीक करवाकर और अपने बाल स्थायी रूप से घु घराले करवाकर के ने जब से लोगो मे उठना-बैठना शुरू किया था तभी से लम्बी-लम्बी टाँगोवाले किशोर-वयस्क लडके, जिनके बाल साही के कांटो की तरह खडे रहते थे, २४ मैंपिल ड्राइव के चक्कर लगाने लगे थे। मि० बैंक्स उन सभी को सन्देह की दृष्टि से देखते थे।

अकस्मात्—माता-पिता को कोई चेतावनी भी नही—दोनो को दिखाई देने लगा कि के की भाव-भगिमा मे कोई परिवर्तन होने लगा है, मानो कोई कीमिया उस पर अपना असर कर रही हो। घर पर उसकी मुख-मुद्रा से हमेशा गम्भीरता प्रदर्शित होती थी, और यही फैशन भी था, परन्तु अब उसके हाव-भाव मे एक चचलता प्रकट होने लगी जिसके कारण मि० बैंक्स को वह कुछ अपरिचित-सी लगने लगी थी।

एक दिन अपनी पत्नी से पूछ ही तो बैठे, "एली, के को क्या हो गया है, कुछ विचित्र-सा व्यवहार है उसका।"

श्रीमती बोली, "मैं नहीं जानती, कदाचित् प्रणय के पहले बाण का प्रभाव है।"

मि० बैंक्स तिरस्कार की मुद्रा में बडबडाने लगे, "प्रणय किसके साथ ?"

"आपको उस लडके की याद है ? उसका नाम बक्ले जैसा ही कुछ है।"

"तुम्हारा मतलब उस लम्बे-चौडे सुग्रर से है ? कैसी बात करती हो।"

परन्तु दिन बीतते गये, तो साथ ही बक्ले का व्यक्तित्व भी बैंक्स-परिवार मे अधिक प्रत्यक्ष होने लगा। बातचीत के सिलसिले में के के मुख से बक्ले का नाम निकल जाता, और दिन जाते के की बातो मे बक्ले की चर्चा बढती गई। के घर के बाहर जाती, तो मि० बैंक्स को कभी साफ न मालूम होता कि वह अपना समय कहाँ बिताती है। परन्तु यह प्रत्यक्ष था कि जहाँ उसका समय बीतता है, बक्ले भी उसके साथ रहता है। अकस्मात् लडकी के विवाह के सम्बन्ध मे मि० बैंक्स की पुरानी भावना फिर जागृत हुई। यह नया पतिंगा, जो दीपक के इतने निकट उडने लगा था, उन्हें तो निश्चित रूप से बहुत ही बुरा लगता था।

बैंक्स-परिवार में अब वह खामोशी छा गई जो दर्शकों मे थियेटर का परदा उठने के पहले होती है—उन लोगों ने सोचा कोई नई बात होनेवाली है, पर हुआ कुछ भी नही। के खोई-खोई-सी दिखाई देती रही। घर के बैठक मे आकर बक्ले कभी-कभी के की प्रतीक्षा करता, तो परिवार के अन्य सदस्यो से अलग रहने का प्रयत्न करता और कुछ क्षण तक गम्भीर मुद्रा मे दिखाई देता। इसी तरह कुछ क्षण रहने के बाद दोनो उठकर चल देते—रात के अँधियारे मे।

● ● ●

एक दिन अकस्मात् तूफान आ ही तो गया।

के का रात्रिकालीन भोजन इन दिनो आम तौर से घर के बाहर ही हुआ करता था। आज रात को के के दोनो छोटे भाई कोई तमाशा देखने चले गये थे, और माता-पिता के साथ खाने के लिए के भी बैठ गई थी।

बातचीत के सिलसिले मे के ने सूचना दी, "ममी! मैं अगले शनिवार और रविवार को घर पर नही रहूँगी।"

माँ ने पूछा, "बेटी? कहाँ जा रही हो?"

उत्तर मिला, "मैं दो दिन बक्ले के यहाँ रहूँगी।"

मि० बैंक्स हाथ मे बिस्कुट लिये शोरवा पीने जा रहे थे। यह बात सुनकर चौंक पडे, बिस्कुट हाथ से छूटकर शोरवे मे गिरा, पूछने लगे, "सुनो, क्या तुम इस विचित्र व्यक्ति से ब्याह करना चाहती हो?"

के का उत्तर अत्यन्त सक्षिप्त रहा, "खयाल तो है।"

थोडी देर तक खामोशी रही और तीनो बैठे टमाटर का शोरवा पीते रहे। अन्तत श्रीमती बैंक्स से न रहा गया और वह दबे व्यग से पूछ बैठी, "और कब ब्याह करने की बात सोच रही हो?"

के के उत्तर मे बच्चों की थकी शिक्षिका का स्वर था, बोली, "ममी! मुझे नही मालूम, महीनो मे हो या सप्ताहो के भीतर ही हो जाये—सब कुछ बक्ले की योजनाओ पर निर्भर है। इस सम्बन्ध मे उसके विचार अटल हैं। विवाह की तिथि क सम्बन्ध मे उसका वचन लेने की कोई आशा न कीजिये।"

मि० बैंक्स का पारा काफी चढ चुका था, खाते-खाते उन्हे मालूम हुआ, जैसे उनके गले मे कुछ अटक गया है। पानी पीकर कुछ शान्त हुए, तो तीखे स्वर मे कहा, "आशा है कि यदि मैं थोडे-से सीधे-सादे प्रश्न पूछ लूँ तो बक्ले यह तो न समझेगा कि मैं उसे वचनबद्ध करने जा रहा हूँ।"

के अनमनी-सी दिखाई देने लगी।

परन्तु मि० बैंक्स कहते गये, "यह बक्ले है कौन बला, इसका पारिवारिक नाम क्या है, कौन से प्रदेश का रहनेवाला है, और कौन उनकी परवरिश करेगा ? यदि वह समझता है कि परवरिश मेरे जिम्मे होगी तो उसको बड़ी निराशा होगी। और भगवान जाने कौन—।"

पतिदेव की बात काटकर श्रीमती बोल पड़ी, "स्टैनले, कोई यहाँ बहरा नही है, और प्रत्येक शब्द के साथ गाली देना तुम्हे शोभा नही देता। रसोईघर मे बैठी नौकरानी डिलाइला सुन रही है, कितनी लज्जा की बात है हमारे लिए। अरे, के को उत्तर देने का मौका तो दो। उसे—"

इतने मे माँ-बाप की दुलारी के पहली बार अपने पिता को मुँह-तोड उत्तर देने लगी, "पापा, सुनिये, मैं चौबीस वर्ष की हुई, और बक्ले छब्बीस वर्ष का है। हम लोग वयस्क हो गये हैं, और आपने बक्ले की परवरिश की जो बात कही, तो मैं आपसे एकदम साफ कह दूँ कि वह किसी पर अपनी परवरिश का भार डालने का नही, वह मरना बेहतर समझेगा, वह ऐसा व्यक्ति है, जो बिलकुल स्वतन्त्र और आत्म-निर्भर रहना चाहेगा।

"और उसका पूरा नाम है बक्ले हन्टन। वह पक्का व्यवसायी है, उसमे व्यवसाय की आश्चर्यजनक प्रतिभा है, और उसका व्यवसाय भी अत्यन्त सुन्दर है।"

इतने लम्बे उत्तर में बैंक्स को प्रश्न योग्य एक ही बात मिली, "करता क्या है ?"

"पापा, मैं नहीं जानती, वह कुछ बनाता है, और हमे इससे क्या मतलब कि वह क्या बनाता है। वह ऐसा आदमी है जो सभी काम कर सकता है।

"और आप माता-पिता की बात पूछेंगे, तो पापा, मैं आपसे इतना तो कह ही दूँ कि वे आप दोनो से कम नहीं हैं।" उसकी बोली से यह झलकता था कि वह हैसियत का बयान कुछ घटाकर दे रही है। "ये

1545

लोग ईस्ट स्मिथफील्ड मे रहते हैं और मेरा अनुमान है कि यह कस्वा फेयरव्यू मैनर से कम अच्छा नही, यद्यपि इन सब बातो से मेरे विचार मे कुछ फर्क नहीं पडता।"

मि० वैक्स ने चुप रहकर अपनी सहमति प्रकट की। जितने वे गर्म हुए थे, उतने ही अब ठण्डे पड गये। जो-कुछ के कहती रही उसका अधिकाश उन्होने सुना ही नही, और बक्ले को तो वे भूल ही गये थे। वे अपनी बडी वेटी के तमतमाये चेहरे को देखते रहे और उन्हे उसके बचपन की याद आती रही, जब भूरी चोटियाँ बाँधे और मैला फ्राक पहने अपने दोनो छोटे भाइयो की अत्यधिक छेडछाड पर वह उनसे लड पडती थी। यह सब उन्हे कल की वात प्रतीत हुई। उन्हे कुछ ऐसी घबराहट हुई, मानो उनका हृदय भर आया हो, और आँखो से आँसू निकलने को हो।

कुर्सी से उठकर उन्होने अपनी प्यारी वेटी का मस्तक चूमा और बोले, "वेटी, बहुत अच्छा। मेरा उसके प्रति स्नेह अभी से है।"

० ० ०

मि० वैक्स की गिनती नगर के वहुत समझदार और सुलझे हुए वकीलो मे थी। परन्तु इस घटना के वाद से वह अपने को एक नासमझ और चिन्तायुक्त मस्तिष्क-रोगी जैसा समझने लगे। रात को उन्हे नीद न आती। उनके शयन-गृह की छत पर एक दूधिया धब्बे जैसा प्रकाश सडक की रोशनी से आता था और वे लेटे उसी को ताका करते—यह आवारा कौन है, जिसने मेरे घर पर आक्रमण करके मेरे देखते-देखते मेरी लडकी को मुझसे छीन लिया? लडकी, अरे वह लडकी ही तो है, उसे क्या मालूम कि सफल दाम्पत्य के लिए पुरुष मे कौन-कौन गुण होने चाहिए। नाम के अतिरिक्त के और कौन वात उसके विषय मे जानती है? हां, एक वात जरूर जानती है, और वह है उसका सुन्दर स्वास्थ्य। यह तो वडी वात तव होगी जव उसके वच्चे पैदा होने लगेंगे।

उन्होंने अपनी श्रीमती की ओर देखा। वे शांति से सो रही थीं। स्त्रियाँ भी कैसी अजीब होती हैं। यदि बच्चे कोई नाच देखने चले जाते हैं तो इन्हें तब तक नींद नहीं आती, जब तक वे वापस नहीं आ जाते। परन्तु जब अपनी एकलौती बेटी के सामने यह समस्या है कि वह जीवन-भर क्या खायेगी, क्या पहनेगी, तो यह बच्चे के समान सो रही हैं।

अपनी पत्नी की बातों से मि० बैंक्स को यह बात साफ समझ में आने लगी कि उसे बक्ले की जरा भी फिक्र न थी, विवाहोत्सव और उससे सम्बन्धित प्रबन्ध की ही फिक्र थी, क्योंकि स्त्री की दृष्टि में विवाह, गिर्जाघर में दिये गये वचनों से ही पक्का नहीं होता, उसकी पुष्टि वस्त्रों, टोपियों, जूतों जैसी हजारों चीजों के प्रबन्ध से होती है।

मि० बैंक्स को हमेशा से मालूम था कि उनकी श्रीमती को खरीदारी का जन्म-जात चाव है, यद्यपि आर्थिक स्थिति के कारण उसकी इस प्रतिभा पर कुछ प्रतिबन्ध लग गये थे। अब इतने समय बाद उसे खरीदारी का स्वर्ण-अवसर मिला तो वह गुनगुनाई, "के दुलहिन बनकर बहुत सुन्दर लगेगी। उसका चेहरा-मोहरा और रूप-रंग बहुत ही उपयुक्त है। मैं जानती हूँ कि उस पर कौन पोशाक सबसे अधिक फबेगी, लम्बी कसी आस्तीन का ब्लाउज और स्कर्ट—"

• • •

क्रमशः यह प्रत्यक्ष होने लगा कि कभी-न-कभी बक्ले के परिवार से मिलने का प्रबन्ध करना होगा, परन्तु मि० बैंक्स सम्मिलन की तिथि टालते रहे।

एक दिन अन्यमनस्क होकर कहने लगे, "क्या ही अच्छा होता, यदि के ने किसी ऐसे को पसन्द किया होता जो हमारी जान-पहचान का होता। ऐसे परिवार में पहुँची, जिन्हें मैंने कभी देखा भी न था। मुझे अनुमान है कि वे लोग कैसे होंगे। बड़ी मुसीबत है।"

अन्तत डस्टन-परिवार ने स्वय ही मि० वैक्स को सपत्नीक अगले रविवार के भोजन पर निमन्त्रित किया। लिखा—हम सब चार ही व्यक्ति होगे, सपत्नीक आप और हम दोनो, न के होगी न बक्ले, इसलिए कि हम लोग एक-दूसरे से खूब परिचित हो जायें।

निमन्त्रण पाकर मि० वैक्स बोले, "कर्तव्य से खूब उऋण हुए, ये लोग बहुत भले मालूम होते हैं।"

डस्टन के घर हाजिरी देने जाना वैक्स के लिए ऐसा ही था, जैसे कोई नवयुवती राज-दरबार मे पहली बार हाज़िरी देने की तैयारी कर रही हो। रविवार को प्रात काल पहले तो मि० वैक्स ने बहुत चाव से शिकारी कोट और ढीला पतलून चढाया, फिर नाश्ता करने के बाद ऊपर जाकर दफ्तर की पोशाक पहन आये और समय से आधा घण्टा पहले ही रवाना होने का हठ करने लगे। नतीजा यह हुआ कि १२ बजे के कुछ ही मिनट बाद दोनो अपनी मोटर पर ईस्ट स्मिथफील्ड पहुँच गये।

वैक्स ने कहा, "डस्टन के घर पर घण्टा-भर बैठे-बैठे दीवारें ताका करूँगा तो इसमे हम लोगो के लिए लज्जा की बात होगी। बेहतर है कि चलो शहर का चक्कर लगा आयें, और कुछ निवासियो से मुलाकात भी हो जाये।"

कुछ निराश होकर वह अपनी पत्नी से बोले, "शर्त बदता हूं, खाने के पहले ये लोग कुछ पियेंगे भी नही।"

श्रीमती बोली, "मान लो वे नही पीते, तुम कोई शराबी तो हो नही।"

मि० वैक्स ने एक आह भरी और बात वही समाप्त कर दी।

श्रीमती बोली, "समझदारी इसमें है कि बेकार चक्कर न लगाकर हम लोग डस्टन के घर का पता लगा लें। इतना तो लाभ होगा ही कि समय से वहाँ पहुँच जायेंगे।

मि० वैक्स बोले, "चलो, घर क्या होगा, कोई झोपडी ही होगी।"

जब अन्तत इन्होंने पता लगा लिया तो डस्टन के जिस निवास-स्थान को मि० बैंक्स झोपड़ी समझे बैठे थे, वह उन्हे सफेदी से पुते एक बहुत बड़े पक्के भवन के रूप मे दिखाई दिया, जिसके चारो ओर पुराने विलायती पेड लगे थे। जब मि० बैंक्स ने देखा कि यह मकान अपने घर से दूना तो है ही, तो उनकी घबराहट बढ गई।

उन्होंने अपनी घड़ी देखकर सूचना दी, "जिस होटल होते हुए हम लोग यहां आये हैं, वहीं वापस जाकर हाथ-मुँह धो आऊँ।" श्रीमती बोली, "क्या बकवास करते हो? डस्टन के घर ही क्यो न हाथ-मुँह धो लेना। उनके यहां नल होगा ही।"

बैंक्स ने शान से कहा, "मैं होटल ही में हाथ-मुँह धोना पसन्द करूँगा।" श्रीमती चुप रही, देखा झगड़ने का यहां कोई मौका नही है।

जब दोनो की मोटर होटल के सामने पहुँची, तो शिष्टाचार के प्रतिकूल मि० बैंक्स ने श्रीमती को मोटर में ही रहने दिया और स्वयं जल्दी से दरवाजे के भीतर घुस गये। १० मिनट बाद लौटे, तो पहले से अधिक शांत दिखाई दिये। मि० बैंक्स मोटर मे पहुँचे तो उसके भीतर शनिवार की शैतानी रात की गन्ध व्याप्त हो गई।

श्रीमती से न रहा गया, बोली, "स्टैनले बैंक्स? पीकर आये हो?"

मि० बैंक्स को मोटर चलानी थी, अतएव सामने सड़क से आँखें हटाये बिना पत्नी से पूछा, "यह कैसी बात है कि कभी कोई संयोगवश कुछ पी ले तो उस पर शराब पीने का इलजाम लगे। मेरे ख्याल से पचास के ऊपर के आदमी को—"

कुछ देर बाद वह और भी ताव मे आकर बोली, "मैं समझती हूँ कि तुम्हारे लिए बड़ी लज्जा की बात है कि तुम पुरानी व्हिस्की की भाँति गधाते हुए डस्टन-परिवार में मिलने जाओ। बड़ी जिल्लत की बात है। सो भी रविवार के प्रात काल।"

बैंक्स को अपनी पत्नी का तर्क समझ मे नही आया। बहस की

बात बदलने की आशा से पूछा, "रविवार के प्रात काल का इस बात से क्या मतलब ?" परन्तु श्रीमती उलझती ही रही, जब तक डस्टन की कोठी के फाटक के भीतर दोनो मुड नही गये ।

o o o

लडकी के माता-पिता की लडके के माता-पिता से पहली मुलाकात ऐसी ही हुई, मानो वह अमरीका मे जाकर बसनेवाले गोरो और वहाँ के आदिवासी रेड इण्डियनो की पहली मुठभेड हो, जिसमे द्वेष और आश्चर्य की भावना लिये दोनो एक-दूसरे को ताकें । श्रीमती बैक्स और श्रीमती डस्टन की मुलालात होते ही दोनो ने एक-दूसरे को चोटी से एडी तक गौर से देखा । दोनो को एक-दूसरे से सतोष हुआ, तो आगे बढकर बाँह फैलाये दोनो एक-दूसरे से 'माई डियर' कहकर लिपट गई ।

इन दोनो के पतियो ने हिचकिचाते हुए एक-दूसरे से हाथ ही मिलाये और एक साथ स्वागतार्थ बोले, "आपसे मिलकर नि सन्देह बहुत खुशी हुई ।"

श्रीमती डस्टन आगे बढकर बैठक की ओर दोनो को ले चली । मि० डस्टन ने पूछा, "आप, हाथ-मुँह धोइयेगा ?"

मि० बैक्स के मस्तिष्क में डस्टन के प्रति अभी अविश्वास था ही; सो झेंपते हुए उन्होने कहा, "मै धो चुका ।"

श्रीमती डस्टन बोली, "मैं कैसे बताऊँ, मुझे आपकी के कितनी प्यारी लगती है ।"

श्रीमती बैक्स अनुकूल प्रत्युत्तर के लिए बोली, "बक्ले के पति भी हमारी वैसी ही भावनाएँ हैं ।"

मि० बैंक्स को कुछ कहना ही था, अतएव "हाँ अवश्य" कहकर उन्होंने अपनी पत्नी का समर्थन किया ।

अब मि० बैंक्स के विचार मे कहने की कोई बात नही रह गई

थी। वह बातचीत बन्द करके भोजन पर बैठने का प्रस्ताव सुनने के लिए तैयार थे।

इतने मे नौकरानी एक हाथ मे शराब का कटर और दूसरे हाथ मे नमकीन और गरम पकवान की थाली लिये सामने आ गई। मि० वैक्स का अविश्वास समाप्त नही हुआ था, परन्तु उन्हे इस प्रबन्ध से खुशी जरूर हुई।

उन्होने मदिरा का एक प्याला ले लिया, और उन्हे यह बहुत अच्छी लगी। डस्टन ने कहा, "आइये, हम लोग वर-कन्या के सुख और दीर्घायु की कामना करते हुए अपने-अपने प्याले पियें।" मि० वैक्स एक घूंट मे सब पी गये और तुरन्त ही पिचके गुब्बारे के भांति ढीले पड गये। मि० डस्टन ने प्याले फिर भरे।

मि० वैक्स होटल मे हाथ-मुंह धोकर कुछ पी चुके थे। यहाँ भी आशा से अधिक उनका सत्कार हुआ, जिससे उन्हे बोलने की सूझी, "यह हम लोगो के लिए एक स्वर्ण-अवसर है। मैं और मेरी पत्नी न जाने कब से इस दिन की प्रतीक्षा कर रहे थे। आपके पुत्र को तो देखते ही मैंने पसन्द कर लिया था। आप दोनो से मिलने पर मुझे वह पहले से अधिक पसन्द है। आशा है कि डस्टन-वैक्स परिवार एक-हृदय होगे।"

श्रीमती डस्टन विचारपूर्वक बोली, "मुझे विश्वास है, हम लोगो की खूब निभेगी, और अब आप हमे टोनिस और हर्बर्ट कहा करें।"

श्रीमती वैक्स जरूरत से ज्यादा उत्सुकता से बोली, "और आप हम दोनो को स्टैनले और एली कहा करें।"

इसके बाद कुछ समय तक व्यग्र शान्ति रही।

मि० वैक्स ने पूछा, "हर्बर्ट ? क्या कभी तुमने फेयरव्यू मैनर देखा है ?"

उत्तर मिला, "स्टैनले, अभी तक देखा तो नही, पर हमने उसके बारे मे सुना बहुत-कुछ है।"

आशका की भावनाएँ भी उनके हृदय मे उठने लगी। उन्हे यह अनुमान होने लगा कि विवाह क्या होगा, एक सार्वजनिक उत्सव होगा जिसमे कन्या के पिता की हैसियत से उन्हे प्रमुख पात्र का पार्ट अदा करना पडेगा। उनकी समझ मे कभी यह आता कि यह मामला शीघ्र से-शीघ्र समाप्त हो जाये। फिर कभी यह भी सोचते कि तिथि अगर दूर ही टाल दी जाये, तो जैसे लोगो को मौत की फिक्र नही रहती, वैसे विवाहोत्सव की चिन्ता भी इस समय तो टल ही जायेगी। श्रीमती बैंक्स का दृष्टिकोण दूसरा ही था। वह समझती थी, मानो वह किसी तमाशे का प्रबन्ध करने को हैं, जैसे वह पोशाको की तैयारी, पर्दो के निर्माण, और डोरी-डण्डो को इकट्ठा करने के प्रबन्ध मे लगी हो।

के का कहना था कि पापा और ममी दोनो यह महत्वपूर्ण बात भूले हुए मालूम होते हैं कि विवाह उनका नही, मेरा होना है, और मैं अपनी प्रेरणा के अनुसार ही विवाह की तिथि और स्थान का निश्चय कर लूँगी। खलबली की कोई जरूरत नही। ममी को हाथ क्या, उगली उठाने की भी जरूरत नही। मेरे आदेश देने पर प्रत्येक बात अपनी-अपनी जगह बैठ जायेगी। मुझे और बक्ले को इसी प्रकार अपना जीवन बिताना है, सादगी से और किसी घबराहट के बिना। मैंने तो अपने घर की ऊँची दुकान मे फीका पकवान ही बनते देखा है। अब यह सब मैं नही होने दूँगी, इसे दोनो अच्छी तरह समझ लें।

यो ही कुछ समय तक बहस का तूफान चलते-चलते वह अकस्मात् समाप्त हो गया। यह निश्चय हो गया कि शुक्रवार १० जून को साढे चार बजे तीसरे पहर सेण्ट जॉर्ज गिर्जाघर मे दोनो का शुभ विवाह सम्पन्न होगा।

• • •

मि० बैंक्स का कहना था कि के ने अपने निश्चय की सूचना अपनी जान-पहचान के सभी सगे-सम्बन्धियो को दे दी है इसलिए मदिरा-पान का

निमन्त्रण बहुत जरूरी नही। के ने कहा, "यह तो बडी हँसी की बात होगी, मैंने तो थोडे ही लोगो को सूचना दी है। और चलन तो यही है कि जब सगे-सम्बन्धी मदिरा-पान के लिए इकट्ठे हो, तभी सगाई की सूचना दी जाये।"

के के निश्चय का परिणाम यह हुआ कि एक दिन मि० बैंक्स तीसरे पहर की तीन बजकर सत्तावन मिनट की गाडी से कस्बे के बाहर चले गये। शुष्क हास्य लिए एक छोटा-सा व्याख्यान तैयार करने, जो के की बाल्यावस्था और किशोरावस्था से प्रारम्भ होकर एकाएक उसकी सगाई की सूचना पर समाप्त हो।

लडकी का अनुमान था कि पार्टी मे पच्चीस-तीस से अधिक लोग नही होंगे। मि० बैंक्स ने अपने अनुभव मे यह सीखा था कि पैंतीस से चालीस अतिथियो का प्रबन्ध करना चाहिए। भडारखाने मे पहुँचे तो देखते क्या हैं कि श्रीमती ने मित्रो से माँगकर प्यालो की कतार लगा रखी है। उन्होंने अतिथि-सत्कार के विषय मे ब्योरेवार नही सोचा था। उनका हृदय बैठ-सा गया, "अकेला मैं किस प्रकार इतनी बडी भीड को पिलाने का प्रबन्ध करूँगा। मेरे तो दो ही हाथ हैं। प्रबन्ध के लिए तो आठ हाथो का एक प्रशिक्षित पशु आवश्यक है।"

परन्तु यह घबराहट का मौका न था, निर्णयपूर्वक काम करना आवश्यक था। प्रत्येक अतिथि के लिए मार्टिनी हो। यह सबसे आसान रहेगा। थोडी-सी बोतलें ह्विस्की व मेल से बनी मदिरा की भी हो—उनके लिए जिन्हे जिन से परहेज हो। उन्होंने अलमारी से दो बडी सुराहियाँ निकाली और एक बोतल के बाद दूसरी दोनो मे उँडेलने लगे। ये बोतलें उन्होंने बडे जतन तथा प्रेम से अपने जीवन-काल मे जमा की थी। अब ये लुटेंगी, यह सोचकर उन्हे मानसिक पीडा का अनुभव हुआ।

समय से पहले ही मेहमान आने शुरू हो गये। स्त्रियाँ एक-दूसरे का स्वागत करते बोलती नही, चिल्लाती थी। आगन्तुक महिलाओ का

हुल्लड मि० बैंक्स को सुनाई देने लगा। मि० बैंक्स भाडन से अपने हाथ पोंछकर उनका स्वागत करने के लिए भण्डारखाने से निकलने ही वाले थे कि उन्हे द्वार पर ही एक स्वस्थ युवक ने प्रेमपूर्वक मुस्कराते हुए रोक लिया और बोला, "कैसे मिजाज हैं? आप मुझे ह्विस्की के चार गिलास देने की कृपा करेंगे।"

मि० बैंक्स ने सकेत किया, "मार्टिनी से काम नही चलेगा?" उत्तर मिला, "जी नही, आपकी बहुत मेहरबानी है, मुझे ह्विस्की ही चाहिए।"

मि० बैंक्स ने अलग रखे चार गिलासो मे बरफ भर दी और आगन्तुक के सामने सरका दिये। युवक ने मि० बैंक्स को उनकी सत्कार-सेवा के लिए धन्यवाद दिया।

वह हटा तो उसकी जगह मोटे फ्रेम का चश्मा लगाये एक मोटा युवक आ गया और बोला, "जनाब, चार ह्विस्की के गिलास और एक सोडा के साथ स्काच का।"

मि० बैंक्स ने अभी ही स्काच की तीन बोतलें अपनी श्रीमती के गुलदस्तो के पीछे अलमारी के पटरे पर छिपा दी थी। बात बनाने के लिए कहा, "मेरे पास स्काच नही है।" समझे थे कि उनका झूठ पकडा 'नही जायेगा।

मोटा युवक निरुत्तर दिखाई दिया। इस नवीन स्थिति को प्रत्येक दृष्टिकोण से समझने के लिए वह एक क्षण तक चुप रहा, फिर बोला, "मालूम नही, जनाब, शायद बूर्बोन और सोडा से काम चल जाये।"

बैंक्स झूठ बोला था। प्रायश्चित्त के रूप मे चिढकर उसने एक विशेष मेल की बहुत-सी ह्विस्की एक गिलास मे उंडेल दी और मार्टिनी के लिए फिर इसरार किया। आगन्तुक ने इन्कार करते हुए कहा, "यही बहुत है।"

अब द्वार पर कई युवक आ गये। एक ने गम्भीरता से अपनी माँग प्रस्तुत की, "चार गिलास ह्विस्की के दीजिये। दो मे कोई

खुराफात चीज न हो, आप समझ गये न। एक में थोडी-सी बर्फ हो और दूसरी में थोडी-सी शकर हो, कडुवई का कोई अंश न हो।"

मि० वैंक्स ने मन-ही-मन कहा, "हे ईश्वर! ये लोग क्या समझते हैं कि मैं यहाँ तुम्हें बांध रहा हूँ।"

थोडी-सी फुरसत मिली तो अपना सूट झाड-पोछकर मार्टिनी का एक गिलास लिये वह बैठके की ओर चले, जहाँ से चट्टानों पर टोकर खाती लहरों की गर्जना जैसा शोर निकलने लगा था। कधों से रगड खाते हुए वह बैठके में पहुँचे। कुछ लोगों ने स्वभावत मुस्कराकर उनका स्वागत जरूर किया, बाकी लोग अपने-अपने आनन्द में इतने मग्न थे कि किसी ने उनकी ओर ध्यान भी नहीं दिया।

केवल श्रीमती वैंक्स उनसे बोली, "स्टैनले? तुम कहाँ थे? डोरिस और हर्बर्ट आ गये हैं।"

मि० वैंक्स ने पूछा, "डोरिस और हर्बर्ट कौन?"

इतने में मि० डस्टन ने तपाक से स्टैनले का स्वागत किया, "बहुत खूब। आपसे मिलकर बहुत खुशी हुई। क्षमा कीजिये, बहुत देर हो गई। हम लोग रास्ता भूल गये थे, डोरिस हमेशा चाहती है—"

श्रीमती वैंक्स ने पतिदेव को आदेश दिया, "जाकर डोरिस और हर्ब को कुछ पिलाओ तो।"

मि० वैंक्स ने आशापूर्वक पूछा, "आप मार्टिनी पियेंगे?"

आशा के प्रतिकूल उत्तर मिला, "स्टैन आपको कोई एतराज न हो, तो हम ह्विस्की ही पसन्द करेंगे। मैं आपकी सेवा करूँ?"

मि० वैंक्स ने कहा, "नहीं नहीं, एतराज की क्या बात है, अभी लेकर आता हूँ।"

मि० वैंक्स को भंडारखाने में पहुँचने में जरा भी देर हो जाती तो उनकी बडी भद्द हो जाती। प्यासे युवकों का एक गोल भण्डारखाने में पहुँचकर शराब बांटने का काम अपने हाथ में लेने ही को था कि मि० वैंक्स वहाँ पहुँच गये। उन्होंने डस्टन-दम्पति के लिए उनकी

फरमाइश के अनुसार ह्विस्की के गिलास भेज दिये और फिर एक घण्टे तक अपनी इज्जत बचाने की कोशिश मे वह ऐसे जुटे रहे, मानो बढ़िया से रक्षा करने के लिए किसी बांध की मरम्मत मे जुटे हो। गनीमत यही थी कि मेहमान अब जो पाते उसी पर सतुष्ट हो जाते। बैठक मे हुल्लड का रग मेले की धकापेल जैसा था।

भीड छटने लगी। हुल्लड भी शात होने लगा। अब थोडे-से पियक्कड ही आखिरी दौर के लिए सामनेवाले बरामदे मे जमा थे। यह सुनकर मि० बैंक्स ने अपना भण्डारखाना बन्द किया और इन लोगों में जा बैठे। ऊपर से वह आदर-सत्कार मे दरियादिल दिखाई देते थे, परन्तु हृदय से वह जन्मजात कजूस थे।

श्रीमती बैंक्स अन्तिम आगन्तुक को धन्यवाद देते हुए बोली, "आप कृपापूर्वक पधारी, नमस्कार।" फिर बैंक्स को देखकर ताना मारा, "तुम्हारी सहायता खूब रही।"

मि० बैंक्स ने उत्तर दिया, "तुम क्या समझती हो कि मैं क्या करता रहा? मँडराता रहा?"

इस प्रकार जब सब मेहमान विदा हो गये, तब मि० बैंक्स ने पछतावे की भावना लिये अपने सजे घर की दुर्गति का निरीक्षण किया। अकस्मात् उन्हे याद आया कि सगाई की सूचना देना तो वह भूल ही गये।

परन्तु इस सूचना की किसी को फिक्र भी न थी।

• • •

आजकल के विवाहोत्सव नये तमाशे से बहुत-कुछ मिलते-जुलते हैं। तमाशे की तैयारी हो जाने पर यही निश्चय करना रह जाता है कि वह बडे थियेटर मे खेला जाये कि छोटे थियेटर मे, और फिर तमाशाई उसमे भरे किस प्रकार जायें।

के ने अपने माता-पिता से कहा, "मुझे आपसे इतना कह देना है कि विवाह छोटे पैमाने पर होना है और दम्पति के स्वागत के लिए भी आमन्त्रितो की संख्या थोडी ही होगी।"

के की वात यो तो मि० वैंक्स को बहुत अच्छी लगनी चाहिए थी, परन्तु अपने अनुभव के आधार पर उन्हें इस सिद्धान्त के कार्यान्वित होने की कोई आशा नहीं दिखाई दी। वह वोले, "उस दिन मेरी जैक गिवंस से वात हो रही थी। उसे अपनी चार लडकियो के विवाह का अनुभव है। वह कहता है कि विवाहोत्सव या तो परिवार के भीतर सीमित रहते हैं या फिर उनके लिए कोई वड़ा वाग होना चाहिए।"

के ने कहा, "मेरा विवाह न इतना छोटा होगा न उतना वडा। उसमे मेरे मित्र ही होंगे, और व्यापारियो की सभा जैसा वह वडा भी नहीं होगा।"

मि० वैंक्स ने कहा, "तुमसे व्यापारियो की सभा की वात किसने की? जो मैं कहता आ रहा हूँ, वह यह है कि उत्सव मे तीस होंगे या तीन सौ।"

अकस्मात् मि० वैंक्स को सूची वनाने की धुन सवार हुई। पीले कागज का पैड ले आये। उसमें तीन नाम लिखे और कहा, "देखो, कानून के अनुसार यही सूची सवसे अधिक छोटी है। तुम, वक्ले और चर्च के पादरी साइरस गैल्जवर्दी। कोई और?"

के निराशा की मुद्रा में अपने हाथ फैलाकर वोली, "यह तो वच्चो जैसी वात है। आप हमेशा वात को पकड लेते हैं।"

श्रीमती वोल पड़ी, "के, तुम्हारे पिता कभी-कभी अच्छी वात भी कह जाते हैं। स्टैनले, आगे वढो। डस्टन-दम्पति, हम दोनो और दोनों लडको—वेन तथा टामी—को भी शामिल कर लो।"

के आगे वढी और वोली, "और हेरियट चाची? वह हों, तो चाचा चार्ली भी निमन्त्रित होंगे।"

मि० वैंक्स ने कहा, "वहुत ठीक! परन्तु यहाँ से मुझे सूची वढाने मे

फरमाइश के अनुसार ह्विस्की के गिलास भेज दिये और फिर एक घण्टे तक अपनी इज्जत बचाने की कोशिश मे वह ऐसे जुटे रहे, मानो बढ़िया से रक्षा करने के लिए किसी बांध की मरम्मत मे जुटे हो। गनीमत यही थी कि मेहमान अब जो पाते उसी पर सतुष्ट हो जाते। बैठक मे हुल्लड का रग मेले की धकापेल जैसा था।

भीड छटने लगी। हुल्लड भी शात होने लगा। अब थोडे-से पियक्कड ही आखिरी दौर के लिए सामनेवाले बरामदे मे जमा थे। यह सुनकर मि० बैंक्स ने अपना भण्डारखाना बन्द किया और इन लोगो मे जा बैठे। ऊपर से वह आदर-सत्कार मे दरियादिल दिखाई देते थे, परन्तु हृदय से वह जन्मजात कजूस थे।

श्रीमती बैंक्स अन्तिम आगन्तुक को धन्यवाद देते हुए बोली, "आप कृपापूर्वक पधारी, नमस्कार।" फिर बैंक्स को देखकर ताना मारा "तुम्हारी सहायता खूब रही।"

मि० बैंक्स ने उत्तर दिया, "तुम क्या समझती हो कि मैं क्य करता रहा ? मॅडराता रहा ?"

इस प्रकार जब सब मेहमान विदा हो गये, तब मि० बैंक्स पछतावे की भावना लिये अपने सजे घर की दुर्गति का निरीक्षण किय अकस्मात् उन्हे याद आया कि सगाई की सूचना देना तो वह भूल गये।

परन्तु इस सूचना की किसी को फिक्र भी न थी।

• • •

आजकल के विवाहोत्सव नये तमाशे से बहुत-कुछ मिलते-जुलत तमाशे की तैयारी हो जाने पर यही निश्चय करना रह जाता वह बडे थियेटर मे खेला जाये कि छोटे थियेटर मे, और फिर उसमे भरे किस प्रकार जायें।

सयम से रहा। अब मैं रस्मो के शिकजे मे फँस गया हूँ, तो मुझे अपने ही हाथो अपनी हैसियत का कचूमर निकालना पडेगा।

इसी प्रकार वह करवटें वदलते और आहें भरते रहे। और मन मे कहते रहे, "ऐसा नही होने का।" परन्तु वह जानते थे कि यह सब करना पडेगा ही।

● ● ●

लम्बे वाद-विवाद के वाद यह निर्णय हुआ कि एक सौ पचास से अधिक व्यक्ति चोट खाये विना वैंक्स के घर मे भरे नही जा सकते। इनके अतिरिक्त सौ और गिर्जाघर के लिए निमन्त्रित किये जा सकते हैं। परन्तु निश्चय है कि दम्पति के स्वागत में ये निमन्त्रित नही हो सकते।

श्रीमती वैंक्स ने तव तक थोडे ही लोगो को खिलाया-पिलाया था। इस सख्या से तो रह घवरा गईं। उन्होने प्रस्ताव किया, "दोनों अलग-अलग सूची वनायें, जिनमें वही लोग हो जिन्हे निमन्त्रण देना आवश्यक हो।"

सध्या के समय मि० वैंक्स इन सूचियों का मिलान करने वैठे। घण्टों लग गये। दोनो मे एक ही नामो की सख्या वहुत कम थी, शायद इसलिए कि वैंक्स-परिवार मे दोनो के मित्र अलग-अलग थे। सम्मिलित सूची की सख्या पक्की होने पर उन्होने अपनी पत्नी और पुत्री की ओर क्रूर व्यग से देखकर पूछा, "वताओ कितने हुए।"

श्रीमती वैंक्स ने घवराकर कहा, "दो सौ।" इतना कह तो वह गईं परन्तु उन्हें अपने अनुमान पर विश्वास न था।

मि० वैंक्स गर्वपूर्वक चिल्लाये, "पाँच सौ वहत्तर। पाँच, सात, दो। मैंने तुमसे क्या कहा था अपने परिवार तक रहो या किसी वडे वाग मे उत्सव का प्रवन्ध करो।"

श्रीमती वैंक्स ने सूचियाँ समेट ली, "हुश्! मुझे देखने दो। तुमने कोई गलती की है। मैं वढकर इस सूची को काट सकती हूँ। देखो तो,

किफायत करनी होगी।" तभी मित्रो ने उनके मस्तिष्क में आना प्रारम्भ किया। वह तेजी के साथ लिखते गये और कागज के हाशिये पर जोड भी लिखते गये। पौन घटे मे पैड के सब ताव खतम हो गये।

"तुम्हें मालूम है, सूची मे अब आमन्त्रितों की सख्या कहाँ तक पहुँच गई है ?"

के ने कुछ बुझे दिल से अनुमान लगाया, "पचास तक पहुँची होगी।"

बैंक्स ने उत्तर दिया, "दो सौ छ'। अभी हमारे अधिकाश मित्र सम्मिलित नही हो पाये हैं, और कदाचित् बक्ले के परिवार मे एक दो ऐसे लोग हो, जिन्हे वे लोग सम्मिलित करना चाहेगे।"

के से न रहा गया। बोली, "यह सब तो ठीक है, पापा। शायद आपको यह सब बहुत बुरा मालूम हो रहा है, परन्तु मैं आपसे निवेदन कर दूं कि विवाह मेरा होना है इसलिए उत्सव छोटा ही होगा। मुझे परवाह नही।"

अकस्मात् मेज छोडकर वह सीढियो पर चढ गई। मि० बैंक्स आश्चर्य से उसकी ओर ताकते ही रह गये। एली से बोले, "हे ईश्वर ! के को क्या हो गया है ? हम लोग तो शान्तिपूर्वक बैठे हुए थोडे से नाम ही लिख रहे हैं। और यह है कि क्रोध मे आपे से बाहर हुई जा रही है।"

मि० बैंक्स का पुत्र टामी खाने मे लगा हुआ था। मुँह मे बिस्कुट भरे बोला, "घबरा गई है। औरतें बहुत जल्दी घबरा जाती हैं।"

उस रात मि० बैंक्स को नीद नही आई। फेयरव्यू मैनर मे जब रात का गहरा सन्नाटा हो गया, तब भी वह अपने कमरे की छत पर सडक की धुंधली रोशनी का अक्स देखते रहे।

तीन सौ लोग मेरी शराब पियेगे और तीन सौ लोगो को खाना देना होगा। तीन सौ !

मैं तो बरबाद हो गया, बिलकुल बरबाद हो गया। जीवन-भर

संयम से रहा। अब मैं रस्मो के शिकजे मे फँस गया हूँ, तो मुझे अपने ही हाथों अपनी हैसियत का कचूमर निकालना पडेगा।

इसी प्रकार वह करवटें बदलते और आहें भरते रहे। और मन मे कहते रहे, "ऐसा नहीं होने का।" परन्तु वह जानते थे कि यह सब करना पडेगा ही।

● ● ●

लम्बे वाद-विवाद के बाद यह निर्णय हुआ कि एक सौ पचास से अधिक व्यक्ति चोट खाये बिना बैंक्स के घर मे भरे नही जा सकते। इनके अतिरिक्त सौ और गिर्जाघर के लिए निमन्त्रित किये जा सकते हैं। परन्तु निश्चय है कि दम्पति के स्वागत मे ये निमन्त्रित नही हो सकते।

श्रीमती बैंक्स ने तब तक थोडे ही लोगो को खिलाया-पिलाया था। इस सख्या से तो रह घबरा गईं। उन्होंने प्रस्ताव किया, "दोनो अलग-अलग सूची बनायें, जिनमे वही लोग हो जिन्हे निमन्त्रण देना आवश्यक हो।"

सध्या के समय मि० बैंक्स इन सूचियों का मिलान करने बैठे। घण्टो लग गये। दोनो मे एक ही नामो की सख्या बहुत कम थी, शायद इसलिए कि बैंक्स-परिवार मे दोनों के मित्र अलग-अलग थे। सम्मिलित सूची की सख्या पक्की होने पर उन्होंने अपनी पत्नी और पुत्री की ओर क्रूर व्यग से देखकर पूछा, "बताओ कितने हुए।"

श्रीमती बैंक्स ने घबराकर कहा, "दो सौ।" इतना कह तो वह गईं परन्तु उन्हें अपने अनुमान पर विश्वास न था।

मि० बैंक्स गर्वपूर्वक चिल्लाये, "पाँच सौ बहत्तर। पांच, सात, दो। मैंने तुमसे क्या कहा था अपने परिवार तक रहो या किसी बडे बाग मे उत्सव का प्रबन्ध करो।"

श्रीमती बैंक्स ने सूचियाँ समेट ली, "हुश्! मुझे देखने दो। तुमने कोई गलती की है। मैं बदकर इस सूची को काट सकती हूँ। देखो तो,

स्पार्कमैन-दम्पति को बुलाने की क्या जरूरत है। ये कभी हमसे नही मिलते, और यह बालो मे खिजाब लगानेवाली औरत! इसे तो मैं घर में घुसने भी न दूँगी।"

मि० बैंक्स को इस बात से बडा आश्चर्य हुआ कि जब कभी उन्हें कोई सुन्दर स्त्री दिखाई देती तो श्रीमती उसके बालो को खिजाब से रगा बताती थी। इसलिए उन्होने अपना रोब दिखाकर कहा, "सुनो, तुम्हें मालूम नही कि हैरी स्पार्कमैन मेरा घनिष्ठ मित्र ही नही है, मुझे उससे अच्छे मुकदमे भी मिलते हैं। अरे, मैं तो उसके पीछे-पीछे पृथ्वी के अन्त तक जाने को तैयार हूँ? और यही आशा मुझे उससे है।"

"जाने दो, तुम कभी उससे मिलते भी हो? हम दोनो उनको गिर्जाघर के लिए निमन्त्रण दे देंगे।"

श्रीमती के इस उत्तर ने मि० बैंक्स को गरम कर दिया और वह चिल्ला उठे, "गिर्जाघर! तुम चाहती हो कि हैरी और जेन स्पार्कमैन गिर्जाघर मे तो निमन्त्रित हो, परन्तु स्वागत मे सम्मिलित न किये जायें। मेरे घनिष्ठ मित्र स्पार्कमैन के लिए यह बात। जब इनकी लडकी का विवाह हुआ था, तो क्या इन्होने हम दोनो को गिर्जाघर मे ही बुलाया था? बिलकुल गलत। और तुम तो स्वागत मे बडे चाव से सम्मिलित हुई थी। अपना दाँव आया तो गिर्जाघर ही!"

कुछ दिन बाद मि० बैंक्स ने दोपहर के खाने पर अपने एक मुवक्किल को बुलाया, जो एक बडे व्यवसाय का सचालक था। भोजन का प्रबन्ध उन्हें स्वय करना पडा था, और इस अनुभव के पश्चात् उन्हें भविष्य के लिए सचेत होना था। तब उन्होंने यह समझाया कि विवाह मे बुलाये गये मेहमानो को दो श्रेणियो मे बाँटना चाहिए—कुछ गिर्जाघर ही के लिए निमन्त्रित हों, और बाकी ऐसे जो गिर्जाघर के अतिरिक्त स्वागत के लिए भी निमन्त्रित हो। इसी प्रकार व्यक्ति पीछे खर्च का हिसाब लगाया जा सकता है। जब उनका विवाह हुआ था, तब व्यक्ति पीछे कोई पौने चार डालर का खर्च आया था जिसमे

मदिरा, टूट-फूट, फूल, सामान, बीमा और बैराओ की बख्शीश, सभी कुछ शामिल था।

मि० बैंक्स ने मेज पर बिछे मेजपोश पर हिसाब लगा डाला और अतिथि-सत्कार की भावना उनके हृदय से छूमन्तर हो गई।

अपनी पत्नी से अब वह अपना दृढ निश्चय दिखाते हुए बोले, "एली ! मुझे तुमसे एक ही बात कहनी है, और वह यह कि स्वागत मे एक सौ पचास लोग ही सम्मिलित किये जायेंगे। तुम्हे सूची की काट-छाँट करनी है। मुझे परवाह नही, यदि विवाह के बाद कोई भी मेरा मित्र न रहे। सूची लेकर व्यावहारिक सीमा के भीतर नामो को काट दो।"

श्रीमती बैंक्स चकित होकर अपने पति की ओर देखने लगी, "स्टैनले, मैंने तो पहले ही तुमसे यही बात कही थी और तुम बोले कि किसी को गिर्जाघर बुलाओ और स्वागत मे न बुलाओ तो उसकी मान-हानि होती है। मैं पहले ही से काटने के लिए तैयार थी और अब भी हूँ। अब स्पार्कमैन-दम्पति जैसे लोगो को—"

मि० बैंक्स चौक गये, फिर सँभलकर बोले, "अब सवाल लोगो को नाराज़ करने का नही है, अपनी सुरक्षा ही की बात है। लोग क्या कहेगे, यदि हम शाही दावत देकर फकीर हो जायें ?"

● ● ●

अगली सध्या को जब मि० बैंक्स दफ्तर से वापस अपने घर पहुँचे, तब वह बिलकुल निश्चित और शात थे। जितना आनन्द अकस्मात् धनवान होने से होता है, उससे कुछ ही कम, अपने धन की रक्षा कर पाने पर होता है।

बैठके मे अपनी पत्नी को बुलाकर उन्होने पूछा, "एली ! फेहरिस्त पूरी कर ली ?"

"जी हाँ, केवल—"

इतने ही मे के ने आकर पिता के गले मे अपनी पतली बाहे डाल दी और बोली, "आप भी कितने भोले हैं, आप जानते हैं कि आपने किया क्या ? आप बक्ले की फेहरिस्त तो भूल ही गये। आज ही आई है।"

मि० बैंक्स को एक धक्का-सा लगा। उठकर पास ही पडी हुई बडी-सी आराम-कुर्सी पर धम्म से लेट गये। उन्होने समझ लिया कि वह मात खा गये। पूछा, "इस फेहरिस्त में कितने हैं ?"

श्रीमती बैंक्स का बराबर यही रोना रहा कि उन्हे प्रात काल से रात तक एक मिनट की भी फुरसत नही मिलती, परन्तु अब माँ-बेटी दोनो रोज नाश्ते के बाद ही नगर की ओर खरीदारी के लिए निकलने लगीं। मि० बैंक्स के फटे मोजे बेमरम्मत श्रीमती के झोले मे जमा होने लगे, उनकी बगैर बटन की कमीजो की तह कपडो की अलमारी मे बढ़ने लगी।

कपडो की खरीदारी का मेला चालू हुआ। सन्ध्या के समय मि० बैंक्स और उनके दोनो लडके चुपचाप भोजन करते और चढावे के वस्त्रो की समस्या पर माँ-बेटी के वाद-विवाद सुना करते। के की अलमारी मे कपडे ठसा-ठस भर गये, परन्तु मि० बैंक्स चकित होकर दोनो से यही सुनते, कि के के पास कपडो का बहुत टोटा है। के के कपडो की समस्या दोनो की दृष्टि मे इतनी मौलिक थी, मानों वह समुद्र से जन्मी वीनस देवी के समान हो। इस बात को दोनो भूल गये कि के और बक्ले एक छोटे-से घर मे रहेगे जहाँ उसका अधिकाश समय चूल्हे के सामने बीतेगा, परन्तु उसके कपडो की तैयारी इस प्रकार होनी है, मानो देश के एक छोर से दूसरे छोर तक जहाँ भी कोई मेले या तमाशे होगे, उन सब मे उसे सम्मिलित होना पडेगा।

सौगात के पार्सल नित्य आने लगे। जो औरतें इन पार्सलो को भेजती, वे अपने पूरे नाम भी न लिखती। ऐनेट, एस्टेल, बैबेट जैसे नाम सौगात के साथ लगे दिखते।

मि० वैंक्स ने इन पर इस प्रकार टिप्पणी की, "जैसे फूलो का गुल-दस्ता होता है, वैसे ही इन नामो से तो महिलाओ का गुलदस्ता बन सकता है।"

श्रीमती वैंक्स अपने वस्त्रो के सम्बन्ध मे भी बहुत चिन्तित दिखाई देती थीं। इस विषय पर श्रीमती डस्टन से फोन पर लगातार बात चलती रहती थी। वार्तालाप के पैसे पतिदेव की जेब से जाते थे, परन्तु इस समय श्रीमती को इसकी चिन्ता न थी।

मि० वैंक्स ने एक बार श्रीमती से पूछ ही तो लिया, "तुम्हारी पोशाक का समधिन की पोशाक से क्या सम्बन्ध है, क्या तुम दोनो को जुड़वा बहनें बनकर विवाह मे सम्मिलित होना है?"

सन्ध्या के समय जब मि० वैंक्स नीचे बैठते तो ऊपर जमा औरतो की बात-चीत उन्हे नित्य सुनाई देती। इस निरन्तर वार्तालाप के बीच कभी-कभी आनन्द की किलकारियाँ भी उन्हें सुनाई पडती। तब वह चौक जाते, क्योकि अनुभव से वह जानते थे कि नारी के हर्ष का बहुत भारी मूल्य चुकाना पडता है।

• • •

कुछ समय से मि० वैंक्स ने एक कापी बना रखी थी, जिसमें वह विवाह से सम्बन्धित अपने विचार टाँक लिया करते थे। सोते समय वह इसे मेज पर अपने पलंग की बगल मे रख दिया करते थे। कभी-कभी आधी रात को अकस्मात् उठ पडते, और रोशनी खोलकर ऐसे-ऐसे शब्द टाँक लेते, जैसे मिठाइयाँ, दुल्हिन का गुलदस्ता, इसके दाम कौन देगा।

इस कापी में टँके पहले शब्दो में था—शैंपेन। टाँकने के पश्चात् कई सप्ताह तक उन्हें शैंपेन के बारे मे इतने परस्पर-विरोधी मत मिले कि वे बिलकुल घबरा गये, और इस सम्बन्ध मे उनसे कुछ निर्णय न करते बना।

मि० बैंक्स के घर से स्टेशन जानेवाली सडक पर शराब की एक दुकान थी, जिसके मलिक का नाम था सैम लोकूज़ोस। यह व्यक्ति मि० बैंक्स का सुहृद् मित्र था और बढिया रहन-सहन के सम्बन्ध मे उसकी जानकारी बहुत अच्छी थी। एक दिन उन्होंने अपसे इस मित्र से परामर्श करना निश्चय किया।

मि० बैंक्स का खयाल था कि शैंपेन जैसी नियामत भोजन-गृह की अलमारी के सबसे ऊपरवाले पटरे पर रहनी चाहिए, जिससे वह विशेष अवसरो पर ही काम मे आये।

सैम के हृदय मे इस वस्तु के प्रति इतना मान न था।

इसलिए लापरवाही से वह कह गया, "यकीन मानो ढेरो शैंपेन रखी है। किस मेल की चाहते हो ? सब एक ही हैं, कोई बहुत अच्छी नही। यहाँ देखो कुछ रखी है। गनीमत है, एक पेटी के पैंतालीस डालर समझ लो।"

मि० बैंक्स का मुँह पीला पड गया, पर अब स्वीकार करने के अतिरिक्त कोई और चारा न था।

जब सौदा हो गया तो सैम ने समझा दिया, "बोतलो को बरफ जैसा ठण्डा करना न भूलना। तब कोई इन्हे चखेगा भी नही।"

सध्या के समय पत्नी से बातचीत के सिलसिले मे कह दिया, "आज शैंपेन ले आया हूँ।"

"कितनी लाये ?"

बैंक्स को सफाई पेश करने की तुरन्त ही जरूरत हुई। बोले, "मैंने सोचा, अपने पास यथेष्ट मात्रा मे रहनी चाहिए। मौके पर टोटा होने से मैं वैसी भद्द नही कराना चाहता, जैसी जार्ज इवास की हुई थी और फिर कुछ बोतलें बच जायेंगी तो हमेशा—"

"लेकिन यह तो बताओ कि लाये कितनी ?"

"दस पेटियाँ। परन्तु अगर यह सोचो—"

"दस पेटियाँ ? कितने दाम देने पडे ?"

"सैम ने मेरे साथ बड़ी रियायत की; केवल पैंतालीस डालर लिये, दाम अधिक नहीं हैं।"

"पैंतालीस डालर ? किस बात के ?"

"एक पेटी के, और काहे के, अब—"

श्रीमती से न रहा गया, "स्टैनले बैंक्स ! तुम्हारा कहने का मतलब यह है कि तुमने चार सौ पचास डालर शैंपेन पर खर्च कर दिये, जब बेचारी के के लिए निहायत ही जरूरी सामान का प्रबन्ध करने पर तुम एक-एक पैसे के लिए मुझसे झगड़ते रहे। इससे बढकर कमीनेपन की बात और क्या हो सकती है। अब मुझसे खर्च की बात कभी न करना, यही मुझे तुमसे कहना है।"

● ● ●

मि० बैंक्स के घर का टेलीफोन कभी काम नही आता था। अब यह कैफियत थी कि रिसीवर फोन पर रखते ही घंटी बजने लगती थी।

एक बार मि० बैंक्स ने पूछ लिया, "एली, कौन बोल रहा था ?"

उत्तर मिला, "अजी एक औरत है जो के के विवाह के फोटो लेना चाहती है।"

मि० बैंक्स कितने भोले थे। शुरू-शुरू मे उन्होने जब अपनी बेटी के विवाह का तखमीना लगाया था तो सोचा था—एक-दो पेटियाँ शैंपेन की होंगी, दो सौ सैंडविचें होंगी, यदि दुर्भाग्यवश लड़की के अपनी माँ के विवाह की पोशाक न आई तो विवाह की नई पोशाक, एक सुन्दर भेंट और थोडी-बहुत बखशीशें—इतना ही बहुत था। गिर्जाघर मुफ्त होगा ही, और कोई जरूरत नही।

अब अकस्मात् उन्हें दिखाई दिया कि वह एक बहुत बडे और सगठित व्यवसाय के एकमात्र ग्राहक हैं, और सारा माल उनके लिए ही तैयार हो रहा है।

मि० बैक्स आराम-कुर्सी पर कधे सिकोडे बैठे आतिशदान के दोनो ओर लगी पुस्तको की ओर निष्प्रयोजन ताक रहे थे।

श्रीमती बैक्स आकर बोली, "स्टैनले, मैं चाहती हूँ कि बहुत जल्दी ही किसी दिन तुम दफ्तर से सीधे लौटकर नगर मे मुझसे मिलो। के के साथ हमे चाँदी के बर्तन छाँटने हैं, और समय के भीतर उन पर दोनो के नाम खुदवाने हैं।"

मि० बैक्स का ध्यान कही और था, पूछा, "क्या कहा ?"

"के के लिए चाँदी के बर्तन, जो भोजन के काम आयेंगे, तुम जानते ही हो कि हमे के के लिए चाँदी के बर्तनो और मेजपोश-चादर वगैरह का प्रबन्ध करना है।"

मि० बैक्स ने आश्चर्य से पूछा, "मेजपोश-चादरें ?" मालूम होता था जैसे वह नशे मे हो।

श्रीमती बोली, "नि सन्देह, लडकी की चादरें, तौलिये, रूमाल और ऐसी ही अन्य वस्तुएँ।"

मि० बैक्स बेचारे की बुरी हालत थी। उन्होने ईश्वर को याद किया—पता नही, सौगन्ध के रूप मे या प्रार्थना के लिए ही—और बोले, "क्या बक्ले के माता-पिता लडके के अतिरिक्त कुछ और न देंगे ?"

मि० बैक्स को ऐसा लगा मानो के का विवाह क्या होगा किसी बडे चुनाव के सगठन की पेचीदा तैयारियाँ होगी। पाँच वर्षों से के पडोस के प्राय सभी विवाहो मे वधू की सहेली बनकर सम्मिलित हुई थी। सयोगवश सहेलियो की बात सामने आई तो के को उन एहसानो को उतारने की फिक्र हुई, जो उस पर लद चुके थे। सहेलियो की सख्या की सीमा की उसे कोई चिन्ता न थी। सहेलियो की सूची बढती गई, तो मि० बैक्स व्यग किये बिना न रह सके। बोले, "विवाह क्या होगा, फूलो से सजी लडकियो का जुलूस होगा।"

● ● ●

निमन्त्रण-पत्र भेजने के पश्चात् प्रात काल की डाक का सर्वोपरि महत्व हो गया।

पत्र देखते-देखते श्रीमती बैंक्स चिल्ला पडी, "कितनी बुरी बात है, लिडले-डोरिस दम्पति सम्मिलित नही हो सकेंगे।"

मि० बैंक्स के चेहरे पर खुशी की लहर दौड गई।

श्रीमती ने दूसरी खबर सुनाई, "ह्वाइटहेड-दम्पति लिखते हैं कि उन्हें दूसरे विवाह मे जाना था, परन्तु हमारा निमन्त्रण पत्र पाकर उन्होंने उसका विचार छोड दिया है, क्योकि हमारे उत्सव मे सम्मिलित होने से चूकना नही चाहते। कितने भले हैं!"

मि० बैंक्स अपना ध्यान समाचारपत्र पढने मे लगाये रहे, योरप की खबरें उन्हें अधिक रोचक मालूम हुईं।

प्रतिदिन उन पत्रो की सख्या बढती जाती थी, जिनके लेखक—परिचित या अपरिचित—विवाह मे हर्षपूर्वक सम्मिलित होने का वचन देते थे। मालूम होता था जैसे के ने अपने विवाह के लिए ऐसा दिन चुना हो, जब चार सौ मील तक चारो ओर किसी को कोई और काम ही न हो। बैंक्स-डस्टन विवाहोत्सव मानो नीरसता के रेगिस्तान का नखलिस्तान था।

● ● ●

समाचारपत्रों मे सगाई की सूचना छपने के दो दिन बाद पहली सौगात आई। यह एक हाथ से रगी थाली थी। श्रीमती बैंक्स ने एक कमरा खाली कर लिया और दीवार के सहारे ताश खेलने की एक मेज लगाकर उस पर अपना सबसे बढिया मेजपोश बिछा दिया। के ने थाली को उस पर ऐसे ध्यान से सजाया जैसे कोई पादरी गिर्जाघर की टाँड सजाता है। ऐसी ही भावना लिये परिवार के सब सदस्य के को घेरे हुए थे।

बैंक्स-परिवार मे तब तक कभी सौगातो के निरन्तर आने का ताँता

नही लगा था। अपना पैसा खर्च करके कोई सौगात उन्हे भेजे, इस पर उनके हृदय मे विनम्र कृतज्ञता की भावना उमडती थी। मूल्य, सौन्दर्य या उपयोग की दृष्टि से ये पहली सौगातें जैसी कुछ भी रही हो, उन्हें खोलकर सभी आश्चर्य और प्रसन्नता से चिल्ला उठते थे।

माँ-बेटी दोनो किसी सौगात के बारे मे छोटी-से-छोटी बात भी नही भूलती थी। पहले कभी व्यवहार की मामूली बातें भी न उनकी समझ मे आती थी और न उन्हे याद ही रहती थी—जैसे उन्हें कभी यह याद नही रहा कि अमुक महाजन का उन्हे कुछ देना है या कुछ उसकी तरफ निकलता है—परन्तु जब सौगातें आने लगी तो उनके भेजनेवालो और उनके साधनो के बखानने मे उनकी स्मरण-शक्ति हाथियो जैसी हो गई।

कुछ समय तक मि० बैंक्स को उन सौगातो के पाने मे विशेष आनन्द आता रहा, जिनका सम्बन्ध मदिरापान से था। पहले पुराने फैशन के एक दर्जन मदिरा-पात्र आये, फिर नये फैशन के इतने ही और आये। इसके पश्चात् उनके स्टूवेन नामक मित्र के यहाँ से एक पात्र आया, जिसमे काकटेल बनाई जाती है। ताँबे की लाल चमडे से मढी चमकती मेज़ भी इन सौगातो मे शामिल हुई। मि० बैंक्स के हृदय में उपहार भेजनेवालो की दौलत के प्रति ईर्ष्या उत्पन्न हुई।

क्रमश. के के पास तीन दर्जन पुराने फैशन के मदिरा-पात्र, दो दर्जन एक मेल के पात्र, चार दर्जन दूसरे मेल के पात्र, काकटेल बनाने के तीन बडे बर्तन, दो बर्तन मार्टिनी के लिए, प्यालो के दो सेट काकटेल पिलाने के लिए, दो कटर ह्विस्की छानने के लिए, बोतलें खोलने के लिए पाँच चाँदी के पेंचकश, मदिरा-पान से सम्बन्धित अन्य छोटी-बडी वस्तुएँ सौगातो के रूप मे जमा हो गईं। मालूम होता था, जैसे शराब की कोई बडी दुकान लगी हो। मि० बैंक्स का चाव और आनन्द अब समाप्त हो गया, और उन्हे आशका यह होने लगी कि नुमाइश को

देखकर लोग यह न समझने लगें कि मैंने अपने बच्चो को शरावी वना दिया है।

जहाँ वहुत-सी सौगातें होती हैं, वहाँ एक ऐसी भी होती है, जो मौत के समान टीका-टिप्पणी करने योग्य हो। ऐसा ही एक सौगात एक वडे वक्स मे वन्द शनिवार को के के घर पहुँची।

यह एक चीनी लडके-लडकी का खिलौना था, जो लाल कोट और उसी रग का स्कर्ट और नीले रग के मोजे पहने पुल को पार कर रहे थे। घर के सव लोग सौगात का वक्स खोलने वैठ गये। उसमे वन्द खिलौने को देखते ही सव चकरा गये। सवसे पहले मि० वैंक्स ही को होश आया और दाँत पीसते हुए उन्होंने कहा, "किसने भेजा है ?" वक्स खोलकर घरवालों ने एक कार्ड निकाला, जिसमे लिखा था, "चाची मार्न के प्यार और स्नेह सहित।"

"यह क्या ! चाची मार्न, जिनसे परिवार को एक भारी चेक की आशा थी। इन्होने तो एक खिलौने मे ही टरका दिया।"

के रुआसी होकर वोली, "हम लोग इसका क्या करें ?"

मि० वैंक्स वोले, "तुम्हें वताऊँ क्या करो ?"

श्रीमती वैंक्स ने खिलौने को दूर से देखा, और वोली, "इसे और सौगातो के साथ रख देना है। वह किसी भी समय देखने के लिए आ सकती हैं।"

यह निकृष्ट सौगात कहाँ रखी जाये ? पहले वह कोने की एक मेज पर रखी गई। फिर अलमारी पर रख दी गई। वहाँ उसकी जगह उपयुक्त नही जँची, तो विजली की घडी के पीछे खिडकी पर रख दी गई। परन्तु सन्तोप नही हुआ, क्योकि जहाँ कही भी रखी जाती सौगातो को देखने आनेवालों की नजर मे सवसे पहले उसके ही आने की सम्भावना थी।

इस समय से निष्कपट धन्यवाद की भावना सौगात पानेवालो के

हृदयो से कूच कर गई । प्रत्येक पार्सल की जांच पूरब के व्यापारियो की तरह की जाने लगी ।

"यह क्या ?"

"दूसरी थाली," वे एक लम्बी आह भरकर बोली, "एक मुसीबत यह भी आ गई !"

"कहाँ से आई है ? इसे हम वापस कर सकते हैं ।"

"टकर की उपहारो की दुकान से ।"

माँ ने कहा, "बेटी, वहाँ से तो काफी कूडा यहाँ आ चुका है । हमे तो कोई ऐसी चीज़ चाहिए जो तुम्हारे मतलब की हो ।"

बेटी बोली, "मुसीबत यह है कि टकर की दुकान पर कोई मतलब की चीज तो है ही नही ।"

• • •

श्रीमती वैक्स यह समझती रही कि उन्होने तो अपने कर्तव्य का पालन किया है, और सब निठल्ले ही रहते हैं । यह भावना लिये उन्होने एक दिन स्वागत मे खिलाने-पिलानेवालो की बात छेडी, "मुझे एक अच्छे होटलवाले की फिक्र है जो स्वागतोत्सव मे खिलाने-पिलाने का अच्छा प्रबन्ध कर सके । शहर ही से प्रबन्ध किया जा सकता है । सैली हेरिसन ने अपनी लडकी के विवाह मे एक होटलवाले को बुलाया था जिससे वह बहुत खुश रही । उसके नौकरो की सेवा सुचारु रही और वे बहुत तमीजदार थे । इस होटलवाले ने दाम भी कम ही लिये ।"

अगले शनिवार को प्रात काल पति-पत्नी नगर जाकर बकिंघम होटल पहुँचे ।

मि० मसोला नामक युवक यहाँ उनसे मिला । वह दुकान का प्रबन्धक था और उसे व्यवहार की बात करनी आती थी । उसके लम्बे होठ पर नाक के नीचे छोटी-सी मूँछ थी, मानो लैंप के शेड के ऊपर एक झालर लगी हो ।

वह बोला, "दावत का प्रबन्ध ग्राप चाहते हैं ? बहुत ग्रच्छा, हम प्रबन्ध का पूरा भार लेने के लिए तैयार हैं। ग्राप दोनो को इसके लिए फिक्र करने की कोई जरूरत नही। हम लोग देश की बडी-से-बडी शादियो का प्रबन्ध कर चुके हैं।" मसोला ने समझा दिया कि उसका होटल ऐसी शादियो की दावत का काम ग्रपने हाथ में नही लेता जो ऊँची श्रेणी के मध्य न सम्पन्न होने को हो।

मि० बैंक्स ने समझा—मेरी बडी भूल हुई, मुझे किसी ऐसे होटल वाले को चुनना था जो इतनी ऊँची हैसियत का न होता।

उन्होने साहस बटोरकर कहा, ' हमारा उत्सव बडा नही होने का।"

मसोला ने मेज की दराज से एक बडा-सा एलबम निकाला, ग्रौर कहा, "ग्राइये, मैं कुछ जलसो के चित्र दिखाऊँ, जो मेरे प्रबन्ध मे सम्पन्न हुए।"

चित्र देखते देखते मि० बैंक्स का भय घबराहट मे परिवर्तित हो गया। उन्हे मालूम हुग्रा कि बकिंघम होटल वाले बडी-बडी जमींदारियो ग्रौर महलो मे ही खिलाने-पिलाने का प्रबन्ध करते हैं। जिस सडक पर वे रहते थे, वह किसी कस्बे की पिछडी गली जैसी उन्हे दिखाई देने लगी। इस दशा मे तो मसोला को उनका घर किसी बड़े रईस की कोठी की ड्योढी जैसा ही जँचेगा।

परन्तु ग्रब सौदा किये बिना वापस जाना ग्रसम्भव था। मसोला ने एक पैड निकालकर कहा, "ग्रब हमे ग्राप इस बात का ग्रनुमान बताइये कि ग्राप क्या खिलायेंगे-पिलायेंगे। हम लोग शैंपेन का प्रबन्ध स्वय कर लेंगे।"

ग्रन्तिम वाक्य सुनकर खिमियाहट के मारे मि० बैंक्स का चेहरा लाल हो गया, बोले, "मुझे ग्रफसोस है कि मैं ग्रपनी बात पूरी नही कह पया। मैंने शैंपेन पहले से ही खरीद ली है।"

मसोला को बुरा लगा, ग्रौर उसके चेहरे पर एक क्षरण के लिए खेद

की रेखा दौड गई। परन्तु शिष्ट भाव से उसने कहा, 'तो शराब खोलकर पिलाने के दाम तो हमे आपसे लेने ही होगे।"

"खोलना कैसा ?"

"एक डालर फी बोतल खोलने और पिलाने का। आप फ्रासीसी शैपेन ही पिला रहे हैं न ?"

मि० बैंक्स ने अपने निर्णय की विचित्रता की स्वीकारोक्ति मे कहा, "जी नही।" फिर कुछ सफाई देने के तात्पर्य से जोड दिया, "इन छोकरो पर अच्छी शराब लुटाना मूर्खता है।"

मसौला ने सहमति के लिए सिर हिलाकर विनम्रतापूर्वक कहा, "बहुत ठीक, अब भोजन के विषय मे बात हो जाये। विवाह जून के पहले सप्ताह मे होगा। यह कैसा रहेगा, यदि मेज के दोनो सिरो पर ठण्डी की हुई बडे मेल की सामन मछली हो और बीच मे बडे-बडे कटोरो मे कई मेल सलाद सजा दिये जायें। दूसरी आकर्षक सजावट इस प्रकार हो सकती कि मेज के मध्य ठण्डी की हुई स्टर्जियन मछली की प्लेट रख दी जाये। बर्फ के सम्बन्ध मे तो हमारा प्रबन्ध अपूर्व ही है। हम लोग वर्फ के एक बडे चौक के भीतर रगीन रोशनी जमा देते हैं और उसके ऊपर—"

श्रीमती बैंक्स ने घबराकर टोक दिया, "परन्तु हमने इतनी बडी दावत की बात कभी नही सोची थी।"

मसौला ने पेंसिल रखते हुए भ्रमपूर्वक श्रीमती जी मे पूछा, "तो आप चाहती क्या हैं ?"

श्रीमती बैंक्स घबराकर अपना बटुआ टटोलने लगी, बोली, "हाँ, हमारा खयाल था कि कई मेल की सैंडविचें हो जाती, कुछ आइसक्रीम और केक हो जाते।"

"आप जो आज्ञा करें, परन्तु ऐसी चीजें तो आम तौर से बच्चों की पार्टियो में दी जाती हैं।"

मि० वैंक्स को अपनी पत्नी का रुख देखकर आश्चर्य हुआ, जब अकस्मात् बिगडकर उन्होने कहा, "हम यही चाहते हैं।"

मसौला ने सब बातें दर्ज करते हुए कहा, "नि सन्देह ऐसा ही होगा और विश्वास कीजिये कि आप देखकर खुश होगी। अब यह तो बताइये कि स्वागत होगा कहाँ।"

मि० वैंक्स ने अकड़कर कहा, "फेयरव्यू मैनर मे नम्बर चौबीस मैपिल ड्राइव पर।"

मसौला ने पूछा, "यह जगह है क्या, कोई क्लब है या कोई बँगला ?"

मि० वैंक्स ने शान से उत्तर दिया, "जी नही, वह मेरा निजी घर है।"

निजी घर के प्रति सहज सम्मान की जो भावना होती है उसका प्रदर्शन करने के लिए मसौला ने नत-मस्तक होकर पूछा, "आप कितने लोगो के आने की आशा करते हैं ?"

"लगभग एक सौ पचास।"

"कोठी बडी है ?"

मि० वैंक्स ने फिर उसी धृष्टता से उत्तर दिया, "जी नही, घर छोटा ही है।"

"तब तो आप छत पर एक शामियाने का प्रबन्ध करना आवश्यक समझेंगे ही।"

"घर मे शामियाने योग्य कोई छत नही है। यदि मेहमान घर मे नही समाते तो वे सहन का चक्कर लगा सकते हैं।"

मसौला ने श्रीमती वैंक्स की ओर देखकर पूछा, "और अगर बारिश शुरू हो जाये ?"

श्रीमती वैंक्स बोली, "यही तो मैं भी कह रही थी। स्टैनले, यदि पानी बरसने ही लगे तो क्या करेंगे ?"

मसौला ने विश्वास दिलाते हुए कहा, "शामियाना बहुत मँहगा नहीं रहेगा।"

मि० बैंक्स ने परेशान होकर पूछा, "सुनिये, और सब बातें तो हो चुकी, खर्च क्या बैठेगा ?"

मसौला ने कहा, "जैसी पार्टी आपकी नजर मे है, उसको देखते खर्च कम ही होगा।" उसके स्वर मे इस भावना का सकेत था कि बैंक्स की दावत निम्न स्तर की ही होगी। मि० बैंक्स को आश्वस्त करने के लिए उसने कहा, "जो सेवा आपकी होगी उसके देखते लागत नाम-मात्र ही होगी।" कुछ दिन बाद मसौला स्वय मि० बैंक्स के घर पहुँच गया। उसके साथ बडी-बडी मूँछे रखाये जो नामक एक सीधा-सादा व्यक्ति था।

श्रीमती बैंक्स गृह-प्रबन्ध मे चतुर थी और उन्हे अपने घर पर गर्व था। अब मसौला और जो उनके एक के बाद दूसरे कमरे की टीका-टिप्पणी करते हुए निरीक्षण करने लगे, तो उनकी समझ मे आया कि इनकी नजर मे दावत के लिए उनका घर झोपडी मात्र है।

मसौला ने कहा, "बहुत छोटा है।"

जो ने "जी हाँ !" कहकर अपनी सहमति प्रकट की।

मसौला ने कहा, "आने-जाने की बडी दिक्कत रहेगी।"

जो ने फिर वही "जी हाँ !" कह दिया।

श्रीमती बैंक्स मसौला की टीका नही समझ पाईं, बोली, "उस दिन सब खिडकियाँ खुली रहेगी।"

मसौला समझ गया। विनम्रता से बोला, "हमारा मतलब यह है कि एक कमरे मे दूसरे कमरे तक मेहमानो के आने-जाने मे कठिनाई रहेगी। प्रत्येक कमरे मे भीतर की ओर कम-से-कम दो दरवाज़े होने चाहिए। जिस कमरे मे हम खडे हैं उसमे एक ही दरवाज़ा है। क्या कहूँ, ऐसे कमरे मे तो मेहमान बुरी तरह फँस जायेंगे।"

श्रीमती बैंक्स ने घबराकर पूछा, "आपका कोई सुझाव है ?"

मसोला ने कहा, 'श्रीमतीजी, सुझाव है क्यो नही। शामियाने से भी भीड की तकलीफ कम नहीं होगी। पहली जरूरत यह है कि कमरो का सब सामान बाहर निकाल दीजिये।"

श्रीमती बैंक्स यह सुझाव सुनकर बहुत दुखी हुईं और रुआँसी-सी होकर बोली, "तो क्या आप कुर्सी-मेज जैसा सामान तो नही हटवाना चाहते ?"

"निस्सन्देह ! बडा, छोटा और पियानो तक सब सामान कमरे के बाहर होना चाहिए, और भोजन-गृह का सामान भी—"

यह सामन निकालकर रखा कहाँ जायेगा, कौन इसे निकालेगा, और कैसे फिर यह वापस रखा जायेगा—यह सब श्रीमतीजी की समझ में नही आया। कुछ समय तक बेकार हुज्जत करती रही। अततः मसोला की कार्यकारिता के आगे उन्हे दबना पडा।

● ● ●

जब कभी कोई सुदूर घटना के बारे मे बहुत दिनो तक गहराई के साथ सोचा करता है, तो वह दूरस्थ होकर भी मस्तिष्क मे चिपक जाती है। फलत, जब एक दिन प्रात काल उठने पर किसी को प्रत्यक्ष होता है कि जो घटना दूरस्थ होकर उसके मस्तिष्क में चिपकी हुई थी, वह अकस्मात् तत्कालीन वर्तमान हो गई है तो मस्तिष्क को बहुत धक्का लगता है।

विवाह के दिन बहुत सवेरे ही मि० बैंक्स की नींद खुल गई और वह अपने काम मे लग गये। परन्तु उनके मस्तिष्क मे यह बात देर ही से आई कि विवाह की तिथि वास्तव मे आज ही है, और कुछ ही घटों के भीतर उनकी पहली सन्तान का विवाह हो जायेगा।

नीचे उतरकर उन्होने देखा कि घर पहचाना नही जाता। सामान सब गायब हो चुका था और घर भर में फर्श से साबुन तथा मोम की पालिश की गन्ध आ रही थी। सीढी से उतरते ही उन्हें नौकरानी दिखाई दी।

मिलते ही उसने सूचना दी, "साहब, इस समय आपका नाश्ता मेरे रसोईघर मे होगा।" इतना वह कह तो गई, परन्तु साहब का रसोईघर मे खाना उसे हास्यास्पद सा जँचा, और हँसी से लोट-पोट होती हुई वह भण्डारखाने मे घुस गई।

डिलाइला की मेज पर बैठकर मि० बैंक्स ने इतमीनान से नाश्ता किया। उसकी समझ में आया कि औरतो की ऐसे मामलो मे निर्णय-शक्ति बहुत निर्बल होती है। कौन बडी आफत थी, तैयारी के लिए यथेष्ट समय था, मेरा नाश्ता साधारण ढग से अपनी जगह पर हो सकता था।

सादे कहवा का दूसरा प्याला पीकर वह कुछ समय तक खाली कमरो मे चक्कर लगाते रहे। बैठक के फर्श पर फूल-पत्तियो के गमलों के मध्य गीली मिट्टी के कुछ ढेर भी थे। कूडे-करकट के मध्य भटकते हुए घर के पिछले दरवाजे से वह अपनी वाटिका मे पहुँचे।

यहाँ उन्होने तीन अपरिचितो को एक बहुत बडा बडल खोलते देखा तो पूछा, "यही शमियाना है ?"

एक आदमी ने मि० बैंक्स की समझ का सशोधन करने के लिए उत्तर दिया, "यह बैंक्स-परिवार मे होने वाले विवाह के लिए तबू है।"

मि० बैंक्स ने निर्मल आकाश की ओर कनखियो से देखा और किफायत का एक सुन्दर सुझाव उनके मन मे तुरन्त आ गया, तो उन्होने साधारण ढग से कहा, "तुम्हे समझना चाहिए कि ऐसे खुले दिन मे हमे तबू की जरूरत तो नही होगी।"

सुनते ही लोगो ने तबू खोलना बद कर दिया, और आश्चर्य से चुपचाप उनकी ओर ताकने लगे। अत मे एक ने साहसपूर्वक कह ही दिया, "इन्हे तबू की जरूरत नही, सुनो जैक। तीन सप्ताह से इस तबू का बयाना हमारे पास है। तमाम लोग इसके लिए छटपटा रहे हैं, यही समझो कि बडे किस्मतवर हो।"

मि० बैंक्स तबू के बडल से बचकर पैदल मैपिल ड्राइव की सडक

पर निकल गये। सडक पर कोई चहल-पहल न थी। कुछ घर दूर उनके नये पडोसी मि० हागसन अपने घर के सामने लगे घास के तख्ते को काट रहे थे। मि० बैंक्स की कल्पना मे आज जितने व्यस्त वह थे उतना ही सारे ससार को होना चाहिए था। इसलिए उन्हें मि० हागसन को ऐसे बेकार के काम में लगे देखकर आश्चर्य हुआ। टहलते हुए वह उनके निकट पहुँच गये। मि० हागसन ने अपना काम रोककर कहा, "आइये, छुट्टी के ये दिन तो बहुत बढिया होने चाहिएँ।"

मि० बैंक्स ने कहा, "जरूर, मुझे भी वही आशा है, आज तीसरे पहर मेरी लडकी का विवाह है।"

मि० हागसन ने घास काटनेवाली मशीन से अपने गीले हाथ हटाकर बडे तपाक से मि० बैंक्स के हाथ की ओर बढाये, "खूब, आपने मुझसे पहले नहीं कहा, यह आपका पहला बच्चा है न? लडकी अपने घर से छूटेगी, इसका कुछ रज तो होगा ही, परन्तु ठीक ही है। बैठियेगा नही, आज आपके सामने बहुत-से का होंगे।"

मि० बैंक्स ने कहा, "खेद है, बैठने की फुर्सत नही। प्रात काल ही से हम सब व्यस्त हैं। इस समय पत्नी के बताये एक काम पर ही जा रहा हूँ।"

बहाना तो कर दिया परन्तु निष्प्रयोजन तेजी के साथ आगे ही वह बढते गये। सभी ओर उन्होने एक ही कैफियत देखी। सब लोग अपने छुट्टी के दिन के कामो मे व्यस्त थे। उनके घर पर क्या हो रहा था, इसकी किसी को फिक्र न थी। एक मील चलने के बाद वह जगल-जगल गाँव पार करके अपने घर पहुँच गये। सडक से नही लौटे क्योंकि मि० हागसन की दृष्टि से उन्हें बचना था।

घर वापस आये, तब तक कारीगरो की जगह पर सम्बन्धी पहुँचने लगे थे। उनकी सख्या बढती जा रही थी। फोन की घण्टी बजनी रुकती न थी—जो चाचा नगर पहुँच गये हैं और यह मालूम करना चाहते हैं, कि कैसे फेयरव्यू मैनर पहुँचें, वर्था बहिन स्टेशन पहुँच गई हैं,

कोई उन्हें आकर घर पहुँचा दे। ऐसी ही खबरें फोन से वहाँ पहुँच रही थी। इस गडबड मे मि० बैंक्स ने अकस्मात् देखा कि के का पता नही।

ऊपर तकिये मे अपना मुख छिपाये लेटी हुई वह मिली।

मि० बैंक्स ऊपर जाकर उसके पलग की बगल मे बैठ गये और बोले, "बेटी, क्या बात है, आज तो तुम्हारा विवाह होने जा रहा है।"

"पापा ? हाय पापा ? मैं जानती हूँ। यही तो बात है, मेरे विवाह का दिन है अवश्य, परन्तु वह मेरा नही, और सबका होगा।"

मि० बैंक्स ने आश्वासन देते हुए कहा, "जानता हूँ, जानता हूँ, मेरा भी नही है।"

श्रीमती पुलिज्की ने के के विवाह की पोशाक बनाकर श्रीमती बैंक्स को दे दी थी। तीसरे पहर वह यह देखने पहुँची कि पोशाक ठीक प्रकार से उस पर फबती है न ?

मि० बैंक्स आप-ही-आप दुनिया को सुनाने के लिए बोले, "हे ईश्वर ! इस समय यह देखा जायेगा कि पोशाक लडकी पर फबती है कि नही। यह औरत करेगी क्या ? यदि पोशाक ठीक नही बैठी तो काट-छाँट करने अब बैठेगी ? लोगो को मालूम होना चाहिए कि पौने तीन बजे हैं, और पौने दो घण्टे मे विवाह होना है।"

मि० बैंक्स के लडके, बेन और टामी, समय की कमी की बात सुनकर हमेशा बिगड उठते थे।

सो एक बोला, "पापा ! आप समझते हैं कि हमे अपने कपडे पहनने मे एक घण्टा लगा।"

मि० बैंक्स ने अपना क्रोध पी जाने का प्रयत्न किया। लडने का समय न था, इसलिए शान्ति की मुद्रा मे उन्होंने दोनो से कहा, "आज तीसरे पहर तुम दोनो पर भारी दायित्व रहेगा। तुम्ही दोनो हमारे पूरे परिवार को जानते हो। इसलिए तुम्ही दोनो को लोगो की अगवानी करने और उनका परिचय कराने का काम करना पडेगा। हमारी कार को लेकर तुम्हे वहाँ चार बजे तक पहुँच जाना है।"

दोनो बोल उठे, "पापा हम पहुँच जायेंगे; चिन्ता की कोई बात नहीं, आप इतमीनान रखिये।"

मि० बैंक्स सबके पहले ही तैयार हो गये। के के कमरे से बोलियो की भनक आ रही थी। परन्तु किसी कारण भीतर जाने से वह हिचकते रहे। इसी उधेड-बुन मे वह सीढियो के ऊपर निष्क्रिय खडे रहे।

अकस्मात् टामी अपने कमरे से निकलकर बोला, "पापा! इस मेल की कमीज मे कालर के बटन लगने चाहिये, आपके पास हैं?"

मि० बैंक्स अपने छोटे बेटे की ओर उदासीन दृष्टि से ताकते हुए बोले, "तुम्हारे पास होने चाहिए, तुम्हारी माँ तुम्हें एक सेट सध्या के समय पहननेवाली कमीज के लिए दे चुकी हैं।"

लडके ने उत्तर दिया, "पापा? मुझे याद है, परन्तु इस समय ढूँढे नही मिलते। शायद कमीज के साथ धोबी के यहाँ चले गये हों।"

मि० बैंक्स के शयन-गृह मे उनकी अलमारी के भीतर वर्षों से जवाहरो और जेवरो का एक डिब्बा था। उसमे नाना प्रकार की छोटी-छोटी चीजें जमा थी—जैसे पिनें, चाभियाँ, नेल-क्लिपर और तमगे के फीते। मि० बैंक्स ने इस डिब्बे को खूब खखोला, परन्तु उसमें कालर का बटन एक भी न था।

अब उनकी बोली मे खिसियाहट की मात्रा बढी और उन्हें नसीहत करने की सूझी, "सुनो, तुम्हारे सामने दो महीने तैयारी के थे; क्या किया? इस वक्त तो बेन को लेकर गिर्जाघर जाओ, फिर आकर कालर-बटन ढूँढना—और निगल लेना।"

इस अन्याय के विरुद्ध टामी कुछ कहने को हुआ, परन्तु पिता के मुख का रुख देखकर चुपचाप हट गया।

श्रीमती पुलिज्की ने सूचना दी कि के तैयार है। मि० बैंक्स उसके पीछे हो लिए। वह के के द्वार पर रुकी और नाटक के पर्दे के समान उसने द्वार को खोल दिया। के कमरे के बीच मे खडी थी। उसका गाउन और दुपट्टा बडे जतन से उसके पीछे सजा था। अब वह पाँच

फुट चार इच की भूरे बालोंवाली लडकी नही, किसी मध्यकालीन दरबार की राजकुमारी जँचती थी। अपना सिर कुछ पीछे की ओर झुकाये थी, मानो अतलस और कमख्वाब के वातावरण मे पली-बढी कोई राजकुमारी बडे इतमीनान से तथा शान्त भाव से दरबारियो पर अपने रोब का अनुमान कर रही हो।

मि० बैंक्स की आँखें अस्कमात् चौंधिया गईं, "बेटी, तुम बेहद सुन्दर हो! क्या नूर है!"

लडकी ने अपने पिता का हाथ दबाकर कहा, "पापा! धन्यवाद।" एक क्षण के लिए उसकी आँखें पिता की आँखो से मिली। ये आँखें उसकी थी जो लडकी से अब स्त्री हो गई थी, बोली, "अब विवाह के लिए चलना है।" मि० बैंक्स ने घडी देखी, "ईश्वर कुशल करे, चार बजकर पाँच मिनट हुए हैं।"

● ● ●

ये सब अब बरामदे मे पहुँचे, जहाँ से उन्हे दोहरे द्वारो से होकर गिर्जाघर के भीतर पहुँचना था। द्वार अभी बन्द थे। सहेलियाँ पहुँच गई थी, और कुछ अगवानी करनेवाले भी। सब को नियमानुसार कपडे पहने देख मि० बैंक्स चकित हुए। टामी भी कही से आ टपका था, और कपडो मे ऐसा सजा था, मानो नित्य तीसरे पहर ऐसे ही कपडे पहनने की उसकी आदत रही हो।

मि० बैंक्स के अतिरिक्त सभी विवाह-सस्कार की विधि से भली प्रकार परिचित दिखाई देते थे, और उन्हें किंचित् दुख तथा आश्चर्य भी हुआ कि उनकी निगरानी बिना कैसे यह क्रम नियमानुसार चल रहा था। अकस्मात् एक नाट्यकार की भाँति स्थानीय प्रबन्धक ट्रिगिल ने गिर्जाघर के द्वार खोल दिये। मि० बैंक्स ने अपने पुत्र बेन को अपनी माँ की बाँह-में-बाँह डाले तुरन्त गिर्जाघर के केन्द्रीय मार्ग मे सबके आगे घुसते देखा।

वाकी अगवानी करनेवाले भी नियमानुसार इनके पीछे हो लिए। ट्रिगिल ने आगे जानेवालो की वगल खडे होकर सकेत किया, "साव-धान !" और दीवार मे लगा एक छोटा-सा वटन दवा दिया।

गिर्जाघर का वाद्य-गीत क्रमश समाप्त हुआ। सन्नाटे में केवल कई सौ उपस्थित नर-नारियो के कपडो की रगड की मधुर ध्वनि सुनाई देती रही, जव वे एक ही वार दो ओर देखने का प्रयत्न करते थे।

यह क्षण वडे महत्व का था। कई सप्ताह से मि० वैंक्स इसकी प्रतीक्षा से भयभीत थे। अव वही क्षण उनके इतने निकट आ गया था कि उसका महत्व समझने का इनके पास समय न था। अव वह विल-कुल शान्त थे। उनकी यह शान्ति साधारण न थी, इस शान्ति मे एक प्रकार का वैराग्य था। वगल में खडी उनकी लडकी भी अव उनके लिए अपरिचित थी। अव वह उनकी छोटी वेटी न रहकर एक सुन्दर शान्त महिला हो गई थी, जिसमे जीवन का सम्पूर्ण ज्ञान अकस्मात् कहीं से आकर भर गया था। अपने जीवन के सवसे वडे क्षेत्र के द्वार पर वह इस समय खडी थी, और उसके मुख पर वुद्धि और विश्वास के चिह्न अंकित थे।

ऐसे ही महत्वपूर्ण समय उपस्थित सहेलियो मे दो को नाक छिनकते देख वह कुछ भयभीत हुए। छोटी-छोटी वातो में स्त्रियां कितनी लापर-वाही से अपना काम वनाती हैं—यह यों प्रत्यक्ष हुआ कि उन्होंने पास खडे अगवानी करनेवालों की जेवो से उनके रूमाल निकालकर अपनी आंखें और नाकें तुरन्त साफ कर ली।

मि० वैंक्स को ईश्वर का नाम लेने के अतिरिक्त आगे सोचने का मौका न मिला। गिर्जाघर के वाजे से सावधान होने की सूचना निकली; के ने पिता की वांह पर हाथ रखकर कहा, "पापा ! हम आगे वढते हैं।"

ट्रिगिल ने धीरे से आदेश दिया, "आगे वढो, दाहिने पैर से।" चलने-वाले कुछ हिचके तो ट्रिगिल ने अपना आदेश दोहराया। मि० वैंक्स ने

आदेश का तुरन्त पालन किया। अन्य सब को अपने कदम उसी समय बदलने पडे तो उसे भी फिर अपना कदम बदलना पडा। इस प्रकार जलूस बडे द्वार से गिर्जाघर मे घुसा।

मि० वैक्स ने अपनी कनखियो से परिचित व्यक्तियो के मुखारविन्दो की झलक पकडने का प्रयत्न किया। उनकी मुख-मुद्रा पर लडकी के प्रति सद्भावना चित्रित थी। इस प्रकार वह गर्व की भावना से परिपूर्ण हुए। गिर्जाघर के दूसरे छोर पर बक्ले अपने 'वेस्ट मैन' सहित इनकी प्रतीक्षा कर रहा था। एक क्षण पश्चात् दोनो उसकी कतार मे मिलकर मच पर खडे पादरी के सामने हो गये। पादरी के हाथ मे श्वेत साटिन से मढी एक पुस्तक थी, और पृष्ठ का सकेत करने के लिए बैंजनी रग की छोटी-सी डोर पुस्तक के नीचे लटकी हुई थी। पादरी ने पढना शुरू किया।

मि० वैक्स को किसी प्रकार सकेत मिल गया कि अपना पार्ट अदा करने का मौका अब उनके सामने है। पढते-पढते पादरी गैल्सवर्दी, एक जगह पूछेगा, "कन्यादान कौन करेगा ?" और उन्हे उत्तर देना होगा, "मैं करूँगा।" इस तमाशे मे उनका इतना ही काम होगा। वह चाहते थे कि खूबी से अपना पार्ट अदा करें और सोचने लगे कि वह किस प्रकार बोलें।

उन्हे इस बात का भी खयाल था कि जब वह दो शब्दो का एक वाक्य कहकर अपना पार्ट अदा कर चुकेंगे, तब उन्हे एक पग पीछे मुख फेरकर आगे खडी अपनी पत्नी की बगल मे पहुँच जाना होगा। उन्होंने अनुमान करना चाहा कि उनके ठीक पीछे क्या है। उन्हे कुछ ऐसा सन्देह हुआ कि कदाचित् पैर पीछे करने पर वह किसी कालीन के उलटे हुए कोने से ठोकर न खा जायें। इसलिए वह अपना दाहिना पैर चुपके-से पीछे करके इस प्रकार टटोलने लगे, जैसे कोई कीडा अपने पिछले पैर से टटोलता हो। वह समझे थे कि कदाचित् कोई उनकी यह हरकत देख न सकेगा। परन्तु तमाशाई क्यो चूकते। वे समझे कि मि० वैक्स

पिये हुए हैं, इसीसे इनके पैर गडवडा रहे हैं। इतने मे मच पर खडे पादरी गैल्सवर्दी के मुखारविंद से उच्च स्वर मे प्रश्न प्रसारित हुआ : "कन्यादान कौन करेगा ?"

सब-कुछ ध्यान रखते हुए भी मि० वैंक्स वेखवर रहे। के ने अपने हाथ से उनका हाथ दवाकर वोलने का सकेत किया, तव उन्हें कुछ होश आया। वह बुदबुदाये, "मैं करूँगा।" और लडकी का हाथ वक्ले के हाथ मे पकडा दिया। जिस समय वह यह साधारण सा काम पूरा कर चुके तो उनके हृदय मे एक लहर-सी दौड गई कि उनके हृदय से लगी कोई प्रिय वस्तु उनमे झटककर अलग हो गई है।

वह कुछ और न देख सके। धीरे से घूमकर क्रूर दृष्टि से उन्होने उपस्थित व्यक्तियो की ओर देखा और श्रीमती वैंक्स की वगल मे जा खडे हुए। वह प्रार्थना के शब्द भली प्रकार न सुन सके और विवाह-सस्कार अकस्मात् समाप्त हो गया।

मि० वैंक्स को यह सब असम्भव-सा मालूम हुआ, परन्तु विवाह-सस्कार निश्चित रूप से समाप्त हो चुका था। के और वक्ले एक-दूसरे का चुम्बन कर रहे थे, गिर्जाघर के वाद्य से वरात के सगीत के मधुर स्वर निकल रहे थे और आनन्द का वह वातावरण था, जो वसत की धूप मे स्कूल की छुट्टी पाने पर बच्चों के हृदय मे होता है, के के गाउन का पिछला सिरा सँभाले प्रमुख सहेली चल रही थी, मेहमान विदाई के लिए अपनी-अपनी चीजो को सँभालने या ढूँढने मे लगे थे।

के बक्ने की वाँह-में-वाँह डाले इन सब मेहमानों पर अपनी मुस्कराहट बिखेरती जा रही थी, और मि० वैंक्स के हृदय मे फिर वही विछोह की विचित्र-सी भावना जागृत हुई। टामी अपनी माँ को साथ लिये निकट आया।

दाहिने-वांयें मुस्कराते मि० वैंक्स अपनी पत्नी के पीछे चल पडे।

● ● ●

बरात के पीछे-पीछे कुछ मिनट बाद मि० बैंक्स अपनी श्रीमती सहित घर पहुँचे। दोनो की अनुपस्थिति मे मसौला ने अपने वचन के अनुसार मेहमानो के सत्कार का पक्का प्रबन्ध कर लिया था। मसौला के बैरे उसी प्रकार फुर्ती से चक्कर लगा रहे थे, जैसे वाल्ट डिसने की कार्टून फिल्म की कठपुतलियाँ।

मसौला ने दोनो का सदर दरवाज़े ही पर स्वागत करके कहा, "पक्की तैयारी है, आप निश्चित रहें। सीधे बैठके में जाइये, वहाँ बरात के फोटो लिये जा रहे हैं।"

बैठके मे वाइज़गोल्ड नामक फोटोग्राफर बारात के कई ग्रुपो के चित्र उतार रहा था, यद्यपि गर्मी के मारे पसीने से तर था। शैंपेन का दौर चालू हो गया था। जो लोग फोटो खिचाना अपनी शान के खिलाफ समझते थे, वे इधर-उधर खडे शैंपेन के गहरे घूंट पीते-पीते चित्र खिचानेवालो की दिल्लगी उडा रहे थे। मि० बैंक्स ने अलग ही कुछ मदिरा निश्चित होकर पी ली थी, जिस कारण उन पर नशे का रग आ चुका था। परन्तु जब मसौला का बैरा थाल मे भरे प्याले लिये उनके निकट पहुँचा तो उन्होने एक और ले लिया।

वाइज़गोल्ड के पीछे बैठक के दरवाजे पर उन्हे अकस्मात् चेहरे-ही-चेहरे दिखाई दिये। इनके पीछे भी चेहरे-ही-चेहरे थे। सदर दरवाज़ा भी चेहरो से ठसाठस भरा था। खिडकी से झाँकने पर उन्होंने देखा कि बरातियो की भीड घर के बाहर सडक पर पहुँच गई थी। मसौला बडे होटल के बैरों के जमादार की भाँति बैठक के द्वार पर खडा धैर्य और शील के साथ भीड को आगे बढ़ने से रोके हुए था।

वाइजगोल्ड के चित्र लेना समाप्त करते ही कमरे के द्वार पर खडे अगवानी करनेवालो की कतार सहसा फट गई, मानो उसे कोई सैनिक आदेश मिला हो। आगे बढती भीड के नीचे कुचल जाने से बचने के लिए मसौला तुरन्त दरवाजे की बगल मे हो गया। पौन घटे तक जो हगामा रहा, उसकी सही याद रखना मि० बैंक्स के मान का न था।

किसी ने मि० वैक्स को यह नहीं समझाया था कि उन्हे बरातियो के स्वागत के लिए खड़ा हो जाना चाहिए था। पहले तो वह स्वागत करने के पक्ष में न थे, फिर उनकी समझ मे आया कि यदि वह बैठक के बीच मे खडे रहेगे, तो लोग उन्हे बैरा समझेंगे। इसलिए ज्यो ही श्रीमती डस्टन पहले मेहमान की हैसियत से श्रीमती बैंक्स की बगल मे पहुँची कि वह चुपके-से उन दोनो के बीच मे पहुँच गये।

उन्हे तुरन्त ही प्रत्यक्ष हुआ कि मेहमानो का श्रीमनी डस्टन से परिचय कराना भी उनका कर्तव्य है। जो लोग आगे बढकर उनसे हाथ मिलाते जाते थे, उनमे अधिकाश उनके अभिन्न मित्र रहे थे, तो भी उस समय उन्हे किसी का नाम याद नही आ रहा था। इसलिए घबराकर उन्होने चुपके से अपनी श्रीमती के कान मे कहा, "जरा, इनके नाम तो बोल दिया करो।"

श्रीमती वैक्स ने अपने पति की ओर चिन्तित दृष्टि से देखा। वह जानती थी कि उनके पति पर काम का बहुत भार रह चुका था, परन्तु उन्हे हार्दिक आशा थी कि दो घण्टे का कष्ट वह और सहन कर सकेंगे।

इतने मे एक जोड़ा श्रीमती वैक्स को दिखाई दिया, तो उल्लास-पूर्वक उन्होने स्वागत किया, "आइये जैक-नैंसी हिलियर्ड! डियर, तुम कितनी भली लगती हो? अरे, क्या मैं भूल गई? हाँ, हाँ, आप ग्रेस लिपिनकाट हैं। आप भी आ गईं, मुझे बहुत खुशी है।"

इन दोनो का श्रीमती डस्टन से परिचय कराना मि० वैक्स के लिए जरूरी था, परन्तु उन पर नशे का काफी असर था, बोले, "लिपिनकाट-दम्पति, माफ कीजियेगा, मेरा मतलब है हिलियर्ड दम्पती।"

कमरे मे बरातियो का प्रवेश अन्तत समाप्त हुआ। यदि बैठक मे एक व्यक्ति और आ जाता तो स्वागत करनेवालो को बैठक के आतिश-दान मे शरण मिलती।

मसौला के प्रबध मे जरूर कुछ गडबड थी। सोचा यह गया था कि

अगवानी करनेवालों से मिलकर मेहमान पिछले द्वार से शामियाने के नीचे पहुँच जायेंगे, जहाँ मसौला ने मेजो पर बोतलें और प्याले सजाकर मदिरा पिलाने का पूरा प्रबध कर रखा था। हुआ यह कि मेहमानो के पहले जोडे पिछला दरवाजा रोककर खडे हो गये और लम्बे वार्तालाप मे लग गये। जो लोग इनके पीछे आये वे पिछले द्वार को रुका देख बैठक मे ही इकट्ठे होने लगे।

मसौला के बैरे इतने चतुर थे कि किसी को मदिरालय जाने की जरूरत नही पडी। वे भीड के अन्दर मशीनो की भाँति शैंपेन से भरे प्यालो की थालियाँ लिये एक ओर से दूसरी ओर तक घूमते फिरते थे। किसी दूसरे के लिए तो इस भीड के मध्य खुली बोतल ले जाना भी असम्भव था। मि० बैंक्स इन व्यस्त लडको से इतने प्रसन्न थे कि उनकी दृष्टि मे प्याला पीछे कुछ रकम के हिसाब से इन्हे पारिश्रमिक मिलना चाहिए था। ऐसे कर्तव्यशील लोग उन्होने कभी नही देखे थे। ज्यो ही किसी का प्याला खतम हुआ कि वे उसकी बगल मे दूसरा भरा प्याला लिये हाजिर हो गये। इतना ही खयाल उन्हे तग किये था कि इस सुन्दर सत्कार के परिणाम मे उनकी शैंपेन का स्टाक आधे घण्टे के भीतर ही समाप्त हो जायेगा।

उत्सव के समाप्त होने के पश्चात् कुछ समय तक उन्हे इतनी ही याद रही कि बहुत-से लोग उनकी ओर देखकर मुँह बना रहे थे, या अन्य लोगो की ओर। इसके अतिरिक्त और कुछ उन्हे याद नही रहा। जब वर-वधू द्वारा अतिथियो के बीच अपने विवाह के समय मिला हुआ गुलदस्ता उछालने का समय आया तो पीछे खडे के और बक्ले ने मि० बैंक्स की आस्तीन पकडकर उन्हे अपनी ओर आकृष्ट किया। के अपने सिमटे गाउन को अपनी बाँह पर सँभाले हँसकर बोली, "पापा, अब हम दोनो तैयार हैं! आप मुझे अपना गुलदस्ता बरातियो के मध्य उछालते न देखेंगे।"

मि० वैंक्स दोनों के पीछे हो लिये और मेहमान हुल्लड मचाते हुए पीछे खिसक गये। के और वक्ले घर के चबूतरे पर खडे हो गये।

के के मुख पर अब एक बिलकुल नई आभा थी जिसे देखकर मि० वैंक्स चकित हुए। जब गिर्जाघर के भीतर विवाह के लिए वह जा रही थी, तब उसके मुख पर नैसर्गिक सौन्दर्य था। अब उसके भोले मुख मे मि० वैंक्स को एक प्रकार की स्वच्छन्दता दिखाई दी, जिसका अनुभव उन्हें पहले कभी नही हुआ था। वक्ले के मुख पर सन्तोष की झलक देखकर उन्हे कुछ ईर्ष्या जैसी भावना का अनुभव हुआ कि जिसे वह अपनी समझे हुए थे वह अब पराई हो गई है।

चबूतरे के नीचे भीड मे धकापेल मची और शीघ्र ही दुलहिन का गुलदस्ता वायु मे वहता हुआ नियमानुसार के की प्रमुख सहेली की फैली बाँहो मे आ गिरा। इसके पश्चात् सीढियो के पीछे से के और वक्ले गायव हो गए, और बराती उनके पीछे चल पडे।

भीड फिर फैल गई। मसौला के वैरे जो थोडा-सा आराम कर चुके थे, अब फिर नये उत्साह से अपनी सेवा मे लग गये। मि० वैंक्स ने सोचा कि जरा उस जगह का निरीक्षण भी कर लिया जाये, जहाँ मसौला ने मदिरा पिलाने का प्रबन्ध कर रखा था।

मि० वैंक्स ने वैठक मे जितनी भीड का अनुभव किया था, उसके हिसाव से उनका अनुमान था कि शामियाने के नीचे आधा भाग खाली ही रहेगा। अनुमान के प्रतिकूल यहाँ भी भीड की धकापेल थी। जितनी गर्मी हम्माम मे होती है या उस शीशे के कमरे मे जिसके भीतर गर्म देश के पेड-पौधे उगाये जाते हैं, उसके बीच की गर्मी शामियाने के नीचे थी। श्रीमती वैंक्स ने एक आदमी को मेहमानो के मध्य चक्कर लगाते हुए गाने-वजाने का काम सुपुर्द कर रखा था। मि० वैंक्स ने उसे अपने ढग पर एक इतालवी पोशाक पहने अपने वाजे पर वहुत जोर से गाते शामियाने के एक वाँस की वगल मे देखा। शामियाने मे हुल्लड इतना अधिक था, मानो लोहार की धौंकनी चल रही हो, और पानी किसी

नल से गिर रहा हो। मदिरा की मेज के सामने उत्सुक ग्राहकों की भीड लगी थी। मि० बैंक्स किसी प्रकार भीड मे घुसकर मेज के पीछे खडे पसीने से तर कार्यकर्ताओ का ध्यान आकृष्ट करने पहुँचे। वे लोग बरफ मे पडी बोतलों को खोलकर मदिरा के प्याले भरने लगे थे।

मि० बैंक्स के बगल मे खडा एक अजनबी कुत्ते की भाँति ध्यान-पूर्वक देख रहा था। मि० बैंक्स से मित्रवत् वार्तालाप के लिए उसने कहना शुरू किया, "कितना गडबड इन्तजाम है।"

मि० बैंक्स ने अपनी सहमति प्रकट करने के लिए कहा, "बिलकुल गडबड।"

अजनबी न कहा, "जैसी शैंपेन है वैसी ही सेवा भी है।"

मि० बैंक्स ने अपनी सफाई मे कहा, "जिस मेल की शैंपेन इस देश मे बनती है, उसके देखते मेरा खयाल था कि यह बहुत अच्छी चीज है।"

मृदु-भाषी व्यक्ति ने कहा, "यह गन्दा पानी है! चमकती गन्दगी जिसे शैंपेन कहते हैं! वास्तव मे गन्दा पानी ही है। कुछ पीपे के नीचे की होती है। यह पेंदी के बिलकुल निकट की है।" इस प्रकार टिप्पणी करते हुए मदिरा के दो भरे प्याले उसने उठाये और चल दिया।

मि० बैंक्स ने सामने खडे एक सेवक को सकेत किया, "कितनी शैंपेन बची है?"

सेवक ने उनकी ओर उदासीन दृष्टि से देखकर कहा, "बहुत काफी, फिक्र न कीजिये आपके लिये बहुत है।"

मि० बैंक्स लज्जित होकर लौटे। शामियाने से निकलते ही उन्होंने अपनी सेक्रेटरी मिस बैलमी को दफ्तर से आये कुछ लोगो से बात करते देखा। इनसे अलग होकर शैंपेन का भरा प्याला किसी प्रकार सँभाले वह उनकी ओर बढी। मिस बैलमी को इतनी बढिया सजावट मे उन्होंने कभी पहले नही देखा था, इसलिए वह कुछ चौंक-से गये। उनकी समझ मे नही आया कि वह क्या कहे, परन्तु उनकी सेक्रेटरी के मुख पर कोई घबराहट न थी।"

हास्य-मुद्रा मे अपने स्वामी का स्वागत करते हुए वह बोली, "गिर्जाघर में चलते हुए आप बहुत भले और स्वस्थ दिखाई दिये। किसी को आपकी घबराहट का अनुमान नही हो सका।"

पिछले दिन तीसरे पहर मि० वैंक्स दफ्तर से लौटे थे, तब तो मिस वैलमी विनम्रता की प्रतिमूर्ति ही थी। इस समय उसका रग-ढग ही दूसरा था। मि० वैंक्स ने धन्यवाद दिया और दोनो ने खामोशी से अपने प्याले पिये।

मिस वैलमी ध्यानपूर्वक अपने प्याले की ओर देखती हुई बोली, "इस चीज़ को ध्यानपूर्वक और निरन्तर देखते रहना पडता है। यदि आप ऐसा नही करते तो आप उसकी पकड मे आ जायेंगे। बस कुछ पूछिये न, कुछ जानना चाहते हैं ?" ऐसा कहकर उसने मि० वैंक्स के कान मे कहा, "मिस डिडरिक्सन को देखा आपने ? कितने गहरे पाउडर से पुती है और अभी नया-नया खिजाब लगाना शुरू किया है। आइये, आपसे ये लोग मिलकर बहुत खुश होगी।"

इतने मे बढ़िया सूट पहने एक युवक ने आकर मि० वैक्स से कहा, "आपकी श्रीमती आपके लिए परेशान हैं, इतनी कि शायद वह अपने बाल नोच डालें।"

मि० वैक्स के सामने कुछ काम तो आया और वह तुरन्त भीड को चीरते अपनी पत्नी के पास पहुँचे। मिलते ही वह बोली, "स्टैनले वैक्स, तुम कहाँ थे ? मैं तो तुम्हारे बिना पागल-सी हो गई। मालूम होता है तुम शामियाने के नीचे गप्पें लडा रहे थे। साथ चलो, के और बबले आते ही होंगे।"

घर के सामने फिर भारी भीड लग गई थी। मसौला के आदमी इस भीड में मिठाई के कटोरे लिये चक्कर लगा रहे थे। लोग बेहयाई से दोनो हाथो मिठाई लूट रहे थे और अधिकाश तुरन्त ही उनकी उँगलियो से फिसलकर फर्श पर गिरती जाती थी।

पच्चीस वर्ष से वह ऐसे दृश्य की कल्पना करते आ रहे थे। अब

वह दृश्य उनके सामने आनेवाला था, जब उनकी पहली लडकी एक हृष्ट पुष्ट अजनबी की बाँह-मे-बाँह डाले सीढी से उतरती हुई उनके जीवन के क्षेत्र से विलुप्त हो जायेगी। दृश्य सामने आते ही वह हतबुद्धि हो गये।

एक सहेली सीढ़ी के नीचे दोनो ओर झाँककर लज्जापूर्वक हँस पडी और गायब हो गई। कोई चिल्ला उठा, "देखो, दोनो आ रहे हैं।" मानो कोई घुडदौड हो। तभी के और बक्ले सब प्रकार से सज्जित होकर गर्दन झुकाये सीढी से उतरकर भीड चीरते बारहसिंगे की भांति उसी प्रकार दौडते हुए आगे बढे, जैसे मि० बैंक्स ने, सभी नव-दम्पतियो को विवाह के उपरान्त विदा होते समय देखा था।

दोनो अब घर के बाहर पगडण्डी पर पहुँच गये। उनके कन्धो पर मिठाई बिखरी हुई थी और बरातियों के हाथो मिठाई की बौछार से बचने के लिए दोनो के सिर झुके हुए थे। उनके ठीक पीछे मि० बैंक्स और उनके पीछे सभी अगवानी करनेवाले और सहेलियाँ। पगडण्डी के अन्त मे बक्ले की मोटर खडी थी। इस भीड-भाड मे भी विदाई की रस्म लोकाचार के अनुसार सम्पन्न हो रही थी। दोनो मोटर के भीतर हो गये। के खुली खिडकी से झाँकने लगी और बक्ले प्रवेशको की भीड चीरता मोटर मे दूसरी ओर से घुसा।

के ने पिता को नमस्कार किया, "पापा, अब मैं चली, आपने मेरा खूब दुलार किया है। मैं सदैव आपसे स्नेह करती रहूँगी।"

कार कठिनाई मे आगे बढी। मि० बैंक्स कार के मडगार्ड से एक सहेली के सहारे हटे और दोनो को आशीर्वाद दिया, "अच्छा विदा, खुश रहो।" इतने मे मोटर सडक पर कई घर पार कर गई। कुछ अगवानी करनेवाले जो नियमानुसार मोटर के पीछे-पीछे थोडी दूर तक दौडते चले गये थे, अब अपने पतलूनो की गर्द झाडते वापस आ रहे थे।

मि० बैंक्स घर वापस आये। उत्सव का अन्तिम दृश्य बाकी था।

वर-वधू को अब लोग भूल चुके थे। पुराने खयाल के अधिकाश अतिथि तो लौटने लगे थे, परन्तु कुछ लोग रह गये थे, जो मदिरा की अन्तिम बोतल तक समाप्त करने के लिए तैयार थे।

• • •

अन्तिम मेहमान भी विदा हो चुका था। सेवक सेवा समाप्त करके अपने हाथ पोंछ चुके थे, बडे और नये तमाशो मे सम्मिलित होने के लिए बराती हुल्लड मचाते गायब हो चुके थे। डस्टन-दम्पति जा चुके थे, सब सम्बन्धी भी उसी प्रकार विस्मृत हो गये थे, जिस प्रकार विवाह के पहले वे विस्मृत रहे थे। सपत्नीक मि० बैंक्स ही अब बरात के बाद की बरबादी के मध्य रह गये थे। छत पर पडी आराम कुर्सियो को घसीटकर दोनो उन पर ढेर हो गये। कालीन पर मिठाई बिखरी हुई थी, बैठक मे जिन थोडी मेजो को मसौला ने छोड दिया था, उन सब पर मदिरा से भरे प्यालो के गोल-गोल चिह्न बन गये थे। दरवाजो और खिडकियो के सफेद पेंट से पुते किवाडो पर बुझाई गई सिगरटो के काले निशान जहाँ-जहाँ बने थे। फूलो के गमलो के कारण आतिशदान का पता न था। घर की इस अस्त-व्यस्त दशा को दोनो चुपचाप कुछ देर तक ताकते रहे।

श्रीमती बैंक्स सस्मरण-मग्न होकर बोली, "विदा होते समय जो पोशाक उसने पहनी, उसमे वह कितनी सुन्दर मालूम होती थी! क्या कहते हो, सुन्दर लगती थी न?"

मि० बैंक्स को अच्छी तरह कुछ याद न था, केवल अपनी लडकी का रेखाचित्र ही उनके मस्तिष्क मे था, वह इतना ही कह पाये, "मेरी दुलारी बेटी!"

श्रीमती बैंक्स मेहमानो को याद करने लगी, बोली, "ग्रिजवोल्ड-दम्पति नही आये, यद्यपि उन्होंने आने के लिए लिख दिया था, और

जेन ने मुझसे कह दिया था कि हम लोग जरूर आयेंगे। कैसे आश्चर्य की बात है।"

"तुम्हे कैसे मालूम कि वे आये कि नही ?"

श्रीमती बैंक्स ने निश्चय से कहा, "मैंने सब अच्छी तरह जान लिया है कि कौन आया और कौन नही।"

मि० बैंक्स ने उनकी बात का खण्डन नही किया। वह जानते थे कि उनकी श्रीमती की स्मरण-शक्ति बहुत पक्की है, उसे सदैव याद रहेगा कि कौन आया, कौन नही आया, और कौन लोग बे-बुलाये भी घुस आये।

अकस्मात् श्रीमती बैंक्स हाथ से अपना मस्तक दबाकर चिल्ला पडी, "हे ईश्वर ! हम लोग स्टोरर-दम्पति को बुलाना कैसे भूल गये।"

मि० बैंक्स ने कहा, "भूलना चाहिए तो नही था।"

"परन्तु भूल ही तो गये।"

"बहुत बुरा हुआ, क्या हम बहाना नही कर सकते कि हमने उन्हे निमन्त्रण अवश्य भेजा था। क्यो न तुम कल जाकर एस्थर से पूछो कि वह आई क्यो नही।"

श्रीमती बैंक्स ने कहा, "यह कर सकती हूँ।"

मि० बैंक्स ने कहा, "मेरी समझ मे यही सबसे अच्छा होगा।"

दोनो थककर फिर चुप हो गये। दोनो के मस्तिष्क मे दिन-भर की घटनाओ के चित्र चक्कर लगाने लगे। यदि दोनों के अन्तर्-चित्रो के फिल्म बन सकते तो दोनो फिल्म एक-दूसरे से कितने भिन्न होते !

मि० बैंक्स के मस्तिष्क के एक कोने में खर्च का हिसाब निरन्तर जोड़ा जा रहा था। नई-नई रकमे आती जाती और जोड बढता जाता।

श्रीमती बैंक्स को घर की सफाई की अधिक चिन्ता थी। कुछ देर तक चुप रहकर बोलीं, "चलो बिजली की झाडू निकाल लाये, इस

ड़-कर्कट की सफाई का काम कल के लिए डिलाइला के जिम्मे छोड़
ना उचित न होगा। मैं ऊपर जाकर अपने कपडे अभी बदलती हूँ।"

मि० बैंक्स चुपचाप अपनी पत्नी के पीछे हो लिये। समुद्र से बहते
कुहरे के समान थकावट के झोंके उन्हे अपनी आत्मा को ढँकते मालूम
ने लगे। एक बार उन्हें अपनी बेटी की याद आई, विदा होने के
हले यही तो खडी हुई थी। रुककर मुँडेर से उन्होंने कमरे मे बिखरी
मिठाई पर एक बार नजर डाली और सीढी पर चढते चले गये।

स्नानघर के हौज मे उन्हें शैंपेन की एक बोतल पडी दिखाई दी।
शीला के घर छोडने के कुछ ही पहले किसी ने इसे वहाँ रख दिया
। किसलिए—इसका वह कोई अनुमान न कर सके। अभी तक
डी थी। एक क्षण सोचते रहे कि खोलूँ या पडी रहने दूँ। परन्तु
रन्त ही पलट पडे और सीढी से उतरकर बिजली की झाड़ू निकाल
ाये।

एक घण्टे के भीतर ही मिठाई का सब चूरा मशीन के फूलते पेट
पहुँच गया। दोनो एक बार फिर अपनी कुर्सियो पर लेट गये
ौर आतिशदान के सामने लगे गमलो की ओर थकी दृष्टि से निहारने
गे।

कालीन के किनारे मिठाई के कुछ टुकडे ब्रुश की पकड मे न आने
 कारण फर्श पर रह गये थे। इन्हें देखकर मि० बैंक्स उन्हे उठाने
ो उठे। कालीन के सिरे के नीचे कुछ और चूरा उन्हे दिखाई दिया।
ोने को उन्होंने पलटा तो उसके नीचे रग-बिरगे कागज की चटाई-
सी दिखाई दी।

बिना कोई टिप्पणी किये मि० बैंक्स ने कालीन को जहाँ-का-तहाँ
हने दिया। श्रीमती देखती रही, परन्तु कुछ बोली नहीं। मि० बैंक्स
ुपचाप स्नानघर मे गये और अन्तिम बोतल की काग खोली। खाली
मरे से केक के लिए खरीदे गये शैंपेन के दो नये प्याले उठा लिये और
पनी पत्नी के पास वापस आये।

उन्होने दोनो प्याले सावधानी से भर लिये और एक अपनी श्रीमती को दिया। फूलो की पृष्ठभूमि में ब्रैकेट पर रखी घडी ने बारह बजाये, नगर से आई रेलगाडी की सीटी भी उसी समय सुनाई दी, सन्नाटे मे कोई कुत्ता भी कही भूंक रहा था। प्याले को हाथ मे लेकर मि० वैक्स ने कहा, "हो जाये।"

श्रीमती ने सहमति प्रकट की, "अवश्य।"

पादरी पीटर की कहानी

(कैथरीन मार्शल द्वारा लिखित जीवनी का सार)

संयुक्त राज्य अमरीका की सीनेट (राज्य सभा) के स्वर्गीय पादरी पीटर मार्शल हर प्रकार से एक असाधारण व्यक्ति थे। उन्होंने अपने जीवन में अपने धार्मिक विश्वास को पूरी तरह निबाहा। बड़ी-से-बड़ी कठिनाइयों के सामने भी उनकी आस्था कभी डिगने नहीं पाई।

उनकी पत्नी कैथरीन मार्शल की लिखी हुई उनकी इस जीवनी में हँसी की लहरें भी हैं और हर्ष तथा गर्व के आँसू भी। यह एक भव्य व्यक्ति का अत्यंत सुन्दर तथा मर्मस्पर्शी चित्रण है जैसा सजीव चित्रण केवल एक पत्नी ही कर सकती है।

पादरी पीटर की कहानी

पीटर मार्शल से परिचय प्राप्त करने के दो वर्ष पहले से मेरे हृदय मे उनके निकट सपर्क में आने की उत्सुकता थी। उस समय वह जार्जिया राज्य के अटलाटा नगर मे पादरी थे। इनकी जन्मभूमि स्कॉटलैंड मे थी। अतएव जार्ज़िया के समाचारपत्रो मे, एक आकर्षक स्कॉच युवक की मधुर वाणी की तारीफ के बहाने, पीटर मार्शल की चर्चा हुआ करती थी। मैं पड़ोस मे ही एक कालेज की छात्रा थी। इस कारण मुझे उनके प्रवचन सुनने के मौके मिला करते थे। उनके हार्दिक उत्साह और प्रवचनो के भावात्मक सौन्दर्य से मैं बहुत प्रभावित थी। उनकी प्रार्थना मे सौन्दर्य और सत्य के पुट से मैं जिस प्रकार अभिमन्त्रित हो जाती थी, उसी प्रकार जब आगे चलकर यह अमरीकी सीनेट (राज्य-सभा) के बडे पादरी नियुक्त हुए प्राय सभी अमरीकी उनके प्रवचनो से प्रभावित होने लगे। एक बार मैंने अपने माता-पिता को लिखा, "ऐसा प्रवचन तो मैंने कभी पहले सुना ही न था। मुझे तो ऐसा लगता है कि ज्यो ही यह बोलना प्रारम्भ करते हैं श्रोता का ईश्वर से सपर्क हो जाता है। आप कहेगे कि मैं कैसे अल्हडपन की बात कर रही हूँ, परन्तु मुझे इस व्यक्ति से मिलने की हार्दिक इच्छा है।"

मैं एक कालेज की छात्रा और पीटर मार्शल पादरी होने के अतिरिक्त अवस्था मे मुझसे बारह वर्ष बडे भी थे। अतएव उन तक पहुँचना मुझे इतना ही कठिन जान पडा, मानो वह मगल-ग्रह के निवासी हो।

जब वह अटलाटा के वेस्टमिस्टर प्रेस्विटेरियन गिर्जाघर के पादरी नियुक्त हुए, उस समय इस गिर्जाघर का आकर्षण इतना घट गया था कि उसे बन्द करने की बात सोची जा रही थी। अब यह गिर्जाघर इतना आकर्षक हो गया था कि उनका प्रवचन सुनने के लिए गिर्जाघर में नागरिको की भीड लग जाती थी और छोटे पादरियो को खुली खिड-कियो से ही प्रवचन सुनने का मौका मिल पाता था। पीटर का युवक-युवतियो पर भी काफी प्रभाव था। अटलाटा मे पांच बडे विद्यालय थे। इनमें तीन विश्वविद्यालय थे—जार्जिया टेक्निकल, एमरी, आगिल-थार्प—एक थी कोलम्बिया सेमिनरी और पांचवां था एग्नीस स्कॉट कालेज जिसकी मैं छात्रा थी।

स्कॉच लोगो का अग्रेजी बोलने का एक खास लहजा होता है जो उनकी जन्मभूमि का परिचय दे देता है। कुछ आलोचक वैमनस्य के कारण कहा करते थे कि पीटर का आकर्षण उनके स्कॉच लहजे पर ही आधारित है। यह सत्य है उनकी वाणी मे असाधारण माधुर्य और स्पष्टता थी, और यह वाणी उनके स्कॉच लहजे से और भी आकर्षक हो जाती थी। वह स्कॉटलैंड में पैदा हुए थे और वही पले थे। इक्कीस वर्ष की आयु पूरी होने पर यह अमरीका आये थे। अमरीकियों की दृष्टि में उनके जीवन की यह पृष्ठभूमि कुछ चमत्कारपूर्ण थी। यह लम्बे थे और हृष्ट-पुष्ट भी। लडकपन मे फुटबाल खूब खेले थे, जिस कारण पादरी होने पर भी उनके चोगे के भीतर चौडे कधों की झलक दर्शकों को मिलती थी। उनके घुंघराले बाल बिखरे रहते थे और उनका मुख सुन्दर था, पर इस सौन्दर्य मे बनावट का नाम भी न था।

परन्तु इन बाहरी आकर्षणों से कही बढकर उनके प्रवचन का प्रभाव था। इसमें कोई सन्देह नही कि उनके प्रवचन सुनकर श्रोता ईश्वर के अस्तित्व का अनुभव करने लगते थे। जब पीटर प्रवचन देते तब उपस्थित प्रार्थी ऐसा अनुभव करते कि ईश्वर कोई सुदूर निराकार निर्गुण अस्तित्व नहीं, वह पितातुल्य उनका निकटस्थ सरक्षक है जिसे

मानव की सभी आवश्यकताओं की पूर्ति की चिन्ता है। एक नौजवान क्लर्क अपना दोपहर का भोजन छोडकर उनका प्रवचन सुनने जाया करता था। उसका कहना था, "हमारा पादरी ईश्वर से भलीभाँति परिचित है और उसकी सहायता से मुझे भी अपने ईश्वर का ज्ञान होने लगा है।"

उन दिनो, और सदैव ही, पीटर यह बात बार-बार कहते कि आध्यात्मिक अनुभव ज्ञान की वस्तु है, प्रमाण की नही। तर्क से तो प्रमाणित नही होता कि सूर्यास्त बहुत सुन्दर लगता है। आग के गोले के समान जब वह पश्चिमी क्षितिज से मिलने के लिए उतरने लगता है और अन्त मे विश्राम के लिए उसकी लालिमामय गोद मे पहुँचता है, तब सूर्य के रथ से आकाश और उसके बादल कितनी शीघ्रता से अपने रग बदलने लगते हैं—यह छटा अनुभव करने की वस्तु है, प्रमाण की नही।

जब अतत मुझे इन युवक पादरी से मिलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ, तो मेरी आदर्शवादिता और नवयौवन-जन्य भावुकता भी इन पर केन्द्रित हो गई। मेरे अध्यापक डा० हेनरी राबिसन ने एक बार यह निर्णय किया कि पास के एक कस्बे मे मद्य-निषेध पर पीटर मार्शल के साथ मेरे और मेरी एक सहपाठिनी के व्याख्यान हो। मैंने डा० राबिसन से तय किया कि कस्बे की ओर जाते समय वह मुझे कालेज की वाटिका से अपने साथ ले लें। वाटिका पहुँचकर एक हाथ मे पुर्तगाली कविताओ का सग्रह लिये दूसरे हाथ से मैं अपनी सुध-बुध खोकर कुमुदिनी के पुष्पो से सुशोभित जलाशय से अठखेलियाँ करने लगी। मैंने सोचा यह था कि गुलाब के कुञ्ज से होते हुए जब मार्शल मुझे बुलाने आयें तो इस कलात्मक मुद्रा मे उन्हे मेरी झलक मिले। हुआ यह कि डा० राबिसन मुझे लेने वाटिका पहुँच तो गये, परन्तु मोटर मे बैठे-ही बैठे मुझे बुलाने के लिए हार्न बजाने लगे। मेरी कल्पना भग हुई और मैं अपनी सह-पाठिनी के साथ मोटर की पिछली सीट पर बैठ गई और बातचीत के

बीच-बीच मे एक कहानी के बारे मे सोचने लगती, जो पीटर के विषय मे प्रसिद्ध थी। एक प्रार्थना-सभा मे मजाक में उन्होंने कहा था, "ऐसा लगता है कि गिर्जाघर के प्राय सभी श्रोताओं को इस बात की जानकारी मुझसे अधिक है कि मेरा विवाह कब होगा और किससे।"

इतना कहकर वह एक बच्चे के समान जोर से हँसकर बोले थे, "मैं यह बताना चाहता हूँ कि मैं विवाह तभी करूँगा जब मैं अपने को विवाह योग्य समझूँगा और उसके लिए अपने को तैयार भी समझूँगा। इस समय मैं विवाह योग्य तो हूँ, परन्तु अभी विवाह के लिए तैयार नहीं।"

मद्य-निषेध के लिए जो-कुछ किया गया उसकी सफलता की मुझे इतनी ही याद है कि जिले के निवासी शीघ्र ही पहले की भाँति शराब पीने लगे। परन्तु व्याख्यान से लौटते समय पीटर ने जो कहा, उसकी याद मुझे भली-भाँति है। उन्होंने पूछा, "इस सप्ताह आप मिल सकेंगी? बहुत दिनो मे मिलने का उत्सुक हूँ।" मैंने विस्मय प्रकट किया तो बोले, "पादरी भी अधे नही होते, यह आपको मालूम होना चाहिए।"

एक वर्ष पश्चात् हमारी सगाई हो गई। मेरी समझ मे तो भगवान् की चमत्कारी अनुकम्पा के ही कारण मेरा उनसे सम्बन्ध हो सका।

• • •

मेरी बहुत-सी प्रतिद्वन्द्विनियां थी। अटलाटा की कुमारी नवयुवतियां अपने नगर के इस पादरी को अपने योग्य वर समझती थी और उनकी माताएँ अपनी पुत्रियो की इस कामना मे सक्रिय सहयोग देती थीं। आम तौर से वे पारिवारिक सहभोज मे अपनी "लडकी से मिलने के लिए" उस पुरुष को निमन्त्रित करती थी, जिसे वह अपना जमाई बनाने की फिक्र मे होती थी। इसके पश्चात् टेलीफोन से बुलावा दिया जाता— गृहिणी ने तमाशे के लिये टिकट ले लिये हैं, क्यो न उनकी लडकी को

साथ लेकर वह तमाशा देख आयें। या फिर सीधा यही प्रश्न किया जाता था कि इधर कई दिनो तक आप मेरी लडकी से मिलने आये क्यो नही ?

गृहिणियो और उनकी बेटियो के इस व्यवहार से पीटर को काफी परेशानी हुई। परन्तु इससे भी अधिक परेशानी उन्हे कुछ विवाहिता महिलाओ के व्यवहार से होती थी। आगे चलकर मुझे पता लगा कि प्रत्येक सभा मे कुछ ऐसी स्त्रियाँ अवश्य होती थी जो अपने इस पादरी को भावुक दृष्टि से देखती थी। वे अपने पादरी की कुछ-न-कुछ वैयक्तिक सेवा करने को उत्सुक रहती थी—फटे कपडो की मरम्मत कर दें; मेज पर फूल सजा दें, मेज पर भरा जलपात्र रख दें। परिचय-पत्र, छोटे-बडे निवेदन और उपहार—कभी-कभी बहुत बडे-बडे उपहार भी—गिर्जाघर के दफ्तर में रहस्यपूर्ण ढग से पहुँच जाते, किसी धार्मिक समस्या का बहाना लेकर स्त्रियाँ उन्हे फोन भी किया करती। पीटर का यह प्रिय व्यग्य था, "न जाने शैतान को सदैव नर के रूप मे ही क्यो चित्रित किया जाता है ?"

परन्तु अपने प्रणय-काल मे मुझे पीटर की इन समस्याओं का कोई पता न था। हमारी केवल छ बार ही भेंट हो सकी। पीटर प्रवचन लिखने, मिलने जाने, पढाने, सभाएँ करने और विवाह-सस्कार सम्पन्न कराने मे इतने व्यस्त रहते कि उन्हे मुझसे मिलने की फुरसत ही बहुत कम मिलती। किसी युवक-युवती के विवाह-सस्कार के समय वह नव-दम्पति को यह आशीर्वाद सदैव देते कि वे मानव के परमानन्द-भवन मे प्रवेश पा रहे हैं, अतएव दोनो आजीवन सब प्रकार से सुखी रहे। आम तौर पर उनसे मिलने का मौका तभी मिलता जब वह गिर्जाघर मे काम करने के पश्चात् मुझे अपनी मोटर पर कालेज पहुँचाने जाते। उस समय भी उन्हे अपनी सेक्रेटरी की सहायता लेनी पडती। जब मैं श्रोताओ की भीड चीरती हुई गिर्जाघर के द्वार तक पहुँचती, तो उनकी सेक्रेटरी अकस्मात् आ जाती और सदेश देती, "मार्शल साहब का

निवेदन है कि आप कुछ प्रतीक्षा करें, बात करने के लिए कुछ लोग उन्हे घेरे हैं। उनसे निपटकर वह आपको पहुँचा देंगे।"

मैं प्रतीक्षा करती रहती।

पीटर आम तौर से युवक-युवतियो को इस प्रकार उपदेश देते, "तुम्हें पहले से कभी नही मालूम हो सकेगा कि कब प्रणय-पाश में फँसोगे और इसकी पहचान क्या होगी। मैंने जितने भुक्त-भोगियो से इस विषय मे पूछा है उन सबने मेरी उपर्युक्त बात का समर्थन किया। जो बात प्रणय के सम्बन्ध में सही है वही ईश्वर की सत्ता के ज्ञान के सम्बन्ध मे मे भी सही है। निजी अनुभव के बिना यह जानकारी प्राप्त होना असम्भव है।"

मई १९३६ के एक रविवार की रात के समय पीटर को पहली बार प्रणय का आभास हुआ। 'वेस्टमिंस्टर्स फेलोशिप आवर' के लिए प्रार्थना की एक पुस्तक की आलोचना करने को मुझसे कहा गया था। मेरे वक्तव्य के पश्चात् जब पीटर बोले तो उनकी नीली आंखो मे गहरे आदर की भावना के साथ एक प्रकार की अपूर्व चमक भी दिखाई दी, मुझे उन्होने तुरन्त ही अगले शनिवार की रात को भोजन के लिए निमन्त्रित किया। फिर हम दोनों सध्याकालीन प्रार्थना के लिए गिर्जा-घर गये, जहां अगली तीन कतारों की ही एक सीट पर बैठ जाने की मैंने भूल की।

उधर प्रणय एक रूप मे अंकुरित हुआ, तो इधर वह पेट की पीडा के साथ मुझे प्रत्यक्ष हुआ। सिर चकराने के कारण पत्थर के खम्भे और प्रार्थना-मच के पीछे खिडकी पर बने प्रभु यीशु के चित्र डूबते-उतराते दिखाई देने लगे। जब पीटर ने अपने प्रार्थना-मच से मेरे नाम के साथ उस वक्तव्य का जिक्र किया जो मैंने कुछ ही समय पहले दिया था, तब तक मैं पीडा के मारे ज्ञानशून्य-सी हो गई थी। उनका प्रव-चन प्रारम्भ होते-होते मुझे जान पड़ा कि ठहरने मे मेरी कुशल नही।

वापस जाने के लिए उठी, तो पग-पग चलना इतना दूभर लगा,

मानो वह मेरे जीवन की सबसे लम्बी यात्रा रही हो। प्रवचन शीघ्र समाप्त हुआ, गिर्जाघर मे सन्नाटा छा गया, केवल पत्थर के फर्श पर ऊँची एडी के जूतो का खट-खट शब्द ही सुनाई देता था। मुझे ऐसा लगा मानो पीटर की आँखें मेरी पीठ पर बराबर लगी हुई हैं। गिर्जाघर के बाहर बरामदे मे पहुँचने पर जब मुझे कर्मचारियो का सहानुभूति-पूर्ण सहारा मिल गया, तभी उन्होंने अपना स्थगित प्रवचन पुन प्रारम्भ किया।

उसी रात मैं कालेज के अस्पताल मे पहुँचाई गई, और मेरे पेट की अनोखी पीडा का निदान ढूँढने का प्रयत्न किया गया। प्रमुख परिचा-रिका को प्रणय-पीडित लडकियो की बहुत अच्छी जानकारी थी, जिस कारण उसने तुरन्त ही अपना सन्देह प्रकट किया।

अगले दिन तीसरे पहर पीटर मुझसे मिलने आये। उनकी आंखो में जो चमक मैंने पिछली रात देखी थी, वह अभी तक थी। यह चमक उस दृढ निर्णय और निश्चय की प्रतीक थी जो स्काटलैंडवासियो मे हुआ करता है। उन्हे मालूम था कि वह क्या चाहते हैं।

उनके प्रस्ताव के शब्द बहुत सीधे-सादे थे, यद्यपि वे अत्यन्त मधुर वाणी मे उच्चरित हुए, मानो किसी पारखी के सादे शब्द-चित्र सुन्दर कोमल कशीदाकारी से घिरे हो। मेरे हृदय ने अपना उत्तर मुझे तुरन्त दे दिया, परन्तु मुझे डर लगा कि कही मेरा हृदय दैवी आदेश को न ढँक ले। अतएव हम दोनो इस बात पर सहमत हुए कि अलग-अलग भगवान से प्रार्थना करें और उसका आदेश सुनने का प्रयत्न करें।

कालेज की परीक्षाएँ समाप्त होने पर जब मैं कालेज के अहाते के भीतर इधर-उधर टहलती थी, तभी किसी अदृश्य शक्ति की छत्रछाया का मुझे आभास हुआ। मुझे प्रार्थना करना आता न था, और अल्हड थी ही, परन्तु इतना मुझे अवश्य समझ मे आया कि हृदय मे बसे भगवान अपने प्रिय स्वप्नो को हमारे हृदयो पर अकित करके ही हमारा पथ-प्रदर्शन करते हैं। जब हमारा स्वप्न साकार होता है तो ईश्वरेच्छा

मानकर उसे हम स्वीकार करते हैं। इस प्रकार समझ जाने पर पीटर तक अपना उत्तर पहुँचा देने का प्रिय काम ही बाकी रह गया था।

जब हम दोनो डिकाट्टर से अटलाटा जा रहे थे, तभी मैंने अपनी स्वीकृति देने का निर्णय किया। जब मैं अपनी बात कह चुकी, तो पीटर ने सक्षेप मे इतना ही कहा, "ईश्वर को अनेक धन्यवाद।" थोडी देर तक मोटर आगे बढती रही और हम दोनो खामोश रहे। फिर एक जगह सडक के किनारे उन्होंने कार खडी कर दी और उनके नत-मस्तक मुख से जीवन की सुन्दरतम प्रार्थना निकली जिसका भावार्थ यह था कि ईश्वर उनकी जीवनचर्या के सभी अगो मे व्याप्त है। वह अपने को भगवान् का अनुचर समझते हैं और ईश्वर ही के साथ वह इस शुभ घड़ी का आनन्द लेना चाहते हैं। इसके पश्चात् ही उन्होंने मुझे अपने बाहु-पाश मे जकड लिया।

● ● ●

अपने जीवन के प्रारम्भिक काल मे पीटर पादरी बनने के उत्सुक नहीं थे। तब उनका जीवन-ध्येय दूसरा ही था। स्कॉटलैंड के समृद्ध बन्दर-गाह ग्लासगो के निकट कोटब्रिज मे जन्म लेने के कारण वह ब्रिटिश जंगी बेडे के प्रभाव मे पले थे। अतएव वह मल्लाह बनने की धुन मे थे। चौदह वर्ष की अवस्था मे उन्होने जगी बेडे मे भर्ती होने के कई प्रयत्न किये जो विफल रहे। किशोरावस्था मे वह मिस्त्री का काम सीखते रहे, पर जहाजी नौकरी की उत्सुकता उनके हृदय में बनी ही रही। परन्तु इक्कीसवी वर्षगाँठ के पहले ही उन्हें ऐसा लगा कि किसी अदृश्य शक्ति ने उनका कन्धा पकडकर एक नये मार्ग का निश्चयात्मक आदेश उन्हे दे दिया है।

गर्मी की छुट्टियों मे इंगलैण्ड-स्कॉटलैण्ड सीमा के सोलह मील दक्षिण-पूर्व वह इंगलैण्ड के बैम्बर्ग नामक एक गाँव मे काम कर रहे थे। पड़ोस के एक गांव से रात के समय पीटर बैमबर्ग की ओर चले, तो समय

बचाने के खयाल से वह एक झाबर भूमि पार करने लगे। रात बहुत ही अँधेरी थी, झाबर मे खडी झाडियो के बीच से बहती हवा की हरहराहट सुनाई देती थी, या बीच-बीच मे जगली मुर्गों की बाँग भी सुन पडती थी, जब वे उनके पैरो की आहट से चौकन्ने हो जाते थे।

अकस्मात् उन्हे ऐसा लगा मानो किसी ने 'पीटर' कहकर पुकारा हो। उस आवाहन में बडा आग्रह था।

वह रुक गये और बोले, "कौन है, क्या चाहते हो ?" एक क्षण भर वह सुनते रहे, परन्तु वायु की हरहराहट के अतिरिक्त उन्हे कुछ सुनाई न दिया। यह समझकर कि कानो को केवल धोखा हो गया है, वह कुछ पग और आगे बढे। फिर वही आवाज और इस बार और भी अधिक आग्रहपूर्ण।

इस निबिड अन्धकार मे झाँकने का प्रयत्न करते-करते वह अकस्मात् एक जगह घुटनो के बल गिर पडे। सँभलने के लिए उन्होने अपना हाथ आगे बढाया पर वहाँ उन्हे कुछ न मिला। जब सावधानी से फिर टटोलने का प्रयत्न किया तो उन्हे पता लगा कि वह एक ऐसी गहरी खदान के किनारे खडे हैं जहाँ से पत्थरो की खुदाई हो चुकी थी। यदि एक पग भी और आगे बढते तो लुढक जाते और मृत्यु निश्चित थी।

अब पीटर के हृदय मे आकाशवाणी के सम्बन्ध मे कोई सन्देह नही रह गया।

इस घटना के पहले अपनी व्यस्त जीवनचर्या के बावजूद पीटर के हृदय मे अशान्ति और असतोप रहता था। एक रात्रिकालीन पाठशाला मे कुछ समय तक प्रशिक्षित होकर उन्होने नल बनाने का काम यथेष्ट मात्रा मे सीख लिया था और इस प्रशिक्षण के अतिरिक्त भी उनका जीवन व्यस्त ही रहता था। वह गिर्जाघर से सलग्न विद्यालय मे पढाते थे, बच्चों को गाना सिखाते थे और स्काउट मास्टर भी थे। वाई० एम० सी० ए० की फुटबाल टीम के सदस्य थे, क्रिकेट खेलते थे, नाटको मे अभिनय करते थे, बैंड मे ढोल बजाते थे।

रात्रि के निविड अन्धकार में उस झाबर भूमि के मध्य पीटर को विश्वास हो गया कि उन्हे भगवान् का दूसरे क्षेत्र के लिए स्पष्ट आदेश मिला है। उन्हें अपने भाग्य का नवीन आश्वासन मिला और उसी वर्ष शरद् के पहले एक पादरी का प्रवचन सुनते-सुनते उन्हे ज्ञात हो गया कि उन्हें अपना जीवन धर्म के प्रचार मे ही लगाना है। व्याख्यान के समाप्त होते ही उन्होंने खडे होकर भरी सभा मे घोषणा की, "मैं अपना जीवन भगवान् को अर्पित करता हूँ। वह जिस प्रकार चाहे मुझसे काम ले।"

जिस व्यक्ति ने मिस्त्री बनने के लिए १४ वर्ष की अवस्था मे पढाई छोड दी हो, उसका पादरी-पद के लिए प्रशिक्षित होना सरल न था। विश्वविद्यालय की आवश्यक परीक्षाओं में उत्तीर्ण होने के पहले उन्हें कुछ प्रारम्भिक परीक्षाओं मे उत्तीर्ण होना था। पीटर ने ग्लासगो के एक कॉलेज मे प्रति सप्ताह तीन रात हाजिरी देना शुरू किया। परन्तु नल के कारखाने मे ९ घण्टे काम करने के बाद कक्षा के काम मे ध्यान लगाना कठिन था। सफर, पुस्तकों और फीस पर अतिरिक्त रकम खर्च होने लगी तो आगे की पढाई के लिए रकम बचाना भी असम्भव हो गया। धर्म-सेवा को पूरा समय देने की चेष्टा असम्भव और सुदूर-सी दिखने लगी कि ऐसे ही समय एक चचेरे भाई जो अमरीका मे जाकर बस गये थे, कुछ दिनों के लिए पीटर के पास रहने आ गये। उन्होंने पीटर से कहा, "अमरीका चलो। वहाँ अधिक सुगमता से अपनी पढाई पूरी कर सकोगे और उद्धार के लिए जितने पापी स्कॉटलैंड में हैं उससे कम अमरीका मे नही हैं।"

परेशान होकर अपने निर्णय के सम्बन्ध मे प्रार्थना करते-करते पीटर को अन्तरात्मा से स्पष्ट आदेश मिल गया। १९ मार्च, १९२७ को 'केमरोनिया' नामक जहाज पर वह अमरीका के लिए चल दिये। शीघ्र ही स्कॉटलैंड की पहाडियाँ ठंडे अटलांटिक महासागर में डूबकर उनकी दृष्टि से ओझल हो गई। उन्हें अकेलेपन का अनुभव हुआ और

कुछ भय भी लगा। परन्तु ईश्वर के प्रति अटल विश्वास ने उनकी रक्षा की। इस विश्वास ही की परीक्षा आगे होती रही।

● ● ●

जब पीटर अमरीका पहुँचे तो उनके भूरे चमडे के पुराने बटुए में दो सप्ताह के गुजारे भर की ही रकम थी। यह बटुआ उनके पास सुरक्षित रहा, उन्हे सदैव दैवी रक्षा की याद दिलाने के लिए। बहुत से लोग धर्म की व्यावहारिक उपयोगिता के आधार पर ईश्वर के अस्तित्व को मानते हैं या अस्वीकार करते हैं। धर्म को गिर्जाघर की रगीन खिडकियो से उतरकर व्यक्ति की जेब तक पहुँचना चाहिए और यदि धर्मोपदेशक को सफल होना है तो उसे इस वास्तविकता का ज्ञान होना ही चाहिए।

ईश्वर मे असीम विश्वास के कारण पीटर के जेब-खर्च की समस्या भी अगले महीनों में हल होती रही। जब अमरीकावासी मन्दी के भूत से त्रस्त थे तब उन्होने एक दिन अपने प्रवचन मे कहा था, "अपने निजी अनुभव के आधार पर मैं साक्षी दे सकता हूँ कि ईश्वर पर अटल विश्वास रखकर प्रार्थना और भक्ति द्वारा ही मेरी प्रत्येक आवश्यकता की पूर्ति हो सकी है।"

पांच महीनो तक इस युवक प्रवासी को जो भी काम मिला उसको ही वह करता रहा। पीटर खाइयाँ खोदते, इमारती काम करते या ढलाई के कारखाने मे मिस्त्री की सहायता करते। कठिन और देर तक परिश्रम करने के वह आदी रहे थे। परन्तु उनकी समझ मे नही आ रहा था कि इस प्रकार परिश्रम करके वह अपने लक्ष्य के निकट कैसे पहुँचेंगे। अभी तक गिर्जाघर से उनका कोई दूर का भी सम्बन्ध नही बन सका था। और पादरी का काम उन्हे पहले से अधिक दूर दिखाई देने लगा था। वह सोचने लगे थे कि कही वह ईश्वर के दिखाये मार्ग से भटक तो नही गये हैं। स्काटलैंड लौट जाने के निर्णय पर वह पहुँचने ही को थे कि उनको एक दस्ती पत्र मिला। यह पत्र उनके एक अनन्य मित्र का

था। वह एक वर्ष पहले स्कॉटलैंड छोडकर अलाबामा राज्य के बर्मिघम नगर मे आ बसा था। पत्र मे लिखा था, "यहाँ क्यो न चले आओ? मुझे पूरी आशा है कि मैं तुम्हे बर्मिघम के समाचार-पत्र 'न्यूज' मे काम दिलवा दूँगा।"

पीटर ने अपने मित्र का सुझाव मान लिया और उन्हे तुरन्त ही बर्मिघम के 'न्यूज' कार्यालय मे प्रूफ पढने का काम मिल गया। वह पुराने फर्स्ट प्रेस्बिटेरियन गिर्जाघर के सदस्य हुए और गिर्जाघर का पादरी इस स्कॉच युवक की धार्मिक निष्ठा और दैवी आदेश-पालन के दृढ निश्चय से शीघ्र ही प्रभावित हुआ। थोडे ही महीनो के भीतर पीटर 'यग पीपुल्स सोसाइटी' नामक सस्था के प्रधान हो गये, वयस्को को बाइबिल पढाने लगे और कभी-कभी रविवार की प्रार्थना मे सहायता भी देने लगे। बर्मिघम के प्रेस्बिटेरी ने पादरी-पद के लिए उनके प्रार्थना-पत्र पर विचार किया और निर्णय हुआ कि वह डिकाटूर (जार्जिया) स्थित कोलम्बिया थियालाजिकल सेमिनरी में प्रशिक्षण के लिए भर्ती कर लिये जायें।

'न्यूज' के पत्रकार उनकी योजना का मजाक उडाने के लिए उनसे प्रश्न किया करते, "पीटर, सेमिनरी तक पहुँचने का खर्च किस प्रकार निकाल पाओगे? २० डालर प्रति सप्ताह पाकर कितना बचा सकोगे?"

और हँसते हुए पीटर उत्तर देते, "जी हाँ, प्रभु ने पादरी बनाने के लिए मुझे इस देश मे भेजा है और यह उसी को निर्णय करना है कि किस प्रकार मैं इस पद तक पहुँच पाऊँगा। आदेश-पालन ही मेरा काम है। बाकी उनके हाथ मे है।"

युवक सहयोगी उनकी ओर देखते और सिर हिलाते। पीटर के विश्वास मे उन्हे उपहास की सामग्री मिलती थी।

ऐसी ही स्थिति मे अप्रैल १९२८ की एक रात को उन वयस्को ने, जो उनसे बाइबिल पढते थे, पीटर को एक भोज दिया। सभा मे एक सदस्य ने खडे होकर छोटे से व्याख्यान में अपने युवक शिक्षक की खूब

तारीफ की और उनके हाथ मे एक पत्र दिया जिसमे यह सूचना थी ·
"आपकी कक्षा के सदस्य सेमिनरी के व्यय-भार में ५० डालर प्रति मास तक की सहायता देंगे। सदस्यगण आपके स्वप्न को साकार देखने के बहुत उत्सुक हैं। वे धन से तो सहायता करेंगे ही, उनकी प्रार्थनाएँ और पूरण कामनाएँ भी आपके साथ हैं।"

जब पीटर को बोलने का मौका मिला तो उन्हें अपनी हार्दिक कृतज्ञता प्रकट करने के लिए शब्द ढूंढने पड़े। परन्तु इनकी आवश्यकता न थी, क्योंकि पीटर की कृतज्ञता उनकी आकृति पर ही परिलक्षित थी। अगले वर्ष भी वे लोग ५० डालर प्रति मास की सहायता देते रहे। इसके पश्चात् दो छोटे गिर्जाघरो मे उन्हे काम मिल गया और इस प्रकार वह अपना व्यय-भार सँभाल सके, यहाँ तक कि मई १९३१ मे अपनी २७वी वर्षगांठ के कुछ पहले यह धर्मशिक्षा के स्नातक हो गये और उन्हे 'मैग्ना कुम लाउडी' की उपाधि मिली जिसका अमरीकी शिक्षा-क्षेत्र मे ऊँचा मान है। इसके पश्चात् उनका भूरा बटुआ कभी खाली नही रहा।

प्रभु ने अपना वचन पूरा किया, "पहले प्रभु के राज्य और उनकी दया का पता लगाओ! फिर तुम्हारी सभी भौतिक आवश्यकताओ की पूर्ति हो जायगी।" पीटर का यह अटल विश्वास था कि भगवान् हमारे भरण-पोषण का प्रबन्ध करते रहते हैं, इन कठिन दिनो के अनुशासन मे पुष्ट ही हुआ, और इसलिए यह विश्वास उनके प्रवचनो का आधार-प्रस्तर बना।

• • •

जब हमारी सगाई हो गई तो मैं समझी कि एक वर्ष मुझे शिक्षण-कार्य करना है। परन्तु पीटर ३० वर्ष के हो गये थे और वर्षों से वह गृही बनने के उत्सुक थे। उनकी यह आकाक्षा उनके प्रवचनों तथा सार्वजनिक प्रार्थनाओं मे भी परिलक्षित होती थी, अब वह एक वर्ष तक

प्रतीक्षा करने के लिए तैयार न थे। हमने नवम्बर के प्रथम सप्ताह मे ही विवाह कर लेने का निश्चय किया।

उस ग्रीष्म मे हम दोनो को मिलने के बहुत कम अवसर मिले, क्योंकि हमारी निजी योजनाएँ उनके धार्मिक दायित्वों से सदैव टक्कर खाती रही। कभी-कभी इस प्रकार का पत्र मिलता, "मुझे शुक्रवार को तीसरे पहर एक विवाह कराना है। क्या ही अच्छा हो यदि विवाह का समय एक घण्टा आगे बढाने के लिए मैं दुलहिन को राजी कर सकूँ।" मैं उन दिनो अपने माता-पिता के साथ कैसर डवलू० (वर्जिनिया) मे थी और हमे सम्मिलन के छ अवसर ही मिल सके। एक बार पीटर को मुझसे मिलने के लिए ७,००० मील की यात्रा करनी पड़ी।

इधर पीटर के प्रणय-पत्र अपने क्षेत्र मे मुझे अनोखे ही लगे। स्कॉटलैण्ड के सुपुत्रों मे व्यावहारिक व्यावसायिकता के साथ काव्यमय भावुकता का अपूर्व सम्मिश्रण मिलता है। यही बात मुझे पीटर के पत्रो मे मिली। उन्हे प्रणय-गीतो की पक्तियो के साथ यह सूचना देने मे कोई भी असगति नही मालूम होती थी कि भाग्यवश उन्हे सगाई की अँगूठी थोक भाव पर मिल गई। दूसरे पत्र मे उन्होंने चांदी के वर्तनो को सस्ते दामो प्राप्त करने का उल्लेख किया था। एक बार उन्हें एक दुकानदार मित्र मिल गया, जो उन्हें आधे दामो पर आराइश का सामान देने के लिए तैयार हो गया था।

कैसर मे मेरा घर था और वही चौथी नवम्बर को गिर्जाघर मे हमारा विवाह हुआ। सस्कार के कुछ पहले उन्हें वेस्टमिन्स्टर के कर्मचारियो का एक तार मिला, जिसमे उन्हें उन प्रिय वाक्यो को दोहराने का अवसर मिला, जिनसे उनके पादरी नव-दम्पतियो को आशीर्वादात्मक बधाई दिया करते थे

मानव के परमानन्द-भवन में प्रवेश पाने पर आपको हार्दिक बधाई है।

अगले दिन प्रात काल जब मेरी आँख खुली तो मैंने पीटर को कुहनी के सहारे मेरी ओर निहारते देखा । मालूम होता था जैसे वह मुझे बडी देर से निहार रहे थे । उनकी भाव-भगिमा से मैं यह नही समझ पाई कि वह क्या सोच रहे थे । या तो वह मेरे सौंदर्य को निहारकर प्रसन्न हो रहे थे, या वह यह सोच रहे थे कि विवाह-बधन मे वह किस प्रकार फँस गये थे ।

हम दोनो वाशिंगटन में थे और होटल के उपर्ले खण्ड मे वाशिंगटन के न्यूयार्क एवेन्यू प्रेस्बिटेरियन गिर्जाघर की पैस्टरल कमेटी के सदस्य हमारी प्रतीक्षा कर रहे थे, क्योंकि उन्होने पीटर को अपना पादरी बनाने के लिए निमन्त्रित किया था। पिछले महीने उन्होंने उनका निमन्त्रण अस्वीकार कर दिया था, क्योकि बहुत कुछ आतरिक विचार-मथन के पश्चात् वह इस निर्णय पर पहुँचे थे कि उन्हें अभी अटलाटा को बहुत-कुछ सेवा करनी है । उन्होने कमेटी के सदस्यो को इस प्रकार पत्र लिखा था

"इतने ऊँचे पद के दायित्व और गौरव का भार वहन करने योग्य मैं अभी नही हूँ । समय ही मुझे बता सकेगा कि मैं कभी भी मस्तिष्क और हृदय के उन गुणो से परिपूर्ण हो सकूँगा, जो आपके प्रार्थना-मच के लिए आवश्यक हैं ।" परन्तु कमेटी के सदस्य नकारात्मक उत्तर के लिए तैयार न थे और उन्होने इस आशय का तार भेजा

हमें आपको सूचित करते हर्ष होता है कि हमारी कमेटी ने सर्वसम्मति से गिर्जाघर के सदस्यों से सिफारिश की है कि आप निमन्त्रित किये जायें। पाँचवीं नवम्बर को गिर्जाघर के सदस्यों की सभा होगी ।

पाँचवी नवम्बर भी आ गई और पैस्टरल कमेटी को हम दोनो से बात करने की आवश्यकता प्रतीत हुई । वे यह जानते थे कि पिछले दिन के तीसरे पहर ही हम लोगो का विवाह हुआ था । परन्तु उन्हे पूरी आशा थी कि हम अपनी सुहागरातो के साथ गिर्जाघर का काम करते रहने

में बुरा न मानेंगे । अपने दाम्पत्य की याद करते मुझे ऐसा लगता है कि यह जीवन गिर्जाघर की समिति की बैठकों से प्रारम्भ हुआ तो यही सिलसिला अंत तक चलता रहा ।

नाश्ते का भी समय पीटर को नही मिला । पीछे मुडकर यह कहते हुए वह चल दिये, "कैथरिन, कपडे पहनकर तैयार होने मे शीघ्रता की आवश्यकता नही, मैं पहुँचकर अपना काम प्रारम्भ कर दूँगा । लोग जब तुमसे मिलना चाहेंगे, तो मैं तुम्हें टेलीफोन कर दूँगा ।" उनके शब्दो का जिस प्रकार मुझ पर प्रभाव पडता था, उससे मेरी समझ मे यही आया कि वह मुझे उस समय बुला भेजेंगे जब वे सब मुझे भेडियों के समान नोच खाने के लिए तैयार होगे, यद्यपि हुआ यह कि कमेटी के सदस्य अत्यन्त ही विनीत रहे और मुझे किसी भी कठिनाई का कोई अनुभव नही हुआ ।

पीटर ने उन लोगों को साफ-साफ समझा दिया कि वह कई महीनों तक किसी भी हालत मे वाशिंगटन न पहुँच सकेंगे । अटलाटा के गिर्जाघर के सदस्यो के प्रति उन्हें कई दायित्वो का निर्वाह करना था । हुआ यह कि वाशिंगटन गिर्जाघर के सदस्य सत्रह महीनो तक धैर्यपूर्वक एक के बाद दूसरे पादरी को सुनकर पीटर को निमन्त्रण देने के लिए प्रस्तुत हुए, तो अपनी इच्छानुसार पादरी पाने मे उन्हें ग्यारह महीने और प्रतीक्षा करनी पडी । उन्होंने निश्चय कर लिया था कि वे आवश्यक प्रतीक्षा करते रहेंगे ।

उनके इस विश्वास का एक ही उत्तर हमारी समझ मे आया और वह यह कि ईश्वर वाशिंगटन मे हमारी उपस्थिति चाहता था । जब हमने अटलाटा छोडने का निश्चय किया तो अटलाटा गिर्जाघर के सदस्यों ने विवश होकर आसू बहाते हुए परन्तु धार्मिक उदारता के साथ हमारा निर्णय स्वीकार किया ।

• • •

वह अविस्मरणीय छुट्टी बिताने हम दोनो ब्रिटेन पहुँचे, जहाँ उन्होने मेरा परिचय स्कॉटलैंड के अपने प्रिय स्वजनो से कराया। इसके पश्चात् पहली अक्तूबर, १९३७ से पीटर ने वाशिंगटन मे पादरी के पद का कार्य-भार सँभाला। पीटर ने अपने स्वाभाविक लहजे मे कहा, "कैथरिन, मैं बहुत भयभीत हूँ, कदाचित् मुझे इस गिर्जाघर का काम स्वीकार न करना चाहिए था। मानो कि ये लोग मुझे पसन्द न करें, तो फिर ?"

हम पर जिन विशाल दायित्वो का भार आ पडा था, उन्हे देखकर हमारा भयभीत होना स्वाभाविक ही था। न्यूयार्क एवेन्यू के प्रार्थना-मच की गणना राष्ट्र के एक दर्जन प्रमुख प्रार्थना-मचो मे होती थी। अब्राहम लिंकन सहित अमरीका के आठ प्रेसिडेंटों ने वहाँ प्रार्थना की थी। अमरीका पहुँचने के दस वर्ष के भीतर ही देश की राजधानी के इतने ऊँचे पद पर पहुँचना बहुत बडी बात थी। कोई आश्चर्य नही कि पीटर को भय का आभास हुआ।

परन्तु अटलांटा मे श्रोताओ की जो कैफियत रही, वही न्यूयार्क एवन्यू गिर्जाघर के बाहर प्रति रविवार के प्रातःकाल दिखने लगी। गिर्जाघर के बाहर श्रोताओ की लम्बी कतारें प्रतीक्षा करने लगी। लिंकन चैपल और निचले व्याख्यान-भवन मे, उस भीड के लिए जो गिर्जाघर के भीतर समा न पाती थी, लाउडस्पीकर लगाने आवश्यक हो गये। अन्तत गिर्जाघर के अधिकारियो को यही निर्णय करना पडा कि स्थिति सँभालने के लिए प्रति रविवार को दोपहर के पहले दो प्रार्थना-सभाएँ हो—एक नौ बजे और दूसरी ग्यारह बजे।

अन्य पादरियो की भाँति पीटर भी श्रोताओ की भीड से प्रोत्साहित होते थे। तो भी उन्हें अपने दायित्व का पूरा खयाल रहता था और वह यह प्रयत्न करते रहते थे कि उनके व्यक्तित्व के सामने कही उनके श्रोता ईसा मसीह को न भूल जायें। कभी-कभी प्रार्थना-मच से किसी आमन्त्रित पादरी को बोलना होता था। ऐसे समय उनकी चापलूसी करने के लिए जब उनसे कोई कहता कि बहुत-से लोग यह जानकर घर चले गये कि

आज पीटर का व्याख्यान नहीं होगा, हो उन्हे इतना बुरा लगता कि वह क्रोधवश यहाँ तक कह डालते, "मैं नहीं था तो ईश्वर तो उपस्थित था। लोग गिर्जाघर आये क्यो थे, ईश्वर की उपासना करने या मेरा व्याख्यान सुनने ?"

जब कोई चर्च की सदस्या यह कहती कि वह अपने पडोसी के यहाँ काम करने जा रही है, क्योंकि वह पीटर मार्शल की भक्त नहीं, तो पीटर उसे कडवे शब्दो मे समझा देते कि उन्हें प्रभु के भक्तों मे ही दिलचस्पी है, पीटर मार्शल के भक्तो मे नहीं। एक दिन रविवार को वर्षा हो रही थी तो अपने कमरे की खिडकी से गिर्जाघर के बाहर लम्बी कतारो मे खडे लोगो को देखकर वह कहने लगे, "मुझे ऐसी ऋतु में इतने अधिक लोगों को प्रतीक्षा करते देखकर आश्चर्य होता है। जब मैं यह देखता हूँ तो मैं ईश्वर से प्रार्थना करने लगता हूँ।"

श्रोताओ की भीड मे थोडे-से वाशिंगटन के प्रसिद्ध व्यक्ति भी सम्मिलित होते थे। कठिन परिश्रम के मार्ग मे ही पीटर इतने उच्च पद तक पहुँचे थे, अतएव जनवादी आदर्श उनकी नस-नस मे व्याप्त था। पहले तो राजधानी के प्रसिद्ध व्यक्तियो की खुशामद से वह इतने हिचकते रहे कि उनकी वास्तविक आवश्यकताओ की पूर्ति का भी उन्हे खयाल न रहा। परन्तु शीघ्र ही उन्हे पता लगा कि धनी-मानियो के भाग्य में भी रोग, पीडा और वियोग रहते ही हैं, अन्य लोगो की भाँति उन्हे और उनके परिवारों को भी सहायता, सान्त्वना और परामर्श की आवश्यकता रहती है। राजधानी के पादरी की हैसियत से संयुक्त राज्य अमरीका के प्रेसिडेंट से लेकर सभी की सेवा करना उन्होंने अपने कर्तव्य का अविभाज्य अग मान लिया।

जब पीटर वाशिंगटन आये तो नवयुवक सघ के सदस्यो की सख्या १२ के निकट थी। यह स्थिति तुरन्त ही बदली और न्यूयार्क एवेन्यू नवयुवकों के गिर्जाघर के नाम से प्रसिद्ध हो गया। पीटर के अटल विश्वास से अमरीकी युवक-युवतियाँ कितने अधिक प्रभावित होते थे,

इसका दृष्टान्त मुझे कई वर्ष बाद एक लडकी ने सुनाया जो उन दिनो वहाँ थी ।

वुडरो विलसन हाई स्कूल का अनुशासन बिलकुल बिगड गया था । कई आमन्त्रित वक्ताओ का स्वागत हुल्लड या मटर के दानो और कागज के विमानो की बौछारो से किया जा चुका था । कई वक्ताओ को परेशान होकर मच छोड देना पडा था ।

जब लडकियो ने सुना कि उनके सम्मुख व्याख्यान देने के लिए एक पादरी बुलाये गये हैं, तो उन्होने इन्हें भी परेशान करने का निश्चय किया । लडकी का कहना था, "मेरी पक्की धारणा थी कि डा० मार्शल को लडकियो के हुल्लड से हताश होकर मच से हटना पडेगा ।"

पहले तो यह लडकी पादरी के खिले मुख और लहजे से ही प्रभा-वित हो गई । बोलते-बोलते वह गार्डेनिया नामक फूल की बात लड-कियो के सामने ले आये, वह कहते गये, "तुम जानती हो कि इस फूल मे उँगली लगते ही स्पर्श की सूचना देने के लिए उस पर भूरे दाग बन जाते हैं । तुम्हारे जीवन इसी फूल के समान हैं । शुद्धता की व्याख्या भी यही है । होनहारो, ससार को कोई विनाशकारी वस्तु न दो । ऊँचे आदर्शो, सुन्दर स्वप्नो और शुभ विचारो का स्वागत करो, उनसे परहेज न करो . ।"

अकस्मात् लडकी को पता लगा कि पूरे सभा-भवन की सभी लड-कियाँ मन्त्र-मुग्ध होकर पीटर मार्शल की ओर आँखें लगाये कानो से उनका एक-एक शब्द पीती जा रही हैं । उनके व्याख्यान के समाप्त होते ही शत-शत करतल ध्वनियो से लडकियो ने अपनी कृतज्ञता प्रकट की ।

चौदह वर्ष बाद भी लडकी को उनके प्रवचन का विषय और गार्डे-निया का दृष्टान्त याद रहा । उसने विचारपूर्वक कहा, "हम लडकियो को पीटर मार्शल के व्याख्यान सुनने का चाव रहता था । वह कोई ऐसी बात न कहते थे, जो हमारी समझ मे न आती हो, और अपने जीवन-निर्माण का पूरा-पूरा दायित्व वह हम पर ही रख देते थे ।"

अधिकाश पादरी किसी विचार के विकास के लिए ही अपने प्रवचन लिखते हैं। पीटर अपने प्रवचनो मे किसी चरित्र या भाव का चित्रण करते थे और श्रोताओ की भावना को जागृत करते थे। उनका यह ढग उन्हें स्वभावत प्राप्त था, क्योकि उनके विचार ही चित्रमय होते थे। छोटी-छोटी घटनाओ का नाटकीय चित्रण करने मे वह सिद्ध-हस्त थे। गुमनाम व्यभिचारिणियां और प्राचीनकाल के साइमन पीटर या जैकियस जैसे निम्न श्रेणी के विश्वासघाती उनके प्रवचनो से निकलकर उपस्थित श्रोताओ से सहानुभूतिपूर्वक अपने हाथ मिलाते जान पडते थे। अकस्मात् श्रोताओं को समझ मे आ जाता कि ये सब नर-नारी उनके ही जैसे थे। उनमे भी वही आशकाएँ, कमजोरियां, वही पापी प्रवृत्तियां, उद्धार की वही आशाएँ थी, और तब से अब तक एक-मात्र प्रभु यीशु ही उनके उद्धारक थे। यदि ईसा मसीह उनकी समस्याएँ हल कर सके थे, तो हम सब की समस्याओ का हल करना भी प्रभु के लिए सम्भव था।

पीटर की पक्की धारणा थी कि कर्म की वास्तविक प्रेरणा भावना से मिलती है, बुद्धि से नही। परन्तु उन्हे भावुकता से घृणा थी। सयुक्त राज्य अमरीका के विकास के दिनो मे जहां लकडी चीरने के कारखाने होते थे, वही कुछ साधारण बुद्धि के पादरी भी कर्मचारियो और मालिको की सेवा के लिए पहुँच जाते थे। उनके प्रवचनों मे एक प्रकार की कृत्रिमता होती थी। पीटर को यह कृत्रिमता नापसन्द थी, और पादरियो का कांपती आवाज मे बोलना भी वह अनुचित समझते थे। वह चालू विशेषणो से बचते थे और उनके मतानुसार बाइबिल की सरल और सीधी भाषा मे ऐसे वाक्याशो को कोई स्थान प्राप्त न था जैसे "प्रिय ईसा", "सुन्दर प्रभु", "मधुर उद्धारक", "सौन्दर्यपूर्ण पावन-आत्मा।"

• • •

पीटर को गृह-प्रबन्ध मे असाधारण आनन्द आता था, और घर में सामान लगाने के काम मे वह अपने स्वाभाविक जोश से छोटी-से-छोटी बातो मे भी मेरी सहायता करते थे। उनके शरीर की तौल सवा दो मन से कुछ अधिक थी। वह चाहते थे कि कोई भी फर्नीचर इतना कमजोर न हो कि उनके उस पर बैठने पर वह चरमराने लगे, जब वह सामान की इस प्रकार परीक्षा करते थे तो बहुत से दुकानदार भयभीत हो जाते होगे।

पतिदेव कमरे मे यथेष्ट प्रकाश चाहते थे। उनकी समझ मे यथेष्टता का स्तर जनरल एलिक्ट्रिक कम्पनी की प्रदर्शनी की चकाचौंध तक पहुँचता था। यदि मैंने कभी भोजन की मेज पर मोमबत्ती ही की रोशनी कर दी, तो मुझे उनकी फटकार के लिए भी तैयार रहना पडा। कोई मेहमान आया हुआ होता तो उनका व्यग्य इस प्रकार होता, "विलर्ड, मुझे आशा है कि तुम्हे अपना मुँह इस रोशनी में मिल सकता है। हाँ, है तो। नही, थोडा-सा बाई ओर हट गया है। यह तुम्हारा ही कमाल है, कैथरिन! ईश्वर की सौगन्ध, क्या हमारे लिए फैशन की नकल करना जरूरी है?"

हमारे घर के बैठक की सजावट से तो मालूम होता था मानो वह कोई सामुद्रिक सग्रहालय हो। समुद्र के चित्र चारो ओर लगे थे और यह सब पीटर का काम था। उन्हे सग्रह का हार्दिक चाव था। जिस चाव से छोटे बच्चे चिडियो के अडे जमा करते हैं, उसी चाव से वह समुद्र के दृश्य-चित्र, घडियाँ, टिकट, ढकने, चीनी और शीशे के बर्तन तथा खेल के सामान जमा करते रहते थे।

खेल के तो वह माहिर थे ही, जिस प्रकार उनकी आँखो का रग उनकी शारीरिक विशेषता से सम्बन्धित था, उसी प्रकार प्रतियोगितात्मक खेलो मे दिलचस्पी उनकी प्रकृति का अग थी। बेसबाल से क्रिकेट की बोलिंग तक, बच्चो के टिडलीविक्स से वयस्को की शतरज तक, ताश मे रमी से कन्ट्रैक्ट ब्रिज तक, सब खेलो के वह माहिर थे। किसी

भी खेल में व्यस्त होते थे तो तन्मयता के साथ। उनका कहना था कि यदि कोई खेल खेलने योग्य है, तो वह जीतने योग्य भी है, और आम तौर से वह जीत भी जाते थे। हमारे विवाह के आधा घण्टा पहले ही मेरी छोटी बहन से चीनी चेकर्स खेलते-खेलते अपनी जीत के लिए इतने तन्मय हो गये थे कि विवाह के लिए उनका कपड़े पहनना टलता रहा। मेरे परिवार ने उन्हें एक उपाधि प्रदान की थी—जी० जी० पी० (ग्रेट गेम प्लेयर) अर्थात् खेल के खास खिलाड़ी। उन लोगो का विचार था कि पीटर के पत्रो मे उनके नाम के आगे डी० डी० के बाद जी० जी० पी० की नई उपाधि बहुत शोभा देगी।

कुछ लोग कदाचित् आश्चर्य करें कि एक व्यस्त पादरी को खेल के लिए इतना समय किस प्रकार मिलना सम्भव था। बात यह है कि पीटर यह समय अपनी नीद से चुराते थे। जबसे उन्होने नल के कार-खाने मे काम करना शुरू किया था, तब से वह रात मे जागने के आदी हो गये थे, क्योकि अकसर उन्हे रात की पाली मे काम करना पडता था। आधी रात के निकट तो वह गम्भीर मानसिक श्रम के लिए तैयार होते थे और तभी उन्हे अपने प्रवचनो के लिए प्रेरणामय विचार मिलते थे। खेल मे जब सब थककर सोने के लिए जम्हाई लेने लगते थे तब भी पीटर नई बाजी जारी रखने के लिए तैयार दिखते। जब वह किसी को आगे खेलने के लिए तैयार न पाते, तभी वह हारकर कहते, "अच्छा, तो मालूम होता है कि मैं भी खेल समाप्त करके सोने जाऊँ।" मानो उनकी समझ मे नींद से बढकर कोई भयानक वस्तु न थी।

• • •

अपने किसी प्रवचन मे पीटर ने विवाह की व्याख्या इस प्रकार की कि "इस संस्कार से दो हृदय और दो जीवन मिलकर एक हो जाते हैं।" दाम्पत्य जीवन के प्रारम्भिक दिनो मे हमें वास्तविक एकता प्राप्त करने में कुछ व्यावहारिक कठिनाइयो का सामना करना पडा। निस्सन्देह,

पीटर मुझसे प्रेम करते थे। परन्तु वह आदि से अन्त तक प्रभु-सेवक थे और हजारो लोगो की सेवा के लिए सदैव प्रस्तुत रहते थे। उनकी पत्नी होने के नाते इस स्थिति को स्वीकार करना मेरे लिए अनिवार्य ही था।

गिर्जाघर के दफ्तर मे प्रतिदिन काम करने की आदत उन्होने अपने अविवाहित जीवन काल मे डाल ली थी। वह सप्ताह मे सातो दिन दफ्तर करते थे और बहुत-सी रातो को उन्हे सभाओ मे काम करना या प्रवचन देना होता था। वह कभी-कभी एक सप्ताह के लिए नगर के बाहर प्रार्थना-सभाओ के लिए चले जाते थे। नगर के बाहर काम ले लेने पर मेरी समझ से गिर्जाघर का हर्ज होता था, घरेलू जीवन में व्यतिक्रम पडता था और उनके स्वास्थ्य पर भी बुरा प्रभाव पडता था। मेरा कहना था कि बाहर के निमन्त्रण उनका समय एक प्रकार से छीनते ही थे, परन्तु पीटर मुझसे सहमत न होते। वह कहते थे कि कितने ही निमन्त्रण वह अस्वीकार करते रहते हैं, जबकि मेरा ध्यान उन निमन्त्रणो पर ही रहता जो उन्हे स्वीकार करने पडते थे।

पीटर का खयाल था कि बाहरी निमन्त्रणो के प्रति मेरा विरोध उनके कर्तव्य के प्रति मेरी ईर्ष्या का प्रतीक था और वह कहा करते थे कि समझ आने पर मेरा विरोध समाप्त हो जायेगा। यह सही है कि ईर्ष्या व्यक्ति की ही नही, सस्था की भी हो सकती है, और मैं इस दुर्गुण से मुक्त न थी। इस दुर्गुण से मुक्त होने के लिए वर्षों का अनुभव और चिन्तन आवश्यक था, जिसे प्राप्त करने पर ही मैं पीटर का दृष्टिकोण समझ सकी। इसके अतिरिक्त दाम्पत्य जीवन के प्रारम्भिक-काल मे मैं उस आतरिक प्रेरणा की शक्ति का अनुमान भी नही कर सकी जो पीटर को प्रवचनो के लिए निरन्तर विवश किया करती थी, जिसके सामने वह अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखना भी भूल जाते थे।

पीटर की धार्मिकता मे इतना प्रत्यक्ष और पूर्ण सत्य था कि उसमे दिखावे, ढोग या कपट का कोई स्थान न था। इसीलिए वह ईश्वर के

अस्तित्व, स्रोत और साहाय्य की बात सरल और स्मरणीय शब्दो मे व्यक्त कर पाते थे।

एक रात मैं पूछ बैठी, "अगला इनकम-टैक्स देने के लिए रकम कहाँ से आयेगी ?"

पीटर ने उत्तर दिया, "ईश्वर ही जाने, मुझे अभी तक उसका कोई आदेश नही मिला है।"

वह मसखरे न थे। उन्हें पूर्ण विश्वास था कि ईश्वर को उनके इनकम-टैक्स की अदायगी की फिक्र थी और वह इस सम्बन्ध में अवश्य हमारी सहायता करेगा।

कभी-कभी इस सहज विश्वास के कारण हास्यजनक स्थितियाँ भी सामने आ जाती थी। पीटर को पेरू-पक्षी का मास बहुत प्रिय था। परन्तु उन्हे मास का कीमा बहुत नापसद था। एक रात खाने से उन्होने बर्तन का ढक्कन उठाया तो देखा कि उसमे पेरू-मास का कीमा भरा है। उनके मुख पर अरुचि की रेखा दौड गई।

बोले, "कैथरिन, तुम्हें आज भगवान् से मुझ पर दया की भिक्षा माँगनी होगी। ईश्वर साक्षी है, पेरू के कीमे के लिए कृतज्ञ नही हो पाता और मैं उसे व्यर्थ भी नही करना चाहता।"

हम दोनो को पता लग गया कि जब तक हम दोनो एक साथ प्रार्थना करते रहेगे तब तक हमारे मतभेद गम्भीर न हो सकेंगे, उनमे कोई कटुता न आ पायेगी। हम दोनो ने यह पाठ इतनी भली भाँति याद कर लिया था कि पीटर उन दम्पतियो को भी यही परामर्श दिया करते थे जिनके पारस्परिक सम्बन्ध विच्छेद के निकट पहुँचने लगते थे। अपने दाम्पत्य जीवन मे हमे इस सत्य का पता लगा कि मतभेद का वह महत्व नही जितना महत्व इस दृढ निश्चय का है कि मतभेद को सुलझाना है। विवाह स्वर्ग मे तय होते हैं—ऐसा कहा जाता है। वास्तव में कुछ ही विवाह इस प्रकार के होते हैं, परन्तु सभी दाम्पत्य जीवनो को मृत्युलोक की यात्रा पार करनी पडती है और मृत्युलोक मे भी स्वर्ग

का आगमन होता है यदि हम उसके लिए आवश्यक कर्म करें। यह सत्य सभी दम्पतियो के लिए है, वे पादरी और उसकी पत्नी ही क्यो न हो।

● ● ●

जब कोई धर्मोपदेशक निर्भय होकर अपने विश्वास के आधार पर उपदेश देता रहता है, तो कुछ लोग उसके वैरी भी हो जाते हैं, यही बात पीटर के साथ भी हुई। लोग अपने पापो की चर्चा पसन्द नही करते। अकसर उनकी आलोचना व्यक्तिगत होकर कष्टदायक हो जाती, जैसे एक बार उन्हे फायर ब्रिगेड के एक अधिकारी की निन्दा करनी पडी, जो शराब के नशे मे आग बुझाने का सचालन कर रहा था। एक बार गदी बस्तियो पर उन्हे कुछ कहना पडा, "इन गदी बस्तियो से किराये की कमाई पानेवालो मे बहुत-से गिर्जाघर के सदस्य हैं, इस बात से गिर्जाघर की प्रतिष्ठा पर आघात ही होता है। गिर्जाघर को—अर्थात् हम सबको—इस सम्बन्ध मे क्या करना है ?"

वाशिंगटन मे नियुक्ति के दूसरे वर्ष गिर्जाघर मे इतनी चिंताजनक स्थितियाँ पैदा हुईं कि पेट की पीडा से मुक्ति पाने के लिए पीटर लगातार सोडा के लिए हाथ बढ़ाते रहते। उनके चिकित्सक को उनके पेट मे घाव का सदेह होने लगा। परन्तु पेट की पीडा उनकी मानसिक चिंता का परिणाममात्र थी। गिर्जाघर के कुछ सदस्य सुधार का विरोध करने पर तुले हुए थे और पीटर की धारणा थी कि यदि गिर्जाघर के पुराने सदस्य अपना दृष्टिकोण नही बदलते तो उनका पतन निश्चित है। नई पीढ़ी के लोग अब अधिक सख्या मे सम्मिलित होने लगे थे, जिस कारण पुरानों और नयो के बीच सघर्ष होने लगा था। गिर्जाघर के कुछ सदस्य अपने नये पादरी की सनक को समझ नही पाते थे। जब वाशिंगटन का तापमान नव्वे डिग्री के ऊपर जाने लगता था तो पीटर कभी-कभी कमीज पहने ही दिखाई देते थे। कुछ लोग इस पर भी बुरा मानते थे।

पीटर इन छोटी-छोटी आलोचनाओ से परेशान थे, और वह अपना पद असफल मानते थे। जब तक उन्हे गिर्जाघर के अन्दर फूट दिखाई देती रही, वह अक्सर पूछते थे, "उपदेश से क्या लाभ ? यदि गिर्जाघर के सदस्य एक-दूसरे से प्रेम न करें तो पारस्परिक सहयोग से भी वंचित रहे ?" प्रति तिमाही प्राय एक बार मुझे सचेत करते कि वह इस्तीफा देने की बात सोच रहे हैं। मैं पत्नी की भांति उन्हें उत्तर देती कि अपनी कायरता पर उन्हे लज्जित होना चाहिए, तो वह आह भरकर यह बुदबुदाते चले जाते, "हे ईश्वर, शान्ति कब हमे दर्शन देगी ?"

उनकी प्रा र्ना होती, "हे ईश्वर ! जहाँ कही हम गलती पर हो, वहीं हमे अपने सुधार के लिए प्रस्तुत करो, और यदि हम सही मार्ग पर हो तो इसी मार्ग पर चलना हमारे लिए सरल कर दो।"

स्पष्ट प्रार्थना, धैर्यशील परिश्रम, स्नेह और समय के अजेय समन्वय से पीटर का सघर्ष अन्तत. उनके पक्ष मे समाप्त हुआ। न्यूयार्क एवेन्यू और पीटर के मध्य जो चिन्ताजनक भेद उत्पन्न हो गये थे, उनमे से अधिकाश जब समाप्त हो गये तो उनके पेट की पीडा भी दूर हो गई और उन्हें सोडा की जरूरत नहीं पडने लगी। एक ऐसा समय भी आया जब वाशिंगटन के गाडीवाले भी तिराहे पर बने पुराने गिर्जाघर को 'पीटर मार्शल का गिर्जाघर' कहने लगे।

परन्तु पीटर इस चिन्ता काल को कभी भूले नही। वर्षों पश्चात् संयुक्त राज्य अमरीका की सीनेट मे उन्होने इस प्रकार प्रार्थना की, "हे भगवन् ! आज के कर्तव्य की सर्वोत्कृष्ट पूर्ति की शक्ति हमे दो। हम आज की ही चिन्ताओं को गनीमत मानें, और भविष्य की चिन्ताओं को आज ही ने न लाद लें। हमे चिन्ता के पाप से मुक्त करो, नहीं तो पेट के घाव हमारे अविश्वास के प्रतीक बनकर प्रकट होगे।" उनकी प्रार्थना अनुभव-जन्य थी।

● ● ●

१९४० के हिममय जनवरी मास मे एक दिन प्रात काल हमारे प्रथम पुत्र पीटर जान मार्शल ने जन्म लिया। पिता अपने बच्चे को दुलार मे 'वी' पीटर कहा करते थे। तत्पश्चात् पीटर के बहुत-से प्रवचनो मे इस शिशु का जिक्र होने लगा, क्योकि दृष्टान्त के लिए शिशु उन्हे अनायास प्राप्त हो जाते थे। सध्याकालीन प्रवचन प्रात कालीन प्रवचनो से अधिक सरल और घरेलू हुआ करते थे। ऐसे ही एक सध्याकालीन प्रवचन मे पीटर केप काड मे बने बेर के मुरब्बो के रग का वर्णन करने का प्रयत्न कर रहे थे कि उन्हे अकस्मात् एक उपमा सूझी। व्याख्या करने लगे, "मुरब्बे का सुन्दर झरबेरी-जैसा रग होता है, या मानो पिटने पर शिशु के गाल का रग—" अविवाहित पीटर को यह उपमा कैसे सूझती।

पीटर अपने पुत्र को बहुत प्यार करते थे, साथ ही उस पर अनुशासन करना भी उन्हे आता था। वह ऐसे लोगो मे नही थे जो अपने शिशुओ को नहलाया-धुलाया करें। ये काम उन्होने मेरे क्षेत्र के समझ रखे थे। परन्तु आगे चलकर जब कभी पीटर जान कोई शरारत करता और दण्ड देना आवश्यक होता, तो पिता ही दण्ड देने का काम करते। तो भी दण्ड मे क्रोध का कोई अश न रहता। एक बार उन्होने अपने बेटे से कहा, "पीटर, तुम बेहद शैतान हो।" उसका हाथ पकडकर कमरे के भीतर ले गये और द्वार बन्द कर लिये। थोडी-सी खामोशी रही, जिसके पश्चात् बच्चे के चूतड पर जोरदार थप्पड के साथ जोर से रोने की आवाज सुनाई दी। द्वार खुला और बाप-बेटे एक-दूसरे का हाथ पकडे दिखाई दिये।

ऐसे अवसरो के होते हुए भी हमारे मैन्स-भवन मे भोजन क समय का वार्तालाप कोई सुनता तो वह हमारे पुत्र को अपने पिता से भयभीत होते न पाता। पीटर चाहते थे कि भोजन के समय सब प्रसन्न-चित्त रहे, पारिवारिक बैठक मे मनोरजन की व्यापकता रहे। इस मनोरजन मे उनका बहुत योग रहता था। ऐसा अक्सर होता कि भोजन करते-

पीटर को प्रार्थना के प्रभाव मे अटल विश्वास था। उनकी धारणा थी कि कभी-कभी ऐसे योग आते हैं जब हमे अपनी समस्याएँ ईश्वर को अर्पित कर देनी चाहिए और फिर सन्देह और चिन्ता से मुक्त होकर हमे उन समस्याओ के सम्बन्ध मे निष्क्रिय हो जाना चाहिए। बात दृष्टान्त से समझने के लिए उन्होने अपने प्रवचन मे एक परिवार की कहानी सुनाई जिसे महासमर काल मे एक वैतनिक सहायिका की भारी आवश्यकता प्रतीत हुई। उपस्थित श्रोताओ मे बहुत-से तुरन्त ही समझ गये कि पादरी अपने परिवार की ही बात कर रहे हैं।

मार्च १९४३ मे मुझे पलग पर लेटे रहने का आदेश हुआ। डाक्टरो को सन्देह था कि मुझे यक्ष्मा हो गया है। परन्तु खाँसी न थी, इस कारण मुझे घर पर ही रहने दिया गया। अट्ठारह महीने तक मुझे बराबर पलग पर ही लेटे रहना पडा। सितम्बर १९४४ तक पिछले पन्द्रह महीनो के भीतर चौदह नौकरानियाँ आईं और गईं। सभी अधिक वेतन पर सरकारी नौकरियो मे लग गई थी। इस प्रकार गृहस्थी के अस्त-व्यस्त होने के कारण हमारे चार वर्ष के पुत्र पर अरक्षित जीवन के लक्षण प्रकट होने लगे। मैं चगी नही हो पा रही थी, और पीटर के काम का भी हर्ज होता रहता था।

हमने नौकरानियो के लिए सभी मान्य ढगे अपनाये। विज्ञापन छपवाये, काम दिलानेवाली सस्थाओ को लिखा, मित्रो से सिफारिशें उठवाईं। परन्तु सब प्रयत्न विफल रहे। अन्तत ऐसा दिखाई देने लगा कि कुछ समय के लिए परिवार के सदस्यों को एक-दूसरे से अलग होना होगा। मैं किसी विश्राम गृह चली जाती, पीटर जॉन मेरे माता-पिता के पास रहने चला जाता और पीटर होटल की शरण लेते।

इस विकट परिस्थिति मे हमने अपनी समस्या भगवान् के हवाले कर दी। हमने उससे कहा कि यदि वह यह चाहता है कि जब तक मैं चगी न हो जाऊँ—और मेरे चगे होने की अवधि का किसी को पता न था—तब तक के लिए हम अपनी गृहस्थी तितर-बितर कर दें, तो हमे

उसकी आज्ञा शिरोधार्य है। फिर अपने मन की बात इस प्रकार जोडी, "परन्तु यदि तू चाहता है कि हम सब एक साथ रहें, तो हम आशा करते हैं कि तू किसी को हमारे परिवार की देखभाल के लिए भेज देगा। समस्या अब तेरी है, हम निष्क्रिय रहने की प्रतिज्ञा करते हैं।" मुझे यह सोचकर, अब भी, आश्चर्य होता है कि हमने ऐसी प्रार्थना का साहस तो किया ही, हम अपनी प्रतिज्ञा पर अटल रहे, क्योंकि फिर हमने नौकरानी ढूँढने का कोई भी प्रयत्न नहीं किया।

हमे जो उत्तर मिला उससे यह प्रत्यक्ष हो गया कि व्यावहारिक बातो मे भी भगवान् की सच्ची सहायता मानव को प्राप्त होती है। वह दया करने मे संकोच नही करता। देता नही, उँडेलता है।

केप काड मे हमने ग्रीष्म मे रहने के लिए एक कुटी बना ली थी। वहीं हम अपनी छुट्टी के दिन बिता रहे थे। हमे ६ सितम्बर को बुधवार के दिन वाशिंगटन पहुँचना था। हमने निश्चय कर लिया कि हमे उस तिथि तक कोई सहायिका मिल जानी चाहिए।

कैपिटल हिल पर पत्रकारिता मे लगी अलमा डीन फुलर नामक एक लडकी, हमारे गिर्जाघर की प्रार्थना-सभाओ में आया करती थी प्रत्येक गिर्जाघर में लडकियो का एक दल नियुक्त रहता है जो समूह-गान करती हैं। पहली सितम्बर को इस लडकी ने हमारे गिर्जाघर के संगीत-दल मे सम्मिलित होने का निश्चय किया। वर्षो से यह लडकी भगवद्-दर्शन की खोज मे थी। उसने आकर कहा, "मुझे पता था कि कुछ लोगों को धर्म का वास्तविक ज्ञान प्राप्त होता है और वे असीम आनन्द का अनु-भव करते हैं। परन्तु मुझे यह ज्ञान मिला नहीं। मैं खोज मे रही, परन्तु यह ज्ञान मेरी पकड में नहीं आ सका।"

कैपिटल हिल मे जिस काम पर वह लगी थी उससे उसे शान्ति और सन्तोष प्राप्त न था। उसे यह काम अपनी प्रवृत्ति के प्रतिकूल लगता था। उनका कहना था, "मुझे ऐसा लगता था कि मेरी प्रवृत्ति किसी दूसरी ओर है। परन्तु मुझे इसका पता न था, ऐसा लगता था

कि मुझे घर के वाहर होने का आभास तो था, परन्तु अपने घर का पता न था।"

अल्मा डीन सगीत के लिए अपनी परीक्षा कराने गई तो हमारे सगीत-सचालक उपस्थित लडकियो के सामने हमारी समस्या ले आये। उन्होने पूछा, "तुम लोगो मे किसी को ऐसी लडकी की जानकारी है जो आगामी शरद् मे किसी मुनासिव काम पर लगने के लिए तैयार हो?"

उसी क्षण भगवान् ने हमारी प्रार्थना के साथ कुमारी फुलर की भी सुन ली। लडकी ने आगे वताया, "अकस्मात् मुझे ऐसा लगा मानो श्री बीशलर (सगीत-सचालक) मुझसे ही पूछ रहे हैं, किसी और से नही। मार्शल-दम्पति से मेरा कोई पूर्व-परिचय न था। मुझे यह भी पता न था कि श्रीमती मार्शल बीमार हैं। परन्तु बीशलर साहव ने जो कुछ कहा वह निग्रान की रोशनी मे लिखे अक्षरो की भाँति मेरे हृदय-पटल पर अकित हो गया। वार-बार मेरी अन्तरात्मा मुझसे कह रही थी कि यह काम मन्जूर करने के लिए क्यो न तुम्ही तैयार हो जाओ।"

अल्मा डीन पहले तो इस आदेश से आकर्पित नही हुई। उसे घर का काम करना पसन्द न था। खाना पकाना वह जानती न थी। उसका विचारक्रम इस प्रकार चला, "मैं मार्शल-दम्पति के किस काम की हो सकूँगी? नौकरानी के वेतन पर मेरी गुजर कैसे होगी? कैपिटल हिल मे जिस काम पर मैं नियुक्त हूँ उस पर मेरे स्वजनो को गर्व है। उसे छोडकर कम वेतन पर अनुपयुक्त काम करने के निश्चय की सफाई मैं उनके सामने कैसे दूँगी?" इन प्रश्नो के उसके सामने रहने पर भी भगवान् का आदेश उसके हृदय से हटा नही। वह उसे आगे की ओर ठेलता ही रहा।

बुधवार तक भगवान् के उत्तर की हमे प्रतीक्षा करनी थी। उसी दिन कुमारी फुलर मुझसे मिलने आई। उसकी गहरी भूरी आँखो मे सौन्दर्य अवश्य था, परन्तु उनमे अशान्ति, असतोप और भय की झलक

भी थी। वह मुझे अपनी स्थिति से असंतुष्ट लगी, परन्तु उसकी बात मे सकोच न था। सगीत-परीक्षा की घटना उसने शान्तिपूर्वक मुझे बता दी।

उसने हठपूर्वक कहा, "मैं इस काम के योग्य नही, मैं इसे चाहती भी नही। परन्तु आपसे बात करने इसलिए आई हूँ कि आज रात को शान्तिपूर्वक सो सकूँ। साफ-साफ कहूँ श्रीमतीजी, कोई बात ऐसी है जो मुझे समझ मे नही आती। इतना ही कह सकती हूँ कि मैं यहां हूँ, परन्तु इतना भी नही जानती कि यहां आई क्यों?"

इतना सुनते ही मैं भी उसकी भांति उत्तेजित हो गई। मैंने कहा, "इस पहेली की खोई कड़ियां मुझसे लो।" यो मैंने उसे अपनी समस्या, उसके विषय मे भगवान् से अपनी प्रार्थना और उस दिन तक दैवी निर्णय की प्रतीक्षा की बात बताई।

पलग के पास बैठी लडकी बहुत चकित दिखाई दी। उसकी समझ मे न आया था कि जो शक्ति उसे ठेलकर मेरे पास तक ले आई थी वह भगवान् की प्रेरणा ही थी। दोनों के लिए स्थिति के क्रान्तिकारी लक्षण थे। अतएव हमने तय किया कि प्रकाश के लिए हम दोनो दो सप्ताह तक भगवान् से प्रार्थना करते रहे। लडकी ने मुझे अपना सक्षिप्त नाम एडी बताया।

यो एडी अर्द्धचेतन अवस्था मे मुझसे विदा हुई।

दो सप्ताह के पश्चात् उसे प्रत्यक्ष उत्तर मिल गया। एडी जहां नौकरी करती थी वहां उसके मालिक ने चेतावनी दी कि जिस काम पर वह लगी है उसे छोडना उसके लिए आत्महत्या के बराबर होगा। अपना काम छोडकर घर की नौकरानी बनना उसकी भी समझ के प्रतिकूल था। तो भी इस परिवर्तन को उसने भगवान् का आदेश मान लिया। छ वर्ष से वह ईश्वरीय अनुकम्पा की प्रार्थना कर रही थी। जब उसे ईश्वर का आदेश मिला, तो इन्कार करना अब उसके लिए असम्भव था।

जिस साहस से उतरती छतरी का चालक धरती पर पहली बार कूदता है, प्राय उसी साहस से वह अपनी नौकरी छोडकर मेरे घर मे आ गई। उसे एक अलग कमरा दिया गया था। उसमे अपना सब सामान रखते ही अकस्मात् उसे प्रमाण मिल गया कि उसका निर्णय सही ही है।

एडी ने कुछ दिनो बाद मुझसे कहा, "अपने जीवन मे पहली बार मुझे अकस्मात् पता लगा कि उचित समय पर उचित स्थान पर पहुँचने का क्या प्रभाव होता है। यह कुछ ऐसा ही था जैसे कोई किसी जादू के चक्कर से मुक्त होकर पृथ्वी पर उतरे तो धीरे-धीरे क्षितिज और उससे सम्बन्धित सभी दृश्य उसे अपनी-अपनी जगह पर सही दिखाई देने लगें। मेरी अशान्ति और उलझन बिलकुल समाप्त हो गई। अब मैं जान पाई हूँ कि हमे ईश्वर से जो-कुछ आदेश मिलते हैं उनके पालन से सासारिक जीवन की सभी बातें हमे अपनी-अपनी जगह पर सही रूप मे मिल जाती हैं। उस रात से मेरे जीवन का नया अध्याय प्रारम्भ हुआ है।"

एडी ने सोचा था कि कदाचित् वह कुछ ही महीनो तक हमारे पास रहे, परन्तु वह चार वर्ष तक हमारे साथ रही।

उसने मेरे घर की देखभाल ही नही की, वह मेरी प्यारी सखी भी हो गई। उसके ही स्थायी और सस्नेह सत्सग के कारण मेरा अकेलापन कटा और मैं शीघ्र चगी भी हो गई। जो सौन्दर्य और चरित्र उसके भीतर सुपुप्त था, वह हमारी आँखो के सामने जागृत होकर प्रत्यक्ष हो गया। वह वहुत प्रसन्नचित्त और समझदार हो गई और नेतृत्व के अपूर्व गुण भी उसमे विकसित होने लगे।

हमे अपनी प्रार्थना का फल कल्पना से कही अधिक सुन्दर मिला। पीटर, एडी और मैं एक-दूसरे के पूरक हो गये, और एक-दूसरे की आवश्यक सहायता करने लगे। जब पीटर राष्ट्रीय राज्य-सभा के पादरी हुए तो एडी ने कैपिटल हिल के काम मे जो अनुभव प्राप्त किया

था वह उनके बहुत काम आया। हम तीनो के बीच स्नेह की जो कड़ियां बनीं, उन्हें अनन्तकाल तक स्थायी रहना है।

पद-परिवर्तन से एडी को कोई सामाजिक या आर्थिक हानि भी नही पहुँची। कोई प्रयत्न न करने पर भी सन् १९४८ मे नेशनल रेड-क्रास के दफ्तर मे उसे एक अच्छी जगह मिल गई और पुराने काम मे उसका जितना वेतन था, उसके दूने से अधिक उसे मिलने लगा।

एडी को हमारे पास भेजने की कृतज्ञता भगवान् के प्रति हम दोनों स्वीकार करते रहे। पीटर का ईश्वरीय अनुकम्पा पर जो अटल विश्वास रहा था, वह इस सुन्दर घटना से पुष्ट ही हुआ।

● ● ●

कैथेड्रल एवेन्यू नामक सडक के दोनों ओर एक छोर से दूसरे छोर तक फारसिथिया की झाडियो मे फूल खिले हुए थे। ३१ मार्च, १९४९ के रविवार का प्रात काल बहुत सुन्दर लग रहा था। धूप खिली हुई थी। और कोई पता न था कि यह रविवार किसी दूसरे से भिन्न होगा। ९ बजे की प्रार्थना के लिए आठ बजकर बीस मिनट पर पीटर नियमानुसार रवाना हो चुके थे।

दस बजे फोन की घण्टी बजी। पीटर के सचिव ने मुझे सूचना दी कि उन्हें अपना प्रवचन रोक देना पडा। अकस्मात् उन्होने अपना हृदय पकड लिया और मच से झुककर पुकारा, "गिर्जाघर में कोई डाक्टर है? हो तो तुरन्त मेरी सहायता करो।" शीघ्र ही वह सडक पार जार्ज वाशिंगटन विश्वविद्यालय के अस्पताल पहुँचा दिये गए।

दो दिनो से पीटर अपनी बाहों में पीडा की शिकायत कर रहे थे। हम समझे थे कि यह पीड़ा केवल पुट्ठों की होगी। अब बारम्बार एक ही भयावह विचार हृदय मे आने लगा। किसी को कहने का साहस न था, परन्तु सभी सुहृदो को प्रत्यक्ष हो गया होगा कि उन पर हृद-रोग का पहला आक्रमण हुआ है।

जरूरी थी। पीटर ने कभी इस पद के लिए कोई प्रयत्न नही किया था और पहले तो वह इस पद को स्वीकार करने से भी हिचकिचाये। सेवा के प्रारम्भिक दिनो मे उन्हे शीघ्र विश्वास न होता था कि राज्य-सभा के सदस्य उनकी प्रारम्भिक प्रार्थना को आवश्यक सकेत से अधिक क्या महत्व देंगे। उनका कहना था, "राज्य-सभा भवन का वातावरण प्रार्थना के प्रतिकूल ही रहता है। कागज इधर-उधर उलटे जा रहे हैं, खाँसी का सिलसिला चल रहा है, और यह भावना व्याप्त है कि प्रार्थना से निपट लें जिससे महत्व की बातो पर गौर करने का समय मिले। इस भवन मे तो प्रार्थना करना ऐसा ही है जैसे बेसबाल टूर्नामेंट के पहले दिन ग्रिफिथ स्टेडियम मे कोई खडा होकर प्रार्थना करने का प्रयत्न करे।"

कुछ अनुभव के पश्चात् उन्होने एक बार कहा, "मुझे पता लगा है कि मेरी प्रार्थना जितनी लम्बी होती है, उतनी ही कम पसन्द की जाती है।"

कालातर मे जब श्रोतागण उनके गुणो से परिचित हो गये तो स्थिति मे भी परिवर्तन हुआ। वाशिंगटन के प्रसिद्ध पत्रकार ट्रिस काफिन ने एक बार उनके विषय में लिखा, "वह सीनेट के अत करण के रक्षक हो गये हैं। उनके भाषण मे माधुर्य और शील है, परन्तु उनके शब्द आडम्बर और बकवास को काटते चले जाते हैं।" उन सदस्यो की संख्या बढने लगी जो अपने दफ्तर और समिति-कक्ष कुछ पहले से छोड देते थे, जिससे उन्हे प्रारम्भिक प्रार्थना सुनने को मिल जाये। दोनो दलो के सदस्यो से उन्हे आदर और हार्दिक स्नेह का दान मिलता रहा। एक बार सीनेट के सदस्य आर्थर वैडेनबर्ग ने कहा, "पीटर से परिचित होते ही हम उनसे स्नेह करने लगते हैं। मेरे पादरी मेरे घनिष्ट और अमूल्य मित्र हैं।"

पहले पीटर को इस बात से परेशानी हुई कि प्रार्थना होने के पहले ही पत्रकार उनसे उसकी प्रतिलिपि की माँग करने लगे। उनकी आदत बिना लिखे प्रार्थना करने की थी। पत्रकारो की माँग का परिणाम यह

होता था कि प्रार्थना लिखे बिना वह बोल नहीं सकते थे, परन्तु पीटर ने शान्तिपूर्वक भगवान से उनकी प्रार्थना के संचालन की याचना की। वह चाहते थे कि उनकी प्रार्थना सीधी उनके हृदय से निकले। यह प्रार्थना मंजूर हुई।

तुरन्त ही संयुक्त राज्य अमरीका भर के समाचारपत्रों में उनकी प्रार्थना की संक्षिप्तता, उनकी कटुता और उनकी स्थिति-अनुकूलता की प्रसिद्धि होने लगी। न्यूयार्क के 'टाइम्स' पत्र ने यह टिप्पणी की कि राज्य-सभा के सोलन जैसे बुद्धिमानों की बुद्धि के नेता की आध्यात्मिकता का ढंग विशेष रूप से स्फूर्तिदायक है। इस बात के उदाहरण के लिए कि उनकी प्रार्थनाएँ स्थिति के अनुकूल होती हैं, पत्र ने नीचे लिखा उद्धरण दिया—

"राज्य-सभा के सामने बहुत-से काम थे। इनमें एक प्रस्ताव पर कड़ी बहस भी होनी थी जिसमें पोस्टमास्टरों की नियुक्ति के सम्बन्ध में जाँच की माँग की गई थी। इस वातावरण में मार्शल की प्रार्थना इस प्रकार थी

'हम पिस्सुओं को पकड़ने का प्रयत्न करते हैं और ऊँटों की ओर ध्यान भी नहीं देते। हे भगवान्, इस स्थिति में हमें एक नई बुद्धि दो जिससे हम महत्व को श्रेणीबद्ध कर सकें और हमें इस बात की योग्यता दो कि छोटी बात को देखते ही हम उसे पहचान सकें और उपयुक्त ढंग से उसे निपटा भी सकें।' "

'लाइफ' पत्रिका में एक बार यह प्रकाशित हुआ—

"डाक्टर मार्शल को सबसे पहले घमंडियों को ठिकाने लगाने का कष्ट उठाना पड़ा। संयुक्त राज्य अमरीका के राज्य-सभा भवन में एक दिन उन्होंने इस प्रकार प्रार्थना की, 'हे परमात्मा, हम स्वीकार करते हैं कि हमें आपकी आवश्यकता का ज्ञान है, तो भी अपने घमंड और हठधर्मी के कारण हम आपके नेतृत्व के बिना काम चलाने का प्रयत्न करते हैं। हम जो राई को पर्वत बना देते हैं और अपने साथ अपनी

समस्याओ का महत्व भी जिस प्रकार बेतरह बढा देते हैं, उसके लिए हमे क्षमा कीजिये।' "

अपने पादरी से बोलचाल के ऐसे शब्द सुनकर राज्य-सभा के सदस्य अकसर यह कहने लगते कि उनके लिए भगवान् से प्रार्थना के साथ उनकी बुद्धि-सुधार के लिए भी प्रार्थना की जाती है।

वास्तव मे यह बात थी नही। पीटर समाचारपत्रो के इस मत से बराबर असहमत रहे कि वह सदस्यो से प्रार्थना करते थे जिससे कि वह विधान-निर्माण मे उनको प्रभावित कर सकें। उनका कहना था कि उनकी प्रार्थना भगवान् से होती थी सदस्यो से नही। पीटर कानून के काम मे हस्तक्षेप नही करना चाहते थे। परन्तु वह यह अवश्य चाहते थे कि सदस्य ईश्वरीय न्याय से प्रभावित हो। सीधा-सादा सत्य तो यह है कि उनकी सक्षिप्त प्रार्थनाएँ बहुधा अर्थपूर्ण दिखाई देती थी, क्योकि पीटर के माध्यम से ही ईश्वर तक उनकी प्रार्थना पहुँचती थी। 'काग्रेसनल रिकार्ड' के पृष्ठो मे हमे उनकी दैव प्रेरित प्रार्थनाओ की अथक जीवन-शक्ति का प्रमाण मिलता है।

o o o

काल के प्रभाव से हम दोनो मे वहुत-से परिवर्तन हुए। हमारे दाम्पत्य-जीवन मे हृदय और मस्तिष्क की एकताएं बढती गईं, यद्यपि कभी निर्जीव सधि भी नही रही। एक बात मे हम कभी भी एक-दूसरे से पूर्णरूप मे सहमत नही हो सके और वह थी उपदेश के लिए नगर के बाहर पीटर के यात्राएँ। अब प्रश्न इस नीति की सगति का नही रह गया था, क्योकि हम दोनो जानते थे कि यात्राओ के कारण उनकी जान का खतरा था।

एक बार पीटर ने अपने एक मित्र से निजी तौर पर कहा, "तुम जानते हो कि मेरे सबसे अधिक प्रभावशाली प्रवचन वही हुए है जिनको मैंने कैथरिन के साथ तैयार किया था। और घर के बाहर यात्रा करके

मेरे वही प्रवचन सबसे अधिक प्रभावोत्पादक हुए हैं जिनके लिए मैंने कैथरिन की मर्जी के अनुकूल यात्रा की है। मुझे प्रवचन देने के निमन्त्रण स्वीकार करने पडते हैं। भगवान् का आदेश हुआ कि मैं उपदेश देता रहूँ। यह आदेश भगवान् ने वापस नही लिया है। यदि वह चाहते हैं कि मैं जीवित रहूँ तो वह मेरे जीवित रहने का प्रवन्ध करते रहेंगे। कैथरिन को मैं कैसे यह सब समझाऊँ ?"

उन्होने हृद्-रोग के पहले आक्रमण के पश्चात् जब फिर से अपना काम प्रारम्भ किया तो कुछ समय तक वह अधिक काम के सम्वन्ध में सतर्क रहे। परन्तु क्रमश उन्हें अपनी प्राकृतिक जीवन-शक्ति और उमग फिर से मिल गई। वह चगे दिखाई ही नही देने लगे, वल्कि अपने को चगा मानने भी लगे, और जीवन-रस मे पहले-जैसा आनन्द भी लेने लगे। यों वह अत्यधिक परिश्रम के लिए प्रोत्साहित हुए। अन्य लोग भी उनसे अत्यधिक सेवा की आशा करने लगे।

उनकी सेवाओ की गति वढती चली गई। हृद्-रोग के आक्रमण के एक वर्ष पश्चात् पीटर के निकटतम स्वजनो को पता लग गया कि वह खतरे के भीतर फिर आ रहे हैं। प्रश्न था, उन्हें हम रोकें कैसे। पीटर के सचिव, गिर्जाघर के कर्मचारियो और वहुत से मित्रो से मिलकर हम लोगो ने एक प्रकार से सस्नेह षड्यन्त्र रचा। यथाशक्ति हम सवने उन्हे काम से वचाने की कोशिश की। हम उन्हे शान्त जीवन के लिए समझाते रहे, परन्तु हमारे तर्कों का उन पर कोई असर नही हुआ। इनके विरुद्ध उन्होने अपने मस्तिष्क के कपाट वन्द कर रखे थे।

मृत्यु से लडने के पश्चात् उनके उपदेश पहले से अधिक अधिकार-पूर्ण होने लगे। ऐसा लगता था मानो पीटर किसी पठार के शिखर पर चढ गये हो, जहाँ से उन्हे क्षितिज पर अपना जीवन-लक्ष्य प्रत्यक्ष दिखने लगा था। अभी से उन्होंने अपने को उन पादरियो की लम्बी सूची में डाल लिया था जो न्यूयार्क एवन्यू प्रेस्विटेरियन गिर्जाघर की सेवा कर चुके थे। जब एक पादरी ने उनसे पूछा, "वताओ पीटर, अपनी बीमारी

में तुमने क्या सीखा ?" तो पीटर ने तुरन्त उत्तर दिया, "क्या तुम वास्तव मे जानना चाहते हो ? मैंने ईश्वर के राज्य मे यह सीखा कि पीटर मार्शल के बगैर भी भगवान् के राज्य का काम चलता रहेगा।"

क्रमशः मुझे पता लग गया कि हम लोगो की इच्छा के अनुकूल अपने प्राणो की रक्षा के लिए श्रम की मात्रा कम करके उन्हे अपने पादरी-जीवन के पद का स्तर नही गिराना है। उन्हें जो मार्ग दिखाया गया, वह था अपनी ही चिन्ता करना, श्रम की मात्रा घटाते जाना और जीवन-चर्या को सीमित तथा सकुचित करना—और यह सब ऐसे समय पर जब उन्हें अपने मे जवानी की सब शक्तियो की पूर्णता का आभास था। इस प्रकार सब कुछ देख-सुनकर भी उन्होंने अपनी कार्यशीलता मन्द न करने का ही निश्चय किया।

इसलिए उन्होंने अपने को पूर्ण रूप से भगवान् की शरण मे अर्पित कर दिया। अपनी ओर से उन्होने निश्चय किया कि वह अपना काम यथाशक्ति करते रहेगे। स्वास्थ्य-सहित उसके परिणाम ईश्वर के सुपुर्द रहेगे। किस प्रकार पीटर अपने निश्चय मे मेरी सहमति प्राप्त करें—यही समस्या वह नही हल कर सके। वह जानते थे कि मैं उनकी रक्षा का प्रयत्न करती रहती थी और अपनी दुविधा की निवृत्ति का मार्ग ढूंढने मे कितनी तल्लीन रहती थी।

मैंने अपने को इस प्रकार समझाया कि पीटर के लिए मेरी प्रार्थनाएं सुनी नही गईं, क्योकि मैंने भगवान् से अपनी देन को कम करने की प्रार्थना की थी। कदाचित् भगवान् पीटर को हृद्-रोग से पूर्ण रूप मे मुक्त करना चाहते थे, जिससे वह दीर्घायु प्राप्त कर सकें।

पीटर के हृदय पर रोग के पहले आक्रमण की मुसीबत मे प्रार्थना के लिए मैंने इस विषय के विशेषज्ञो से परामर्श लिया था। पीटर की पूरी जानकारी और सहयोग से मैंने उन विशेषज्ञो से पथ-प्रदर्शन की सहायता फिर मांगी। यहां भी हम विफल रहे।

अन्तत वह जो चाहते थे उसके लिए ही मैं राजी हो गई, और

पीटर को मैंने भगवान् के सुपुर्द किया—वह उनका भला करे या बुरा। जब मैंने पीटर को अपना यह निश्चय बताया तो उन्हें अत्यन्त सन्तोष हुआ। उनकी समझ मे आया, मानो मैंने कह दिया हो, "ईश्वर के आदेश से अधिकाधिक उपदेश देते रहो, मैं अब हस्तक्षेप नही करूँगी।"

इस प्रकार उनके प्रवचनों की सख्या बढने लगी, उनका प्रभाव भी बढने लगा और मैं सस्नेह उनका साथ देती रही। कभी उन पर गर्व करती और कभी भावी की कल्पना से व्याकुल होती। हृदय की दुश्चिन्ता मे मैं अपने को बिलकुल असहाय पाती।

● ● ●

२५ जनवरी सन् १९४९ के प्रातःकाल लगभग साढे तीन बजे पीटर ने छाती और बाहो मे कठिन पीडा होने पर मुझे जगाया। उन्हे मेरा नाम ही लेना था क्योंकि किसी कारणवश मैं पडी जाग ही रही थी।

"कैथरिन, बहुत दर्द है, डाक्टर को तुरन्त बुलाओ।"

पलग के निकट रखे फोन तक पहुँचते-पहुँचते मेरा हृदय भी बहुत जोर से धडकने लगा।

डाक्टर की प्रतीक्षा करते समय पीडा पहले तो कम हुई, परन्तु अकस्मात् फिर बढ गई। डाक्टर ने पहुँचते ही निश्चय किया कि पीटर को अस्पताल तुरन्त पहुँचा दिया जाये।

पीटर ने पहले तो त्योरियाँ चढाईं, किन्तु शीघ्र ही मुस्कराने का प्रयत्न करते हुए बोले, "मुझे अधिक आशा नहीं। कितना कष्टदायक उपद्रव है यह।"

बच्चे को अकेला छोडकर पीटर के साथ अस्पताल की गाडी मे जाना मेरे लिए असम्भव था। पलग की बगल मे खडी मुझसे उनका हाथ नहीं छोड़ते बना। पीटर समझ गये और अपनी उँगलियो के सकेत से उन्होने मुझे हार्दिक आश्वासन दिया।

जब गाडी चली गई तो मैं ऊपरी खण्ड पर पहुँचकर अपने पलंग के

निकट घुटने टेककर प्रार्थना करने लगी। परन्तु बोलने के पहले ही मुझे भगवान् की भक्ति मे डूबने जैसा अनुभव हुआ। अब भगवान् से कुछ मांगना मुझे अनावश्यक जान पडने लगा था। उस अथाह भक्ति मे मैंने पीटर-सहित अपने को सब प्रकार से समर्पित कर दिया। उस समय मैं समझी कि इस समर्पण से इस लोक मे पीटर रोगमुक्त हो जायेंगे। परन्तु जो मैं न जानती थी वह भगवान् को ज्ञात था। अस्पताल की गाडी जाने से पहले मैंने उनको निचले कमरे से देखा था। जीवित पीटर का मेरे लिए यही अन्तिम दर्शन था।

उसी प्रात काल सवा आठ बजे पीटर का स्वर्गवास हुआ। अर्द्ध-निद्रा मे अत्यन्त शान्तिपूर्वक वह ससार से विदा हुए। आठ बजकर बीस मिनट पर डाक्टर ने फोन से मुझे सूचना दी। सूचना से इतनी अचेत हो गई कि रो भी न सकी। कुछ समय बाद मुझे अस्पताल मे पीटर के पलग के पास एक घण्टा बैठने का मौका मिला।

द्वार खोलकर जब धीरे से मैं उनके छोटे-से सादे कमरे मे पहुँची, तो मुझे ऐसा लगा मानो पूरा कमरा भगवान् की आभा से भरा है और मुझे दो दैवी आत्माओ के दर्शन हुए—ईसा मसीह और सन्त पीटर—अचल रूप में नही, मेरी ओर बडे स्नेह और सहानुभूति से निहारते हुए।

मैं बडी देर तक उनका हाथ पकडे पलग के पास बैठी रही। थोडी देर बाद द्वार पर हलकी थपकी सुनाई दी। एडी पहुँच गई थी। मैंने उसे भीतर आने का सकेत किया। उसकी आँखें मेरे मुख पर चिपकी हुई थीं। एक मिनट ठहरकर वह चली गई।

उसने मुझे कुछ समय बाद बताया, "आप उस समय बिलकुल परिवर्तित हो गई थी। नि सन्देह आप उस समय एक विभिन्न नवीनता से परिपूर्ण थी और ससार का सब स्नेह मुझे आपकी आँखो मे समाया दिखाई देता था। ऐसे ही समय मृत्यु पर ईसा मसीह की शक्ति का मुझे आभास हुआ। उनकी आभा पूरे कमरे में व्याप्त थी।"

मेरी घडी के हिसाब से अस्पताल के कमरे मे घुसने के ठीक ५० मिनट पश्चात् एक समय आया जब दोनो प्रकाशपूर्ण दैवी आत्माएँ मेरी दृष्टि से लोप हो गईं। अकस्मात् कमरा मुझे खाली, ठडा और उदासी मे भरा दिखाई देने लगा और मैं काँपने लगी। अब वहाँ से मेरे भी हटने का समय आ गया था।

जब मैं जाने के लिए उठने लगी तो मुझे भली भाँति ज्ञात हो गया कि जिस पुरुष को मैंने अपना जीवन अर्पित किया था उसके ऐहिक शरीर मे मेरी अब विदाई हो रही है। उनके स्पर्श, उनके स्नेह, उनकी प्रफुल्लता और उनके हास्य से मैं अब आमरण विदा हो रही थी।

अपने विवाह के दिन फूलो से सजी वेदी के सामने हम दोनो ने आमरण एक-दूसरे का साथ देने की प्रतिज्ञा की थी। शरीरो का इस प्रकार विछोह होना मृत्युलोकी मानवो के लिए अत्यन्त कष्टदायक होता है।

परन्तु कुछ दिनो तक तो उनका स्वर्गवास मेरे लिए अन्धकारपूर्ण नही रहा। दैवी प्रकाश से मेरा जीवन-मार्ग आलोकित होता रहा। मुझे ऐसा लगता रहा मानो पीटर लौकिक और पारलौकिक जीवन के बीच की अदृश्य सीमा आनन्दपूर्वक पार करके चले गये हैं और परदे को हटाकर हमें स्वर्ग का दृश्य देखने का अवसर देते हैं जिससे हम लोग जो यहाँ रह गये हैं उनके आनन्दमय जीवन मे भाग ले सकें और उनके अनुभव को भली भाँति समझ सकें।

जीवन मे पहली बार मुझे ऐसा लगा मानो पृथ्वी पर ही मुझे स्वर्ग का राज्य मिल गया है। बहुत-से निर्णय करने थे। प्रत्येक के सम्बन्ध मे मुझे सर्वाङ्ग सुन्दर, सही और तुरन्त प्रेरणा मिली। मानो मुझे सत्य का अन्तर्ज्ञान हो गया था।

पहली रात मुझे नींद बिलकुल नही आई, परन्तु प्रात काल अन्तिम सस्कार के सब ब्योरे मुझे प्रत्यक्ष हो गये। यह भी मुझे ज्ञात हो गया कि बाइबिल के किस अश का पाठ होगा। मृत्यु के सबंध में असन्य जातियो

तथा बहुत-से ईसाइयो मे भी जो भ्रान्तिपूर्ण धारणा थी, उसके प्रति पीटर के विचारो का पता गिर्जाघर के सब सदस्यो को था। पीटर मृत्यु को जीवन-परीक्षा की उत्तीर्णता मानते थे। इसलिए वह चाहते थे कि अन्तिम सस्कार उसी प्रकार हो जिस प्रकार भगवान् का आदेश है, चाहे कितना भी वह प्रचलित परिपाटी के विरुद्ध हो। मैं जानती थी कि पीटर मुझे शोक-सूचक काले वस्त्र पहनने की अनुमति न देते। इसलिए मैंने भूरे रग के वही कपडे पहने जो रविवार को मैं पहना करती थी। प्रार्थना के लिए ११ बजे प्रात काल का समय नियत हुआ, क्योंकि अपने पादरी के नेतृत्व मे हमारे गिर्जाघर के सदस्य तभी प्रार्थना के लिए उपस्थित होते थे। मैंने अपने बैठने के लिए वही जगह निश्चित रखी जहाँ मैं सदैव बैठा करती थी और सदैव की भाँति सम्मिलित भजन का भी प्रबन्ध किया गया। प्रार्थना के विषय मे पीटर की तारीफ न थी, केवल भगवान् के प्रति कृतज्ञता प्रकट करनी थी कि कितने अद्भुत ढग से उसने एक प्रवासी युवक से अपनी सेवा का काम लिया। ऐसे ही समय गिर्जाघर के सदस्यो को भगवान् का सन्देश मिलना था कि गिर्जाघर के जीवन मे इस दुर्घटना का सामना करने मे उन्हे परमात्मा की सहायता मिलेगी। मैं जानती थी कि पीटर अन्तिम सस्कार की प्रार्थना मे यही चाहते थे कि हम सब एक बार फिर अपने को भगवान् की सेवा मे अर्पित करने का निश्चय करें।

मैं चाहती थी कि अन्तिम सस्कार स्वर्ग के राज्य के वातावरण मे सम्पन्न हो। पीटर की इच्छाओ के अनुकूल आदेश देने से केवल यही नही हुआ कि इस प्रकार का वातावरण बन गया बल्कि उपस्थित जनो मे पूर्ण एकता भी दिखाई दी। हम लोगो के हृदयो मे कोई दुर्भावना न थी, एक-दूसरे के लिए हार्दिक स्नेह ही था। बारह वर्षों के भीतर पहली बार मुझे ऐसा लगा कि वाशिंगटन एक छोटा-सा कस्बा है जहाँ सब एक-दूसरे के सुख-दु ख मे सम्मिलित होते हैं। मैन्स के दरवाजो और खिडकियो के पर्दे खुले हुए थे। सैकडो मित्र नैवेद्य, पुष्प और

भक्ति या आशीर्वाद का सन्देश लेकर मेरे घर पहुँचे। वहाँ उन्हे स्नेह, सौन्दर्य और शान्ति का इतना प्रिय वातावरण मिला कि किसी की तबियत वहाँ बैठने मे ऊबती न थी।

पाठक यह न समझें कि मैं उन दिनो कभी रोई नही। रोई अवश्य, कई बार तो बडी देर तक रोती रही, परन्तु आँसुओ मे कोई कटुता न थी। बिछोह के दु ख को आँसुओ द्वारा वह निकलने का मौका ही मिला। बीच-बीच मे भगवान् मेरे मन को शान्ति और हृदय को धैर्य देते रहे।

अतिम सस्कार की प्रार्थना मे अवर्णनीय सरलता और मधुरता रही। भगवान् की वह अनुकम्पा प्रार्थना मे भी मेरे साथ रही जो पिछले दो दिनो से मुझे सँभाले रही थी। मैं मुस्करा सकी, जबरदस्ती नही, सच्चे हृदय से। शव के पीछे पीछे गिर्जाघर के केन्द्रीय मार्ग से जब मैं अपने पुत्र के साथ वापस हो रही थी, तो मैंने एक सखी का दुखी मुख आँसुओ से भीगा देखा तो भी फिर मुस्कराकर मैंने उससे कान मे कहा, "बेटी, धीरज रखो!" हम बाहर निकले तो गिर्जाघर के सामने छोटी-सी वाटिका मे और पगडण्डियो पर नगे सिर और शान्त जनो की भीड देखी जो भीतर नही जा सके थे। गिर्जाघर के बाहर लोगो की जैसी कतारें पीटर के जीवनकाल मे दिखाई देती थी वही उनके अन्तिम सस्कार मे उनके साथ रही।

गर्मी की छुट्टियाँ बिताने के लिए केपकाड मे जो कुटी बनवाई थी, यहा जून मास मे मैं नियमानुसार पहुची। जब हमारी मोटर सहन में पहुँची तो हमने देखा कि खिडकियाँ पहले जैसी ही नीली थी। सदैव की भाँति गुलाब की झाडियो की कलियाँ भी खिलने के लिए प्रस्तुत थी। रसोईघर के द्वार के निकट लगे चीड के पुराने पेड मे चिडियो के एक जोडे ने अपना घोसला बना लिया था।

कुटी के भीतर प्रत्येक कमरा पीटर की याद दिलाता था। वह सभी जगह उपस्थित-से दिखते थे। बैठक से लगे स्नानगृह मे उनकी

गर्मियो में पहनने की एक हैट टगी थी जिसके नीले फीते का रग कुछ हलका पड गया था। उनके पलंग के नीचे उनका सफेद जूतो का पुराना जोडा रखा था, जिसे पहनकर वह वाटिका मे काम करते थे। जूते के भीतर उनके मोजे भी खुँसे हुए थे। उनका एक जूता हाथ मे लेकर मैं विचारमग्न हो गई. "अब मुझे वे शब्द अर्थपूर्ण मालूम होते हैं जिनमें स्मृतियाँ आशीर्वाद देती हुई, जलाती हुई बताई गई हैं। हे ईश्वर, यह स्मरण कितना दु खदायी है।"

सन्ध्या होते-होते भावनाओ का तूफान थोडा-बहुत शान्त हुआ, तो मैं समुद्रतट की ओर चल दी।

ककड-पत्थर से भरे तट पर लहरो के हलके थपेडो की ध्वनि सुनाई दे रही थी और जल पर चन्द्रदेव की किरणो ने चाँदनी का एक मार्ग बना रखा था। दु ख से गर्म मेरे कपोलो को समुद्र की शीतल वायु झलने लगी। अकस्मात् मुझे वह शब्द याद आये जो अन्तिम बार मैंने पीटर से कहे थे।

मेरे मानस-पटल पर यह चित्र सदैव बना रहता है—पीटर उस स्ट्रेचर पर लेटे हैं जिसमें सेवको ने अस्पताल की गाडी मे चढाने के पहले एक क्षण के लिए उन्हें लिटा दिया था। पीटर ने दर्द की हालत मे भी मुस्कराते हुए मेरी ओर देखा उन आँखो से जो करुणा से परिपूर्ण थी। उनके निकट झुककर मैंने कहा, "प्यारे, मैं प्रात काल तुमसे मिलने आऊँगी।"

खडी-खडी मैं सुन्दर क्षितिज की ओर देखती हुई यह कल्पना करती रही कि पति से मेरे अन्तिम शब्द सदैव गीत होकर मेरा हृदय शान्त करते रहेंगे

मिलने आऊँगी, प्यारे, प्रात काल तुमसे मिलने आऊँगी !

समुद्र के रहस्य

(रेचेल एल० कार्सन की पुस्तक 'दि सी एराउंड अस' का सार)

समुद्र के रहस्यों के इस वर्णन में विज्ञान तथा कल्पना का अद्भुत समन्वय है। यह पुस्तक हमारे इस भूमंडल के नित्य बनते-बिगड़ते रूपों, जल और वायु से सम्बन्धित प्राकृतिक घटनाओं, और जल तथा थल के पारस्परिक सम्बन्ध का एक रोचक चित्र प्रस्तुत करती है।

समुद्र के रहस्य

पृथ्वी के इतिहास मे मानव का अस्तित्व बहुत कम समय से है। इस मानव ने इतने कम समय के भीतर जिस प्रकार महाद्वीपों को जीता और लूटा है, उस प्रकार वह समुद्र का नियन्त्रण या परिवर्तन नही कर सका है। नगरो और कस्बो के अप्राकृतिक जीवन मे वह इस पृथ्वी की वास्तविकता और उसके लम्बे इतिहास को अक्सर भूल जाता है, यद्यपि इस लम्बे इतिहास मे मानव के अस्तित्व की कथा एक क्षण-मात्र के समान है।

इस वास्तविकता की झलक उस समय उसे विशेष रूप मे मिलती है जब वह लम्बी महासागर की यात्रा के लिए निकलता है। दिन-प्रतिदिन उसे पीछे हटते क्षितिज पर लहरो से बनती-बिगडती छोटी-बडी पहाडियां और खाइयां दिखाई देती रहती हैं, रात के समय आकाश मे तारिकाओ की प्रगति से पृथ्वी के घूमने का आभास उसे होता है, या जब आकाश और जल के मध्य उसे अकेलेपन का अनुभव होता है, तो साथ ही उसे ब्रह्माड मे पृथ्वी के अकेलेपन का भी आभास होता है।

भूमि पर रहते हुए नही, परन्तु जल-यात्रा करते समय यह सत्य उसकी समझ मे आता है कि पृथ्वी का अधिकाश जलमय है, उस पर महासागर का बाहुल्य है और भूभाग तो सागर को फोडकर कही-कही ही जल के ऊपर दिखाई देने लगे हैं। और इनके अस्तित्व का स्थायित्व भी सदिग्ध है।

हम समुद्र से घिरे हैं। देश-देशान्तरो का व्यापार समुद्र-मार्ग से ही होता है। जो हवाएँ भूमि पर चलती हैं, वे समुद्र के विशाल वक्ष पर ही जन्म लेकर पुष्ट होती हैं और उसी ओर लौट जाती है। महाद्वीप स्वय क्षण-प्रतिक्षण घटते-घटते जलमग्न होते रहते हैं। जो बादल समुद्र मे चलते हैं, वे नदी के रूप में वही फिर वापस पहुँच जाते हैं। किसी धुँधले अतीत मे जड और जगम जीवन जल ही मे जन्मा और अनेकानेक परिवर्तनो के पश्चात् इस जीवन के अवशेष जल ही मे मिल जाते हैं। अन्त मे सभी को समुद्र मे मिल जाना है—उस महासागर मे, जो काल की अविराम धारा के समान है, वही हर वस्तु की उत्पत्ति का स्रोत है और उसी मे हर वस्तु को विलीन हो जाना है।

समुद्र और भूमि की विभाजन-सीमा पृथ्वी की अन्य लाक्षणिकताओ की अपेक्षा स्थायित्व मे अधिक हीन है, क्योंकि समुद्र एक विशाल और अत्यन्त निश्चयात्मक ज्वार-भाटे के समान बढता-घटता रहता है और कभी-कभी अपने बहाव से किसी महादेश का आधा भाग तक निगल जाता है। भूगर्भ-विज्ञान का काल-क्रम बहुत ही लम्बा है, जिसका एक-एक युग करोडो वर्ष का है। इस काल-क्रम मे कई बार उत्तरी अमरीका जल-मग्न हो चुका है। उसके पुराने समुद्र-तटों के सकेत हमे उत्तरी-अमरीका के वर्तमान तट के एक हजार मील पीछे तक मिलते हैं।

पेनसिलवेनिया के पर्वतीय शिखरो की ककरीली चट्टानो पर बैठा हूँ। ये चट्टानें असख्य सामुद्रिक घोघो के खोलो के एक-दूसरे मे मिलने पर बनी हैं। किसी अतीत मे ये घोघे समुद्र की एक शाखा मे जीते-मरते रहे जो इन स्थान के ऊपर बहता था। कालान्तर मे ये खोल मिलकर चट्टान बन गये और समुद्र पीछे हट गया। फिर कई युगो पश्चात् पृथ्वी के ऊपरी भाग के सिकुडने पर चट्टानें ऊपर उठ गईं और एक लम्बे पर्वत की शृखला बन गई।

इस प्रकार सभी भूभागों के किसी अतीत मे कही-न-कही समुद्र का पता मिलता है। हिमालय के शिखरो पर २०,००० फुट की ऊँचाई तक

हमे जलजात ककरीला पत्थर कही-कही बाहर निकला दिखाई देता है। ये चट्टानें हमे आज से ५ करोड वर्ष पुराने उस अतीत की याद दिलाती हैं जब एक उष्ण और निखरा समुद्र दक्षिणी योरप और उत्तरी अफ्रीका से दक्षिण-पश्चिम एशिया तक फैला हुआ था। यह समुद्र असख्य जल-कीटो से भरा था जो मरते रहकर ककरीली चट्टानें बनाते रहे। कई युगो पश्चात् इस चट्टान से प्राचीन मिस्रियो ने अपना स्फिक्स मूर्त किया। फिर इन्ही चट्टानों के पत्थरो से इन्होने अपने पूर्वजो की प्रस्तर-समाधियाँ (पिरामिड) बनाईं।

ब्रिटेन के डोवर नामक नगर के प्रसिद्ध श्वेत कगार खडिया के बने हैं जिसे किसी समय समुद्र ने यहाँ जमा किया था। यह खडिया एक-दूसरे से सटे असख्य जल-जीवो के छोटे-छोटे खोलो से बनी। सयुक्त राज्य अमरीका के कॅंटकी प्रदेश मे एक विशाल गुफा है जिसमे मीलो की यात्रा सम्भव है और कही-कही गुफा की छत की ऊँचाई २५० फुट तक पहुँचती है। आज से करोडो वर्ष पूर्व पेलिओजोइक-युग मे समुद्र ने वहाँ ककरीली चट्टान की मोटी तह जमा दी। फिर किसी पहाड से बहती जलधारा ने धीरे-धीरे इस चट्टान को घुलाना प्रारम्भ किया। जो भाग घुलने से बच गया, वह अब गुफा की छत के रूप मे हमें दिखता है। जो घुल गया यह हमे अब गुफा के रूप मे दिखाई देता है।

इसी प्रकार कनाडा और सयुक्त राज्य अमरीका की सीमा पर प्रसिद्ध नियागरा जल-प्रपात की कहानी भी करोडो वर्ष पूर्व सिलूरियन-युग से प्रारम्भ होती है, जब ध्रुवसागर की एक विशाल खाडी दक्षिण की ओर महाद्वीप के एक विशेप भाग पर फैल गई। इस खाडी की राह में 'डोलोमाइट' नामक अत्यन्त कडी चट बिछने लगी और कालान्तर मे यह चट कनाडा और सयुक्त राज्य अमरीका की सीमा पर एक लम्बी कगार के रूप मे प्रकट हुई। लाखो वर्ष पश्चात् गलती हिम-नदियो की जलधारा इस कगार से गिरने लगी और धारा ने 'डोलोमाइट' के नीचे कुछ कम कडी चटें काट डाली, जिससे ऊपर लटकी कडी चटें क्रमश.

टूटकर गिरती गई। इस प्रकार नियागरा जल-प्रपात और उसके दोनों ओर के संकुचित तथा ऊँचे मार्ग का प्राकृतिक निर्माण हुआ।

महासागर तो पृथ्वी की गहरी खंदकों को युग-युगान्तर से भरे हुए हैं, तो वे भूभागों पर क्यों आक्रमण करते हैं? अनादिकाल से पृथ्वी ठंडी होती जा रही है, तो घन पदार्थ में परिवर्तन के साथ पृथ्वी का ऊपरी भाग भी सिकुड़ता रहता है। भूभाग और जलधि की सीमा के परिवर्तन का यही प्रधान कारण है। भूभाग की सतह नीचे जाती है तो नीचे भाग पर समुद्र आ जाता है। फिर भूभाग से बहती मिट्टी समुद्र को पाटती रहती है। युगयुगान्तर से भूमि कटती जा रही है और नदियों के मार्ग से उसकी मिट्टी समुद्र को पाटती जा रही है। जितनी मिट्टी जल की जगह लेती है उतना ही जल को उठने का आदेश मिलता है।

इसके अतिरिक्त जल के नीचे ज्वालामुखी बढ़ते रहते हैं। गले पत्थर इनसे निकलकर अपनी-अपनी पहाड़ियाँ बनाते रहते हैं जो आवश्यक ऊँचाई प्राप्त करने पर हमें द्वीपों के रूप में दिखाई देने लगते हैं। इन ज्वालामुखियों की विशालता बहुत प्रभावोत्पादक है। उदाहरण के लिए, हवाई द्वीप समूह से सम्बन्धित ज्वालामुखी-शृङ्खला लगभग दो हजार मील लम्बी है और इसके भीतर कई बड़े-बड़े द्वीप हैं। कितनी विशाल जलराशि की जगह इन्होंने ले ली है, इसका अनुमान लगाना भी कठिन है।

पिछले दस लाख वर्षों में भूमि पर समुद्र का जो आक्रमण होता रहा उसके कारणों में प्रधानता हिम-नदों की ही रही है। इस लम्बे काल के भीतर चार बार विशेष भूभागों पर हिम की चोटियाँ चढ़ गईं और हिमनदों के रूप में उन्होंने घाटियों और मैदानों की ओर बढ़ना प्रारम्भ किया। भूमि पर जमा हिम वार्षिक शरद के प्रभाव से जितना मोटा होता गया, उतनी ही समुद्र की सतह नीची होती गई; और जब हिम गलकर समुद्र की ओर वापस होने लगा तो समुद्र की सतह ऊँची होने लगी।

अब हम हिम की चौथी चढाई के उतार के मध्य मे हैं, चौथी चढाई मे जिन भूभागो पर हिम चढ गया था, उसमे आधा उतर गया है, अब वह केवल उत्तर मे ग्रीनलैंड तथा दक्षिणी ध्रुव के अटार्कटिका महाद्वीप पर या कुछ बिखरे शैल-शिखरो पर रह गया है। इस प्रकार हम उस युग के मध्य हैं जिसमे समुद्र की सतह बढ रही है, वह अधिकाधिक जगह घेरता जा रहा है। मानव-जीवन की अवधि तो वहुत छोटी ही है। इसके भीतर पृथ्वी की नियमानुकूल लीला का दृष्टिगोचर होना कठिन है। परन्तु सयुक्त राज्य अमरीका के समुद्र-तट पर १९३० से जो तट तथा ज्वार से सम्बन्धित अवलोकन हो रहे हैं, उनसे यह प्रमाणित हो गया है कि समुद्र की सतह निरन्तर ऊँची होती जा रही है। मसाचुसेट्स से फ्लोरिडा तक तट की लम्बाई एक हजार मील है। यहाँ और मेक्सिको की खाडी के तट पर १९३० से १९४८ तक सतह की ऊँचाई लगभग चार इच वढी है, प्रशान्त महासागर की सतह भी ऊँची हो रही है परन्तु यह अधिक विशाल है। इसलिए सतह का चढाव भी अपेक्षाकृत धीमा हैं।

पहली वार हमे महासागर वढता दिखाई देने लगा है। वह अपनी सीमाएँ वढाता जा रहा है। यह सिलसिला हजारो वर्ष से चालू है, तवसे जव अन्तिम हिमयुग के हिमनद गलने लगे। कव और कहाँ महासागर की वर्तमान चढाई रुकेगी और कव वह फिर अपने गर्तो की ओर मुडने लगेगा, यह कोई नही कह सकता। इस समय जितना हिम भूभागो पर जमा है वह यदि गल जाये तो जो सागर उत्तरी अमरीका को घेरे हुए है उसकी सतह सौ फुट चढ जाये, अटलाटिक महासागर पर वसे अधिकाश नगर तथा कस्वे जलमग्न हो जायें, अपलाशियन पहाडियो के नीचे समुद्र की लहरें थपेडे मारने लगें और मेक्सिको की खाडी का तटवर्ती मैदान तथा मिसिसिपी घाटी का निचला भाग जलमग्न हो जाये।

वायु और जल

जब से महासागरो का अस्तित्व हुआ तभी से उसका जल वायु के झकोरो से हिलता-डुलता रहा। खुले सागर मे लहरो की चाल में कोई संयम दिखाई नही देता—वे एक दूसरे को पकडती, बराबर से निकल जाती या नष्ट करती दिखाई देती हैं। किसी भी भाग की लहरो पर ध्यान दीजिये, उनके उद्गम, प्रगति और दिशा मे निरन्तर भिन्नता दिखाई देती है। कुछ तो कभी तट तक पहुँचती ही नहीं और कुछ आधे महासागर की दौड लगाती हुई किसी सुदूर तट पर गरजती हुई समाप्त होती दिखती हैं।

जिस जल से लहर बनती है वह उसके साथ समुद्र मे आगे नहीं बढ़ता लहर बनने पर उसके जल का प्रत्येक कण चक्कर लगाकर प्रायः उसी जगह पहुँच जाता है जहाँ से उसकी प्रगति प्रारम्भ हुई थी। और यह हमारे लिए शुभ ही है, क्योंकि यदि लहर के साथ जल की प्रगति भी होती तो जहाजों की यात्रा असम्भव हो जाती। लहरों के विवरण मे एक सुन्दर वाक्यांश का प्रयोग होता है—लहर की दौड। अर्थ यह है कि बहती वायु के साथ अबाध रूप से चलने पर लहर कितनी दूर तक जा सकती है। दौड जितनी लम्बी होती है, लहर उतनी ही ऊँची होती है, खाडी या सीमित जल-राशि के भीतर बड़ी लहरें नही बनती। लहर की दौड ६०० से ८०० मील तक हो और वायु की प्रगति आँधी जैसी हो तभी महासागर की विशालतम लहरें बनती हैं।

समुद्र के भीतर ही जन्मी कुछ शक्तियाँ लहर का रूप बदल सकती हैं, समुद्र मे विकराल लहरें तभी उमडती हैं जब ज्वार की लहरें वायु मे जन्मी लहरो के मार्ग मे आती हैं, या उनसे टक्कर लेती हैं। स्कॉट-लैण्ड की 'रूस्ट' नाम से प्रसिद्ध लहरें इसी प्रकार बनती हैं। शेटलैण्ड द्वीप-समूह के दक्षिणी छोर पर ये 'रूस्ट' लहरें उठती हैं। जब वायु की दिशा पूर्वोत्तर होती है तो 'रूस्ट' लहरें शान्त रहती हैं। परन्तु जब वायु संचालित लहरें किसी दूसरी दिशा से चलती हैं तब वे ज्वार-भाटे

की लहरो से टक्कर लेती हैं। ये लहरें ज्वार के रूप मे बढती हुई तट की ओर जाती हैं या भाटे के रूप मे तट से समुद्र की ओर जाती हैं। यों दोनो की जगली पशुओं जैसी मुठभेड होती है। जब ज्वार का अत्यधिक जोर होता है तो लहरो की लडाई का क्षेत्र तीन मील तक विस्तृत हो जाता है। 'ब्रिटिश आइलैंड्स पाइलट' नामक पत्रिका का कहना है कि समुद्र की इस विशाल उथल-पुथल मे जलयान-सचालन असम्भव हो जाता है। कभी-कभी कुछ जलयान डूब जाते है और बाकी कई दिनो तक लहरों की टक्करें खाया करते हैं।

गढे से शिखर तक साधारण वायु मे २५ फुट की ऊँचाई तक लहर कदाचित् ही कही पहुँचती हो। परन्तु तूफान मे लहरो की ऊँचाई इसके दुगने से आगे तक भी पहुँच जाती है। तूफान की लहरो की सर्वोच्च सीमा के विषय मे मतभेद है। अधिकाश पाठ्य-पुस्तको में ऊँचाई की सीमा ६० फुट तक मानी गई है। परन्तु मल्लाह इससे अधिक ऊँची लहरें देखने के विवरण सुनाया करते हैं। हमे एक विशाल लहर का उल्लेख मिलता है जो वैज्ञानिक नाम के कारण विश्वसनीय है। फरवरी १९३३ मे सयुक्त राज्य अमरीका के 'रमाय' नामक जहाज को मनीला से सैन डाइगो की यात्रा मे सात दिन तक तूफान का सामना करना पडा। पहरे पर खडे एक अफसर ने जहाज की पिछाडी से एक लहर को मुख्य मस्तूल की एक विशेप मजिल के ऊपर स्तर तक उठते देखा। चूँकि 'रमायो' का पिछला भाग लहर के गढे तक पहुँच गया था, इसलिए अफसर को लहर के शिखर की ऊँचाई का सही अनुमान लग सका। जहाज की ऊँचाई के हिसाब से लहर की ऊचाई का हिसाब लगाया जा सका। लहर ११२ फुट की ऊँचाई तक पहुँची।

परन्तु लहरो की समुद्र पर कुछ भी ऊँचाई रहे, समुद्र-तट पर ही तूफानी लहरो का विनाशकारी प्रभाव प्रत्यक्ष हो पाता है। ऊपर की ओर उछलती लहरों के प्रवल थपेडे प्रकाशगृहो को ढक लेते हैं, भवनो को हिला डालते हैं और तट पर निर्मित घाटो इत्यादि को वच्चो के

खिलौनों की भाँति तोड़-फोड़ डालते हैं। शरद् ऋतु में चलनेवाली आँधियों से उत्पन्न लहरों का दबाव प्रति वर्ग फुट ७५ मन तक पहुँच जाता है। सन् १८७२ में एक शारदीय तूफान के मध्य स्काटलैंड के विक नामक स्थान पर वहाँ का इंजीनियर एक कगार पर खड़ा निश्चिन्तता से तमाशा देख रहा था कि कंक्रीट की बनी ठोकर पर एक लहर चढ़ आई और उसने ठोकर की पूरी शिला को बहाकर घाट के भीतर गिरा दिया। तूफान के पश्चात् गोताखोरों ने टूट-फूट की जाँच की कि लहरें ३६,४५० मन की शिला को तोड़कर बहा ले गईं। पाँच वर्ष पश्चात् यह प्रत्यक्ष हो गया कि यह घटना तो भूमिका-मात्र थी, क्योंकि इस बार तूफानी लहर दूनी तौल के घाट को ही तोड़कर बहा ले गई।

समुद्र के सुनसान कगारों या पहाड़ी अन्तरीपों पर बने प्रकाशगृहों पर तूफानी लहरों का भरपूर जोर पड़ता है। इसलिए उनके पहरेदारों को वे घटनाएँ देखने में आई हैं जो दैवी ही कही जा सकती हैं। सन् १८४० में रात के समय आँधी के दौरान में एडीस्टोन प्रकाशगृह का मजबूती से बन्द द्वार अकस्मात् भीतरी टूट फूट से खुल गया, और उसके बोल्ट तथा कब्जे खुलकर अलग हो गये, इंजीनियरों का कहना है कि इतनी भारी तोड़-फोड़ वायु के दबाव के अकस्मात् अत्यधिक बढ़ने और तुरन्त ही शून्य पैदा होने पर होती है, जब एक भारी लहर पीछे हटती है और द्वार के बाहरी भाग पर अकस्मात् दबाव की शून्यता आ जाती है। नवम्बर में एक बार स्काटलैंड के तट पर बने बेल-राक प्रकाशगृह से समुद्र के ऊपर बने ८६ फुट ऊँचे स्तम्भ पर लगी सीढ़ी घटकर अलग जा गिरी। बिशप राक प्रकाशगृह का समुद्र की सतह से १०० फुट ऊपर लगा घण्टा शारदीय तूफान के झोंके में अलग जा गिरा। संयुक्त राज्य अमरीका के अटलाण्टिक तट में मिनाट्स लेज पर बनी ६७ फुट ऊँची मीनार बराबर टकराती लहरों से घिरी रह जाती है और सन् १८५१ में इस प्रकाशगृह में लगा लैम्प उखड़कर बह गया। संयुक्त राज्य

अमरीका के आरेगन तट पर बने ट्रिनिडाड हेड प्रकाशगृह का पहरेदार दिसम्बर के एक शारदीय तूफान का दृश्य देख रहा था। गृह की रोशनी समुद्र की सतह से १९६ फुट ऊपर है। परन्तु एक लहर दीवार की भाँति चलती रोशनी के स्तर तक पहुँच गई और पूरा स्तम्भ उसकी बौछार से ढक गया। लहर के धक्के से रोशनी का सचालन-चक्र भी रुक गया।

पथरीले तट पर पहुँचती लहरो के साथ पत्थर के छोटे-बडे टुकडे भी रहते हैं। एक बार समुद्र की सतह से १०० फुट की ऊँचाई पर टिल्लामूक राक पर बने प्रकाशगृह के पहरेदार के घर के ऊपर लहरो ने डेढ मन भारी पत्थर पहुँचा दिया जिसने घर की छत पर २० फुट का छेद फोड दिया। स्कॉटलैण्ड के पेंटलैण्ड फर्थ पर डनेट हेड की ३०० फुट ऊँची चट्टान पर बने प्रकाशगृह की खिडकियाँ अकसर उन पत्थरो से टूटती रहती हैं जिनकी बौछार लहरो द्वारा इतनी ऊँचाई तक पहुँच जाती है।

यो समुद्र की लहरें ससार-भर के समुद्र-तट काटती रहती हैं, कही कगार काटती रहती हैं, कही एक ओर तट की बालू खीचती जाती हैं और दूसरी ओर बालू का टीला या द्वीप बनाती जाती हैं।

काड अन्तरीप का टीला इतनी शीघ्रता से कट रहा है कि सरकार ने जो दस एकड जमीन हाइलैंड प्रकाशगृह के लिए खरीदी थी उसमे से आधी जमीन कट गई है और टीला ३ फुट प्रतिवर्ष के हिसाब से कटता जा रहा है। जिस प्रकार कटाई हो रही है उसके अनुसार बाहरी अन्तरीप को ५,००० वर्षों के भीतर गायब हो जाना चाहिए।

काड अन्तरीप के निकट नान्टुकेट द्वीप के दक्षिणी तट के टीले पत्थर से लदी लहरो की रगड से प्रतिवर्ष छ फुट कटते जा रहे हैं। चट्टानो के टुकडे टूटकर गिरते जाते हैं, फिर यही टुकडे एक दूसरे से टकराते हुए चूर होते रहते हैं और लहरो के साथ जाकर आगे की कटाई करते रहते हैं। पथरीले तट पर चट्टानो की घिसाई और रगडाई

निरन्तर गर्जना के साथ होती रहती है। चट्टानों पर टकराती लहरों की गर्जना बालू पर समाप्त होती लहरों की ध्वनि से भिन्न होती है। तट पर चलनेवाले सरलता से इसे पहचान लेते हैं और फिर जल्दी भूलते नहीं—गड़गड़ाहट के मध्य एक गहरी सीटी जैसी ध्वनि।

ब्रिटिश तट के भी बहुत-से भाग समुद्र की लहरों के प्रभाव से कटते जा रहे हैं। पुराने उल्लेखों से पता लगता है कि तटवर्ती टीले बड़ी तेजी से कटते जा रहे हैं। क्रोमर और मडस्ले की कटाई १६ फुट प्रतिवर्ष हुई है और माउथफील्ड के तट १५ फुट से ४५ फुट प्रतिवर्ष कटे हैं। सन् १७८६ के एक नक्शे के साथ होल्डरनेस के विनष्ट गांवों की सूची लगी है और संकेत है—समुद्र में बह गए।

साथ ही जल की प्रगति में तटवर्ती दृश्यों का भी बहुत ही सुन्दर प्राकृतिक निर्माण हुआ है, समुद्र-तटवर्ती गुफाएं चट्टानों की दरारों में लहरों की निरन्तर टक्करों से ही तो बनती हैं। जल के निरन्तर दबाव और टक्कर के परिणामस्वरूप निचले भाग कटते जाते हैं और गुफाएं गहरी होती जाती हैं। इन गुफाओं की छतों और लटकी चटों पर लहरें उसी प्रकार टकराती हैं जैसे उन पर भयानक गोलों की चोटें पड़ रही हों। इस प्रकार कभी-कभी गुफा की छत में एक छेद बन जाता है जिसमें लहरों की टक्कर के साथ एक फव्वारा जैसा निकला करता है।

जिन सामुद्रिक लहरों ने विशेष रूप से मनुष्य का ध्यान आकृष्ट किया है, वे ज्वार की लहरें कहलाती हैं। इन लहरों का नामकरण लोक-मान्य ही है, ज्वार से इनका कोई सम्बन्ध नहीं। इस नाम से वे लहरें प्रसिद्ध हैं जो समुद्र के भीतर ज्वालामुखी के फूटने पर प्रत्यक्ष होती हैं। वे लहरें भी इसी नाम से प्रसिद्ध हैं जो तूफान के फलस्वरूप ज्वार की लहर की ऊंचाई से भी ऊपर पहुंच जाती हैं।

आम तौर से ज्वालामुखी से जाग्रत लहरों का प्राथमिक लक्षण होता है अकस्मात् समुद्र का पीछे हटना। सन् १८६८ में दक्षिणी अमरीका का पश्चिमी तट बुरी तरह से ज्वालामुखियों द्वारा प्रभावित

हुआ। अत्यन्त भीषण धक्को की कुछ ही देर बाद समुद्र पीछे हट गया और जो जहाज ४० फुट गहरे समुद्र मे लगर डाले हुए थे उनको कीचड मे फसा छोड गया। फिर जल की एक विशाल लहर आई और जहाजो को चौथाई मील तक भूमि की ओर ले गई।

सन् १९४६ की पहली अप्रैल को हवाई द्वीप के आदिवासी बहुत स्तम्भित हुए जब लहरो की गर्जना अकस्मात् बन्द हुई और एक अजीब शान्ति छा गई। वे न जान सके कि समुद्र की लहरें २,३०० मील की दूरी पर अल्यूशियन द्वीप-समूह में भूचाल के परिणामस्वरूप पीछे हट गई हैं। न उन्हे अनुमान हो सका कि कुछ ही क्षणो मे साधारण ज्वार से २५ फुट या उससे भी अधिक ऊँचा उठकर यह समुद्र विकराल रूप मे वापस आयेगा और द्वीप के निवासियो तथा उनके घरो को अपने साथ बहा ले जायेगा। खुले सागर मे अल्यूशियन भूचाल से लहरें एक-दो फुट ही ऊपर उठी, परन्तु हवाई द्वीप तक पहुँचते उन्हें ५ घण्टो से कम लगे। यो ये लहरें लगभग ४७० मील प्रति घण्टा की चाल से आगे बढ़ी।

उष्ण-प्रधान तूफानो के कारण जो जानें जाती हैं उनमे से तीन-चौथाई तूफानो की लहरो से नष्ट होती हैं। इन्ही के कारण सन् १९०० की आठवी सितम्बर को टेक्साज के गैल्वस्टन नगर मे और सन् १९३५ की दूसरी-तीसरी सितम्बर को फ्लोरिडा कीज़ के निचले भाग मे दुर्घट-नाएँ हुईं। ऐतिहासिक काल मे तूफान के कारण सबसे भीषण विनाश-काड ७ अक्तूबर, १७३७ को बगाल की खाडी मे हुआ जब २०,००० नावें नष्ट हो गईं और ३ लाख आदमी डूब गये।

परन्तु महासागर की सबसे बडी और भीषण लहरें एक प्रकार से अदृश्य ही रहती हैं। ये लहरें समुद्र के बहुत नीचे अज्ञात दिशा की ओर बहती हैं और जिस प्रकार समुद्र के ऊपर की लहरें जहाजो को इधर-उधर फेंकती है, उसी प्रकार ये लहरें पनडुब्बियो की दुर्गति करती हैं। जिस प्रकार ऊपरी लहरें और ज्वार की लहरें एक-दूसरे से टक्कर खाकर

प्रत्यक्ष आफत वर्षा करती है उसी प्रकार ये लहरें समुद्र के नीचे खाडी-धारा (गल्फ़ स्ट्रीम) जैसी सामुद्रिक धाराओं से लडकर भीतरी उथल-पुथल करती हैं। इन टक्करों की जल-यात्रा की विशालता का अनुमान लगाना कठिन है क्योंकि कुछ लहरें ३०० फुट तक पहुँच जाती हैं।

इन आन्तरिक जल-संघर्षों से समुद्र के नीचे बसे जल-जीवों की जीवनचर्या किस प्रकार प्रभावित होती है, इसका पता हमे बहुत कम है। हम इतना ही अनुमान कर सकते हैं कि जिन प्राकृतिक रहस्यों की जानकारी हमे हुई है, उनसे कहीं अधिक रहस्य समुद्र के विप्लव युक्त अन्तस्तल मे छिपे हुए मानव की अतृप्त जिज्ञासा की प्रतीक्षा कर रहे हैं।

अन्धकारमय सागर

संसार का सागरीय क्षेत्र पूरी पृथ्वी का लगभग तीन-चौथाई भाग घेरे है। यदि इनमे से हम उथले भाग निकाल डालें तो भी मीलों गहरा अन्धकारपूर्ण पृथ्वी का लगभग आधा भाग जल से ढका रह जायेगा, और यह विशाल क्षेत्र जो सूर्य से प्रकाश पानेवाले जल-क्षेत्र तथा गहरे महासागर की तह के मध्य है, अपने भेद अभी तक हठपूर्वक हमसे छिपाये हुए है।

विशाल वैज्ञानिक सुविधाएँ पाकर भी मानव प्रकृति के इस अज्ञात संसार की खोज में अभी तक असफल रहा है। गोताखोर के वस्त्र पहन-कर वह ५०० फुट से अधिक गहराई में नहीं जा सकता। केवल विलियम बीब और ओटिस बार्टन ही प्रकाश की अन्तिम सीमा के आगे की गह-राई के सागर की खोज कर सके हैं। बेथीस्फियर नामक यंत्र में बैठकर वह बरमुडा द्वीप के पास खुले महासागर के भीतर ३,०२८ फुट की गह-राई तक सन् १९३४ में पहुँच सके थे। और केवल बार्टन बेंथोस्कोप नामक एक इस्पात के गोले के भीतर बैठकर सन् १९४९ में कैलिफोर्निया के निकटस्थ सागर में ४,५०० फुट की गहराई तक उतर सका था।

सतह के नीचे प्रकाश बहुत शीघ्र कम होने लगता है। २०० से

३०० फुट तक की गहराई मे लाल किरणें समाप्त हो जाती हैं और उनके साथ ही उनकी गर्मी भी। फिर हरी किरणें मन्द होने लगती है और १,००० फुट तक पहुँचने के पश्चात् चमकदार नील वर्ण ही रह जाता है। निर्मल जल मे बैंजनी किरणें एक हजार फुट की गहराई तक और जा पाती हैं। इसके आगे तो गहरे समुद्र की कालिमा ही रहती है।

विश्व के इस अन्धकारपूर्ण भाग मे किसी के लिए कोई रक्षा नही है। वहाँ के वासियो को अपने शत्रुओ से बचने के कोई साधन प्राप्त नही हैं। कोई वनस्पति जल में ६०० सौ फुट की गहराई के आगे जीवित नही रह सकती। वानस्पत्य भोज्य ऊपर ही के जल मे रह जाता है तो अन्धकारमय सागर के जल-जीव एक-दूसरे का शिकार करके ही जीवित रह पाते हैं। गहरे समुद्र की कुछ छोटी और सपक्ष नाग जैसी मछलियो के तलवार जैसे लम्बे जबडो से इस विश्व के निरन्तर सघर्ष का सकेत हमे मिलता है। विशाल मुँह और लचीले शरीर के कारण ये मछलियाँ अपने से कई गुने बडे जीव निगल जाती हैं।

गहरे सागर की बहुत-सी मछलियो को एक प्राकृतिक मशाल प्राप्त रहती है जिसे शिकार की तलाश मे ये इच्छानुसार जलाती अथवा बुझाती रहती हैं। कुछ के शरीर पर विभिन्न रग की प्रकाश-मालाएँ रहती हैं। गहरे सागर की एक मछली प्रकाशमय द्रव अपने शरीर से निकालती है जो प्रकाशमय बादल जैसा हो जाता है, उसी प्रकार जैसे उसकी ही मेल की उथले सागर मे रहनेवाली मछली स्याही समान द्रव निकालती है।

उथले जल की मैकरल और हेरिंग जैसी मछलियाँ आम तौर से नीली या हरी होती हैं, गहरे सागर मे जहाँ जल गहरा नीला हो जाता है वहाँ जल-जीव मणि के समान चमकदार और श्वेत होते हैं। उनके शीशे जैसे शरीर उन्हे व्यापक अन्धकार मे छिपा देते हैं और वैरियो से उनकी रक्षा करते हैं। हजार फुट की गहराई पर रुपहली मछलियो की

बहुतायत रहती है। बहुत-सी लाल, भद्दी बादामी या काली होती हैं। १,५०० फुट से अधिक गहराई में सभी मछलियाँ काली, गहरी बैंजनी या पत्थई होती हैं, यद्यपि इनके बच्चों के रंग लाल, रक्तवर्ण या बैंजनी होते हैं। इसका कारण मालूम नहीं।

यद्यपि यह धारणा रही कि अन्धकार और जल के भारी दबाव के कारण महासागर के अत्यधिक गहरे भागों में जीवन असम्भव है, परन्तु हाल में वहाँ जीवों के आधिक्य का पता लगा है। चौथाई मील से अधिक गहराई में विलियम बीब को प्राणियों के अति विशाल समूह दिखाई दिये। बेथीस्फियर द्वारा वह आधी मील के आगे नहीं उतर सके। वहाँ की हालत वह इस प्रकार बताते हैं कि बिजली की रोशनी के मार्ग में उन्हें सदैव ही प्लैंक्टन नामक कीटों की भीड़ धुन्ध जैसी चक्कर काटती दिखाई देती रही।

हाल ही में यह पता लगा है कि डेढ़-दो हजार फुट की गहराई में सागर का अधिकांश एक अज्ञात कीट से इतना भरा है कि इनकी भीड़ धुन्ध जैसी दिखाई देती है। समुद्र के विषय में इतनी सनसनीखेज खोज बहुत वर्षों बाद हुई है। जब प्रतिध्वनि के आधार पर जहाज समुद्र की तली का पता लगाने में सफल होने लगे, तो नये यन्त्रों पर काम करनेवालों को एक नई मुसीबत का सामना करना पड़ा। जब उन्होंने ध्वनि की लहरें प्रसारित कीं तो पहली प्रतिध्वनि उन्हें मछलियों, ह्वेलों या पनडुब्बियों के समूह से मिली, इसके बाद ही उन्हें तली की प्रतिध्वनि मिली। महायुद्ध छिड़ने पर समुद्र की खोज सैनिक नियन्त्रण में आ गई। इसके बाद संयुक्त राज्य अमरीका के जल-बेड़े ने सूचना दी कि सन् १९४२ में संयुक्त राष्ट्र अमरीका के जहाज 'जैस्पर' पर सवार तीन वैज्ञानिकों को दूर तक फैली एक तह का पता लगा जिससे प्रतिध्वनि आती थी। एक हजार से पन्द्रह सौ फुट की गहराई तक ३०० वर्ग मील के घेरे में उन्हें इस तह का पता लगा। महासागर विज्ञान की स्क्रिप्स संस्था के वैज्ञानिक मार्टिन डब्ल्यू० जान्सन ने सन्

१९४५ मे एक और मनोरजक और आश्चर्यजनक खोज की कि जिस तह से प्रतिध्वनि आती थी वह नियमानुकूल ऊपर-नीचे होती रहती थी—रात को ऊपर समुद्र स्तर के निकट और दिन को नीचे समुद्र के गहरे अन्तस्तल में। इससे प्रमाणित हुआ कि यह तह प्राणियो की ही थी।

इन खोजो के पश्चात् यह "धोखे की तली" कई बार देखी जा चुकी है और समुद्र की बहुत गहराई मे व्याप्त है। इसके विषय मे तीन वैज्ञानिक अनुमान हैं। पहला यह है कि तली उन बहुत छोटे प्लैंक्टन का भारी समूह है जो रात के समय ऊपर उठ आते हैं और दिन के समय गहराई में प्रकाश क्षेत्र के नीचे चले जाते हैं। दूसरा यह कि यह तली उन मछलियो का समूह है जो प्लैंक्टनो को निगलकर जीवित रहती हैं और उनके पीछे-पीछे ऊपर-नीचे घूमा करती हैं, तीसरा आश्चर्यजनक, परन्तु कम-से-कम मान्य, अनुमान यह है कि यह तली स्क्विड नामक मछलियो का समूह है जिनकी समुद्र में अत्यधिक सख्या है। परन्तु इस तली की रचना की पकड नहीं हो सकी है, उसका फोटो भी नही लिया जा सका है। अतएव अभी तक इस विषय मे हमारा ज्ञान अधूरा है।

कुछ मेल की शारदीय सीलो और ह्वेलो को गहरे सागरो की आहार-निधि का पता लग गया है। पूर्वी प्रशान्त महासागर के पूर्वोत्तर भाग मे एक रोयेदार सील मिलती है। उसके पेट मे ऐसी मछली की हड्डियाँ मिली हैं जिसकी जाति की मछली कभी मृत या जीवित देखी नही गई थी। मत्स्य-विज्ञान के विशेषज्ञों का कहना है कि यह विचित्र मछली बहुत गहरे जल की प्राणी है।

बहुत बडी और चौडे सिर तथा विशाल दाँतो वाली स्पर्म ह्वेल का भी आखेट-क्षेत्र गहरा जल ही है। इसे अपना आहार स्क्विड नामक मछली से मिलता है या बहुत बडी स्क्विड से भी जो १,५०० फुट या इससे अधिक गहराई में ही रहती है। स्पर्म ह्वेल के सिर पर अकसर गोल-

गोल दाग पाये जाते हैं, जहाँ स्क्विड पर लगी जोकें ह्वेल पर भी बैठ गई थी। गहरे जल के निविड़ अन्धकार मे इन दो विशाल जल-जीवो का जो मल्ल-युद्ध हुआ करता है उसकी कल्पना ही की जा सकती है—२ हजार मन की स्पर्म ह्वेल और ३० फीट लम्बी स्क्विड जिसकी सर्प जैसी बाहो के कारण उसकी कुल लम्बाई ५० फीट तक पहुँच जाती है।

गहराई मे जल का दबाव अत्यधिक बढ जाता है। इस भारी गहराई में चमकीले स्पंज और जेली-मछली जैसे नाजुक प्राणियो का जीवित रहना समझ के बाहर जान पडता है। समुद्र के स्तर पर वायु का दबाव होता है साढे सात सेर प्रति वर्ग इंच। जल के नीचे उतरने पर दबाव की मात्रा प्रति ३३ फुट साढे सात सेर बढ जाती है। गोताखोरी की सीमा तक दबाव की मात्रा २२ सेर प्रति वर्ग इंच तक पहुँच जाती है और इससे अधिक दबाव मानव-शरीर सहन नही कर सकता। परन्तु गहरे समुद्र के जीवो को किसी असुविधा का अनुभव नही होता क्योकि उनके भीतरी अवयवों मे वही दबाव होता है जो बाहर है। चूँकि अधिकाश जीव एक सीमित क्षेत्र के भीतर ही रहते हैं, इसलिए दबाव के परिवर्तन का उन्हे बहुत कम अनुभव होता है।

सागरीय जीवन मे दबाव से सम्बन्धित सबसे अधिक अचम्भे का प्राणी है प्लैंक्टन जो सैंकडो-हजारो फुट ऊपर-नीचे जाया करता है। ह्वेलें और सीलें भी हजारों फुट के गोते लगाती हैं, कैसे ये जीव दबाव के भारी परिवर्तनो को सहन कर लेते हैं, यह भी समझ मे नही आता। तिस पर भी ह्वेल के शिकारियो का कहना है कि नवीन ह्वेल जब भाले मे छिद जाती है तो सीधी आधे मील का गोता लगाती है और सांस के लिए तुरन्त ही समुद्र की सतह पर आ जाती है, बिना किसी थकान के।

इसके अतिरिक्त, वे मछलियां जिनके शरीर मे वायु की थैली होती है, दबाव के परिवर्तन से बुरी प्रकार प्रभावित होती हैं। आहार का

पीछा करते-करते कभी-कभी वे उस सीमा के ऊपर पहुँच जाती हैं जिसके लिए उनका शरीर बना था। ऐसी हालत मे भी वे वापस नही जा पाती। ऊपरी जल के कम दबाव मे उनकी थैली के भीतर वायु बढती है, मछली हलकी हो जाती है और जल उसे ऊपर की ओर फेंकने लगता है। यदि इस उछाल का सामना करने मे वह असफल होती है तो वह मरती हुई समुद्र की सतह पर उतराने लगती है, उसके सब अवयव फूलकर फट जाते हैं।

गुप्त भू-खण्ड

सैकडों जहाजो ने जो प्रतिध्वनियां ली है उनकी सख्या इतनी वढ गई है कि उसके हिसाब से उनका वर्गीकरण नही किया जा सका है। अतएव महासागर की तली की ब्योरेवार ऊँचाई-नीचाई दिखानेवाले नकशे वनने में अभी कई वर्ष लगेंगे। तो भी गहराई का स्थूल रूप मे सही पता प्राय लग ही जाता है।

गहराई के तीन भाग है—महाद्वीपीय विस्तार, महाद्वीपीय ढाल और सागर की तली। महाद्वीपीय विस्तार वहुत कुछ उससे मिले हुए थल-भाग जैसा है। कुछ अत्यधिक गहरे भागो को छोडकर शेष भाग की तली तक सूर्य का प्रकाश पहुँच जाता है। जल पर विभिन्न प्रकार के जीवित पौधे तैरते रहते हैं। सिवार घास चट्टानो से चिपकी रहती है। मैदानो मे चरनेवाले मवेशियो की भांति परिचित मछलियां उसमे घूमती रहती हैं। उसकी जलमग्न घाटियाँ और पहाडियां उसी ढग पर हिम-नदी के प्रभाव से वनी हैं, जिसके दृश्य से हम उत्तरी गोलार्द्ध में परिचित हैं। भूगर्भ-शास्त्रियो का कहना है कि आज का जलमग्न महाद्वीपीय विस्तार किसी सुदूर अतीत मे जल के ऊपरी भूभाग का अग था।

महाद्वीपीय विस्तार मैदानो की भांति क्रमश गहरा होता जाता है, परन्तु एक सीमा पर पहुँचकर यह अनत गहराई की ओर उतरने

लगता है, इस विस्तार की चौडाई तट के अनुसार घटती-बढती रहती है। सयुक्त राज्य अमरीका के पूर्वोत्तर तट के निकट इसकी चौडाई १५० मील है। प्रशान्त महासागर की ओर इसकी चौडाई २० मील के लगभग रहती है, दक्षिणी फ्लोरिडा के हैटरास तट के पास यह विस्तार बहुत पतला हो जाता है, कदाचित् इसलिए कि खाडी की धारा इससे रगडती हुई ही उत्तर की ओर घूमती है।

महाद्वीपीय ढाल महाद्वीप की अन्तिम सीमाओ का सकेत करते है। वास्तव मे समुद्र यही से शुरू होता है। ढाल की कगर जैसी गहरे समुद्र की ये दीवारें विश्व के सर्वोच्च कगार हैं। इनकी औसत ऊँचाई १२,००० फुट है और कही-कही ये कगारें ३०,००० फुट तक ऊँची हैं। जलमग्न दर्रो, ढालू टीलो और चक्करदार घाटियो से इनकी शोभा मे चार चाँद लग जाते हैं। ये सब एक या अधिक मील की गहराई पर जलमग्न हैं। यदि ऐसा न होता तो इनकी गिनती ससार के सबसे अधिक दर्शनीय दृश्यो मे होती। सयुक्त राज्य अमरीका के ग्रैंड कैनियन से इनकी तुलना की जा सकती है। कोई नही कह सकता कि ये सब कैसे बने। इनकी उत्पत्ति के विषय मे जो मतभेद है, उसका समाधान अभी तक नही हो सका है।

आश्चर्य की बात है कि समुद्र की सबसे गहरी घाटियाँ समुद्र के केन्द्र मे न होकर महाद्वीपो ही के निकट हैं। मिडानाओ नामक सबसे गहरी खदक फिलीपीन द्वीप के पूर्व मे है और समुद्र की यह भयानक खदक ६३ मील गहरी है। जापान के निकट टुस्कारोरा खंदक लगभग इतनी ही गहरी है।

महासागर की तली मे कही-कही लम्बी जलमग्न पर्वत-श्रेणियाँ आ जाती हैं। अटलांटिक रिज नामक सबसे बडी श्रेणी १०,००० मील लम्बी है। यह अटलांटिक महासागर के मध्य आइसलैंड के निकट प्रारम्भ होती है और दक्षिण की ओर दोनो महाद्वीपो के बीचोबीच चली जाती है। कही कही कोई शिखर समुद्र के ऊपर निकल आता है।

स्थायित्व व्यापार-धाराओ को प्राप्त है जो पूर्वोत्तर या पूर्व-दक्षिण की ओर से भूमध्य रेखा की ओर प्राय निरन्तर चला करती हैं। पृथ्वी स्वय अपनी धुरी के चारो ओर घूमती रहती है जिसके परिणामस्वरूप जल और वायुधाराएँ उत्तरार्द्ध मे दाहिनी ओर मुड जाती हैं और दक्षिणार्द्ध मे बाईं ओर।

सन् १७६९ के लगभग बेंजमिन फ्रैंकलिन की निगरानी मे खाडी धारा का पहला मानचित्र बनाया गया था। इस धारा की व्युत्पत्ति उत्तरी भूमध्यरेखीय धारा से होती है जो अफ्रीका से पश्चिम की ओर चलती है। पनामा पहुँचकर वह अटलांटिक तट के किनारे-किनारे उत्तर की ओर मुडती है और मेक्सिको के यूकेटन प्रायद्वीप से उसकी विशालता प्रत्यक्ष होने लगती है। वहाँ वह समुद्र के मध्य ९५ मील चौडी और एक मील गहरी नदी का रूप धारण कर लेती है। इस नदी मे जल की गति ३½ मील प्रति घण्टे तक पहुँचती है और मात्रा तो इतनी बडी होती है कि उसमे अमरीका की सबसे विशाल मिसिसिपी नदी जैसी कई सौ नदियाँ समा जायें। आजकल प्राय सभी जहाज शक्ति-सचालित होते हैं और समुद्र पर वायु या जलधारा की विशेष परवाह नही करते। तो भी तट के किनारे-किनारे आने-जानेवाले जहाज इस धारा से बचने का खयाल रखते हैं। दक्षिणी फ्लोरिडा से दक्षिण की ओर जानेवाले माल या तेल के जहाज प्रायद्वीप से लगे कीज द्वीपसमूह से सटे रहते हैं जिससे उनका बचाव खाडी धारा से हो सके।

खाडी-धारा की वेग-शक्ति का सम्भवत कारण यह है कि वास्तव मे वहाँ उसका जल ऊपर से नीचे की ओर चलता है। निरन्तर और तीव्र पूर्वी वायु-धाराएँ यूकेटन और मेक्सिको की खाडियो मे सतह का इतना जल ढेर कर देती हैं कि खुले अटलांटिक महासागर की अपेक्षा यहाँ समुद्र का स्तर ऊँचा हो जाता है।

खाडी धारा के भीतर भी पृथ्वी के अपनी धुरी के चारो ओर घूमते रहने के कारण धारा दाहिनी ओर कुछ ऊँची हो जाती है। यह समझ

लेना आवश्यक है कि आम तौर पर यद्यपि कहा यही जाता है कि जल का धरातल सब जगह एक समान रहता है पर वास्तव मे सामुद्रिक जल का स्तर सब जगह एक जैसा नही रहता।

हेटराम अन्तरीप (उत्तरी करोलिना) के आगे यह धारा कुछ पतली होकर उत्तर-पूर्व की ओर मँडराती हुई स्थिर जलधि के मध्य आगे बढती है। ग्रैंड बैंक्स तक पहुँचने पर उसका लब्राडर धारा से सगम निकट आ जाता है। ध्रुव प्रदेशीय ठडी धारा का रग गहरा हरा होता है और खाडी धारा का उष्ण जल नील वर्ण का होता है, जिस कारण दोनो धाराएँ तुरन्त पहचान ली जाती हैं। शरद् ऋतु मे तापमान का परिवर्तन सगम पर इतना तीव्र होता है कि जब कोई जहाज खाडी धारा मे घुसता है तो उसके अगले भाग मे वायु का तापमान पिछले भाग के तापमान से २०° अधिक हो सकता है। अमरीका के पूर्वी तट पर बने कुछ सैर के स्थानो पर हमें समुद्र का जल बहुत ठडा मिलता है। कारण यह है कि ध्रुव प्रदेशीय धारा हमारे तट और खाडी धारा के बीच मे आ जाती है।

प्रशान्त महासागर की उत्तरी भूमध्यरेखीय धारा पृथ्वी की सबसे लम्बी पश्चिमी धारा है, क्योंकि पनामा से फिलीपीन द्वीप-समूह तक ९,००० मील की यात्रा मे उसे किसी बाधा का सामना नही करना पडता। वहाँ पहुँचकर उसका अधिकाश उत्तर की दिशा मे मुड जाता है। और उसके इस भाग को जापान-धारा कहते हैं। यो यह धारा एशिया मे खाडी धारा के जोड की हो जाती है। जापान-धारा पूर्वी एशिया के महाद्वीपीय विस्तार के समकक्ष उत्तर की ओर बढती जाती है और उसकी दिशा तभी बदलती है जब ओखोट्स्क और बेरिंग सागर होती हुई ध्रुव प्रदेशीय शीत धारा उसके मुकाबले पर आ जाती है। अब यह उत्तरी अमरीका के तट की ओर बढती है, जहाँ उसका जल अल्यू-शियन और अलास्का तटो के जल से मिलकर बहुत कुछ ठंडा हो जाता है। जब यह दक्षिण की ओर कैलिफोर्निया तट तक पहुँचती है तब

तक वह ठडी धारा हो जाती है और अमरीका के पश्चिमी तट के जलवायु की उष्णता इस धारा के प्रभाव से थोडी-वहुत कम हो जाती है।

हवोल्ट धारा दक्षिणी ध्रुव से उत्तर की ओर दक्षिणी अमरीका के पश्चिमी तट के किनारे-किनारे चलती है। पेग्विन नामक पक्षी यों तो ठडे देशों मे ही पाया जाता है, परन्तु हम्वोल्ट धारा के प्रभाव से भूमध्य रेखा तक इतनी ठडक पहुँचती है कि यह पक्षी इस रेखा के निकट गलापगोस द्वीप-समूह मे भी पाया जाता है। धारा से लाये हुए ठण्डे और खनिजो से सम्पन्न जल मे जलजीवो का अतुलनीय आधिक्य है। लाखों भवावीलें इन जलजीवो से अपने पेट भरकर तटवर्ती पहाडियो और द्वीपो पर जो श्वेत विष्ठा जमा करती हैं उसके सूखने पर 'गुआनो' नाम की खाद वनती है जिसकी गणना ससार की प्रमुखतम महत्वपूर्ण खादों मे की जाती है।

गलापगोस द्वीप-समूह के निकट हम्वोल्ट धारा के ठडे हरे जल और भूमध्यरेखीय नीले उष्ण जल के मिश्रण के आश्चर्यजनक दृश्य देखने मे आते हैं। लहरें एक दूसरे से मिलती हैं और फेनिल धाराएँ वनती हैं। ऐसा जान पडता है मानो समुद्र के अन्तस्थल मे दो विभिन्न तापमान की धाराओ का द्वन्द्व चल रहा हो। आहें और फुफकारें जैसी सुनाई देती हैं, पानी उवलता जैसा दिखता है और दूरस्थ लहरो की चट्टानों से टक्कर लेने जैसी ध्वनि सुनाई देती है, क्योकि वहाँ जल ऊपर-नीचे चला करता है। जो जल-जीव समुद्र के गहरे भाग मे रहते हैं, वे जल के साथ ऊपर आ जाते हैं जहाँ उनका यहाँ रहनेवाले जलजीवो से घोर सघर्ष होता है। कई स्थानो पर निरन्तर नीचे से ऊपर यह जल-यात्रा होती रहती है।

सयुक्त राज्य अमरीका के पश्चिमी तट पर सार्डीन मछली का अत्यन्त लाभप्रद व्यवसाय जल मे होनेवाली इस प्राकृतिक उथल-पुथल का ही परिणाम है।

संचरणशील ज्वार

ज्वार की लहरों की अपेक्षा कोई और शक्ति समुद्र को इतना प्रभावित नहीं करती। इनसे प्रभावित जल की मात्रा अत्यधिक विशाल है। उत्तरी अमरीका के पूर्वी तट पर पसामाकोडी नामक छोटी-सी खाड़ी में प्रतिदिन दो बार ज्वार की लहरें ५० अरब मन जल ले जाती हैं। फण्डी की खाड़ी में इस मात्रा का ५० गुना जल पहुँचता है, और मानव की आविष्कृत कोई शक्ति जल के इस नियमानुकूल चढ़ाव और उतार का नियन्त्रण नहीं कर सकती। अटलांटिक महासागर का 'क्वीन मेरी' नामक विशाल मुसाफिरी जहाज भी न्यूयार्क बन्दरगाह के भीतर आने के लिए ज्वार के शान्त होने की प्रतीक्षा किया करता है, नहीं तो ज्वार की धारा उसे घाट से इतने जोर के साथ लड़ा दे कि जहाज ही टूट जाये।

चांद और सूर्य के आकर्षण से समुद्र में ज्वार-धारा उत्पन्न होती है। मास में दो बार अमावास्या और पूर्णिमा के दिन ज्वार की लहर सबसे अधिक ऊँची उठती है। इन दिनों सूर्य, चांद और पृथ्वी एक ही कतार में होते हैं, अतएव सूर्य तथा चन्द्रमा की आकर्षण-शक्ति मिलकर बहुत अधिक हो जाती है। मास में दो बार अष्टमी के निकट सूर्य, चांद और पृथ्वी एक त्रिकोण-सा बनाते हैं। तब ज्वार-धारा बहुत ही नीची रह जाती है क्योंकि सूर्य और चांद के आकर्षण एक-दूसरे के विरुद्ध होते हैं, इसे भाटा कहते हैं।

संसार के सबसे ऊँचे ज्वार फण्डी की खाड़ी में आते हैं जहाँ सर्वोच्च ज्वार-धारा ५० फुट की ऊँचाई तक जाती है। संसार में बिखरे अन्य स्थानों पर ज्वार-धारा की ऊंचाई ३० फुट के ऊपर जाती है, जैसे अर्जेंटाइना में पोर्टो गलेगोस, अलास्का में कुक इनलेट और फ्रांस में सेंट मालो खाड़ी। परन्तु कई अन्य जगहों में, जैसे टहिटी में, सर्वोच्च ज्वार की ऊँचाई एक फुट और कुछ इंच के निकट रहती है। पनामा नहर के पूर्वी

सिरे पर ज्वार-धारा दो फुट के ऊपर नही जाती, परन्तु प्रशान्त महासागर के सिरे पर, चालीस मील ही दूर, ज्वार लहर १२ से १६ फुट तक जाती है।

पृथ्वी की बाल्यावस्था मे ज्वार-धाराएँ बहुत ऊँची और शक्तिशालिनी होती थी, क्योकि तब सूर्य और चाँद कही अधिक निकट थे। ज्वार की लहर की तब अत्यधिक विशालता और प्रचण्डता होती होगी और किसी भी प्राणी का तट पर जीवित बच जाना असम्भव हो जाता होगा।

लाखो वर्षो के बाद चाँद दूर हो गया है और ज्वार-लहर की रगड ने पृथ्वी की चक्र-गति भी मन्द कर दी है। किसी समय अपनी धुरी के चारो ओर एक चक्र पूरा करने मे उसे कदाचित् चार घण्टे ही लगते थे। पृथ्वी के घूमने की गति कभी इतनी मद हो जायेगी कि हमारा दिन अब से ५० गुना लम्बा हो जायेगा। इराक मे बाबिल का उत्कर्ष आज से लगभग ४,००० वर्ष पहले था। तब से आज का दिन कई सेकंड लम्बा हो गया माना जाता है।

ज्वार के असाधारण परिणामो मे कदाचित् सबसे अधिक प्रसिद्ध 'बोर' हैं। 'बोर' का जन्म तब होता है जब ज्वार की ऊँचाई बहुत हो, साथ ही नदी के मुहाने पर बालू का टीला-जैसा कोई बध हो। फलत ज्वार-धारा रुकने पर सिमटती है और ऊँची होकर भीतर की ओर तेजी मे घुसती है। दक्षिणी अमरीका की अमेजन नदी मे 'बोर' नदी के भीतर २०० मील तक घुसता चला जाता है और एक ही समय एक-दूसरे के पीछे पाँच ऊँची लहरें जाती दिखाई देती हैं।

चीन सागर मे गिरनेवाली जीन्ताग नदी मे यातायात 'बोर' से ही नियन्त्रित होता है, क्योकि यहाँ का 'बोर' ससार मे सबसे अधिक बडा और खतरनाक होता है। महीने के अधिकाश मे वह आठ से ग्यारह फुट तक ऊँची लहर के रूप मे १४-१५ मील प्रति घण्टे की रफ्तार से फेनिल जल-प्रपात की भाँति अपने को बिगाडता-बनाता आगे बढता है।

कभी-कभी आगे बढ़ती लहर का शिखर नदी के २५ फुट ऊपर तक पहुँच जाता है।

सीप, घोंघे जैसे असंख्य पशु जीवों का अस्तित्व ज्वार की लहर पर अवलम्बित रहता है, क्योंकि इनके द्वारा उन्हें अपना भोजन मिलता है। ज्वार-भाटे की सीमाओं के भीतर रहनेवाले जीवों ने अपने को इस प्राकृतिक परिवर्तन के अनुकूल बना लिया है, क्योंकि जहाँ जल के अभाव में इन्हें प्यास से मरने का खतरा है वहाँ इनका जलधारा में बह जाना भी निश्चित है, जहाँ थल के जीव इन्हें खा सकते हैं, तो जल-जीवों की भी इन तक पहुँच है, और इनके नाजुक अवयव उन तूफानों की लहरें भी सहन कर जाते हैं जो बड़े-से-बड़े पत्थरों को भी तोड़ डालती हैं।

कुछ जलजात जीवों की प्रजनन-लीला चांद्र मास और सम्बन्धित ज्वार-भाटों के अनुकूल होती है। उत्तरी अफ्रीका के तट पर समुद्र में एक कीट होता है जो पूर्णिमा की रात ही को प्रजनन-कर्म करता है और इन उष्ण-प्रधान समुद्र-तटों पर कुछ कीट होते हैं जिनके अंडे-बच्चे ज्वार-भाटे के तिथि-क्रम के इतने अनुकूल होते हैं कि वैज्ञानिक पर्यवेक्षक इनका कार्य-क्रम देखकर महीना, दिन और दिन का समय भी बता सकते हैं।

मनुष्य के हाथ की नाप की ग्रुनियन नामक एक चमकीली छोटी-सी मछली होती है जिसने अपनी जीवन-चर्या ज्वार-भाटे के क्रम के बिलकुल अनुकूल बना ली है। मार्च से अगस्त तक की पूर्णिमा के कुछ ही पश्चात् कैलिफोर्निया के तटों पर लहरों में ये मछलियाँ दिखाई देने लगती हैं। ये भाटे की लहर के साथ आती हैं और एक क्षण तक गीली बालू पर चमकती पड़ी रहती हैं फिर उछलकर अगली लहर में फुदक-कर समुद्र की ओर चली जाती हैं।

अगली और पिछली लहर के बीच नर और मादा मछली को सम्मिलन का अवसर मिलता है और इतने ही समय के भीतर गीली

बालू मे वे अपने अण्डे दाबकर चली जाती हैं। भाटे के कारण लहरों की सीमा पीछे हटती जाती है। जिस कारण गीली बालू मे दबे अण्डे सुरक्षित रहते हैं। एक पक्ष तक इन अण्डो को गीली और गरम बालू के नीचे ससेचित होने का अवसर मिलता है। जब दूज के ज्वार की लहरें उन पर आती हैं तब ठडे जल का स्पर्श पाकर इन अण्डो मे से बच्चे निकल आते हैं और लहरो के साथ अपनी पहली समुद्र-यात्रा पर चले जाते हैं।

उत्तरी ब्रिटैनी (फ्रास) और निकटवर्त्ती चैनल द्वीप-समूह के रेतीले समुद्र-तटो पर हजारो की सख्या मे एक कीट का जीवन-क्षेत्र है जिसे कनवोलुटा रोस्कोफेंसिस कहते हैं। इस कीट की ज्वार-क्रम से सम्बन्धित जीवन-लीला स्मरण रखने योग्य है। कनवोलुटा ने एक प्रकार की हरी काई से घनिष्ठ समझौता कर रखा है, जिसके अवयव उसके शरीर के भीतर रहकर उसे भोज्य देते रहते हैं। वनस्पति को अपनी प्राण-रक्षा के लिए सूर्य के प्रकाश की आवश्यकता रहती है। अतएव भाटा उतर जाने पर कनवोलुटा बालू से निकलकर धूप मे आ जाता है ताकि उसके भीतर वानस्पत्य अश आवश्यक भोज्य बना सके। जब ज्वार लौट आता है तो कीट बह जाने से बचने के लिए अपने को फिर बालू के नीचे दबा लेता है। इस प्रकार उसकी जीवनचर्या ज्वार-भाटे के क्रम पर अवलम्बित रहती है—भाटे के पश्चात् धूप मे, ज्वार आने पर बालू के नीचे।

कनवोलुटा के सम्बन्ध में सबसे अधिक स्मरणीय बात यह है कि कभी-कभी उनकी बस्ती किसी जल-जीव प्रदर्शनी मे भेज दी जाती है। वहां ज्वार-भाटे तो आते नही। परन्तु दिन मे दो बार कनवोलुटा जल-पात्र के पेंदे मे पडी बालू से उठकर सूर्य के प्रकाश मे आ जाता है और इतनी ही बार वह बालू मे उतर जाता है। उसके मस्तिष्क नही होता इसलिए उसके स्मरण-शक्ति भी नही होती। परन्तु उसके छोटे हरे शरीर के प्रत्येक अवयव मे सामुद्रिक ज्वार-भाटे का कालक्रम

समाया हुआ है, जिसका निर्वाह स्वभावत वह इस अपरिचित क्षेत्र मे भी करता रहता है।

पृथ्वी का ताप-वितरक

यदि महासागर न होते तो वायु मे हमे अत्यधिक गरमी, सरदी और खुश्की की अकथनीय कठिनाइयाँ भोगनी पड़ती। पृथ्वी का तीन चौथाई भाग जल से ढका है और गरमी को सोख लेने तथा निकालने मे जल इस विश्व का सर्वोत्तम तत्व है, वह सूर्यशक्ति का प्राकृतिक बचत बैंक है, जिस कारण ऋतु-परिवर्तन की विषमताओं से हमारी बहुत-कुछ रक्षा होती रहती है।

सागरीय धाराओ के माध्यम से गरमी-सरदी का वितरण हजारो मीलों तक होता रहता है। पृथ्वी के दक्षिणार्द्ध के व्यापारिक वायु-क्षेत्र से गरम जल की जो धारा चलने लगती है उसका क्रम डेढ वर्ष मे पूरी होनेवाली ७,००० मील से अधिक लम्बी यात्रा के मार्ग मे पहचाना जा सकता है। सूर्य की गरमी ससार के सब भागो पर समान मात्रा मे नही पहुँचती, महासागर गर्मी की असमानता की पूर्ति करता है।

समुद्र की ताप-वितरण शक्ति से कोई स्थान समुद्र का पड़ोसी होकर उतना प्रभावित नही होता जितना जल-धाराओ और हवाओं की दिशा से। उत्तरी अमरीका का पूर्वी तट समुद्र से किंचित् ही प्रभावित हो पाता है, क्योंकि वहाँ पश्चिमी हवाएँ चला करती हैं। इसके मुकाबले प्रशात महासागरीय तट उन हवाओं के मार्ग मे पड़ता है जो हजारों मील चौड़े महासागर की नमी लिये यहाँ पहुँचती हैं। प्रशात महासागर से प्राप्त नमी के कारण ब्रिटिश कोलम्बिया, वाशिंगटन और ओरेगन राज्यो का मौसम समशीतोष्ण हो जाता है। परन्तु पहाड़ी श्रेणियो की बाधा के कारण यह प्रभाव तटवर्ती पट्टी तक ही सीमित रह जाता है।

अटलांटिक महासागर से चलनेवाली हवाओं को पुरानी दुनिया

का योरपीय तट बिलकुल खुला मिलता है। तट पर पहाडी बाधाओ के न होने के कारण हवाएँ योरप के भीतर सैकडो मील तक चली जाती हैं। खाडी-धारा भी योरपीय तटो तक पहुँचती है। अतएव योरपीय तटो का जलवायु इस धारा की प्रबलता और उसके तापक्रम से भी प्रभावित होता है। यद्यपि लम्बी यात्रा के अन्त मे इस धारा की प्रबलता और तापक्रम मे बहुत कुछ क्षीणता आ जाती है। भविष्य मे चलकर किसी समय योरपीय ऋतु-परिवर्तन के दीर्घकालीन सकेत कुछ अश मे सामुद्रिक तापक्रम की माप पर आधारित होगे। उत्तरी अट-लाटिक महासागर की उपमा एक बडे स्नानागार से दी जाती है जिसमे एक गरम पानी का और दो ठडे पानी के नल लगे हैं। खाडी धारा है गरम पानी का नल और पूर्वी ग्रीनलैंड तथा लब्राडर धाराएँ ठडे पानी के नल हैं। ठडे नलो मे जल की मात्रा बदलती रहती है। गरम नल मे जल की मात्रा भी बदलती रहती है और उसका तापक्रम भी। इन तीनो नलो के मिश्रण से पूर्वी अटलाटिक महासागर की सतह का ताप-क्रम निर्धारित होता है। यदि शरद् ऋतु मे यह तापक्रम कुछ भी बढ जाता है तो पश्चिमोत्तर योरप मे शीघ्र हिम गलने लगने का सकेत मिलता है। जिस कारण वासती जुताई कुछ पहले सभव हो जाती है और बढ़िया फसल की आशा होने लगती है।

इस प्रकार महासागर ससार के दैनिक और वार्षिक जलवायु का नियमन किया करता है। पृथ्वी के लम्बे इतिहास मे युगीन ऋतु-परिवर्तन भी क्या महासागर से प्रभावित हुए हैं ? प्रसिद्ध स्वीडिश विशेषज्ञ आटो पेटरसन ने इस वैज्ञानिक कल्पना का प्रतिपादन किया है कि महासागर से पृथ्वी के युगीन ऋतु-परिवर्तन भी प्रभावित हुए हैं।

इस वैज्ञानिक ने सिद्ध किया है कि साधारण और विषम जलवायु के युग एक दूसरे के बाद ज्वार-भाटे के चक्र के साथ आते रहते हैं। प्रति १८ शतियो के पश्चात् सूर्य और चन्द्रमा उस स्थिति मे आ जाते हैं जिसमे वे समुद्र को अत्यधिक आकर्षित करते हैं। ऐतिहासिक काल

में विशालतम ज्वार-लहरों का समय सन् १४३३ के लगभग आया। इस वर्ष के पहले और पश्चात् एक शताब्दी तक जब ज्वारों का अत्यधिक जोर रहा, तो घटनाएँ भी आश्चर्यजनक और असाधारण रूप में प्रत्यक्ष हुईं।

उत्तरी अटलाण्टिक महासागर का अधिकांश भाग ध्रुव प्रदेशीय हिम से ढक गया। उत्तरी और बाल्टिक सागरों के तट विकराल आँधियों और बाढ़ों से नष्ट हुए और शरद् ऋतु अत्यधिक ठण्डी हुई। आइसलैण्ड के प्राचीन लेखों में वर्णित है कि चौदहवीं शताब्दी के प्रारम्भ में शरद् ऋतु में इतनी सरदी पड़ती थी कि भेड़िये नार्वे से डेनमार्क तक चले जाते थे। पूरा बाल्टिक सागर जम गया था। दक्षिणी योरप में असाधारण आँधियाँ चलीं, फसलें नष्ट हुईं, योरपवासी दुर्भिक्ष और रोग से ग्रस्त हुए।

लगभग सन् ५५० ई० निम्नतम ज्वार का वर्ष रहा। और भविष्य में यही कैफियत सन् २४०० के लगभग होनी है। उपर्युक्त वर्ष के पहले और बाद की शताब्दियों में संसार को सुखकर ऋतु का सौभाग्य प्राप्त हुआ। योरपीय तट पर और आइसलैण्ड के चारों ओर के सागर पर हिम नाममात्र को ही दिखाई देता रहा। प्राचीन गाथाओं के अनुसार ग्रीनलैण्ड में फल फूल पैदा होते थे और मवेशियों की संख्या बहुत अधिक थी। नार्वे में बस्तियों की पहुँच वहाँ तक थी जहाँ तक अब हिमनद पहुँचते हैं और खुदाई से प्रत्यक्ष होता है कि उस समय नार्वे में बसनेवाले लोग शीत से अपेक्षाकृत बहुत कम त्रस्त थे।

परन्तु यह सुखकर जलवायु १३वीं शताब्दी से बिगड़ने लगा और १४वीं शताब्दी के प्रारम्भ तक ऋतु के अधिकाधिक बिगड़ने से योरप को असाधारण मुसीबतों का सामना करना पड़ा और ग्रीनलैण्ड की बस्तियाँ तो समाप्त ही हो गईं।

इन प्राचीन वर्णनों से पेटरसन की यह धारणा दृढ़ हुई कि ज्वार के कारण विशाल निचली धाराओं ने आगे बढ़कर ध्रुव सागर के हारे

जल मे गडवड कर दी। ऊँचे ज्वार की शताब्दियो मे अटलाण्टिक महासागर के गरम जल की असाधारण विशाल मात्रा ध्रुव सागर तक हिम के नीचे-नीचे पहुँच गई। तव तब हजारों वर्गमील तक फैला हुआ हिम निचली गरमी के प्रभाव से थोडा-बहुत पिघला और उसके टुकडे-टुकडे हो गए। इस प्रकार बर्फ की शिलाएँ असाधारण मात्रा मे अटलाण्टिक महासागर में दक्षिण की ओर बहने लगी। इससे समुद्र की सतह पर चलनेवाली धाराएँ प्रभावित हुईं और तदनुकूल वर्षा तथा वायु की दिशा और तापक्रम मे भी परिवर्तन हुए। न्यूफ़ाउण्डलैण्ड के दक्षिण मे हिम-शिलाओ ने खाडी-धारा से टक्कर ली और उसे पूर्व की ओर कुछ और मोड दिया, जिस कारण ग्रीनलैण्ड, आइसलैण्ड, स्पिट्ज़वर्जन और उत्तरी योरप उसके उष्ण जल के प्रभाव से वचित हो गए।

ध्रुव प्रदेश की ये घातक दुर्व्यवस्थाएँ १८ शताब्दियो पश्चात् ही आती हैं, परन्तु पेटरसन के मतानुसार ऋतु-परिवर्तन के साधारण प्रदर्शन ६, १८ या ३६ वर्ष के अन्तर से भी होते रहते हैं। ये परिवर्तन भी ज्वार-चक्र के सक्षिप्त और साधारण परिवर्तनो के अनुकूल ही होते हैं।

उदाहरणार्थ, सन् १९०३ मे पृथ्वी, चांद और सूर्य ऐसी स्थिति मे पहुँचे कि ज्वार का आकर्षण सर्वोच्च सीमा से कुछ ही कम रहा। फलत ध्रुव प्रदेश मे स्मरणीय हिम-विस्फोट हुए। स्कैंडिनेविया के मछेरो को काड, हेरिंग और अन्य मछलियाँ अपने जलक्षेत्र मे नही मिली। वेरेट्स सागर का अधिकाश मई मास तक हिम की मोटी पर्त से ढका रहा। सन् १९१२ मे ग्रहो की प्राय वैसी ही स्थिति रही, जिस कारण हिम का आधिक्य रहा और 'टाइटानिक' नामक जहाज हिमशिला से टक्कर खाकर नष्ट हो गया।

अपने ही जीवनकाल मे हमने आश्चर्यजनक ऋतु-परिवर्तन देखे हैं और इसे समझने के लिए हमे आटो पेटरसन के विचारो के अनुसरण

की इच्छा होती है। लगभग सन् १९०० से ध्रुव प्रदेश के जलवायु मे परिवर्तन होना प्रारम्भ हुआ है। सन् १९३० के लगभग यह परिवर्तन आश्चर्यजनक रूप मे प्रत्यक्ष होने लगा और अब इस परिवर्तन का प्रभाव ध्रुव प्रदेश के दक्षिणी और समशीतोष्ण भागो तक पहुँचने लगा है। संसार के हिमानी-शिखर की प्रगति उष्णता की ओर है।

सन् १९४० मे योरप और एशिया का पूरा उत्तरी तट ग्रीष्म ऋतु मे हिम से पहले की अपेक्षा कहीं अधिक मुक्त रहा। इस शताब्दी के पाँचवे दशक मे पश्चिमी स्पिट्जबर्जन से कोयले की लदाई सात महीने तक होती रही, जब कि शताब्दी के प्रारम्भ में यह द्वीप हिम से तीन महीने ही मुक्त रह पाता था। सन् १९२४ से १९४४ तक ध्रुव सागर के रूसी भाग में हिम-शिलाओ का क्षेत्र लगभग ४ लाख वर्गमील घट गया।

सुदूर उत्तरी प्रदेशों मे पहली बार बहुत-से ऐसे नये पक्षी दिखाई देने लगे हैं, जिनका पहले कोई उल्लेख नही मिलता। ग्रीनलैंड के दक्षिण से जो बहुत-से पक्षी अब ग्रीनलैंड पहुँचने लगे हैं उनमे वे नाम भी शामिल हैं जो अंग्रेजी मे फिलफ स्वालो, बाल्टीमोर ओरियल और कनाडा मे वार्बलर कहलाते हैं। आइसलैंड तक वे पक्षी पहुँचने लगे हैं जिनका पहले वहाँ के निवासियो को पता न था। इनमे वे पक्षी भी शामिल हैं जिनके अंग्रेजी नाम हैं स्काइलार्क, स्कारलेट ग्रास्बीक और क्रश।

सन् १९१२ मे जब काड मछली पहली बार ग्रीनलैंड के तट पर दिखाई दी तो उस समय वहाँ के एस्किमो और डेन निवासी इससे परिचित न थे। सन् १९३० तक यह मछली उनका मुख्य आहार बन गई और इसके तेल से उनके घरों में दीपक जलने लगे। इंग्लैंड के मछेरों का व्यवसाय अत्यधिक उन्नति पर है और उनके जहाज अब बेरेंट्स सागर तक पहुँचने लगे हैं। इस क्षेत्र से उन्हें प्रतिवर्ष २ अरब पौंड तो केवल काड मछलियाँ ही मिलने लगी हैं। संसार के किसी भी

जलक्षेत्र से कभी एक ही मेल की मछली इतनी अधिक नही पकडी गई थी।

ध्रुव प्रदेश और उससे लगे भागों मे शीत के कम होने पर पौधो को उगने और बढने का अधिक समय मिलने लगा है, जिस कारण वार्षिक फसल से उपज बढने लगी है। नार्वे मे अच्छी फसले नियमानुकूल प्रतिवर्ष मिलने लगी हैं। कदाचित् ही किसी वर्ष मे ऋतु बोआई के प्रतिकूल होती हो। उत्तरी स्कैडिनेविया मे अब पेडो की सीमा पहले से कही ऊपर पहुँच गई है।

ज्वारो के कालचक्र मे वर्तमान स्थिति का हिसाब लगाना बडा रोचक विषय है। मध्य-युग के अन्त मे बडे ज्वारो के साथ हिमपात, आँधियो और बाढो की जो मुसीबतें हमारे पूर्वजो पर आई, उन्हे बीते पाँच शताब्दियाँ हो गई। मध्य-युग के प्रारम्भ मे ज्वार निर्बलतम रहे, जिस कारण उस समय के हमारे पूर्वजों को सुखकर जलवायु का सौभाग्य प्राप्त हुआ। उतने ही निर्बल ज्वारो का जमाना आज से ४०० वर्ष बाद आनेवाला है। इस कारण हमारी प्रगति सुखकर जलवायु की ओर है, ज्वार की शक्ति मे उतार-चढाव होता रहेगा परन्तु प्रगति पृथ्वी की उष्णता की ही दिशा मे है।

स्वतंत्रता का संरक्षक

(जस्टिस ओलिवर वेंडल होम्स की जीवनी)

(कैथरीन ड्रिंकर बोवेन की पुस्तक 'यांकी फ्राम ओलम्पस' का सार)

जस्टिस होम्स की जीवनी अमरीका के एक ऐसे गौरवशाली सपूत की कहानी है, जिसका पूरा जीवनकाल युद्ध और शान्ति की महत्वपूर्ण घटनाओं से परिपूर्ण रहा। इस जीवनी में अमरीका के सुप्रीम कोर्ट का भी अत्यन्त सजीव चित्रण मिलता है।

प्रारम्भ किया। वह समय का खयाल न करके गम्भीरता के साथ और श्रमपूर्वक अध्ययन करने लगे। उन्हें समय की याद न रहती, और जब रात्रि के भोजन का समय होता या घर के प्रवेश-द्वार के निकट रात के बारह बजे का घण्टा सुनाई देता तो वह बहुत चकित हो जाते। जब परीक्षा के वार्षिक फल जोडे गये, तो वेंडल होम्स उच्च पद से उत्तीर्ण होकर अमरीका की प्रमुख शैक्षिक उपाधि 'फाई बीटा काप्पा' के अधिकारी हुए।

● ● ●

शीघ्र ही वेंडल और उनके सहपाठी कही अधिक महत्वपूर्ण कामो मे फँस गये। सन् १८६० मे जिस दिन सयुक्त राज्य अमरीका के प्रेसिडेंट का चुनाव हुआ, तो मतदान के लिए उनकी अवस्था १६ महीने कम थी। देश ने थोडे ही बहुमत से लिकन को प्रेसिडेंट के पद के लिए चुना। वसन्त तक बहुत दिनो का झगडा गृह-युद्ध मे परिवर्तित हो गया। १२ अप्रैल, १८६१ को सघीय सेनाओ ने फोर्ट समटर पर गोलाबारी की। तीन दिन बाद लिकन ने ७५,००० नागरिक सैनिको की भरती की अपील प्रसारित की।

न्यू इगलैण्ड गार्ड के चौथे बटालियन मे भरती होकर वेंडल होम्स ने अपना आसमानी रग का पतलून पहना, उस पर गहरा नीला कोट चढ़ाया और लाल टोपी पहनी। इस प्रकार सुसज्जित होकर उन्होने अपने पिता का गर्वपूर्ण आशीर्वाद लिया और २४ अप्रैल को फ़ोर्ट इडेपेंडेंस मे हाजिरी देने के लिए रवाना हो गये ?

बटालियन मे हारवर्ड के जो लडके भरती थे, उन्हें कैम्ब्रिज वापस आकर दीक्षान्त समारोह मे सम्मिलित होने का मौका दिया गया।

वेंडल होम्स अपनी कक्षा के कवि थे, उनकी कक्षा का वार्षिकोत्सव कक्षा-दिवस कहलाता था। उत्सव मे उन्होंने अपनी कविता सुनाई, जिसके पश्चात् होलवर्दी हाल के सामने एम्स के पुराने पेडो के नीचे

नृत्य हुआ। भूरे वस्त्र पहने और गले में रक्त वर्ण का शृङ्गार किये वैंडल की प्रणयिनी फैनी बाउडिच टिकनचेल बाके दर्शकों से इतनी बुरी तरह घिरी थी कि वैंडल को उससे बात करने का मौका न मिला। प्रफुल्ल होने पर वह कितनी सुन्दर लगती थी। एक माला से गुलाब का फूल तोड़कर वैंडल ने भीड़ के मध्य फैनी की ओर फेंक दिया। अकस्मात् उसे आभास हुआ कि कितनी प्रिय नारी से उसका विछोह हो रहा है। वह मूर्तिवत् खड़ा रह गया और अपने आँसू रोक न सका।

• • •

कुछ ही सप्ताह के भीतर बीसवीं मसाचुसेट्स पैदल सेना में होम्स की अफसर के पद के लिए सिफारिश की गई। जुलाई में युवक लेफ्टिनेण्ट होम्स ने तीन वर्ष तक सेवा करने का वचन दिया और बोस्टन के आठ मील दक्षिण रेडविल स्टेशन पर ट्रेन से उतरकर घास का मैदान पार करके वहाँ पहुँचा, जहाँ पहली कम्पनी के सफेद तम्बू धूप में चमक रहे थे।

पहली कम्पनी प्रारम्भ में छोटी ही थी। तो भी प्रबन्ध की दृष्टि से लेफ्टिनेंट होम्स के लिए वह जरूरत से ज्यादा बड़ी थी। उन्हें कोई अनुभव न था, और वह घबराये हुए भी थे। स्वयं आज्ञा देने के बजाय वह अपने बड़ों से सुझाव लेने के अधिक आदी थे। जब कभी नानटुट के लोग भर्ती होने आते तो होम्स प्रार्थना करते कि वे लोग उनकी कम्पनी में न आवें। वे सब किसान कुछ स्वतन्त्र रहे थे। साधारण अमरीकियों की भाँति वे भी यह मत बनाये हुए थे कि जब किसी व्यक्ति से दैनिक श्रम का समय समाप्त हो जाये तो उसे इच्छानुसार घूमने और बिना किसी अफसर की अनुमति के अपना पैसा व्यय करने का अधिकार रहे। जब दिन समाप्त होता तो बिना किसी की अनुमति लिये वे लोग मैदान पार मिल विलेज नामक कस्बे की ओर चल देते और वहाँ मद्य-पान में मग्न रहते।

तीन महीने पश्चात् प्रशिक्षण समाप्त होने पर बीसवी सेना पोटो-मैक नदी की एडवर्ड्स फेरी से दो मील दूर एक गेहूँ के खेत मे पडाव डाले हुए थी। नदी पार वर्जिनिया मे विद्रोही सैनिक दबे पैरो पेडो की आड मे चल रहे थे। उनके निशाने सही होते थे, कभी-कभी पहरे पर तैनात सिपाही वापस नही आता था, क्योकि गोली का निशाना बना-कर वह मार दिया जाता था। इस प्रकार लडाई प्रारम्भ हो गई।

जब अन्ततः लडाई का हुक्म आया तो बीसवी कम्पनी के सिपाही चार पुरानी और दरार पडी नावो द्वारा अँधेरे-ही-अँधेरे नदी को पार कर गये। रात का आधा समय इस प्रकार बीता। प्रात काल एक खेत की ऊँची घास मे छिपे वे सेना की बाकी टुकडी की प्रतीक्षा करने लगे। घने पेडो के पीछे छिपे हुए वैरी सैनिक भी वैसी ही प्रतीक्षा मे लगे।

सैनिको के अपनी-अपनी जगह पर मुस्तैद होने पर आज्ञा पाते ही होम्स की कम्पनी ने जगल की दिशा मे गोली चलाना प्रारम्भ कर दिया।

अकस्मात् जगलियो की भाँति जोर से चिल्लाते हुए विद्रोहियो ने धावा बोल दिया। होम्स ने दो बार भी गोली नही चलाई थी कि एक ठडी गोली उनके पेट मे आ लगी। जब वह साँस लेने योग्य हो गये तो आगे की ओर बढने लगे। निकट ही दोनो दलो मे मारकाट हो रही थी। एक घुटना टेककर होम्स ने गोली चलाई। दूसरी गोली फिर आई और इस बार वह उसके सीने मे लगी। वेंडल गिर पडे, उन्होंने उल्टी की ओर अपनी आँखें बन्द करके लेट गये। उनकी छाती मे भयानक पीडा हो रही थी। उनके कोट की जेब मे अफीम की एक शीशी थी। सावधानी से अपना हाथ उठाकर अफीम की शीशी तक पहुँचने की उन्होने कोशिश की। उनका सीना तर था और चिपचिपा हो रहा था। वह मूर्छित हो गये।

• • •

चिन्ता से विक्षिप्त होकर बोस्टन के अधिकांश नागरिक समाचार की प्रतीक्षा करने लगे। समाचार-पत्र 'पोस्ट' का कहना था कि वर्जिनिया में एक लड़ाई हो चुकी है, परन्तु उसमें न तो विजय का जिक्र था, न हार का और न घायलों या मृतकों के नाम ही थे। श्रीमती होम्स मुँह लटकाये घर के भीतर चुपचाप चक्कर लगाती रही। लड़ाई के पाँच दिन बाद ही एक मित्र का तार पहुँचा जिसमें यह सूचना थी: वेंडल की छाती में गोली लगी थी लड़ाई के अस्पताल में भरती थे और चंगे हो रहे थे। शीघ्र ही उन्हें फिलाडेल्फिया के अस्पताल भेज दिया जायेगा।

उसी दिन 'पोस्ट' ने बाल्स ब्लफ की लड़ाई का परिणाम प्रकाशित किया। डाक्टर होम्स घर के ऊपरी खण्ड में बैठे थे, रंज के मारे श्वेत पड़ गये और पत्र लेकर नीचे पहुँचे तो पत्नी से मुलाकात न हो सकी। उत्तरी राज्यों के लिए यह बहुत भारी हार थी। पत्रों की टिप्पणी इसी प्रकार थी कि यह भयंकर भूल अपराध से बढ़कर थी। सैनिकों को पीछे हटकर नदी पार करनी पड़ी। तेज बहाव में वे तैरने की कोशिश करते और सहायता माँगते। घायलों से भरी एक नाव उलट गई और उस पर के सब लोग डूब गये। नदी का जल रक्त से लाल दिखने लगा। नावों पर पैर रखते ही सैनिक फिसलकर घायलों पर गिर पड़ते। बचाने का कोई प्रबन्ध न था, न नावें थीं, न बेड़े थे।...

ज्यों ही वेंडल चलने योग्य हुए उनके पिता डॉ० होम्स उन्हें साथ लाने फिलाडेल्फिया गये। बोस्टन को जानेवाली गाड़ियों पर छः जगहें किराये पर डॉ० होम्स ने ले ली थीं और उन पर गद्दा बिछा दिया था। वेंडल बाल-बाल बच गये थे। गोली उनका सीना पार कर गई थी, परन्तु हृदय और फेफड़े बिलकुल बच गये थे। डॉ० होम्स ने एक मित्र को लिखा, "वेंडल मौत के मुँह से बाल बाल बचे हैं।"

• • •

शरद के मध्यकाल तक वेंडल का घाव भर गया। अभी निर्बलता के कारण मुख की ज़र्दी नही गई थी, परन्तु आँखो से शून्यता गायब थी; थकान के समय या कभी-कभी रात ही को उनमे यह शून्यता दिखाई देती थी।

२३ मार्च को वेंडल के नाम आज्ञा आई कि कैप्टेन होकर उन्हें वर्जिनिया राज्य मे हैवटन नामक स्थान पर अपनी रेजीमेंट मे फिर पहुँचना है।

प्रायद्वीप के उत्तर और पश्चिम मे स्टोनवाल जैक्सन को खोजकर उसे रिचमण्ड तक खदेड देने के प्रयत्न मे वेंडल के सैनिको को कीचड मे सनी हुई अपनी हलके नीले रग की वर्दियाँ पहने बन्दूकें और झोले घसीटते दलदल और उलझी झाडियाँ पार करनी पडी। वर्षा होने लगी, सैनिक दिन मे पानी मे भीगते रहते और रात को पानी बरसते मे सो जाते। बल्लियो पर उन्होने अपने बिस्तर बनाये, लाठियो पर हलके छप्पर डाले, तो भी वर्षा से बच न सके। यह कैफियत मई से बराबर कई मास तक जारी रही। नित्य नमी और धूप मे चलते-चलते कैप्टेन होम्स को ऐसा लगता था, मानो उनकी सब शक्तियाँ जवाब देती जा रही हैं। केवल धैर्य और दृढ निश्चय की मूक पाशविक शक्ति उनके अधिकार मे रह गई थी।

उत्तरी और दक्षिणी राज्यो के सैनिक एक-दूसरे से जगलो और खेतों मे बन्दूक, पिस्तौल और सगीन से लड़ते। कभी-कभी आमने-सामने लडाई होती और दोनो एक साथ गिरते। चार महीने की निरन्तर लडाई मे सघ के १६,००० सैनिक प्रायद्वीप मे मारे गये या लापता हो गये।

सितम्बर मे पोटोमैक पर स्थित सेना ने ऐन्टिएटम नामक स्थान पर एक भीषण लडाई लडी जिसमे बहुत रक्तपात हुआ। युद्ध-क्षेत्र से रात ही को तार गये। कैप्टेन होम्स फिर घायल हो गये। इस बार गोली गर्दन मे लगी।

घायलों की सेवा का समुचित प्रबन्ध न था। जब अगले दिन डा० होम्स फिलाडेल्फिया पहुँचे तो वेंडल का उन्हें पता न लगा। बेचारे पागलों की तरह अपने बेटे की खोज मे निकल पडे। रेल पर सफर करके और किराये की घोडा-गाडियों पर युद्ध-क्षेत्र का मीलों तक चक्कर लगाते और भटकते रहे। छः दिन तक इसी प्रकार भटकते-भटकते मैरी-लैंड राज्य के हैगर्सटाउन मे संघ के एक हमदर्द के घर उन्हे वेंडल का पता लगा।

थोडे ही समय के भीतर वेंडल घर वापस पहुँच गये और डा० होम्स के अनुभव की पूरी कहानी 'अटलाण्टिक' पत्रिका मे प्रकाशित हुई। डा० होम्स ने अपने इस लेख का शीर्षक रखा था : 'कैप्टेन की खोज।' न्यू इगलैंड के प्रत्येक घर मे यह कहानी सब सदस्यों को पढकर सुनाई गई, प्राय सभी विद्यार्थियों ने इसे पढा और सभी व्याख्यानों मे इसका जिक्र हुआ।

परन्तु अपनी गर्दन पर पट्टी बाँधे ऊपरले खण्ड मे पडे कैप्टेन वेंडल हठपूर्वक चुप रहे। उन्हें लोगों की लड़ाई की कहानी सुनने की इच्छा बहुत अनुपयुक्त मालूम होती थी। जो दर्शक घायल वीर से मिलने आते वे सिर हिलाते घर जाते। कैप्टेन होम्स विचारपूर्वक परन्तु उदासीन भाव से कहते रहते, "युद्ध ? युद्ध तो संगठित नीरसता है।"

• • •

१५ नवम्बर को वेंडल के पास फिर आज्ञापत्र आया। वह छः सप्ताह ही घर पर रहे थे। उनकी २ वर्ष की सेवा की अवधि का आधे से अधिक भाग अभी पूरा होना बाकी था। ८ महीने बाद जब वह अपनी सैनिक टुकड़ी चान्सलर्सविल की सडक पर ले जा रहे थे, उस समय वह तीसरी बार घायल हुए—इस बार एडी मे। एडी के फटे अस्थि-बन्धन और पुट्ठे उन्हें वर्षों तक कष्ट देते रहे।

बोस्टन मे एक बार फिर उन्हें चंगे होने के लिए रुकना पडा। दिन-

प्रतिदिन उनके मित्रो के घायल या मृत शरीर नगर मे लाये जाते और इस प्रकार लडाई मे मारे जाने या घायल होनेवालो की सख्या वह दु खपूर्वक बढते देखते। जब मृतको को बर्फ मे बन्द करके लाने का प्रबन्ध हुआ तो समाचार-पत्रो ने बडे गर्व से इस प्रबन्ध की सूचना दी। जनवरी १८६४ मे जब वह ब्रिगेडियर-जनरल राइट के एडी-काग होकर युद्धक्षेत्र मेपहुँचे तो पुरानी बीसवी कम्पनी प्राय सब ही नष्ट हो चुकी थी। इस रेजीमेट मे शुरू मे सिपाहियो की जितनी सख्या थी, प्राय उतनी ही सख्या अब मृतको या घायलो की हो गई थी।

उसी वसन्त मे ग्राण्ट प्रधान सेनापति नियुक्त हुए, और मई मे सेना ने रैपीडन नदी पार करके विल्डरनेस नदी की उलझी झाडियो, कीचड और परिप्लावित धाराओ के मध्य लडाई लडी। इसी प्रकार स्पाट्सिल-वानिया, नार्थ अन्ना और कोल्ड हार्बर पर लडाइयाँ हुईं। कोल्ड हार्वर की लडाई मे होम्स ने नौ हजार सैनिको को तीन घण्टो के भीतर गिरते देखा और तब भी वैरी की किलेबन्दी बहुत कुछ सुरक्षित रही।

१८६४ के ग्रीष्म मे होम्स की भरती की अवधि पूरी हुई, और बोस्टन कामन पर एक उत्सव के पश्चात् वह तीन साल की सेवा पूरी कर चुकनेवाले अन्य साथियो सहित बीसवी रेजीमेट को सेवा से मुक्त कर दिये गये। उन्हे लेफ्टिनेंट-कर्नल की उपाधि मिली और चासलर्स-विल की लडाई मे वीरतापूर्वक लडने का उल्लेख उनके प्रमाणपत्र में किया गया।

सैनिक जीवन की समाप्ति के बहुत दिनो पश्चात् होम्स ने कहा, "सैनिक की हैसियत से मैंने कोई मार्के का काम नही किया।"

यह सही था, परन्तु यह भी सही है कि वर्जिनिया के क्षेत्र की प्राय सभी लडाइयो में वह सम्मिलित रहे और इन वर्षो मे सैनिक धर्म और उससे उत्पन्न दर्शन उनके जीवन का स्थायी अग बन गया। सार्वजनिक वक्तव्यो मे, निजी वार्तालाप मे भी, होम्स बार-बार उन पाठो का जिक्र करते जो उन्होने भीषण रक्तपात के बीच एटिएटम की लडाई

और स्पाट्सिलवनिया की किलेबन्दी की रक्षा करते हुए प्राप्त किये थे।

• • •

अगस्त में एक दिन प्रातःकाल होम्स ने अपने पिता के अध्ययन-कक्ष का द्वार खटखटाया और उनसे निवेदन किया, "मैं कानून पढ़ने जा रहा हूँ।"

तीन वर्ष तक उनका जीवन घर के बाहर ही बीता था। वह धरती पर सोते थे और अपने जिन हाथों से लोगों को मारते थे उन्हीं हाथों से वह लोगों की जानें भी बचाते थे। अब उन्हें अपनी रुचि के अनुसार जीवन व्यतीत करने का मौका मिला। दर्शन के अध्ययन के प्रति उनकी रुचि गहरी होती गई थी। वह मनुष्य की जीवनचर्या के अन्तरतम उद्देश्यों और शासन के सिद्धान्तों का गहरा अध्ययन करना चाहते थे।

डाक्टर होम्स ने गर्दन उठाकर अपने बेटे की ओर देखा। कई वर्ष हो चुके थे जब चिकित्सा सीखने जाने के पहले उन्होंने कानून का अध्ययन किया था और उन्हें उससे घृणा हो गई थी। बोले, "वेंडल, कानून का अध्ययन किस काम का? वकील बड़ा आदमी नहीं हो सकता।"

वेंडल होम्स को अपने पिता का यह वाक्य याद रहा। जब वह नब्बे वर्ष के हो गये, तब भी मौके पर उस वाक्य को दोहराने में न चूकते। परन्तु उस समय भी वेंडल जानते थे कि यद्यपि संयुक्त राज्य के जान मार्शल, जेफर्सन, मेडीसन और मुनरो जैसे महापुरुष कानून से प्रतिष्ठित हो चुके थे, तो भी अमरीकी लोग वकीलों पर सदैव अविश्वास ही करते रहे। उनकी दृष्टि में इन लोगों की निषिद्ध कमाई चतुरता और कपट पर अवलम्बित थी।

हारवर्ड के कानूनी विद्यालय को स्थापित हुए अभी पचास वर्ष नहीं पूरे हुए थे। वकीलों के दफ्तरों में प्रचलित कार्य-पद्धति के अनुसार काम

सिखाने के अतिरिक्त कोई और प्रशिक्षण इस विद्यालय से प्राप्य न था। भरती की कोई कैद न थी, शरद् ऋतु में कभी भी विद्यार्थी भरती हो सकता था, और साथियो के पास बैठकर पढाई पूरी करने का प्रयत्न कर सकता था। होम्स कानून के कालेज मे भरती हो गये और राबर्ट मोर्स नामक वकील के दफ्तर मे उन्होंने एक-दो घण्टे नित्य की नौकरी भी कर ली।

कानून के विद्यालय मे दूसरे वर्ष की पढाई शुरू करते-करते होम्स पाठ्यक्रम पर स्वतन्त्र दृष्टि से विचार करने लगे और उन्हे उसमे बहुत-सी खामिया दिखाई दी। सन् १८६५ तक कानूनी शिक्षा नीरस नियमो के ढेर के रूप मे थी। जिस रूप मे कानून विद्यार्थी के सामने लाये जाते थे, उससे उनका मनुष्य के जीवन तथा सस्थाओ से कोई सम्बन्ध प्रत्यक्ष नही होता था। वर्ष-प्रतिवर्ष वही पुरानी पुस्तकें पढाई जाती, वही पुराने नियम रटकर याद किये जाते। नगर के एक सफल वकील को वेंडल ने यह कहते सुना कि कानून निर्जीव अन्याय का एक सगठित रूप मात्र है।

साधारण नाविको को जहाज के सचालन मे दिशासूचक यत्र, नक्शे और पतवार की जरूरत होती है, परन्तु अन्वेपको को अपनी खोज मे नक्शे और प्रकाशगृह कब नसीब हुए हैं। साधनो के न होने पर निर्बल हताश होकर बैठ रहते हैं, परन्तु सशक्तो के सामने साधनो का अभाव एक कष्टदायक चुनौती के रूप मे बना रहता है। कानून के विपय मे होम्स ने अपनी खोज प्रारम्भ की तो साधनो के अभाव को उन्होंने चुनौती के रूप मे ही स्वीकार किया। वह कानून की एक सर्वथा नई व्यवस्था की खोज मे थे। उन्हें पुस्तको मे वह व्याख्या नही मिली पर वह घबराये नही। उन्होंने निश्चय किया कि वह स्वय ही नई व्याख्या के विधाता होगे।

● ● ●

प्रकट रूप से जब राष्ट्र समर के प्रभाव से मुक्त हो रहा था, तब होम्स की जीवनचर्या साधारण गति से चालू थी। विद्यालय की पढ़ाई पूरी करके वह वकील हुए, और कस्बे के बाहर एक दफ्तर में उन्हें नौकरी मिल गई। वह मुकदमों की परिश्रम से तैयारी करते, तो भी न्यायालय में उनकी तबीयत न लगती।

संध्या होने पर ही उनका वास्तविक जीवन प्रारम्भ होता। चिकित्सा में डाक्टर होम्स का विलियम जेम्स नामक एक विद्यार्थी था। उसका कहना था कि आज तक कोई ऐसा आदमी नहीं हुआ जिसने वेंडल जितनी मेहनत के साथ कानून का अध्ययन किया हो।

केंट ने 'कमेंटरीज आन अमेरिकन लॉ' नामक एक पुस्तक लिखी थी। अपनी फुरसत के समय वेंडल ने उसका एक नया संस्करण तैयार करने का निश्चय किया। अमरीका के लिए यह अपने किस्म का पहला काम होनेवाला था। इतनी गम्भीर और गहरी आलोचना पहले कभी नहीं हुई थी। सन् १८४७ में केंट की मृत्यु के बाद से उसकी 'कमेंटरीज' के पाँच संस्करण प्रकाशित हो चुके थे। होम्स ने पूरी पुस्तक का समयानुकूल संशोधन करने का निश्चय किया।

अध्ययन में वह जितने ही आगे बढ़े, उतने ही वह उसमें डूबते गये। ऐसा लगता था कि इस नये वकील के उस झोले में, जिसमें उनकी पांडुलिपि रखी जाती थी, सारी सृष्टि रखी हुई है। प्रतिरात उसे वह अपने कन्धे पर अपने कमरे में ले जाते, प्रातःकाल उसे उतार लाते और भोजन के समय सदर दरवाजे के सहारे उसे सँभालकर खड़ा कर देते। घर के सब लड़कों को आदेश था कि यदि आग लग जाये तो पांडुलिपि को बचाने का पहला प्रयत्न किया जाये।

ज्यों ही वेंडल का भाई नेड कानून के विद्यालय से उत्तीर्ण हुआ, दोनों युवकों ने मिलकर अपना दफ्तर खोल लिया। दुकान का नाम था 'होम्स, एण्ड होम्स', परन्तु साझे में नेड की दिलचस्पी अपेक्षाकृत क्षणिक थी, वेंडल की दृष्टि से तो वकालत का काम उनके वास्तविक

काम मे बाधा ही डालता था। और यह काम था केंट की 'कमेटरी
का सशोधन।

जितना समय बीतता गया उतने ही वह अपने अध्ययन मे ग
डूबने गये। कुछ निर्बल हुए और मिज़ाज भी चिडचिडा हो गय
अपनी माँ के कडे आदेश से वह कभी-कभी सध्या के समय घूमने
जाते और जब कभी किसी भीड मे उनका आधा घटा भी बीत ज
तो वह भाग निकलने के लिए व्याकुल हो जाते और घर वापस पहुँ
कर अपने काम मे लग जाते।

पिछले वर्षों मे कैम्ब्रिज की कुमारी फैनी डिक्सवेल के साथ वें
अकसर अपना मन बहलाते थे। जब वह हारवर्ड मे थे तो प्राय प्र
दिन वह डिक्सवेल के घर जाकर कुछ समय बिताते थे। कानून
पढाई के समय से उनकी इस लडकी से बहुत घनिष्ठता रही थी।
अपने विचार फैनी के सामने प्रकट करने की आवश्यकता न पडती
उनके बोलने के पहले ही वह उनके मन की बात बूझ लेती थी।
चलकर फैनी अकसर उनकी बहन अमेलिया से चाय या भोजन
मिलने आने लगी। परन्तु अब अमेलिया का व्याह हो गया था, इसि
फैनी के पास होम्स-परिवार में जाने का कोई बहाना न रह गया
सप्ताह बीत जाते और वेंडल तथा फैनी एक-दूसरे से मिल न पा
सबसे बडी मुसीबत यह थी कि अपने काम की धुन मे उन्हें पता भी
लगा कि दूसरी ओर क्या हो रहा है।

उनके एक प्रिय चाचा ही अन्तत आवश्यक कार्यवाही के
तैयार होकर उनसे बोले, "वेंडल, तुम्हारी क्या कैफियत है, तुमने
फैनी की ओर गौर से देखा भी नही? वह तुमसे प्रेम करती है।"

वेंडल बिलकुल स्तब्ध हो गये। उनके मुँह से बोल न निकला
वह सोचने लगे कि क्या फैनी सचमुच उनसे प्रेम करने लगी
सस्मरण-मग्न होने पर उन्हे कुछ वाक्यो की याद आई "क्या वे
विचारो मे ही मग्न रहते हैं, प्रिय-जनो की उन्हे चिन्ता नही है?"

"वेंडल होम्स, मुझे अकसर सन्देह होता है कि क्या तुम किसी से प्रेम भी करते हो?"

१७ जून, १८७१ के दिन दोनों का विवाह हुआ। हनीमून के लिए समय न था। फैनी का कहना था कि मास्टर केंट भावुकता की ओर से उदासीन ही हैं।

दोनों पहले तो अपने माता-पिता के साथ रहे, परन्तु ज्यों ही उनके पास पैसा हुआ, उन्होंने नं० १० बीकन स्ट्रीट के दवाखाने के ऊपर के कमरे किराये पर ले लिये।

दोनों तीस वर्ष के हो गये थे, परन्तु अपने जीवन में पहली बार माता-पिता के आँगन से निकलकर आर्थिक और पारिवारिक दृष्टि से स्वतन्त्र हुए थे। स्वेच्छानुसार वे भीतर-बाहर आ-जा सकते थे, और उनसे कोई प्रश्न करनेवाला न था। जब वह अपने पिता के पास रहते थे तो घर से निकलते समय पिता उनसे पूछते थे कि कहाँ जा रहे हो। अब ऐसे जीवन से वह कुछ परिचित हुए जिसमें वह टोपी पहनकर घर से निकल जाते और उन्हें कोई टोकता भी नहीं।

प्रायः प्रतिरात फैनी और वेंडल भोजन के लिए टहलते हुए पार्कर हाउस जाते। अकसर उन्हें मित्र मिलते जो उनके साथ भोजन करते। फैनी भूरे रंग का नया लम्बा कोट पहनती, जिसमें बादामी रोयेंदार चमड़े की गोट लगी हुई थी, और हाथ में वह रोयेंदार चमड़े का मफ़लर लिये रहती। उसकी टोपी में रक्त-वर्ण का कुछ शृङ्गार भी होता, वेंडल का ख्याल था कि अपनी पत्नी जैसी कुलीन और गम्भीर कोई नारी उन्होंने देखी न थी। अकसर भोजन के पश्चात् उनके मित्र घण्टे-दो-घण्टे के लिए उनके साथ घर चले आते। नव-दम्पति शान्तिपूर्वक रहते हुए भावी जीवन की नींव के निर्माण में व्यस्त रहते थे।

कई वर्षों तक इसी प्रकार वेंडल स्वाध्याय में व्यस्त रहे। केंट का संशोधित संस्करण प्रकाशित हुआ और प्रत्येक विद्वान् उसकी मान्यता का समर्थक हुआ। शीघ्र ही वेंडल ने दूसरे मौलिक काम का बीड़ा

उठाया और हारवर्ड के 'लॉ-रिव्यू' मे उनके लेख और आलोचनाएँ प्रकाशित होने लगी। दफ्तर के द्वार से निकलते ही उनकी थकान समाप्त हो जाती, वह व्यग्रता से पहाड़ी पर अपने अध्ययन-कक्ष पहुँचने के लिए चढते चले जाते, मानो उनका दैनिक-कार्य समाप्त नही बल्कि शुरू होनेवाला हो।

कानूनी जीवन के इस दोहरे दबाव को देखकर फैनी अकसर आश्चर्य करती कि वेंडल होम्स जैसा स्वस्थ और सशक्त पुरुष भी कब तक इतने भार को सहन कर सकेगा। वह सदैव से दुबले-पतले थे, परन्तु उनके रग मे सुर्खी और ताजगी थी। घुडसवारो की भाँति उन्होने अपनी मूँछें बढ़ने दी। सदैव सैनिक की भाँति तनकर खडे होते, बोलते या चलते। उनकी गहरी भूरी आँखें निश्चय की भावना से चमकती रहती।

• • •

सन् १८८० के प्रारम्भ मे बोस्टन की लावेल इस्टीच्यूट से होम्स को अगले शरद् मे बारह व्याख्यान देने का निमन्त्रण मिला। इस योजना से उन्हे अपने विषय का आवश्यक आधार मिला। प्राय पन्द्रह वर्षो से अध्ययन की विशाल सामग्री की छँटाई और जाँच वह करते आ रहे थे। अधिकाश समय उनका कोई विशेष उद्देश्य नही रहा था। वह केवल खोज मे तल्लीन रहे। अब उन्हे व्याख्यान देने थे और ये व्याख्यान सकलित होकर पुस्तकाकार प्रकाशित होने थे, तो इनमे उनका वह सब अध्ययन मूर्त होना था जो उन्होने मानव-अधिकार सम्बन्धी कानून के सम्बन्ध मे किया था। उनकी अवस्था ३९ वर्ष थी और उनका विश्वास था—अन्धविश्वास ही सही—कि यदि किसी पुरुष को प्रसिद्ध होना है तो चालीस वर्ष के पहले ही उसे प्रसिद्ध होना चाहिए।

यह विचार दिन-रात उन्हे आगे की ओर ठेलता रहा। लावेल व्याख्याता की हैसियत से वह वकीलो और विधान के प्राध्यापको के सामने बोलेंगे। उस दृढ निश्चय से, जो उन्होंने गम्भीर अध्ययन के

पश्चात प्राप्त किया था, वह उनके सामने इस आशय का सिद्धान्त प्रस्तुत करेंगे—और यह बात उनके सामने पहली बार प्रस्तुत होगी—कि अच्छे न्यायाधीश को अपने निर्णय के लिए यह नहीं देखना है कि उसे नजीरें कौन-सी मिलती हैं, बल्कि यह देखना है कि वर्तमान में समाज का भला किस बात में है।

वे दिन भी आने थे, जब न्यायाधीश की हैसियत से होम्स को अपने सिद्धान्तों के अनुसार निर्णय सुनाने के मौके मिले। इस समय तो उन्होंने यत्नपूर्वक इन सिद्धान्तों को व्याख्यानों ही में प्रस्तुत किया। विधान को वैज्ञानिक दृष्टि से देखते हुए उन्होंने कोई नियम या विश्वास कार्य-कारण कड़ी से जोड़े बिना प्रस्तुत नहीं किया। दिन-रात एक हो गए। अध्य-यन में डूबते चले गए, वजन घटने लगा, मुख उतरा दिखाई देने लगा। मित्रगण उनके स्वास्थ्य के विषय में चिन्तित होने लगे।

तो भी किसी प्रकार व्याख्यान दिये गए, पुस्तक पूरी हुई और छपने गई। चालीसवीं वर्षगांठ के पांच दिन पहले वेंडल अपनी पत्नी फैनी के साथ बीकन स्ट्रीट से चलकर अपने पिता के घर पहुँचे। वेंडल की बगल में बादामी जिल्द की एक नई पुस्तक थी। नाम था 'कामन लॉ'। पुस्तक उन्होंने अपने पिता के कर-कमलों में भेंट की। पुस्तक के पहले सादे पन्ने पर 'पिता को पुत्र की भेंट' के शब्द लिखे थे।

सात वर्ष की अवस्था से वेंडल को अपने पिता के नव प्रकाशनों की एक-एक प्रति भेंट के रूप में मिलती रही थी। पहली बार भेंट ने अपनी दिशा बदली।

होम्स के लिए यह स्मरणीय दिवस था। ४० वर्ष की अवस्था में उनकी प्रतिभा का प्रकाशन हुआ। अपने ज्ञान और विश्वास को प्रका-शित करने का उन्हें पहला अवसर मिला था।

मान्यता उन्हें तुरन्त ही नहीं मिली। विद्वानों ने भी उसकी पुस्तक सर्वसम्मति से स्वीकार नहीं की। एक प्रसिद्ध पुस्तकालय की समिति ने तो उसे अपने पुस्तकालय में इसलिए जगह नहीं दी कि यह वास्तविक

मौलिक थी। परन्तु विधान मे दीक्षित विद्वानो के मध्य उनका आदर अवश्य होने लगा। लदन के 'स्पेक्टेटर' पत्र की आलोचना थी कि सर हेनरी मेन की 'एशेंट ला' (प्राचीन विधान) के पश्चात् वैधानिक चितन पर यह सबसे अधिक मौलिक प्रकाशन है।

होम्स स्वय जानते थे कि यह पुस्तक उनकी प्राथमिक सफलता की ही प्रतीक थी। वर्षों के अध्ययन से ज्ञान का द्वार ही उनके लिए खुल पाया था। आगे चलकर उनका कहना हुआ कि ज्ञान-प्राप्त व्यक्ति को सघर्ष ही मे जगह मिलती है।

• • •

सन् १८८२ की आठवी दिसम्बर के दिन होम्स को सूचना मिली कि मसाचुसेट्स राज्य के गवर्नर ने उन्हे अपने राज्य के सर्वोच्च न्यायालय का न्यायाधीश नियुक्त किया है।

कुछ ही महीने पहले वह हारवर्ड लॉ स्कूल के प्राध्यापक नियुक्त हुए थे। तो स्वीकृति की कोई समस्या न थी क्योकि मसाचुसेट्स के सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीश बनने की तो वह आकाक्षा ही करते रहे थे।

एक मित्र ने उनसे कहा, "होम्स, अभी तक मानव-अधिकार-सम्बधी विधान और न्यायाधीश के कर्त्तव्य के सम्बन्ध मे तुम्हारे कुछ दार्शनिक विचार ही थे। अब तुम्हे इन विचारो को कार्यान्वित करने का मौका मिला है।"

जब न्यायालय मे आकर होम्स बैठे तो उनकी अवस्था ४१ वर्ष थी और सात न्यायाधीशो के मध्य वह अवस्था मे सबसे छोटे थे। बाकी छ न्यायाधीश वकालत कर चुके थे, सर्वोच्च न्यायालय मे किसी पद पर काम कर चुके थे या राज्य की विधान-सभा के सदस्य रह चुके थे। अनुभव के मार्ग से ही वे उस पद तक पहुँचे थे। विधान का रूप और

न्याय की व्यवस्था का अध्ययन करके केवल होम्स ही उस पद पर नियुक्त हुए थे।

तो भी सन् १८८३ में न्यायालयो मे दूरदर्शी न्यायाधीशो की आवश्यकता थी। सामाजिक परिवर्तन बहुत बडे पैमाने पर हो रहे थे। असाधारण शीघ्रता से सयुक्त व्यवसाय अव निजी व्यापारियो और व्यवसायियो की जगह ले रहा था और परिवर्तन के साथ बहुत-से अन्याय तथा कष्ट भी लगे हुए थे। उस देश मे जहाँ होम्स के यौवन मे ग्राम्य-जीवन का वातावरण था, अव वहाँ नये-नये नगर तेजी से वढ रहे थे, मिलें वढती जा रही थीं, उनके निकट लोग ऊँचे-ऊँचे मकान वनवाने लगे थे और सघर्ष अत्यधिक वढ गया था।

यह परिवर्तन नही था, क्राति थी। होम्स इसे पहचान गए थे, उन्होने मानव-अधिकार सम्वन्धी विधान का मौलिक अध्ययन किया था। उन्होने राज्यो के निर्माण और उनके पतन के कारणो का अध्ययन किया था। जब सामाजिक परिवर्तन होता है, तो विधान को उस परिवर्तन के अनुकूल वदलना चाहिए, नही तो राज्य का विनाश होता है। अपनी 'कामन लॉ' नामक पुस्तक मे होम्स ने वार-वार कहा था कि अच्छे न्यायाधीश को सार्वजनिक हित अथवा समय की मांग को सदैव ध्यान मे रखना चाहिए।

जव होम्स न्यायाधीश हुए, तो जनता के सामने दो भीषण समस्याएँ थीं। मजदूरो की शिकायतें मालिको के विरुद्ध थीं, और जनता की शिकायतें व्यापारी कम्पनियो के विरुद्ध थी। इन्हीं दो ढंगो से व्यक्ति को अपने अधिकारो की रक्षा के लिए सघर्ष करना था। जनता ऐसे न्यायाधीशो के लिए व्याकुल थी, जिन्हे विधान का ऐतिहासिक और मौलिक ज्ञान हो, जिनकी सामाजिक धारणाएँ स्वाध्याय से परिष्कृत हो गई हो और जो प्रगति के अनुसार सविधान के अर्थ वता सकते हो।

होम्स अपने निर्णय असाधारण शीघ्रता से लिखते थे, जिस कारण अधिकाश काम भी उन्हें मिलता था। होम्स मे स्थिति के मर्म तक

पहुँचने की प्रतिभा थी। ज्यो ही वकील बोलने लगता कि वह आगे झुककर ध्यानपूर्वक सुनते और पेंसिल से आवश्यक शब्द टाँक लेते। कभी-कभी पांच मिनट भी न बीतते कि वह कुर्सी की पीठ का सहारा लेकर आँखें बन्द कर लेते। अन्य न्यायाधीश आपस मे कहते कि होम्स ने अपना निर्णय कर लिया है, वकील ने अपनी बात पूरी नही की है, परन्तु होम्स मुकदमे की जड तक पहुँच गये हैं।

होम्स जब अपने निर्णय लिखकर देते थे, तो पढ़ने मे वे कानूनी आडम्बरो से रहित होते थे। वाक्य छोटे-छोटे ही होते थे परन्तु विद्वत्ता और समझदारी से परिपूर्ण होते थे। न्यायालय मे ऐसे व्यक्ति का प्रभाव स्फूर्ति-दायक होता ही था, उनके साथी उनसे समहत हो या न हो। एक वकील का कहना था, कि होम्स का व्यक्तित्व अन्य न्यायाधीशो को मद्य की भाँति स्फूर्त करता है और उनके विषय मे यह बात एक कहावत की तरह प्रसिद्ध हो गई।

• • •

वर्ष बीतते गये और न्यायालय मे अन्य न्यायाधीशो के साथ उनकी जगह बदलती गई। जब होम्स नये ही नियुक्त हुए थे, तो मुख्य न्याया-धीश की बाईं तरफ सिरे पर उनकी जगह थी। क्रमश वह मुख्य न्याया-धीश के दाहिने हाथ पर बैठने लगे। परन्तु ऐसे अवसर भी आये जब ऐसा दिखाई देता था कि उन्हे अपने सिद्धान्तो पर दृढ रहने के कारण अमरीका के कानूनी विद्वानो में सर्वोच्च स्थान न मिल सकेगा।

लगभग १० वर्ष न्यायाधीश रहने के बाद एक मुकदमा उनके सामने आया, जिसमे बहुमत के विरुद्ध वह अपना निर्णय देने के लिए विवश हुए और इस प्रकार उनकी प्रसिद्धि श्रमिक-वर्ग के हितैषियो मे हुई। एक मालिक के विरुद्ध अपने नौकर का वेतन रोकने का मुक-दमा चला। मसाचुसेट्स के एक कानून द्वारा किसी मालिक का अपने नौकर पर काम बिगाडने का आरोप लगाकर उसका वेतन रोकना या

उससे जुर्माना लेना अवैध ठहराया गया था, परन्तु न्यायालय ने कानून को अवैध बताया और मालिक का समर्थन किया। होम्स ने इस निर्णय के विरुद्ध अपनी सम्मति दी।

पांच वर्ष पश्चात् न्यायालय के काम से छुट्टी पाकर बीकन स्ट्रीट होते हुए होम्स एक मित्र से मिलने गये। धरना देना शान्तिपूर्वक चालू था, परन्तु न्यायालय ने इस धरने के विरुद्ध आदेश दिया था। न्यायालय के लिए ऐसा निर्णय स्वाभाविक ही था, क्योकि दस वर्ष से देश भर मे हडतालें और धरने चालू थे और इनके साथ ही हे मार्केट और होमस्टेड जैसे स्थानो पर हिंसात्मक उपद्रव भी हुए थे। परन्तु न्यायाधीश होम्स ने फिर भी बहुमत के विरुद्ध अपनी सम्मति दी थी। उनका कहना था कि यदि पूंजीपति सगठित होते हैं तो उनके मुकाबले श्रमिको का सगठित होना भी आवश्यक और वैध है।

होम्स भली भांति जानते थे कि उनकी सम्मति का क्या प्रभाव होगा और उनकी पदोन्नति भी कदाचित् रुक जाये, क्योकि सर्वोच्च पदो पर बैठे अनधिकार-शक्ति प्राप्त लोगों के विरुद्ध उन्होंने अपनी सम्मति दी थी।

अपने किये पर अशान्त होकर होम्स अपने मित्र के घर पहुँचे। वहां उन्होंने कहा, "हाल ही मे मैंने एक सम्मति दी है जो सदैव के लिए मेरी पदोन्नति रोक देगी।"

होम्स को पता न था कि न्यायालय का उनके प्रति कितना आदर और स्नेह बढ गया था। यही पुरुष मानवाधिकार-सम्बन्धी कानून का ज्ञाता था।

इसके अतिरिक्त उन्होने अपनी असहमति से कभी न्यायालय का विरोध नही किया था, वह पूरी कोशिश करके अपनी सम्मति ऐसी भाषा मे देते थे जिसमे सहयोगियो के प्रति उनका आदर परि-लक्षित होता था।

जब जुलाई १८९९ में मुख्य न्यायाधीश का देहान्त हुआ तो गवर्नर

ने तुरन्त होम्स को उनके पद पर नियुक्त किया। किसी को आश्चर्य नहीं हुआ।

होम्स की अवस्था अब ५९ वर्ष की थी। देखने मे उनकी अवस्था बहुत कम मालूम होती थी। उनके स्वस्थ मुख पर वय के अनुकूल रेखाएँ अवश्य आ गई थी, परन्तु उनकी गहरी भूरी आँखें पहले से अधिक चमकदार थी और उनमे एक विशेष प्रकार की स्फूर्ति थी, जो उनके भीतर से फूटती हुई प्रतीत होती थी, मानो यह स्फूर्ति किसी अक्षय तथा उल्लासपूर्ण स्रोत से निकल रही हो।

होम्स-परिवार का कोई सदस्य वेंडल को मसाचुसेट्स के सर्वोच्च न्यायालय के प्रधान के पद पर देखने के लिए जीवित नही रहा। उनके भाई नेड ने वकालत मे बहुत उन्नति की थी, परन्तु ४० वर्ष की अवस्था तक पहुँचने के पहले ही सन् १८८४ मे उनका देहान्त हो गया था। कुछ दिनो बाद उनकी माता और उनकी बहन अमेलिया की भी मृत्यु हो गई थी। केवल डॉक्टर होम्स कई वर्षो तक और जीवित रहे। सन् १८९४ मे ८५ वर्ष की अवस्था प्राप्त करके उनका देहान्त हुआ था। मरने के कुछ पहले उन्होने अपने मित्र विलियम डीन हरवेल्स को लिखा था कि परिवार मे मैं ही बचा दिखाई देता हूँ।

o • o

सन् १९०२ के ग्रीष्म मे संयुक्त राज्य अमरीका के सघीय न्यायालय मे एक जगह खाली हुई। थियोडोर रूज़वेल्ट उस समय अमरीका के प्रेसिडेण्ट थे तो ऐसा लगा कि वह रिक्त स्थान के लिए मसाचुसेट्स के मुख्य न्यायाधीश की ही याद करेंगे।

रूज़वेल्ट ने देश के विधान-मडल को अपना पहला सन्देश भेजा तो यह प्रत्यक्ष हो गया कि शासन को व्यवसाय से नये सम्बन्ध स्थापित करने हैं। पूँजीपतियो के जो बडे-बडे सगठन बन गये थे, उनके विरुद्ध आवाज बुलन्द होने लगी थी, और उन पर अकुश लगाने का समय

निकट आ गया था। देश की 'मैकक्ल्यूर्स', 'कालियर्स' और 'एवरी-वाडीज़' जैसी बडी और नई पत्रिकाओं मे श्रमिक-वर्ग के हिमायतियो ने व्यापारिक सगठनो के विरुद्ध लिखना प्रारम्भ कर दिया था। 'दि शेम आफ दि सिटीज़' के शीर्षक से लिकन स्टेफेंस के लेख प्रकाशित हो रहे थे, इडा टार्वेल स्टैंडर्ड आयल ट्रस्ट के विरुद्ध अपने आरोप तैयार कर रही थी।

सयुक्त राज्य अमरीका के प्रेसिडेंट के पद पर एक ऐसा व्यक्ति आसीन था, जिसके विषय मे जनता को विश्वास था कि वह मोटे पूँजी-पतियो के विरुद्ध कुछ अवश्य करेगा। जनता चाहती थी कि रूज़वेल्ट किसी बडी मछली को फँसाकर दूसरो को चेतावनी दें।

देश को अधिक प्रतीक्षा नही करनी पड़ी। चारो ओर देखने पर रूज़वेल्ट की पकड मे नार्दर्न सिक्योरिटीज़ कम्पनी आई जो कई रेलवे कम्पनियो के मिलने पर देश की सबसे बडी और नई कम्पनी बन गई थी। रूज़वेल्ट ने कानून के विषय मे अपने मुख्य परामर्शदाता को आदेश दिया कि वह शर्मन ट्रस्ट-विरोधी अधिनियम के अनुसार इस कम्पनी की वैधता की जाँच करे। फरवरी, १९०२ मे नार्दर्न सिक्योरि-टीज़ कम्पनी के विरुद्ध मुकदमा दायर हुआ, तो अचानक पूँजीपतियो को ऐसा लगा कि जैसे उनके विरुद्ध युद्ध छेड दिया गया है।

रूज़वेल्ट और होम्स मिज़ाज मे एक-दूसरे के बिलकुल विपरीत थे। सामाजिक समस्याओ और उनके हलों के सम्बन्ध मे भी दोनो के विचार एक-दूसरे से भिन्न थे। तो भी निर्णय के विरुद्ध होम्स की सम्मतियाँ पढकर रूज़वेल्ट ने स्वभावत समझ लिया कि केन्द्रीय न्यायालय के न्यायाधीश होने पर होम्स उनके ही आदमी होंगे और उनकी ही नीति का समर्थन करेंगे। वह जानते थे कि न्यायालय के सहयोग के बिना वह अपनी नीति मे सफल न हो सकेंगे। उनका कहना था कि बड़े-बडे मामलो मे बहुत-कुछ इस बात पर निर्भर करता है कि केन्द्रीय न्याया-लय के न्यायाधीश अपना निर्णय एक पक्ष के अनुकूल देते हैं या दूसरे

पक्ष के। इस प्रकार ११ अगस्त, १९०२ को केन्द्रीय न्यायालय के न्यायाधीश के पद पर होम्स के नियुक्त होने की सूचना प्रकाशित हुई।

पहले तो होम्स इस पदोन्नति को स्वीकार करने के लिए तैयार न थे। जहाँ थे वही वह यथेष्ट सुखी थे। वाशिंगटन मे वह सहयोगी न्यायाधीश ही होते, नौ न्यायाधीशो मे वह सबसे नये होते और बैठक मे उन्हे फिर बायें सिरे वाला स्थान ही मिलता। पैसे का सवाल उनके सामने था नही, क्योंकि उनके पिता उनके लिए यथेष्ट रकम छोड गये थे। मसाचुसेट्स के मुख्य न्यायाधीश की हैसियत से उनका वार्षिक वेतन आठ हजार पांच सौ डालर था और सफर-खर्च के उन्हे पांच सौ डालर मिलते थे। वाशिंगटन मे प्रतिवर्ष उन्हे दस हजार डालर ही मिलते।

परन्तु यदि होम्स हिचके तो उनकी पत्नी ने उत्सुकता प्रकट की। शुरू में ही फैनी ने अपनी बात साफ-साफ कह दी। वह स्वीकृति के पक्ष मे थी। उसने कहा, "वेंडल, मसाचुसेट्स मे जो कुछ तुम्हारी उन्नति होनी थी वह हो चुकी, तुम्हारे परिवार को अमर रहना है और तुम्हे भी। क्या तुम यही रुक जाओगे, क्योकि पत्री मे लिखा है कि तुम ६० वर्ष के हो गये हो?"

परन्तु निजी तौर पर वह वाशिंगटन की कल्पना से डरी हुई थी। छः वर्ष पहले वह सख्त बीमार हुई थी और तब से उसका स्वास्थ्य ठीक नही हो पाया था। उसे अपने बाल कटवाने पडे थे और तब भी उसे अपना पिछला सौंदर्य फिर न प्राप्त हो सका था। वह इतनी दुबली हो गई थी कि कमजोर दिखने लगी थी। उसके गालो की हड्डियाँ निकल आई थी और थोडे-से तथा सफेद बालो के नीचे उसके मुख पर कोई रौनक न रह गई थी। कभी-कभी कुछ लोग उसे वेंडल की माता समझ बैठते थे। पिछली कई शरद् ऋतुओ मे वह अपने घर ही रही और वेंडल को अकेले ही बोस्टन जाना पडा था। केन्द्रीय न्यायालय के न्यायाधीश की पत्नी होने की हैसियत से छोटे-बडे सामाजिक उत्सवो में उसकी उपस्थिति आवश्यक थी।

एक दिन तीसरे पहर एक मित्र आ गये और फैनी को अकेले बैठे पाया। वह तुरन्त स्वागतार्थ उठी। उसके मुख पर चिन्ता की रेखाएँ थी और जब उसने अपने हाथ अपने सिर पर रख दिये तो इस सकेत में उसके स्वास्थ्य की दुर्दशा का व्याकुल हास्य छिपा हुआ था।

उसने कहा, "मेरी ओर देखो, मैं वाशिंगटन किस प्रकार जा सकती हूँ, मैं तो एक वीरान खेत के समान लगती हूँ।"

o o o

८ दिसम्बर को सोमवार के दिन शपथ लेने के लिए लम्बा काला चोगा पहने होम्स कैपिटोल के पुराने न्यायालय मे जा खड़े हुए। परम्परा के वातावरण मे यह प्राचीन कमरा गम्भीर और शान्त दिखता था और होम्स को देश के इस सर्वोच्च न्यायालय का ही एक न्यायाधीश होना था।

कुछ दिनो बाद जब फैनी होम्स पहली बार इस न्यायालय मे दर्शक की हैसियत से पहुँची, तो न्यायालय की परम्परा के जादू ने उसे भी प्रभावित किया। अण्डाकार छत से हलका प्रकाश नीचे आ रहा था। पिछले न्यायाधीशो की सगमर्मर की मूर्तियाँ अपने आसनो से नीचे की ओर देखती जान पडती थी। मच पर सामने काले चमडे से मढी नौ ऊँची कुर्सियाँ दिखती थी। केन्द्रीय कुर्सी पर लाल छत्र के नीचे ८७ वर्ष की अवस्था तक न्यायाधीश टैनी बैठ चुके थे, जो पचास वर्ष तक देश की सेवा करके भी जनता के अविश्वास, वैर और बुराई के पात्र हो गये थे। यहीं प्रसिद्ध डेनियल वेब्सटर और कैलहून जैसे प्रसिद्ध वकीलो की बहसें हुई थी।

बाईं ओर कुछ आहट हुई। लम्बी काली कतार मे न्यायाधीश धीरे-धीरे भीतर आये। जुलूस मे सबसे आगे थे मुख्य न्यायाधीश फुलर जो ६९ वर्ष की अवस्था मे भी पूर्णतया स्वस्थ थे।

अपनी सुडौल जालीदार नकाब से फैनी होम्स ने अपने सौम्य पति को न्यायाधीशो की कतार मे तनकर खडे देखा तो उनकी आंखो से हर्ष के आंसू उमड पडे।

जब प्रेसिडेंट ने अपने भवन में नियमानुकूल भोजन के लिए होम्स-दम्पति को निमन्त्रित किया, तो फैनी वहां बहुत डरती हुई पहुँची। चुपचाप कपडे पहने और उसी खामोशी से गाडी मे बैठ गई। वह भूरे रग के रेशमी कपडे पहने थी, और उनके सीने पर बनफशे के प्रिय फूल लगे थे, जो वेंडल ने उन्हे दिये थे। उनके ब्लाउज के ऊपर गर्दन को ढके हुए सुन्दर जाली का एक सख्त कालर था, उनके सीधे और सफेद बाल पीछे की ओर जूडे मे बँधे हुए थे।

नये न्यायाधीश और उनकी पत्नी का विशाल स्वागत-कक्ष मे अभिवादन करते हुए प्रेसिडेंट ने शील भाव से ऐसा वार्तालाप छेडा जिससे दोनो उस वातावरण मे घुल-मिल जायें। श्रीमती होम्स से उन्होंने साधारण प्रश्न ही किये, जैसे "आप जबसे आई तब से वाशिंगटन नगर की कुछ सैर भी आपने की, किन लोगो से आपकी मुलाकात हुई, महिलाएँ आपको भली लगी?"

श्रीमती होम्स के मुख से एक मधुर हास्यपूर्ण उत्तर निकल गया, "वाशिंगटन मे बहुत से प्रसिद्ध लोग और उनकी वे पत्नियां हैं जिनसे उन्होने अपनी युवावस्था मे विवाह कर लिया था।"

यह उत्तर सुनकर प्रेसिडेंट बडे जोर हँसे। श्रीमती रूजवेल्ट ने आगे बढकर श्रीमती होम्स का बडे तपाक से स्वागत किया। भोज की सूचना हुई।

प्रेसिडेंट ने बडी शिष्टता से झुककर फैनी को निमन्त्रित किया। अपने पति की विशेष फिक्र न करके प्रेसिडेंट की बांह के सहारे भोज के लिए लम्बे-लम्बे कालीनो पर जगमगाते झाड-फानूसो के नीचे सबसे आगे फैनी ने चलना प्रारम्भ किया।

होम्स बराबर अपनी पत्नी की ओर देखते रहे। इसके पहले कभी

भी वह इतनी प्रसन्नचित्त नही दिखाई दी थी। सुन्दर सग पाकर वह वहुत सुन्दर और प्रसन्न दिखने लगी थी।

घर लौटते समय गाडी मे फैनी ने अपने पति से वात करनी प्रारम्भ की। उनके मुख पर शान्ति थी यद्यपि वह थकी हुई थी। उन्होंने कहा, "वेंडल, हमे यहाँ वहुत भला लगता है। सब लोगो के आगे-आगे भोजन करने जाना मुझे किसी कारणवश अधिक सरल लगता है।"

° ° °

दिसम्बर १६०३ मे नार्दर्न सिक्योरिटीज कम्पनी के विरुद्ध सयुक्त राज्य अमरीका का मुकदमा केन्द्रीय न्यायालय मे पहुँचा। सारे देश ने पूर्व की ओर देखना प्रारम्भ किया जहाँ न्यायालय की वैठक हो रही थी। यह प्रत्यक्ष था कि इस मुकदमे से रूजवेल्ट की दण्डनीति की परीक्षा होगी। जनता के सामने दो प्रश्न थे—न्यायालय रेल कम्पनियो के विशाल सगठन को अवैध ठहराकर समाप्त कर देगा या अन्य कम्पनियो के समान यह कम्पनी भी सुरक्षित रहेगी।

तीन महीने पश्चात् निर्णय तैयार हुआ। न्यायाधीश हार्लन ने वहुमत का विचार पढना प्रारम्भ किया। नार्दर्न सिक्योरिटीज कम्पनी पर व्यापार का प्रतिवन्ध लगा दिया गया। न्यायालय के कमरे मे कुछ हलचल दिखाई दी। सरकार की विजय हो गई थी। पाँच न्यायाधीश सरकार के पक्ष मे थे और चार विरुद्ध थे। इससे जनता वहुत चकित हुई। परन्तु विषय के जानकारो को न्यायाधीश होम्स की विरुद्ध सम्मति से वहुत आश्चर्य हुआ। थियोडोर रूजवेल्ट फूले नही समाये। उनका कहना था कि मुकदमे के परिणाम मे शासन की एक वहुत वडी सफलता प्रत्यक्ष हुई है, एकाधिकारो के विरुद्ध शासन की शक्ति विजयी हो गई है।

परन्तु न्यायाधीश होम्स की विरोधी सम्मति से वह वहुत अप्रसन्न हुए। वह चिल्ला पडे, "यह व्यक्ति मेरे विरुद्ध क्यो हो गया? इससे

अधिक दृढ न्यायाधीश तो मैं एक केले जैसी नरम चीज़ से गढकर बना सकता था।"

प्रेसिडेंट की यह अक्षम्य भूल थी। होम्स को न तो जनमत के दबाव की परवाह थी न प्रेसिडेंट के क्रोध की। शर्मन ऐक्ट के विरुद्ध वह सदैव रहे थे, वह अकसर कहते थे, "शर्मन ऐक्ट न्याय के प्रतिकूल है, क्योंकि शक्तिशाली को वह दौड मे जीतने नही देता।" कोई सगठन बडा होने के कारण ही अवैध नही हो जाता। अपने आचरण और कर्म ही से उसकी वैधता निश्चित होती है। उनका कहना था कि रेलो के सम्बन्ध मे सगठन का बडा होना अनिवार्य है।

एक वर्ष पश्चात् लोकनर वाले मुकदमे में अपनी विरुद्ध सम्मति देकर उन्होने श्रम के घण्टो को नियमित करने का अधिकारी शासन को बताया।

जब कोई न्यायाधीश ऐसा निर्णय लिखता है जिसे बहुमत प्राप्त होता है, तो उसका वचन न्यायालय का निर्णय माना जाता है, परन्तु जब वह विरुद्ध सम्मति देता है तो उसे अपने निजी विचार प्रकट करने का अवसर मिलता है। केन्द्रीय न्यायालय के काम मे वैयक्तिक सम्मतियाँ बडे महत्व की होती हैं।

लोकनर वाले मुकदमे मे होम्स की विरुद्ध सम्मति वर्षो बाद बहुमत प्राप्त कर सकी और इसलिए वह देश के विधान का अग बन सकी। मुकदमा एक विश्वास से सम्बन्धित था जिसके पक्ष मे होम्स बहुत दृढता से थे। वह विश्वास यह था कि सविधान के अन्तर्गत राज्यो को अपने ही सामाजिक प्रयोग करने के अधिकार प्राप्त हैं। जब ये प्रयोग राज्य के कानूनो के रूप मे सघीय शासन से भिडते दिखाई देते हैं, तब मुकदमे का फैसला इस आधार पर नही होना चाहिए कि केन्द्रीय न्यायालय कानून को अच्छा मानता है कि बुरा, आधार केवल यह होना चाहिए कि ऐसा कानून सविधान की दृष्टि से वर्जित है कि नही।

उन्ही दिनो एक विशाल औद्योगिक समाज अपने ढग पर विकास

कर रहा था। सभी प्रयोग सगठन की दिशा मे हो रहे थे। पूँजी का सगठन हो, जैसे कि नार्दर्न सिक्योरिटीज् के मुकदमे मे प्रत्यक्ष हुआ या राज्य के बनाये कानूनो द्वारा श्रमिक वर्ग स्वरक्षा का प्रयत्न करे जैसा कि लोकनर वाले मुकदमे मे प्रत्यक्ष हुआ—हर हालत में प्रयोग को सफल या असफल होने का मौका मिलना चाहिए।

लोकनर वाले मुकदमे मे जो विरुद्ध सम्मति दी गई, उसमे न जनवादी वक्ताओ की लफ्फाजी थी न ब्रैंडोस जैसे सुधारको की सरगर्मी, जो श्रमिको के शोपित होने पर क्रुद्ध था। उसमे एक विचारक ने स्पष्ट शब्दो मे ठडे हृदय से यह विश्वास प्रकट किया था कि स्वतन्त्रता का सर्वोपरि अर्थ है प्रयोग का अधिकार।

न्यायाधीश ओलिवर वेंडल होम्स का वास्तविक ज्ञान प्राप्त करने मे जनता को बहुत समय लगा। अभी तक अमरीकी जन उनकी गणना अपने देश के बडे न्यायाधीशो, बडे लोगो मे न कर पाये थे। परन्तु वह अपने निश्चय पर पहुँच चुके थे, शातिपूर्वक और स्थायी रूप से। और उनका निश्चय उनके स्वाध्याय पर आधारित था। जनता को विश्वास हो गया कि जब तक वह न्यायाधीश के आसन पर रहेंगे, तब तक दृढतापूर्वक वह अपने निश्चय की रक्षा भी करते रहेगे। २६ वर्ष तक वह केन्द्रीय न्यायालय के न्यायाधीश रहे और ९० वर्ष की अवस्था मे ही उन्होने इस पद से अवकाश लिया।

● ● ●

केन्द्रीय न्यायालय के प्रत्येक न्यायाधीश को सरकार की ओर से एक सचिव मिलता है। होम्स प्रतिवर्ष अपना सचिव बदलते थे, हारवर्ड ला स्कूल से प्रतिवर्ष जो स्नातक निकलते थे, उनमे सर्वोपरि पद से उत्तीर्ण युवक को वह अपना सचिव नियुक्त कर देते थे। होम्स के अध्ययन-कक्ष के दोहरे दरवाजे के बाहर एक बडी मेज पटी हुई थी, जिस पर नया सचिव आकर बैठता था। महत्वपूर्ण मुकदमो की मिसिलें

पढना, उनका सक्षिप्त विवरण न्यायाधीश के सामने रखना और केन्द्रीय न्यायालय के सामने पेश की जानेवाली अर्जियो की परीक्षा करना सचिव का काम था। एक ही दिन के भीतर सचिव को पता लग जाता कि न्यायाधीश को उसकी सहायता की आवश्यकता नही है। वह अपनी सम्मति स्वय लिखते, नज़ीरो को ढूँढ लेते और अर्ज़ियो को स्वय पढ़ते। ये युवक अपने नये अनुभव के पश्चात् जब निश्चित होते, तो अपने लिए दूसरे काम निकाल लेते। होम्स के मस्तिष्क मे जीवन, विधान, दर्शन और मानव-प्रकृति के सम्बन्ध मे मौलिक विचार भरे पडे थे। बातो-ही-बातो मे वह अपने विचार प्रकट करते और उनके युवक-सचिव ध्यानपूर्वक सुनते तथा सीखते।

होम्स अपने सचिवो को पुत्रवत् मानते थे, उन्हे 'सनी' या 'यग फेलो' कहकर बुलाते थे। वह उन्हे अपनी लिखी सम्मतियाँ दिखाते और मुकदमो के सम्बन्ध मे उनसे बात करते। ये युवक परिवार के बिल चुकाने जाते, घर का हिसाब रखते और अपने न्यायाधीश का विज़िटिंग-कार्ड बीसियो सरकारी अफसरो के घर छोड आते। इस प्रकार धीरे-धीरे उनके सचिवो की सख्या तीस तक पहुँची, ये लोग 'होम्स के वार्षिक सस्करण' के नाम से प्रसिद्ध हुए। आगे चलकर ये लोग ऊँचे-ऊँचे पदो तक पहुँचे। एक सयुक्त राज्य अमरीका का प्रमुख कानूनी परामर्शदाता हुआ, दूसरा इस्पात समिति का प्रधान हुआ, तीसरा न्यूयार्क की बीमा कम्पनी का प्रधान हुआ, कुछ बडे-बडे बैंको के प्रधान हुए, थोडे-से हार-वर्ड लॉ स्कूल के प्राध्यापक भी हुए।

इस परिवार के सभी सदस्य काफी बडी उम्र के थे पर उसमें युवको जैसी असाधारण चहल-पहल रहती थी। युवक आते रहते—अकसर चाय पर या भोजन के लिए। दूतावासों के युवक अपनी सुन्दर मित्र लडकियों को भी साथ लाते। होम्स के सचिव देखते रहते कि अधिक रात बीतने पर भी तहखाने से अटारी तक बिजली की रोशनी चमकती दिखाई देती। श्रीमती होम्स ने एक बार अपने मित्रो से कहा,

"रात के दो बजे तक आप जब चाहे किसी समय भी हमसे मिलने आ सकते हैं।"

अपने काम के प्रति भी न्यायाधीश होम्स का रुख युवकों जैसा ही रहता। युवकों की भांति ही वह उत्सुक होते, उसी भांति बड़ा मुकदमा सामने आने पर भय का अभिनय करते, देर होने पर उसी भांति वह अपना अधैर्य प्रकट करते। होम्स को अपने सहयोगी ढील के भूत के वशीभूत दिखाई देते। जिस राय के लिखने में उन्हें दो सप्ताह से छः महीने तक लगते, उसे वह शनिवार और सोमवार के बीच पूरा कर देते। परन्तु उनके सहयोगी कभी-कभी उनकी सम्मतियों की सक्षिप्तता की शिकायत करते, कहते कि इस कारण वे उनकी समझ में नहीं आती। एक सम्मति पर टिप्पणी करते हुए न्यूयार्क के 'सन' नामक पत्र ने यह प्रश्न किया कि क्या हारवर्ड में कानूनी लोग इसी प्रकार बात करते हैं।

होम्स इस टिप्पणी से बहुत उदास हो गए। उपर्युक्त आलोचना के पश्चात् उन्होंने अपनी अगली सम्मति अपने सचिव को दिखाई, और जब वह उसका एक वाक्यांश नहीं समझ सका तो उन्होंने कठोरतापूर्वक उससे कहा, "मैं विशेषज्ञों के लिए ही लिखता हूँ। जो बात तुम ढूँढ रहे हो, वह एक ही शब्द में यहां बता दी गई है। देख लो।" सचिव ने पाण्डुलिपि लौटाते हुए यह कहकर अपनी सहमति प्रकट की कि एक ही शब्द में पूरे वाक्य के अर्थ आ जाते हैं। वह आगे फिर अपनी शंका प्रकट करना चाहता था कि होम्स ने टोक दिया, "भगवान् बचाये! यदि तुम नहीं समझ पाते तो दूसरा मूर्ख भी नहीं समझ पायेगा।" यह कहकर उन्होंने अपनी सम्मति में एक फालतू वाक्य जोड़ दिया।

• • •

सन् १९१४ में प्रथम महासमर छिड़ने के समय होम्स की अवस्था ७३ वर्ष की थी। अधिकांश अमरीकियों की अपेक्षा वह कम भयभीत हुए

थे। उन्हे युद्ध से घृणा थी, तीन वर्ष तक सैनिक जीवन व्यतीत करके बुढ़ापे में युद्ध-क्षेत्र की वीर-गाथाएँ सुनाने की उन्हे कभी नहीं सूझी। परन्तु उन्होने बहुत-से समर देखे थे और इस विश्वास से सहमत न थे कि इस समर के पश्चात् कोई दूसरा समर न होगा। बहुत-से सुधारको और दार्शनिको ने समर की दुष्टता और मूर्खता अवश्य प्रमाणित कर दी थी, परन्तु इसी कारण यह आशा भ्रामक ही थी कि समर समाप्त हो जायेगा। होम्स ने एक बार कहा था, "जब तक मानव मृत्यु-लोक का प्राणी है, तब तक उसके भाग्य मे यदा-कदा लड़ना बदा है।" समाचारपत्रो ने उन्हे इस कारण युद्ध का समर्थक कह डाला था। परन्तु उन्होने केवल सत्य कहा था, उसका समर्थन नही किया था।

कैपिटोल के पुराने न्यायालय मे केन्द्रीय न्यायालय का काम नियमानुसार चलता रहा। ऐसे ही समय जनवरी १९१६ मे प्रेसिडेंट विलसन ने लुई ब्रैंडीस को केन्द्रीय न्यायालय का न्यायाधीश नियुक्त किया तो थोडे समय के लिए पत्रों के मुखपृष्ठ पर समर की चर्चा समाप्त हुई। देश के एक तट से दूसरे तट तक पत्र ब्रैंडीस के पक्ष मे या विरुद्ध मत प्रकट करने लगे। कोई उन्हे समाजवादी कहता तो दूसरा उन्हे अराजकतावादी बताता। हारवर्ड विश्वविद्यालय के अध्यक्ष लावेल के नेतृत्व मे ५५ नागरिको की एक समिति बनी जो ब्रैंडीस की नियुक्ति के विरुद्ध थे। सिनेट द्वारा जांच ५ महीने तक चलती रही। ४३ साक्षियां गुज़री और बयान के पृष्ठो की सख्या १,३०० तक पहुँची।

इस सघर्ष मे होम्स बराबर समझदारी के साथ खामोश रहे। वह ब्रैंडीस को तब से जानते थे जब वह ला स्कूल मे पढते थे। उस समय ब्रैंडीस बोस्टन के एक युवक वकील थे। कानून के अध्ययन की अवधि तीन वर्ष थी। ब्रैंडीस ने तीन वर्ष की पढाई दो वर्ष मे ही पूरी कर ली थी और उन्ही दिनो उन्हें रोजी के लिए परिश्रम भी करते रहना पडा था। यो उनकी प्रतिभा की असाधारणता प्रत्यक्ष हो गई थी। सामाजिक अन्याय से वह बहुत प्रभावित थे। बोस्टन के निकट औद्योगिक नगरो

की बढती हुई गन्दी बस्तियाँ उन्हे सुधार के लिए प्रेरित करने लगी थीं। होम्स के समान उनके पूर्वज भी स्वातन्त्र्य-प्रिय रहे थे। उनके माता-पिता सन् १८४८ मे वोहेमिया के राजनीतिक विप्लव से बचने के लिए अमरीका आये थे, और केंटुकी के लुईविल कस्बे मे उनका जन्म हुआ तथा वही वह पले-बढे। जब वह १६ वर्ष के हुए तो उनके माता-पिता ने उन्हे जर्मनी के ड्रेस्डेन नगर भेज दिया कि वह किसी जर्मन विश्वविद्यालय के स्नातक होकर पढाई पूरी करे। परन्तु वह वहाँ से लौट आये थे क्योकि उनकी समझ मे केंटुकी की जीवनचर्या अधिक स्वतन्त्र थी।

होम्स इस युवक की ओर बहुत आकृष्ट हुए, दोनो एक समान शील स्वभाव के थे। दोनो कुशाग्र बुद्धि और पूर्णत स्वतन्त्र थे, दोनो मे असाधारण आशावादिता थी।

ब्रैंडीस भी ऐसे विद्वान के प्रति आकृष्ट हुए जिनका सिपाहियाना ठाठ रहा था, जिन्हे सामाजिक जीवन मे ऐतिहासिक महत्व प्राप्त था, जिन्हे निर्धनता और अत्याचार का कोई निजी अनुभव न था, परन्तु जिनका आन्तरिक प्रेरणा से वही दृष्टिकोण बन गया था जो ब्रैंडीस ने कटु अनुभव द्वारा ही प्राप्त किया था।

महायुद्ध के दौरान मे, और तत्पश्चात् शती के तीसरे शतक मे सयुक्त राज्य अमरीका मे दौलत के साथ असहिष्णुता बढ रही थी, और इस परिस्थिति मे जब होम्स और ब्रैंडीस बच्चो से मजदूरी कराने, साम्यवादियो को पकडने या अल्पमतावलम्बियो के अधिकारो की अवहेलना के विरुद्ध सम्मति देते थे तो या तो वे अकेले ही होते या अल्पमत मे होते।

मार्च १६२१ मे होम्स ८० वर्ष के हुए। जन्म-दिवस के प्रात काल वह न्यायालय गये। सविधान के १४वें सशोधन पर उन्हे बहुमत के विरुद्ध सम्मति देनी थी, स्टोन और ब्रैंडीस भी उनके साथ थे। समाचार-पत्रो ने इस प्रकार टिप्पणी की कि होम्स स्वस्थ सैनिक की चाल से अपनी कुर्सी तक पहुँचे और बडी उत्सुकता के साथ अपनी सम्मति दे दी।

यदि अपने सेवा-काल के अन्त तक उन्हें यह विश्वास हो जाये कि कानून के क्षेत्र मे किसी प्रकार किसी मौके पर भी वह सर्वोत्तम सेवा कर सके, तो वह सन्तोषपूर्वक मर सकेंगे। पद या उपाधि से ही इस आकाक्षा की पूर्ति असम्भव होती।

८० वर्ष पार करने पर ही न्यायाधीश होम्स के महत्व का पता अमरीकी जनता को लगा। उनकी सक्षिप्त सम्मतियाँ पसन्द की जाने लगीं और विशेष रूप से निर्णय के विरुद्ध उनकी सम्मतियाँ। 'प्रमुख विरोधी' की उपाधि से वह अलकृत हुए।

परन्तु होम्स की विरोधी सम्मतियो की सर्वोपरि प्रसिद्धि से यह प्रमाणित नही होता कि वह नकारात्मक विद्रोही थे। होम्स सदैव विरुद्ध सम्मति देने की विवशता पर खेद प्रकट करते थे, क्योकि उनका विश्वास था कि अत्यधिक विरोध से न्यायालय की प्रतिष्ठा को धक्का लगता है। परन्तु कटु सत्य यही था कि सामाजिक जीवन के क्रान्तिकाल मे बराबर होम्स को न्यायालय मे अधिकाश सहयोगी ऐसे ही मिले जो इतने लकीर के फकीर थे कि वे हठधर्मी ही नही, अन्धे भी कहे जा सकते थे। वह विरुद्ध सम्मति देने के लिए विवश थे, क्योकि खामोश रहने पर वह कर्तव्य-विमुख होते।

होम्स को प्रमुख विरोधी की उपाधि अपनी विरुद्ध सम्मतियो की सख्या ही के कारण नही मिली थी, क्योंकि उनके कुछ सहयोगी उनसे अधिक विरुद्ध सम्मतियाँ देते रहते थे। उनकी सम्मतियाँ अपने गुण के कारण प्रसिद्ध हुई, सख्या के कारण नही। एक के बाद एक कई मुकदमो मे वह मौलिक अधिकारो से सम्बन्धित विधान, भाषण और समाचारपत्रों की स्वतन्त्रता के मौलिक सिद्धान्तो के सरक्षण के लिए सघर्ष करते रहे।

टैफ्ट होम्स को 'वयोवृद्ध सज्जन' कहते थे। इन वयोवृद्ध सज्जन के शब्दो ने अमरीकी जनता को कितना प्रभावित किया और उनकी चोट कितनी गहरी थी, यह सोचकर आश्चर्य होता है। वे लोग भी, जो

कानूनी साहित्य पढ़ने की कल्पना तक नहीं करते थे, उन्हे भी इन सज्जन के वचनो की जानकारी हो गई थी। एक दिन एक पत्रकार को अपने पत्र के लिए कुछ पाठ्य-सामग्री की चिन्ता हुई तो कैपिटोल स्क्वायर के राहगीरो से उसने पूछना शुरू किया कि उन्होने न्यायाधीश होम्स का नाम सुना है कि नही।

एक मिस्त्री अपना लवादा पहने बेंच पर बैठा समाचारपत्र का खेल-कूद वाला पृष्ठ पढ रहा था। पत्रकार ने जाकर उससे पूछा, "होम्स को जानते हो?" मिस्त्री ने उत्तर दिया, "होम्स को पूछ रहे हो? क्यो नही जानता हूँ? वह केन्द्रीय न्यायालय का एक नौजवान न्यायाधीश है जो बूढो से सदैव अपनी असहमति प्रकट किया करता है।"

• • •

सन् १९२९ की शरद् के उत्तरकाल मे एक दिन ऐसे समय जब श्रीमती होम्स भोजन करने के लिए कपडे पहनती थी, उनकी नौकरानी कमरे मे गई, तो उसने अपनी मालकिन को पलग पर लेटे पाया। वह गहरी साँसें ले रही थी और उनका मुख बिगड गया था। वह कही गिर गई थी और किसी प्रकार पलग तक पहुँच गई थी। उन्होने किसी को पुकारा नही था। उन्होने कहा, "कोई बात नही है। मेरी! जज साहब से कह दो कि कोई चिन्ता न करें।"

डॉक्टर आया, पता लगा कि श्रीमती होम्स की जाँघ की हड्डी टूट गई थी। डॉक्टर ने गम्भीरता से कहा, "पलस्तर चढाना होगा। बचाने की पूरी कोशिश की जायेगी।" उस समय वह ८९ वर्ष की थी। वह इतनी बूढी हो गई थी कि हड्डी का जुडना असम्भव हो गया था।

डॉक्टर ने कहा, "फैनी को कोई कष्ट नही है।" उन्हे न कोई रोग था न ज्वर। परन्तु एक दिन तीसरे पहर अपने शयन-गृह की खिडकी के पास बैठे हुए होम्स ने देखा कि उनकी पत्नी का मुख बहुत उतरा हुआ था, मानो उन्हे कोई कष्ट हो रहा हो। अपना मुख पति की ओर

करके उन्होने धीरे से कहा, "वेंडल ! मैं थकी हुई हूँ, बहुत थकी हुई हूँ, यही बात है। अब तुम जाकर आराम करो और मैं थोडा-सा सो लूँ।"

अप्रैल के अन्तिम सप्ताह मे एक दिन तीसरे पहर पडोस के एक जवान वकील ने घण्टी बजाई। हब्शी नौकर ने द्वार खोला तो वकील ने उससे कहा, "मैं भीतर नही आऊँगा, मुझे पूछना था—"

नौकर ने कहा, "भीतर आ जाइये, जज साहब आपसे बात करना चाहेगे, वह अकेले हैं।"

होम्स सीढी से उतरकर नीचे आये। वह मखमली जैकेट पहने सिगार पी रहे थे। बोले, "वाल्टर! भीतर आ जाओ, फैनी सो रही है, वह सो रही है, वह बहुत थकी हुई है।" कुछ रुककर वह फिर बोले, "हमारी समझ मे अब वह सोकर नही उठेगी, कभी नही उठेगी।"

मुख्य न्यायाधीश टैफ्ट ने इस बात के लिए हठ किया कि आरलिंगटन मे सैनिको की श्मशान-भूमि मे फैनी होम्स को दफन किया जाये। होम्स स्वय अपने बारे मे भी यही चाहते थे कि मरने पर उन्हे भी वही दफन किया जाये परन्तु युद्ध-मन्त्री से इस बात की अनुमति माँगने मे उन्हें शर्म आती थी। अब उन्हे विश्वास हो गया कि फैनी वहाँ दफन होगी तो वह भी उसके साथ दफन होगे।

फैनी की बीमारी के समय, और इस समय भी, होम्स की दिनचर्या मे कोई फर्क नही आया। सामने मौत भी खडी हो तो सैनिक की भाँति क्षण-प्रतिक्षण उनका जीवन चलता रहे। होम्स अपने इन्ही दार्शनिक विचारो को कार्यान्वित कर रहे थे।

भाषण की स्वतन्त्रता से सम्बन्धित एक मुकदमा—सयुक्त राज्य अमरीका बनाम श्विमर—न्यायालय के सामने आया। एक औरत को नागरिकता का अधिकार नही मिल रहा था, क्योकि वह शान्तिवादी थी, और उसने यह साक्षी दी थी कि लडाई होने पर वह अस्त्र धारण नही करेगी। होम्स जानते थे कि बहुमत किस ओर होगा और उनका रोम-रोम ऐसे बहुमत के विरुद्ध था।

मई के अन्तिम सप्ताह मे न्यायालय ने अपना फैसला सुनाया, और होम्स ने अपनी विरुद्ध सम्मति पढी,

.. यदि संविधान का कोई एक सिद्धान्त ऐसा है जिसके बारे में हम यह कह सकें कि हमे अन्य सिद्धान्तो की अपेक्षा उसके प्रति अधिक लगाव होना चाहिए तो वह है स्वतन्त्र विचार का सिद्धान्त—स्वतन्त्र विचार उनके लिए नही, जो हमसे सहमत हो, परन्तु उस विचार की स्वतन्त्रता भी जिससे हम घृणा करते हैं।

जब वह अपना काम समाप्त कर चुके तो पोटोमैक नदी पार करके घूमती पहाडी पर चढ़ते आरलिंगटन मे फैनी की समाधि के पास पहुँचे। पहाडी के शिखर पर ली-भवन के स्तम्भ पेडों के पीछे दिखाई दे रहे थे और भवन पर राष्ट्रीय झण्डा लहरा रहा था। नीचे चौडी नदी चमकती हुई बह रही थी।

होम्स अपनी मोटरकार से उतरे। उनका हब्शी ड्राइवर बक्ले भी उतरा और घास पर उनके पीछे-पीछे चलने लगा। कब्र के पास पहुँचने पर बक्ले एक कोने पर खडा होकर वह दृश्य देखने लगा जो उसे छ वर्ष तक और देखना था। जब दोनो इस स्थान पर आते, विधि हमेशा एक ही रहती। समाधि-शिला के पास जाकर होम्स गुलाब, पोस्ते और हनीसकिल के फूल समाधि पर रखते और थोडी देर तक चुपचाप खडे रहते। इसी खामोशी से शिला पर अपना हाथ लगाये और अपनी उँगलियो से उसे थपथपाते, वह समाधि की परिक्रमा करते, तत्पश्चात् मुँह फेरकर पहाडी के नीचे पेडों के बीच से होते हुए वापस जाते।

• • •

८ मार्च, १९३१ को रविवार था। उस दिन होम्स की ९०वी वर्षगांठ थी। अपने पुस्तकालय मे बैठे वह सारे देश और ब्रिटेन से प्राप्त जन्म-दिवस की बधाइयाँ पढ रहे थे।

उस दिन सध्या के समय उनकी मेज पर एक माइक्रोफोन लगा दिया गया। साढे दस बजे बार एसोसियेशन के अध्यक्ष और येल लॉ स्कूल के डीन क्लार्क न्यूयार्क से बोलने को थे, वाशिंगटन से मुख्य न्यायाधीश ह्यूस बोलने को थे। होम्स को उन्हे सक्षेप मे अपने उत्तर देने थे।

केम्ब्रिज मे पाँच सौ लोग हाल मे इकट्ठे हुए। होम्स के विषय में व्याख्यान हुए, उनके सस्मरण सुनाये गये। ठीक समय पर कमरे मे पूर्ण शान्ति व्याप्त हुई और लोग लाउडस्पीकर की ओर देखने लगे। परिचित बोली सुनाई देने लगी। इस बोली मे धीमापन था, कुछ थकी हुई भी थी, परन्तु बिलकुल साफ और हमेशा की तरह मधुर।

> ...दौड में घुडसवार अपने लक्ष्य तक पहुँचने पर एकदम नही रुक जाते। रुकने के पहले थोडी-सी हलकी दौड हो ही जाती है। मित्रो की बात सुनने और अपनी आत्मा से कहने का मौका मिलता है कि काम पूरा हो गया है। परन्तु इतना कहते ही उत्तर मिलता है "दौड तो समाप्त हो जाती है, परन्तु जब तक काम करने की शक्ति रहती है तब तक काम का अन्त नही होता।" दौड के पश्चात् हलकी चाल पर आकर घोडा रुकता है, परन्तु शान्त नही होता। प्राण रहते यह सम्भव नही, क्योकि कर्म ही जीवन का धर्म है। जीवन का यही तत्व है।

दूसरे दिन सोमवार को अमरीकी जनो ने गर्वपूर्वक सुना कि समय से होम्स अपने न्यायालय पहुँचे और बहुमत के पक्ष मे अपना निर्णय सुनाया। उस वसन्त ऋतु भर वह न्यायालय मे लगातार उपस्थित होते रहे। उन्हें काम करते देखकर आश्चर्य होता था। एक समाचार-पत्र ने लिखा "न्यायाधीश होम्स ने वृद्धावस्था को भी आनन्द का क्षेत्र बना लिया है। उन्हे देखकर वृद्धावस्था के प्रति निराशा नही बल्कि आशा की भावना जागृत होती है।"

परन्तु उनके निकट सम्बन्धी, उनके घर के लोग, जानते थे कि उनकी शक्ति सीमित ही है, क्योकि वह शीघ्र थक जाते थे और

रात के समय काम नही कर सकते थे। ११ जनवरी, १६३२ के दिन जब वह बहुमत के पक्ष मे अपना निर्णय सुनाने न्यायालय मे आये तो दर्शकों ने उन्हे बहुत ही स्वस्थ पाया। उनके श्वेत केशो और मूँछो के मध्य उनके गाल गुलाबी दिखते थे। परन्तु जब वह पढने लगे, तो उनकी वाणी काँपती हुई और हलकी लगी। पढते हुए उनका सिर हिलता जाता था। जो कुछ वह बोले वह सामने पडी बेंचो पर बैठे लोगो को ही सुनाई दिया।

वह दिन-भर बैठे रहे। परन्तु जब साढे चार बजे न्यायाधीश उठे तो पेशकार की मेज पर जाकर उन्होंने कहा, "मैं कल नही आऊँगा।" उसी रात अपना इस्तीफा लिखकर उन्होने सयुक्त राज्य अमरीका के प्रेसिडेण्ट की सेवा मे भेज दिया। अगले दिन दोपहर के समय न्याया-धीशो ने होम्स को पत्र लिखा और चपरासी के हाथ उसे उनके पास भेज दिया। होम्स का उत्तर इस प्रकार था

प्रिय बन्धुओ,

मुझे एक बार और आप लोगो को 'बन्धु' कहकर सम्बोधित करने का अवसर दीजिये। आपके सहानुभूति और उदारता से भरे हुए पत्र ने मेरे अन्तरतम की भावनाओ को छू लिया है। आप जैसे सज्जनो के प्रति मेरी भावना आदर और भक्ति की रही, तो आपके साथ इतने लम्बे समय तक रहने पर मेरे हृदय मे आपके प्रति स्नेह भी हो गया है। अपने बचे जीवन मे मुझे इस अमूल्य निधि की रक्षा करनी है, मानो सूर्यास्त मे मैं सुवर्ण मिला रहा होऊँ।

सस्नेह,
ओलिवर वेंडल होम्स

• • •

पिछले दस वर्षों से घर के चिकित्सक कहते रहे थे कि काम रोकने पर न्यायाधीश का प्राणान्त हो जायेगा। पर तीन वर्ष वह और जीवित रहे और उनके जीवन के ये वर्ष किसी प्रकार दुखदायक नहीं रहे। होम्स का स्वास्थ्य फिर सुधरा और वह प्रसन्नचित्त रहने लगे। होम्स के मुख पर एक अलौकिक और आकर्षक आभा दिखाई देने लगी।

कोठी के बरामदे मे बैठे वह षोडश वर्षीय बेट्सी वार्डन से बातें करते, "तुमसे कोई बात करने मे मुझे कोई सकोच न होगा, क्योंकि तुम अत्यधिक छोटी हो, यदि तुम को भी मुझसे बात करने मे इसलिए सकोच न हो कि मैं अत्यधिक बूढा हूँ।"

वर्ष के अन्त तक हारवर्ड से एक नया सचिव उनकी सेवा मे भेजा गया यह सोचकर कि होम्स के सत्सग से ही युवक लाभान्वित होगे, यद्यपि अब न्यायालय से उनका सम्बन्ध नही था। होम्स ने आपत्ति की, परन्तु बात करने के लिए एक युवक का घर मे रहना उन्होंने पसन्द ही किया। आम तौर से नाश्ते के पश्चात् न्यायाधीश सूचना दे देते कि उन्हें दिन-भर कुछ नही करना है। परन्तु आधे घण्टे पश्चात् सचिव को बुलाकर कहते, "बेटे, चलो कुछ आत्मोन्नति हो जाये," और उसे कुछ पढ सुनाने का आदेश दे देते।

सन् १९३३ मे प्रेसिडेंट का पद ग्रहण करने के कुछ दिन पश्चात् फ्रैंकलिन डी० रूजवेल्ट उनका आशीर्वाद लेने आये। उस समय होम्स अपने पुस्तकालय मे बैठे प्लेटो की कोई पुस्तक पढ़ रहे थे। रूजवेल्ट पूछ ही बैठे, "न्यायाधीश जी, आप प्लेटो क्यो पढ रहे हैं?"

होम्स ने सीधा-सादा उत्तर दिया, "प्रेसिडेंट महोदय, अपनी आत्मोन्नति के लिए।"

तीन दिन पहले, ५ मार्च को रूजवेल्ट ने बैंक बन्द करा दिये थे, सोने का आयात-निर्यात बन्द कर दिया था और देश के भीषण आर्थिक सकट पर विचार करने के लिए विधान-मण्डल का विशेष अधिवेशन बुलाया था। रूजवेल्ट ने गम्भीरतापूर्वक होम्स से कहा, "जीवित अमरीकियो

मे आप सर्वोपरि हैं। आपको देश के इतिहास की आधी शती का निजी ज्ञान है। आपका उसके महापुरुषो से परिचय हो चुका है। अन्धकार का समय है। न्यायाधीश जी, अपने परामर्श से मुझे अनुगृहीत कीजिये।"

होम्स ने उनकी ओर देखकर कहा, "प्रेसिडेंट महोदय, परिस्थिति समर की-सी है। मुझे भी समर का अनुभव है। समर मे एक ही नियम चलता है—व्यूह रचो और लडो।"

फरवरी, १९३५ के अन्तिम सप्ताह मे होम्स को ठड लग गई और शीघ्र ही वह निमोनिया मे जकड गये। नगर-भर मे खबर फैल गई कि रोग घातक है। होम्स भी जान गये और भयभीत नही हुए। कुछ ही सप्ताह पहले उन्होने अपने सचिव से कहा था, "मृत्यु से क्यो डरूँ? मैंने कई बार काल के दर्शन किये हैं। जब वह आयेगा तो पुराने मित्र के समान मैं उसका स्वागत करूँगा।"

पाँचवी मार्च की सन्ध्या के निकट पत्रकारो ने अस्पताल की एक गाडी उनके द्वार के सामने रुकती देखी। ऑक्सीजन देने का सामान भीतर ले जाया गया। होम्स ने आँखें खोलकर सामान को अपने पलग के पास सजते और उसका ढक्कन अपने मुख पर लगते देखा। वह कुछ हिले और साफ शब्दो मे बोले, "यह सब तमाशा क्यो?" वृद्ध को कुछ और श्वास मिल जायें, इसीलिए लोगो ने यह सब परेशानी उठाई थी।

रात के दो बजे तक डॉक्टरो को पता लग गया कि अन्त निकट है। ऑक्सीजन की नालियाँ हटा दी गईं। होम्स अपनी आँखें बन्द किये पडे रहे और शान्तिपूर्वक साँस लेते रहे। वसन्त का आगमन निकट था। बाग मे पेडो की गीली डाले खडखडा रही थी और गली से पहियो की खडखडाहट सुनाई दे रही थी। होम्स ससार से विदा हुए, इतनी शान्ति से कि किसी को मृत्युकाल का ठीक पता भी न चला।

सोलहवीं सडक और हारवर्ड सडक के चौराहे पर श्वेत स्तम्भों का आल सोल्स गिर्जाघर है। अन्तिम सस्कार की प्रार्थना वही पढी गई।

प्रार्थना मे सादगी थी। पादरी ने होम्स के शब्द ही दोहराये, "एक वीर की समाधि पर हम निश्चित अन्त की प्रत्यक्षता से दुखी नही होते, हम उसके साहस से स्फूर्त ही होते हैं और आनन्द के अतिरेक मे हम सघर्ष के लिए अपनी-अपनी जगहो पर वापस जाते हैं।"

आर्लिगटन श्मशान-भूमि में होम्स की समाधि की बगल मे प्रेसिडेंट सहित केन्द्रीय न्यायालय के सभी न्यायाधीश हाजिर हुए। आठ पैदल सैनिकों ने एक साथ बदूकें दागकर सलामी दी—एक-एक घाव के लिए एक-एक सलामी—बाल्स ब्लफ, ऐंटियेटम, फ्रेडरिक्सबर्ग।

एक सैनिक ने कुछ अलग खड़े होकर अपना बिगुल बजाया।

ओलिवर वेंडल होम्स

कप्तान और ब्रिवेट कर्नल

२०वी मसाचुसेट्स वालटियर पैदल सेना, गृहयुद्ध

सयुक्त राज्य के केन्द्रीय न्यायालय के न्यायाधीश

मार्च, १८४१ · मार्च, १९३५

होम्स 'महान् विरोधी' की उपाधि से प्रसिद्ध थे। परन्तु यह उपाधि भ्रान्तिमूलक थी। महानु सिद्धान्त के पक्ष मे सघर्ष करना विरोध नही, समर्थन है।

वर्षो पहले एक स्मारक-दिवस मे बोलते हुए उन्होने स्वय कहा था, "भाग्य के आदेश से कोई व्यक्ति हाथ मे फावडा लेकर नीचे की ओर देखते खोदने लगे या महत्त्वाकाक्षा के आदेश से हाथ मे कुल्हाडी और रस्सी लिये हिम-शिखर पर चढ़ना प्रारम्भ करे—उसके वस की एक ही सफलता है और वह यह कि जो काम हाथ मे ले उसे अपनी सम्पूर्ण शक्ति अर्पित कर दे।"

एक आदर्श अमरीकी मज़दूर
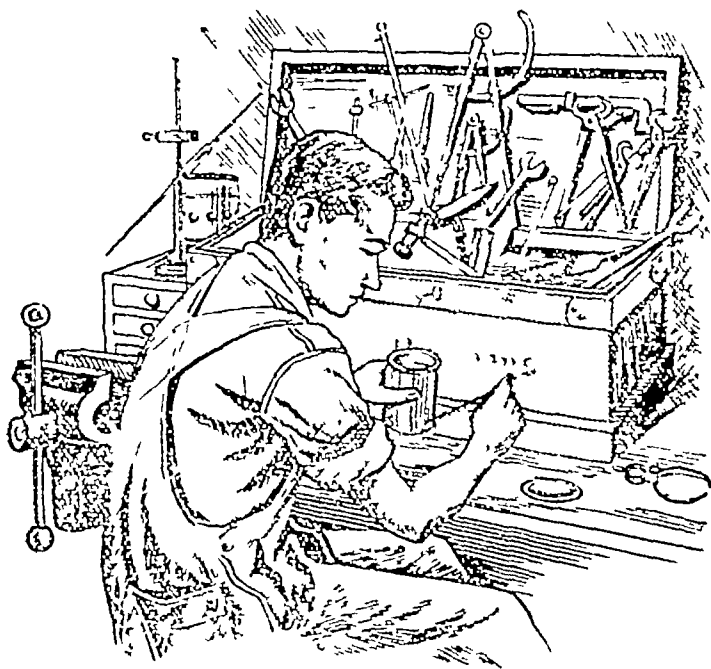
(वाल्टर पी० क्राइसलर की आत्मकथा 'लाइफ़ आफ ऐन अमेरिकन वर्कमैन' का सार, सहलेखक बायडेन स्पार्क्स)

प्रसिद्ध क्राइसलर मोटरों के निर्माता और इस विशाल व्यवसाय के स्वामी का अपने को 'मज़दूर' कहना सर्वथा उचित ही है। वह काम और काम करनेवालों दोनों ही को सम्मान की दृष्टि से देखते थे, अपने इसी गुण की बदौलत वह रेल के कारखाने के फर्श की सफाई करने जैसे तुच्छ काम से उन्नति करके ससार के एक विशालतम कारोबार का

एक आदर्श अमरीकी मज़दूर

मेरे पिता रेलवे के इजीनियर थे। यो मशीन ही मेरे पालन-पोषण मे उनकी सहायक हुई। मैं कोई भी मशीन देखता हूँ, तो उसकी बनावट और क्रिया को गहराई से जानने की मुझमे उत्कट इच्छा होती है। यह सब प्रारम्भिक जीवन से मेरे प्रशिक्षण, स्वभाव और प्रवृत्ति के समन्वय का परिणाम है।

सयुक्त राज्य अमरीका के पश्चिमी भाग मे घास से ढका एक विस्तृत समतल प्रदेश है, जिसके कसाज नामक राज्य मे एलिस नामक एक छोटे-से कस्वे मे बडी बस्तियो से दूर हमारा घर था। कस्वे से होकर जो रेल की लाइन जाती थी, उसमे हमे उस सभ्य संसार के कोलाहल की झलक मिलती थी, जो हमारे पूर्व मे था। निकट ही रेल का एक पुल था, जिसके नीचे बहती जल-धारा के कल-कल नाद मे हमे दूसरे ही प्रकार के कोलाहल की याद आती थी। धारा के नरम तट पर मैदान के जगली पशु अपने पग-चिह्न छोड जाते, और कभी-कभी हमे उन जगलियो के पद-चिह्न भी दिखाई देते, जो मोकासिन नामक विचित्र जूते पहनते थे। समतल भूमि की सभ्यता के इस सुदूर और पतले छोर पर बसे गोरो को सदैव जगली आदिवासियो का डर लगा रहता था।

मैं एक ही वर्ष का था, जब हमारे कस्वे के उत्तर मे कस्टर और उसके साथी मार डाले गये। सन् १८७८ के अन्त मे, जब मैं साढे तीन

वर्ष का था, डिकाटुर और रालिंस जिलो के कुछ गोरो को चाइयन के जगली आदिवासियो के एक दल ने काट डाला था। रात के समय रसोईघर की अँगीठी के चारों ओर जब हम बैठते, और हमारे पडोसी पास बैठे गरम-गरम कहवा प्यालो में डालकर उसे फूँक-फूँककर पीते, तब बार-बार अँगीठी के लाल अगारो के प्रकाश मे हमे ऐसी ही कहानियाँ सुनाई जाती। पाँच वर्ष की अवस्था तक चपतियाये जाने पर ही मैं दबता था और मुझे अपनी निर्बलता का आभास भी था। तो भी जब कभी शयन-गृह के भीषण अन्धकार मे अकेले जाने से हिचकता तो मेरी माँ मुझे भली प्रकार आश्वासन दे देती कि मुझे कभी कोई जगली न पकड सकेगा, और हुआ भी यही कि कभी किसी जगली की पकड़ मे मैं नहीं आया।

मेरी माँ सीमान्त प्रदेश की एक विशालकाय और सशक्त महिला थी। घास के समतल मैदान के बसने से पहले उन्नीसवीं शती के आठवें दशक मे कन्सास राज्य के रेल-मार्ग पर बसे कस्बों में उनके चार पुत्र जन्मे, जिनमे मेरा नम्बर तीसरा था। अपने बच्चो के पालन-पोषण के लिए वह भैंसे के माँस पर गुजर करती थीं। मेरी पौत्रियो मे एक की आँखें मेरी माता की आँखो से बहुत मिलती-जुलती हैं। यो कभी-कभी मुझे जान पडता है, मानो वह मुझे मेरी पोती की आँखो के माध्यम से देख रही हो।

मेरी माँ दिन भर परिश्रम में जुटी रहती और उनमे अनन्त स्फूर्ति थी। जिस घर की शासिका मेरी माँ-जैसी हो, उसमे प्रत्येक लडके का परिश्रमी होना अनिवार्य था। जब कभी नाश्ते मे हमे मकई की खीर मिलती, तो उसका पूरा श्रेय मेरी माता को प्राप्त होता। वही सोडे के पानी मे मकई भिगोकर उनका पीला छिलका उतारतीं और मकई उगाती भी वही थीं।

कस्बे मे कोई नाई न था। आवश्यकता पडने पर हमारा रसोईघर ही नाई की दुकान हो जाता। पिता की हजामत मेरी माँ बनाती

थी और वही उनके बाल भी काटती थी। जो चीज़ हमे बिना खर्च किये मिल सकती थी, उसके लिए हम अपना पैसा कभी न खर्च करते थे। मेरे पिता की खाल काफी कडी थी, होनी चाहिए भी थी, तभी तो सोडा और चर्बी से तैयार किया हुआ घर का साबुन वह सहन कर पाते थे।

हमारा घर क्या था, रेल की कच्ची-पक्की गुमटी थी। जाडे मे उसकी दरारों से बर्फ भीतर टपकती। परन्तु माताजी को इस गुमटी पर ही गर्व था, क्योकि वह उनके पति हैंक क्राइसलर का निजी घर था। पडोसी घास मिली मिट्टी के ढेलो से बने घरो मे रहते थे, इसलिए मेरी माँ उन्हें अपना घर दिखाकर गौरवान्वित होती थी। मेरे पिताजी रेल के कर्मचारी थे, जिस कारण रेल का कुछ कोयला उन्हे मोल मिल जाता था। एलिस मे बसे बहुत-से लोगो को जलाने के लिए गोबर के उपले ही नसीब थे।

यूनियन पैसिफिक रेलवे कम्पनी के एक छोर से दूसरे छोर तक मेरे पिता हेनरी क्राइसलर अपने डिवीजन के सर्वोत्कृष्ट इजीनियर माने जाते थे। अकसर पिताजी बाहर जाते तो उनके भोजन की बालटी लटकाये मैं उनके साथ चलता। वह अपने साथ छ कारतूसो के एक पिस्तौल के अतिरिक्त और कुछ नही रखते थे, जो उनके कोट के नीचे लटकता रहता था।

कभी-कभी पिताजी इजिन पर बिठाकर मुझे अपने साथ ब्रुकलिन तक ले जाते। जिस गद्देदार तख्ते पर मैं सिकुडकर बैठता, वह इजिन की दौड मे उछलता-काँपता रहता और चिनगारियाँ मेरे मुख पर पडती रहती। सैर के आनन्द मे मग्न मैं घण्टो हँसता ही रहता, दौड समाप्त होने पर जब इजिन रुकता और मैं उतरता तो लम्बी लगातार हँसी की थकान मेरे मुख पर छा जाती।

एलिस से तीन लडके मिस कार्टराइट से पियानो बजाना सीखने सप्ताह मे एक बार भेजे जाते थे। इनमे मैं भी था। उनके एक दर्जन

शिष्यो मे डेला फोर्कर नाम की एक लडकी थी। यदि उसका आकर्षण न होता तो कदाचित् इस शिष्यता से मैं विद्रोह ही कर बैठता।

अवस्था के बारह वर्ष पूरे करने पर मुझे छोटे-छोटे पुष्प-चित्रित बधाई-पत्र बेचने का काम मिला। यह मेरा पहला काम था। चाँदी के गहने बेचने के लिए एक विज्ञापन छपा तो नकली चमडे के काले बक्स मे उन्हे रखकर मैं एलिन के प्रत्येक घर बेचने पहुँचा। ढक्कन खोलकर दिखाते ही बिक्री होने लगती। औरतों को खाने पीने की चीजो से अधिक चाँदी के जेवर प्रिय थे।

दूध दुहने का काम मैं अपने भाई एड के साझे मे करता था। नाराज होने पर माँ बालो के ब्रश से बच्चो की मरम्मत करती थी। जब एड इतना बडा हो गया कि माँ की धमकी उस पर बेकार होने लगी तो गायों को दुहने, गोशाला साफ करने और चारा जमा करने तथा भटक जानेवाले मवेशियो को ढूँढकर लाने का काम मुझे ही करना पडने लगा। टीन की बड़ी बालटी लेकर घर-घर मुझे दूध और क्रीम भी बेचनी पड़ती। एलिन मे कोई वेतन पाने के पहले दाम न देता था। इस प्रकार महीने पर मैं क्वार्ट (तीन पाव) पीछे ५ सेंट इकट्ठा करता, जिसमें एक सेंट अपना कमीशन काट लेता।

हमारे कस्बे में यह सिद्धान्त मान्य था कि लड़को को शरारत करने से रोकने के लिए उन्हे काम मे लगाये रखना आवश्यक है। मेरे पिता हम बच्चो के प्रति यथेष्ट उदार थे। परन्तु चूँकि माता-पिता रात-दिन स्वय काम में जुटे रहते थे इसलिए वह अपने लडको को बेकार मँडराते देना उनके चरित्र के लिए हानिकारक समझते थे। मैं हाई स्कूल का विद्यार्थी ही था जब मेरा भाई एड यूनियन पैसिफिक के कारखाने में काम सीखने के लिए भरती कर दिया गया। जब गर्मी की छुट्टियाँ हुई तो जार्ज हैंडरसन की किराने की दुकान मे मैं दस डालर मासिक वेतन पर लगा दिया गया, जहाँ मुझे प्रातःकाल छः बजे से रात के साढे दस बजे तक काम करना पडता था। जब हाई स्कूल की पढाई समाप्त

करने पर दूसरी छुट्टियाँ आई, तो दुकानदार ने मेरा वेतन बढाकर चौदह डालर कर दिया।

मेरे पिता मुझे आगे पढाना चाहते थे। परन्तु मुझे मशीन का काम सीखने की धुन थी और मैं कालेज मे भरती होने के विरुद्ध था। घर बैठकर मैंने अपनी बात मनवानी चाही। मेरे हीले-हवालो से तग आकर पिताजी ने मुझसे एक बार कह दिया, "तुम मशीन का काम नही सीख सकते, यही मुझे तुमसे कहना है। मेरी सिफारिश बिना काम सीखने के लिए तुम्हारी भरती नही हो सकती और मुझे तुम्हारी सिफारिश करनी नही।"

तो भी मुझे यूनियन पैसिफिक के कारखाने मे झाड़ू लगाने का काम मिल ही गया। वहाँ का फर्श बहुत टूटा-फूटा और तेल से चिकना रहता था। मैंने फर्शों की वह सफाई की जो कभी नही हुई थी। फुरसत मिलने पर मजदूरी के फुटकर काम भी कर लेता। कारखाने के काम मे मुझे दिलचस्पी थी। मैं इजिनो और उनके पुरजो को खुलते देखता था। जो मिस्त्री इन पुरजो को समझते थे उनको मैं श्रद्धा की दृष्टि से देखता। दस घण्टे परिश्रम करने पर मुझे रेल-कम्पनी से एक डालर मजदूरी मिलती थी। छ महीने पश्चात् साहस करके मैं मिस्त्रियो के जमादार एडगर एस्टरब्रुक की सेवा मे पहुँचा और सहायता की प्रार्थना की।

एडगर ने प्रसन्न होकर कहा, "वाल्ट, तुम्ही ऐसे व्यक्ति हो जिसे अपनी सेवा से मशीन का काम सीखने के लिए भरती किये जाने का अधिकार हो गया है। तुम अपने काम पर सदैव मुस्तैद रहे और कभी तुमने पेट के दर्द का बहाना नही किया। मैं तुम्हारे पिता से बात करूँगा, लेकिन इसी शर्त पर कि तुम निश्चित रूप से मशीन मिस्त्री बनने के लिए तैयार हो।"

उतावली के कारण कांपते स्वर मे मैंने कहा, "जी हां, मैं तैयार हूँ।" एस्टरब्रुक ने मेरे पिता को राजी कर लिया। इस प्रकार ४ वर्ष के लिए

मैं कारखाने मे मशीन का काम सीखने के लिए भरती हुआ। मेरा वेतन प्रति घण्टा ५ सेण्ट से प्रारम्भ हुआ। झाड़ू देकर मुझे इससे दूना मिलता था। परन्तु अपने नये काम से मैं बहुत खुश था।

० ० ०

उन दिनो कुशल कारीगर की पहचान यह थी कि वे अपने ही औजार काम पर ले जाते थे। अच्छे कारीगर को दूसरे के बनाये और तपाये औजारों पर भरोसा न होता था। परन्तु मुझे अपने औजार इसलिए स्वयं ही बनाने पडे कि मेरे पास औजार मोल लेने के लिए पैसा न था।

मेरा पहला औजार था एक परकाल जिससे चार इच तक का व्यास नापा जा सकता था। मैंने इस बात को समझ लिया था कि मेरे औजार जितने ही बढिया होगे उतनी ही कारखाने के काम मे मुझे सफलता मिलेगी। मैं वे सब काम करने को उत्सुक था, जो पुराने कारीगर करते आ रहे थे। जिस बडे खराद पर इजिन के पिस्टन राड खरादे जाते थे, उस पर भी सहायता देने की अनुमत्ति प्राप्त करने का मुझे साहस हुआ।

वर्षो पश्चात् जब न्यूयार्क मे मैंने क्राइसलर भवन बनवाया तो वेधशाला के लिए निर्मित उसके ७२वें खण्ड पर शीशे के एक केस में मेरे उन सब औजारो की प्रदर्शनी हुई, जो मैंने काम सीखने के प्रारम्भिक दिनो मे बनाये थे। मुझे विश्वास है कि जो भी गौर और समझदारी से इन औजारों को देखेगा, उसे अमरीका के विकास के विषय मे वह वास्तविक ज्ञान प्राप्त होगा जो न्यूयार्क के वैभव की चकाचौंध में सम्भव नही।

इन्हीं दिनो मैंने बर्फ पर चलने योग्य पहिये लगे जूतों की जोडी और बन्दूक बनाई। जिम इजिन को पिताजी चलाते थे उसका २८ इची एक चालू नमूना भी मैंने बनाया। मैंने यह काम उतने ही ध्यान से किया, मानो चतुर शिल्पी की भाँति मैं कोई प्रतिमा बनाने मे लगा

होऊँ। जब नमूने का इजिन तैयार हो गया, तो उसकी दौड के लिए मैंने पटरियाँ बनाकर सहन मे बिछाईं। फिर इजिन ने सहन भर मे चक्कर लगाने का तमाशा दिखाया। इजिन की छोटी सीटी बजने पर पिता की गर्वपूर्ण हँसी देखते ही बनती थी।

मैं कारखाने में प्रति सप्ताह ६० घण्टे से कम काम न करता था। काम सीखते दो वर्ष पूरे नही हुए थे कि मैं एक कठिनाई मे पड गया। दूसरे वर्ष मुझे १० सेंट प्रति घटे के हिसाब से वेतन मिलता रहा। कुछ ही सप्ताह के भीतर तीसरा वर्ष प्रारम्भ होने पर मुझे १२½ सेट की दर से वेतन मिलने को था। अपनी आवश्यकता भर को मेरी आय यथेष्ट थी। घर ही मे खाता और सोता था। और मेरे अधिकाश कपडे मा ही तैयार कर देती थी।

एक दिन मैं ग्रीज़ और ऊन के कचरे से भरी हुई नली पर झुका किसी काम मे व्यस्त था कि मेरे मुँह पर कीचड का भारी छीटा पडा। मैकग्रैथ नामक एक आदमी ने गन्दे पानी के हौज मे एक चिथडा भिगो-कर मेरे मुँह पर मार दिया था। क्रुद्ध होकर ग्रीज मे सने ऊन का ढेर हाथ मे लिये मैं उसके पीछे दौडा। एक द्वार से निकलकर उसने उसे बन्द कर दिया। मैं जानता था कि वह बाहर ज़्यादा देर नही मँडरा-येगा, क्योकि उसे फोरमैन गस न्यूवर्ट के दफ्तर की ओर जाना पडता। इसलिए ढेर हाथ मे लिये खडा रहा, मेकग्रैथ द्वार खोले कि मैं उस पर ढेर चिपका दूँ। इतने मे धीरे से कुण्डी खुली और मैंने दोनों हाथ के ढेर एक-एक करके अन्दर आनेवाले के मुँह पर मार दिये। गज़ब हो गया। वह आदमी जिसके मुँह पर मैंने ग्रीज मे सना ऊन का ढेर फेंक-कर मारा था वह मैकग्रैथ नही बल्कि फोरमैन न्यूवर्ट था।

अपना मुँह साफ करने मे पहले ही उसने मुझे काम पर से अलग कर दिया। मैं समझा मानो मुझे ससार से ही निकाल दिया गया हो, क्योकि काम सीखने के महत्व के आगे ससार मे और सब कुछ मेरी दृष्टि मे तुच्छ था। मालूम नही, मेरे भाई या पिता ने एस्टरब्रुक से मेरी

सिफारिश कर दी हो। हुआ यह कि थोड़े ही दिन वाद मिस्त्रियो के अफसर ने मुझे वुला भेजा। जव मैं उनकी ऊनी कपडे से ढकी मेज के सामने जाकर खडा हुआ तो उन्होंने मुझ पर एक लेक्चर झाड दिया और मैंने सविनय अपना पश्चाताप प्रकट किया। एस्टरब्रुक साहव वहुत लम्बे-चौडे थे। जव वह हँसते थे तो उनकी जेवी घडी की चेन ऊपर-नीचे हिलती थी। जव मैंने उनकी चेन को इस प्रकार हिलते देखा तो आशा वँधी। उनका आदेश पाकर मैं न्यूवर्ट साहव के पास गया और रोते-रोते उनसे क्षमा-याचना की। इस भय ने मेरा वहुत भला किया। कई वर्ष पश्चात् हमारी सस्था से वेतन पानेवाले व्यक्तियो की सूची मे कसाज नगर से गस न्यूवर्ट का नाम सम्मिलित हुआ। तव तक वह वहुत वूढे हो चुके थे।

● ● ●

आर्थर डालिग नामक एक कर्मचारी इजिन के नीचे के काम मे मेरा सहायक था। एक रात अपना काम रोककर उसने सावधानी से चारो ओर देखा और चुपके से मेरे कान मे कहा, "मैं शहर की ओर जा रहा हूँ।"

मैं वूढे का सहायक था और भक्त भी। इसलिए मैंने उसे चेतावनी दी, "वेहतर है कि न जाइयेगा।" परन्तु वह तो जाने पर आमादा ही था। आदेश देकर चल दिया, "इन कपाटो का काम निपटा दो।"

इंजिन की कर्षण-शक्ति कपाटो की सच्ची स्थिति पर अवलम्वित रहती है। अव भी पलग पर लेटे-लेटे दूर पर चलते इजिन की आवाज से मैं वता सकता हूँ कि उसके कपाट ठीक लगे हैं कि नही। यह जानकारी और मशीनों, धातुओ और कारीगरो के वारे मे असख्य दूसरी वातो की जानकारी मुझे तेल की कालिख से सने इस वूढे मिस्त्री डालिग से ही प्राप्त हुई, जिसके लिए मैं अभी तक उसके प्रति कृतज्ञ हूँ। उसकी वताई हुई एक वात स्मरणीय है, और वह यह कि कपाट का काम

प्रारम्भ करने के पहले अनुकूल छेदो के निशान अवश्य बना लो। कोई कहे भी कि उसने आवश्यक निशान बना लिये हैं, तो भी स्वय जांच कर लो।

मुझे खयाल आता है कि अगले महीनो मे उसे कपाट लगाने के तीन् काम भी नही करने पडे। मैं उसका काम कर लेता था और उसकी रक्षा भी कर लेता था, जिस कारण उसका मुझ पर स्नेह बढ गया। इस प्रकार कपाटो के जमाने मे मेरा अनुभव अधिकाश दूसरे कारीगरो से बढ गया।

हमारी रेलगाडियो मे वायु-सचालित ब्रेको के लगने के पहले मैंने वेस्टिंगहाउस के नये आविष्कार का अध्ययन करके उसे इजिन मे लगाना भी सीख लिया था। इसलिए जब यूनियन पैसिफिक ने वायु-सचालित ब्रेक खरीदे, तो डिवीजन के इजिनो मे उन्हे लगाने का काम मेरे सुपुर्द हुआ। तब प्रशिक्षण के लिए मेरी भरती का अन्तिम वर्ष था और मेरा वेतन १५ सेंट प्रति घण्टा था।

इसके पश्चात् भाप से रेलगाडियो को गरम करने का आविष्कार चालू हुआ। तब तक कोयले की अँगीठियो से ही रेलगाडियां गरम रखी जाती थी। नई बातो के सीखने का मैं सदैव से उत्सुक था। सो सम्बन्धित पत्रिकाओ से पत्र-व्यवहार द्वारा और अन्य ढगो से भी, मैंने इस नये सामान को लगाना भी सीख लिया। इस कारण मुझे यह काम भी मिल गया। मुझे उन्नति करने का जोश था। सोचता, "हे ईश्वर, मैं २२ वर्ष का हो गया और अभी तक एलिस मे ही पडा हूं।" मुझे ससार मे आगे बढने की उत्कट अभिलाषा थी।

अपने हृदय की इस प्रेरणा को स्वीकार करके कि ससार भर मे मेरी डेला फोर्कर के जोड की दूसरी लडकी नही है, मैंने प्रणय के सम्बन्ध मे भी अपनी उम्र को देखते हुए कही अधिक समझदारी का परिचय दिया। हम दोनो की सगाई पक्की हो गई। परन्तु डेढ डालर दैनिक की कमाई पर हमारा व्याह किस प्रकार होता? डेला के पिता

की गिनती कस्बे के बड़े दुकानदारों मे थी। अपनी छोटी-सी आय के आधार पर मैं किस प्रकार उसे अपने पिता का सरक्षण छोडने के लिए राजी करता।

यूनियन पैसिफिक की नौकरी छोड़कर अचेसन, टोपेका एण्ड साता फे की फर्म मे न्यूवर्ट साहव अधिक वेतन पर काम करने लगे थे। इसके बहुत पहले उन्होंने मुझे क्षमा भी कर दिया था। हो सकता है कि उनके एलिस से चले जाने पर ही मैंने उनके अनुसरण का निश्चय किया हो। मेरा प्रशिक्षण समाप्त होने को था कि मेरे माता-पिता को दूसरे कस्बे मे काम ढूँढने की मेरी पागलों जैसी योजना का पता लगा। मैं इतना बडा हो गया था कि माँ अपने ब्रश की मार से मुझे अब राजी नही कर सकती थी; इसलिए उन्होंने समझा-बुझाकर घर पर ही रहने के लिए राजी करना चाहा। उन्होने चेतावनी दी कि जितना बढिया खाना मुझे घर पर मिलता था, उतना मुझे वाहर नसीव न होगा।

परन्तु मैंने अपना निश्चय दृढ कर लिया था। न्यूवर्ट साहव को लिख दिया था, और काम दिलाने का वचन भी उन्होने मुझे दे दिया था। उन्होंने अपने वचन का निर्वाह किया। कसाज के वेलिंगटन नगर में साता फे कारखाने के एक विभाग के हेड मिस्त्री शेरवुड के नाम परिचय-पत्र लिखकर उन्होने मुझे वहाँ काम दिलवा दिया। घोड़ा-गाडी मे दिन भर की यात्रा थी। इसलिए माँ ने भोजन से भरी एक टोकरी मेरे साथ कर दी।

• • •

शेरवुड साहव ने मेरा परिचय-पत्र पढकर कहा, "तुम तो अभी लडके ही हो। इतना जल्दी मिस्त्री कैसे हो गये ? क्या उमर है ?" मैंने अवस्था में एक वर्ष वढाकर कहा, "मैं २३ वर्ष का हूँ।"

"तो अनुभव तुम्हें थोडा ही होगा। मशीन मे कपाट जमा सकते हो ?"

"जी हाँ, कपाट का काम कर सकता हूँ, न्यूबर्ट साहब को मेरे काम से सन्तोष था ही।"

इजिनो की सफाई और मरम्मत के सम्बन्ध मे पच्चड और नाल लगाने का काम भी उतना ही कठिन है। उन्होने मुझसे पूछा, "पच्चड और नाल लगा लकते हो ?"

"जी हाँ।"

शेरवुड साहब बोले, "जब तुम दो सप्ताह तक काम कर लोगे, तब हम तुम्हारे वेतन का फैसला करेंगे।"

"बहुत अच्छा, परन्तु यदि मुझे अपने काम का सर्वोच्च वेतन नही मिलेगा तो मुझे काम की जरूरत नही।"

"बहुत ढीठ मालूम होते हो।"

मैंने निवेदन किया, "जी नही, मैं कुशल मिस्त्री ही हूँ।"

शेरवुड साहब ने अपनी मूँछ पर हाथ फेरा, साथ ही अपनी मुस्कराहट छिपाई और प्रधान फोरमैन बिल हार्ट की सेवा मे पहुँचने का मुझे आदेश दिया। मेरा आचरण हार्ट को कदाचित् बुरा लगा हो। वह बोले, "कपाट जमा सकते हो ? अच्छा, काम पर जाओ।" और एक नये मेल के इजिन की ओर सकेत किया जिसे मैंने कभी देखा न था। मैं काम पर गया और लगा छेद के निशान बनाने। हार्ट ने अपने मैले हाथ के सकेत से अधैर्यपूर्वक कहा, "नही, नही, फिर से निशान लगाने की जरूरत नही। मैं कल ही लगा चुका हूँ।"

मेरी कारीगरी का प्रथम दिवस था, वयोवृद्ध आर्थर डालिंग का परामर्श मैं इतनी जल्दी कैसे भूल सकता था। अतएव फोरमैन की नाराजगी की परवाह न करके मैंने तुले शब्दो मे उत्तर दिया, "हार्ट साहब, हो सकता है कि आपने निशान बना लिये हो, परन्तु यदि मुझे कपाट जमाने हैं तो छेद के निशान भी मुझे ही लगाने होगे।"

जब मुझ पर झल्लाकर हार्ट चला गया तो निकट खडा एक नव-युवक सहयोगी दबी जबान से बोला, "हजरत स्वय तो कपाट जमा नही

सके, यद्यपि कल बहुत प्रयत्न करते रहे और वदनाम करने के लिए अब तुम्हें इस काम पर लगा गये हैं।"

"ऐसी बात है ?" कहकर मैं इजन की जाँच करने चला। ड्राइवर की कैबिन मे देखा कि इजन को पीछे ले जानेवाले यन्त्र के क्वाड्रैंट स्लाट का प्लग गायब है। प्लग ढूँढ़कर छेद मे फिट कर दिया और हँसने लगा। इसके पश्चात् कपाट निकाले और उन्हे देखकर फिर वही जमा दिया। मैं जान गया कि सब अपनी जगह पर हैं। शीघ्र ही इजन के पहिये मैंने रोलरो से हटा लिये और हार्ट को सूचना दी कि मैं दूसरे काम के लिए प्रस्तुत हूँ।

वह फिर गरजा, "क्या कहा ? तुम यह कहना चाहते हो कि इतनी ही देर मे तुमने सब कपाट जमा दिये ? क्राइसलर, यदि आग जलने पर इजन ढग से नही चला तो निकाल दिये जाओगे।"

इजन की भट्ठी तुरन्त गरम की गई। मैं जानता था कि इजन चलेगा और वह चलने लगा। थोडी देर बाद शेरवुड ने मुझे बुला भेजा और इजन के विषय मे पूछा। भेद की बात मैंने हार्ट को नही बताई थी, मिस्त्रियो के अफसर को मैंने प्लग की बात समझा दी। बहुत खुश हुआ। मैं वायु-ब्रेक के काम पर लगा दिया गया और अपने काम का सर्वोच्च वेतन मुझे मिला।

घर से स्वतन्त्र जीवन की जो उमग सभी नवयुवको मे होती है, वही मुझमे भी कुछ समय तक रही, परन्तु शीघ्र ही वह क्षीण होने लगी। माता की चेतावनी के अनुसार उनके बनाये भोजन की याद करने लगा। अपना कोई घर न था, सो डेला फोर्कर की याद आती। परन्तु अब काम के लिए रेलवे लाइन के किनारे बसे डेन्वर, चाइयन, लरामी, रालिस जैसे कस्बो की खाक छाननी थी। अकसर थका और भूखा ही सोता। इन वर्षों के अपने जीवन के कारण मैं इस बात को कभी नही भूला कि काम की तलाश मे देश भर की खाक छानते फिरने मे कितना कष्ट होता है।

अन्तत डेन्वर ऐंडरियो ग्रैड वेस्टर्न रेलरोड के साल्ट लेक सिटी वाले कारखाने मे मुझे सन् १९०० मे एक काम मिला जिसे मैं एक वर्ष तक करता रहा, और कुछ पैसे भी बचा सका। मैंने निश्चय कर लिया था कि अब मेरा जीवन घुमतू न रहेगा, यद्यपि जब कभी इजन की वेदनामय सीटी सुनता तो डेला की याद मे मुझे अपने एकाकी जीवन का हल मिल जाता। हम पावदी से एक-दूसरे को पत्र लिखते थे और अगर कभी मुझे पत्र लिखने मे देर भी हो गई तो वह कभी घबराई नही क्योकि वह जानती थी कि मेरे घुमतू जीवन का हम दोनो की महत्वाकाक्षाओ से घनिष्ठ सम्बन्ध था। एक दिन वह भी आया जब मैंने लिखा कि मैं घर पहुँच रहा हूँ। विवाह की तिथि तय करो। हमारा विवाह मेथाडिस्ट गिर्जाघर में हुआ। उस समय मेरी अवस्था थी २६ वर्ष।

हमारा दाम्पत्य जीवन साल्ट लेक सिटी मे ६० डालर प्रति मास पर प्रारम्भ हुआ। गुमटी के मिस्त्री की हैसियत से मुझे प्रति घण्टे ३० सेंट अर्थात् दस घण्टे दैनिक परिश्रम के ३ डालर मिलते थे। जब कभी ओवरटाइम काम करता तो आय बढ जाती और मैं अपने को भाग्यशाली मानता। गर्मियों भर हम किराये के एक छोटे-से पुराने घर मे रहे। सीधी छत के मकानो की एक कतार बन रही थी। वह पूरी भी न हो पाई थी कि हमने उसमे एक घर किराये पर ले लिया और वहाँ पहुँचकर किश्तो पर १७० डालर का सामान लेकर उसे सजा लिया।

साधारण जीवनचर्या के मध्य एक दिन सौभाग्य का भी आया। मैं उन दिनो पत्र-व्यवहार द्वारा इजीनियरिंग सीखने मे लगा था। गुमटी मे काम कर रहा था कि जमादार जान हिकी एक तार हाथ मे लिये भागता-भागता फोरमैन सैम स्मिथ के पास पहुँचा और बोला, "स्मिथ, स्पेशल गाडी के ४६ नम्बर के इजन का पिछला सिलेण्डर फट गया है।"

स्मिथ ने कहा, "यही एक इजन है जो डेन्वर वाली गाडी यहाँ से ले जाने के लिए मिल सकता है।"

हिकी बोला, "यह तो जानता हूँ। पर क्या समय के भीतर इसकी मरम्मत हो सकेगी ?"

"देखूँगा, यहाँ एक युवक है। आशा है, वह यह काम कर सकेगा।" दो घण्टे चालीस मिनट तक काम मे जुटे रहने के बाद मैंने स्मिथ को पुकारकर कहा, "इजन तैयार है। ले जा सकते हो।"

हिकी ने अपने पहले जैसे लहजे मे कहा, "क्राइसलर, मैं मान ही नही सकता था कि कोई कारीगर यह काम इतना शीघ्र कर लेगा।"

लगभग पाँच महीने बाद मास्टर मिस्त्री के दफ्तर से मेरी पुकार हुई। हिकी ने मुझे गुमटी की फोरमैनी का काम दिया।

अब मुझे भी एक दफ्तर मिला। दीवार मे वह एक बडा-सा ताक जैसा ही था, परन्तु उसमें कपडे से ढकी सुन्दर मेज थी और उस पर टेलीफोन भी था। ९० श्रमिक मेरी निगरानी मे थे। उन्ही दिनो मेरी पहली सन्तान, थेल्मा का जन्म हुआ।

● ● ●

एक ही क्षण मे अतीत के सम्पूर्ण चित्र की झलक दिमाग मे घूम जाने के लिए कोई पानी मे डूबना ही जरूरी नही है। उन दिनो काम मुश्किल से मिलते, और काम से निकाले जाने की आशका सदैव बनी रहती थी। मैं २७ वर्ष का था, बीवी थी, एक बच्चे का बाप भी था। जितने घण्टे मैं परिश्रम करता उनसे अधिक मेरी पत्नी भोजन पकाने, सफाई करने, कपडे धोने और बच्चे की सेवा मे लगाती। ९० डालर प्रतिमास की आमदनी पर हम दोनों अपने को बहुत भाग्यशाली मानते थे।

इस वैतनिक सेवा के दौरान मे एक बार कारखाने के प्रधान अधिकारी ने मुझे झिड़की से भरा एक पत्र भेजा। मुझे याद नही आती

कि किस अपराध के कारण मुझे उसकी डाँट खानी पडी, परन्तु मुझे भली प्रकार याद है कि पत्र के पाते ही क्रोध के मारे मैं पागल हो गया। मैं भी इस पत्र का मुँहतोड जवाब लिख सकता था और मैंने लिखा भी। बुलाया गया, परन्तु तीन-चार दिन बाद। मिलने के लिए दफ्तर की ओर जले कोयले से बिछे मार्ग पर चलते हुए सोचता रहा कि अधिकारी ने बुलाने मे इतने दिन क्यो लगाये। परन्तु लडने के लिए तैयार, सीना फुलाये, अधिकारी के दफ्तर का द्वार खोलकर भीतर घुसा।

"आओ वाल्ट," उसने कहा, "मैं इधर नये इजन के डिजाइनो का अध्ययन कर रहा था, और इनके बारे मे बात करनी है।" बात करते-करते वह मेरे काम की तारीफ भी करते जाते। इस प्रकार उन्होने मुझे भली प्रकार शान्त कर लिया। यदि वह चिल्लाते तो मैं भी चिल्लाने के लिए तैयार था। परन्तु उन्होने मुझे अपने मधुर वार्तालाप से हरा दिया। प्रशसा से आरम्भ होनेवाला उपदेश सुनने को कौन नही तैयार हो जायेगा। मुझे भली भाँति हराकर वह अपनी बात पर आये।

"वाल्ट, तुम्हे मालूम होना चाहिए कि तुम्हारा भविष्य बहुत उज्ज्वल है। यदि कभी तुम्हे कोई बात बुरी लगे तो आवेश मे आकर अपने भविष्य को खतरे मे न डालो। कभी-कभी मुझे भी ऐसा पत्र मिल जाता है जिसे पढते ही मेरा खून खौलने लगता है। जानते हो, तब मैं क्या करता हूँ ?"

इतना कहकर अपने मेज की निचली दराज से उन्होने मेरा पत्र निकाल लिया। मैं शर्म से पानी-पानी हो गया। वह मुस्कराते हुए बोले, "बौखलाने वाले पत्रो को मैं यहाँ तीन-चार दिन तक पडा रहने देता हूँ। जब मुझे विश्वास हो जाता है कि अब मैं बिलकुल शान्त हूँ, तो इन्हे निकालकर मैं फिर पढता हूँ।" फिर वह मुस्कराकर बोले, "यदि तुम इसी प्रकार मेरे पत्र को कुछ समय तक पडा रहने देते और

शान्त होकर ही पढ़ते तो तुम मुझे समझ पाते और अपने को भी। अब, बेटे, मेरी सीख याद रखो।"

मैंने क्षमा-याचना की और उनकी सीख गाँठ बाँधी। तब से आवेश में मैंने किसी पत्र का उत्तर दिया ही नहीं। ईश्वर जाने, कितने ही तैश दिलानेवाले पत्र मेरे पास आये पर मैंने बराबर उन सबको अपनी मेज की निचली दराज के हवाले किया। वयोवृद्ध हिकी के स्मरण मात्र से मैं शान्त हो जाता हूँ।

बेहतर नौकरी मिलने पर मैं हिकी साहब के पास गया। उन्नति का वास्तविक अवसर सामने आया था। हिकी साहब ने स्वीकृति का परामर्श दिया, और शीघ्र ही मैं कोलोरेडो दक्षिणी रेल-रोड के कोलोरेडो राज्य मे ट्रिनीडाड वाले कारखाने का मुख्य फोरमैन नियुक्त हुआ। एक वर्ष के भीतर मैं दो डिवीजनों का मास्टर मिकैनिक नियुक्त हुआ और मेरा मासिक वेतन १४० डालर तक पहुँचा। उस समय यह वेतन मेरे लिए बहुत था। मेरे नीचे खलासी, कारीगर, बढ़ई, जैसे कर्मचारियो की संख्या लगभग एक हजार थी। मैं उनका 'बुजुर्ग' था, यद्यपि मेरी अवस्था ३० वर्ष की भी नही थी।

मेरी पदोन्नति जार्ज काटर की कृपा से हुई थी। कुछ समय बाद वह फोर्टवर्थ डेन्वर सिटी रेल-रोड के मुख्य सुपरिंटेंडेंट होकर चले गये और उन्होने मुझे बुलाया। टेक्साज-राज्य का चिल्ड्रेस नामक स्थान तब एक उजाड ग्राम मात्र था। उन्होने चाहा कि वहाँ मैं एक कारखाने का निर्माण करूँ और सामान लगाकर उसे चालू करूँ। चिल्ड्रेस मे किराये पर एक कोठरीनुमा घर ही नसीब था, जिसमे पलस्तर तक न था। मैं यह काम हाथ मे लेना चाहता था। परन्तु डेला से घर की बात कहते डरता था—कैसे एक बच्चे की माँ उसके भीतर रह सकेगी। मैंने उससे चिल्ड्रेस की चर्चा की।

जिन दिनो मैं तेल-मिट्टी से सने मिस्त्री से बेहतर न था, तब मेरी पत्नी मेरा अनुसरण करती रही, इस संस्मरण से मैं जितना गौरवान्वित

और सन्तुष्ट होता हूं, उतना अपनी पदोन्नति से नहीं। मेरी बात सुनकर उसने उत्तर दिया, "प्यारे, मेरी चिन्ता न करो। अपनी उन्नति के लिए जहां भी जाओगे, वही मैं सुखी रहूंगी।" यो हम चिल्ड्रेस पहुंचे।

नया कारखाना बनकर तैयार होते ही शिकागो ग्रेट वेस्टर्न रेल-रोड के आयोवा राज्य मे स्थित ओलवाइन नामक स्थान से मुझे मास्टर मिकैनिक की जगह के लिए अकस्मात् एक तार मिला। वेतन २०० डालर प्रतिमास से प्रारम्भ होने को था, और तरक्की की गु जाइश थी। काटर साहब ने मुझे मजूरी की सलाह दी। मैंने उनकी बात मान ली। इस ओलवाइन वनिस मे हमारे दूसरे बच्चे का जन्म हुआ। आयोवा पहुंचने के १५ महीने के भीतर मैं मुख्य मास्टर मिकैनिक नियुक्त हुआ और तीन महीने बाद इजनो का सुपरिटेंडेंट बना दिया गया। रेल की नौकरी में कारीगरो के लिए यह सर्वोच्च पद था। मैं सीखता जा रहा था और मेरी महत्वाकाक्षा का ठिकाना न था। मेरा वेतन अब ३५० डालर प्रतिमास तक पहुंच गया।

• • •

यह सन् १६०८ की बात है, और यही से मेरे जीवन मे एक मोड आया। उस वर्ष मैं शिकागो की मोटरकार प्रदर्शनी मे गया, और वहां मैंने इजन से चलनेवाली सफरी कार देखी। उस पर हाथी दांत जैसा सफेद रग चढा था, उसके गद्दे और उनकी झालरें लाल थी। फुटबोर्ड पर औजारो का सुन्दर बकस लगा था, और उसकी बगल मे गैस के टैक से सामनेवाले लैंपो मे रोशनी होती थी।

चार दिनों तक मैं इस प्रदर्शनी मे मंडराता रहा, और मोटरकार के प्रति ऐसा ही आकृष्ट रहा, मानो वह लाल परी का कोई गीत सुना रही हो। उस पर दाम लिखे थे—५,००० डालर नकद। भाव-ताव की गु जाइश न थी। मेरे पास केवल ७०० डालर थे। सच पूछो, तो मैंने अपने से पूछा तक नहीं कि कार खरीदने के लिए कर्ज लेना होगा या

जेल जाना पड़ेगा। मेरे सामने यही प्रश्न था कि इतनी रकम जुटाऊँ कहाँ से। कार खरीदने के लिए दिवालिया होकर मुझे जेल जाना होगा —यह मैंने अपने से पूछा नही। किससे कर्ज मांगूं—यही चिन्ता थी।

एक महाजनी सस्था का रैल्फ वान वेखटेन नामक उप-प्रधान मेरा मित्र था। जिस होटल मे रेल के अधिकारी जलपान करने जाया करते थे वहाँ मैंने उसे घेरा। परन्तु कार मुझे इतनी प्रिय थी कि ४,३०० डालर की रकम उधार लेने के लिए मैंने अजीब-सी उक्तियाँ उसके सामने प्रस्तुत की। मैंने उसके सामने देश के उस भविष्य का चित्र प्रस्तुत किया जव यहाँ के प्रत्येक व्यक्ति के पास निजी कार होगी।

उसे इन उक्तियों की आवश्यकता न थी। उसने कहा, "वाल्ट, किसी प्रतिष्ठित व्यक्ति को लाओ जो जमानत ले ले।"

शिकागो ग्रेट वेस्टर्न रेलवे का डिवीजनल सुपरिटेंडेंट, विलियम वाउडिन कासी, हम दोनो का मित्र था। मैंने पूछा, "जमानत के लिए विल कासी कैसा रहेगा ?" उत्तर मिलने पर कासी ने जमानत कर दी। और अपनी पहली कार की खरीदारी के लिए मुझे समुचित रकम उधार मिल गई। सैर करने के लिए मुझे कार की जरूरत न थी, मुझे तो उसके कल-पुर्जों की पूरी जानकारी प्राप्त करनी थी।

वर्षों पश्चात् वान वेखटेन एक महाजन-सस्था का सदस्य वना, जिसके ५ करोड डालर विलीज ओवरलैंड कम्पनी मे फँस गये थे। रकम की निकासी के लिए सस्था के नेता मेरे पास पहुँचे और १० लाख डालर प्रतिवर्ष के ठेके पर उद्धार का काम मुझे सुपुर्द किया। जब ठेके की लिखा-पढी पक्की हो गई, तो इस पुराने मित्र ने मुझे अपने पहले मैत्री-निर्वाह की याद दिलाई और कहा कि यदि वह उस समय मुझे सहायता न करता, तो आज मैं उसकी सस्था का उद्धार करने योग्य न होता।

मैंने ओलवाइन के अहाते को मोटरगराज वना डाला। मैं प्रतिरात उसमे काम करता और शनिवार के तीसरे पहर से रविवार का पूरा दिन उसके काम मे जुटा रहता। मैंने वार-वार कार के सब पुर्जे खोल

समय मे अच्छे-से-अच्छे काम के सफल प्रयोग चालू किये, जिससे मोटरो की निकासी ४५ प्रतिदिन से बढकर ७५ तक पहुँची। फिर बडे पैमाने के उत्पादन के सिद्धान्तो के आधार पर हमने आमूल सशोधन किया, जिससे दैनिक उत्पादन बढकर २०० मोटरो तक पहुँच गया।

हम उत्पादन बढाने लगे तो हेनरी फोर्ड ने एक मशीन का आविष्कार किया जो काम मे आनेवाले पुर्जों को एक मशीन से दूसरी मशीन को ले जाती थी। इस आविष्कार का हमने अनुसरण किया। विश्वास कीजिये, जिन पच्चीस वर्षो के भीतर मोटर-निर्माण से सम्बन्धित नित्य नये आविष्कार होते रहे वे हम सबके लिए बडे स्फूर्तिदायक रहे जो व्यवसाय मे व्यावहारिक रूप से लगे थे।

मैंने बुइक कारखाने के प्रबन्धक के पद पर तीन वर्ष तक काम किया और चार्ले नाश मुझे वही वेतन देता रहा, जिस पर मैं नियुक्त किया गया था। एक दिन नाश के दफ्तर गया और दृढ निश्चय का प्रदर्शन करने के लिए मैंने अपनी बँधी मुट्ठी मेज पर रखकर कहा, "चार्ले, मुझे अब २५,००० डालर प्रतिवर्ष मिलने चाहिए।"

वह चीख-सा पडा, "वाल्टर!"

मैं कहता गया, "कहने के पहले मैंने यथेष्ट प्रतीक्षा कर ली है। जब मैं यहाँ आया था तब १२,००० डालर पा रहा था। मैंने ६,००० पर यह काम मजूर किया, और तुमने मुझे तरक्की नही दी है। मुझे २५,००० मिलें, नही तो मैं छोडकर चल दूँगा।"

शान्त होकर बोला, "वाल्टर, यह एक ऐसी बात है, जिस पर मुझे स्टारो साहब से परामर्श करना आवश्यक होगा।" जब कुछ दिनो बाद स्टारो साहब फ्लिन्ट आये तो उसने अपना वचन पूरा किया। दफ्तर मे बुलाये जाने पर अपनी माँग मैंने फिर पेश की। स्टारो ने कहा, "वाल्टर, उत्तेजित होना आवश्यक नही। तुम्हे इच्छानुसार २५,००० डालर अवश्य मिलेंगे।"

"बहुत अच्छा, धन्यवाद। इस सिलसिले मे इतना और कह दूँ

कि अगले वर्ष ५०,००० डालर लूँगा।" उस समय मेरी अवस्था ४० वर्ष थी। जब मैं घर पहुँचा तो तरक्की का वास्तविक आनन्द मुझे तभी हुआ, जब बात सुनकर मेरी गृहिणी चिल्ला उठी, "प्यारे, मैं जानती थी कि तुम तरक्की करा ही लोगे।" शाबाशी के इन्ही शब्दो से मेरी अभिलाषाएँ पूरी हुईं।

● ● ●

सन् १९१५ की बात है, और यही वर्ष जनरल मोटर्स के लिए अन्य बातों मे भी घटनापूर्ण रहा। इस कम्पनी का प्रतिभाशाली निर्माता विलियम सी० ड्यूरन्ट किसी प्रकार उस पर अपने अधिकार से वंचित हो गया था। तीन वर्ष अलग रहने के पश्चात् शेयरहोल्डरों की बैठक मे सम्मिलित होकर उसने शान्तिपूर्वक यह प्रमाणित कर दिया कि वह कम्पनी का वास्तविक अधिकारी है। नाश को इस्तीफा देना पड़ा और ड्यूरन्ट जनरल मोटर्स का प्रधान हो गया।

एक दिन ड्यूरन्ट मेरे दफ्तर मे आकर बोला, "क्राइसलर साहब! मैं आपको बुइक मोटर कम्पनी का प्रधान बनाना चाहता हूँ।"

उन दिनो नाश और स्टारो के सहयोग से मैं पैकार्ड आटोमोबाइल कम्पनी को खरीदने के विषय मे लिखा-पढी कर रहा था। इसलिए मैंने उत्तर दिया, "ड्यूरन्ट साहब, आपसे साफ कह दूँ कि जिस सौदे की बात हो रही है वह पट जायेगा तो मुझे यह नौकरी छोड़नी होगी।"

ड्यूरट ने कहा, "तुम्हें यहाँ बनाये रखने के लिए मैं तुम्हे ५ लाख डालर प्रति वर्ष दूँगा।"

यह इतनी बडी देन थी कि कुछ क्षण तक मैं निर्वाक् होकर निर्णय न कर सका।

एक कागज देकर वह बोले, "तो बात पक्की रही।"

कागज पर लिखा सौदा वेतन के विषय मे उनके वचन से भी

अधिक आकर्षक था। सौदे की शर्तें ये थी कि प्रतिमास मैं १०,००० डालर नकद लूँ और अपने कन्ट्रैक्ट के दौरान मे प्रति तीन वर्ष पश्चात् बाकी रकम नकद लूँ, या शेयरो के रूप मे उस भाव पर जो कट्रैक्ट लिखने के समय हो। मुझे शेयर लेना ही पसन्द था।

• • •

चार्ल्स एफ० केटरिंग की मोटर व्यवसाय में प्रतिमापूर्ण सूझ थी। उसने ही मोटर मे बिजली का पेट्रोल-शक्ति से चमत्कारक गठबधन किया था। हमे इस व्यक्ति की आवश्यकता प्रतीत हुई। बुइक के प्रधान और जनरल मोटर्स के प्रथम उप-प्रधान की हैसियत से मैंने केटरिंग को डेट्रायट लाना चाहा। मैं जानता था कि ऊँचे वेतन का जादू उस पर न चल सकेगा, केवल काम ही उसकी प्रतिभा के अनुकूल होना चाहिए। मैंने उससे कहा, "जनरल मोटर्स की इन्जीनियरिंग से जितनी मशीन-सम्बन्धी या वैज्ञानिक समस्याएँ होगी, उनके हल करने का दायित्व तुम्हे सँभालना है।" इस पद का दायित्व सँभालने के लिए वह राजी हो गया।

आधुनिक व्यवसाय के सहकारी सगठन द्वारा मानव ने विपुल सृजनात्मक शक्ति को जन्म दिया है। कोई व्यावसायिक सगठन त्रुटि-मुक्त नही—यो तो कोई भी मानव-कृति त्रुटि-मुक्त नही—परन्तु कम्पनी-सगठन और आधुनिक व्यवसाय के निन्दक पहले कोई ऐसा सगठन बतावें जिसने अमरीकी व्यवसाय की अपेक्षा अधिक मानव-सेवा की हो। सयुक्त राज्य अमरीका मे धन की व्यापकता थोडे से प्रमुख व्यक्तियों के कारण नहीं है, प्रमुख श्रेय उस सगठन को, उस कार्य-प्रणाली को है जिसके माध्यम से व्यावसायिक सगठन मे विविध प्रखर बुद्धियों को एक-दूसरे से सहयोग का मौका मिलता है।

पहले महासमर के पश्चात् विलियम सी० ड्यूरट ने अत्यन्त लम्बी-चौडी योजनाएँ बनाईं और इस नीति मे शीघ्र ही उनसे मेरा मतभेद

हो गया। मुझे सन्देह हुआ कि ड्यूरट की नीति पर चलने से कच्ची बुनियादो पर बडे भवन तेजी से बनेंगे, तो पतन निश्चित है। मतभेद के कारण मैंने जनरल मोटर्स से इस्तीफा दे दिया।

अब मैं अवकाश ले सकता था। मेरी अवस्था ४५ वर्ष की थी और मैं लखपती हो गया था। मेरे सामने कोई योजनाएँ न थी। दौलत का मजा ही लेना था—भविष्य कितना आकर्षक था।

वर्षो तक परिश्रम के कारण प्रात काल ६ बजे उठने की आदत बन गई थी। अधिकाश समय घर मे मँडराते ही बीतता था। एक दिन डेला ने कहा, "चाहती हूँ किसी काम मे लगो।"

मैं जोर से हँसकर बोला, "शायद लग जाऊँ।"

• • •

सन् १९२० की बात है। मुझे पता लगा कि विलीज-ओवरलैंड कम्पनी का काम बिगड़ रहा है। एक समिति ने मुझे उसका काम सँभालने को कहा। परन्तु मैं विलीज-ओवरलैंड की कीचड में फँसना नहीं चाहता था। यदि कम्पनी का दिवाला निकल जायेगा तो मेरी कितनी बदनामी होगी। परन्तु समिति के सामने मैंने यह शर्त रखी कि मैं १० लाख डालर प्रतिवर्ष पर कम्पनी का काम दो वर्ष तक हाथ मे लू और प्रबन्ध पर मेरा पूरा अधिकार रहे। जिन महाजनों ने कम्पनी को ५ करोड डालर उधार दिये थे, उन्होने विलीज को मेरी शर्त मानने का परामर्श दिया। फलत मैं न्यूयार्क पहुँचा।

विलीज कम्पनी ने एक हवाई जहाज के कारखाने, एक फसल काटने की मशीनों के कारखाने और इनसे सम्बन्धित अन्य कई धन्धे अपने ऊपर लाद रखे थे। लाभ कही भी न था। परन्तु उसकी मोटर-कारो की अपेक्षा उसके हवाई जहाज और ट्रैक्टर अधिक चल रहे थे। कम्पनी की रक्षा के लिए उससे अच्छी कारें निकलनी जरूरी थी।

मैंने मोटर की कारीगरी के तीन जादूगरों को इकट्ठा करने का

निश्चय किया—फ्रेड एम० जेडर, ओवेन स्केल्टन और कार्ल ब्रियर। तीनो मोटरें बनाने की जानकारी में एक-दूसरे के पूरक थे। मैंने एक नये मेल की मोटर के निर्माण का निश्चय किया और इन तीनो युवको को अपनी कल्पना के अनुसार डिजाइन बनाने का काम सुपुर्द किया।

इन्ही दिनो मेरे महाजन मित्रो ने एक अन्य मुसीबत से उन्हे बचाने को मुझसे कहा। इस बार मैक्सवेल कम्पनी मुसीबत मे थी। उन्होने विलीज को इस बात के लिए राजी किया कि विलीज-ओवरलैंड का उद्धार करते हुए मैं मैक्सवेल का भी पुनस्सगठन करूँ। यो मैं मैक्सवेल की पुनस्सगठन तथा प्रबन्ध समिति का प्रधान हुआ।

अगले वर्ष की बहुत-सी रातें मैंने न्यूयार्क और डिट्रायट के मध्य रेल-यात्रा मे बिताईं। मैक्सवेल मे उनकी २ करोड ६० लाख डालर की रकम बचाने के लिए मैंने महाजनों को उसमे १ करोड ५० लाख और लगाने के लिए राजी किया। फिर मैंने मैक्सवेल कार का एक नया डिजाइन बनवाकर उसे ५ डालर के मुनाफे मे ६६५ डालर पर बेचना प्रारम्भ किया। कार की सन्तोषजनक बिक्री हुई और कम्पनी की हालत बहुत-कुछ सुधर गई।

सन् १६२२ मे विलीज-ओवरलैंड के साथ मेरा कट्रैक्ट समाप्त हुआ। महाजनो ने कम्पनी बन्द करके लेना-देना निपटाने के लिए उसे न्यायालय के सुपुर्द कर दिया था।

मैक्सवेल मे अब हमने एक नई कार के निर्माण पर अपना ध्यान केन्द्रित किया। एक पुरानी कार के भद्दे से हुड के भीतर हमने भारी दबाव की शक्ति से सचालित इजन छिपा दिया। जब दो बडी और बढिया कारो के बीच और उनके बराबर हमने इस भद्दी कार को परीक्षा के लिए खडा किया तो एक तमाशा बन गया। सीटी बजते ही हमारी कार चौराहे पर खडे सिपाही को पार कर गई जबकि खूबसूरत और बडी कारें अपना दूसरा गियर ही बदल रही थी।

यह तय किया गया कि यदि यह तैयार होकर आशानुसार काम

करे तो इस नवजात मशीन का नाम 'क्राइसलर' रखा जाये। इसके पश्चात ही खबर आई कि जिन दो बैंको ने काम चालू करने के लिए हमारी कम्पनी को ५५,२०,००० डालर उधार देने का वचन दिया था, उन्होंने अपना निर्णय रद्द कर दिया है।

इस बुरी खबर के बाद दूसरी खबर यह भी आई कि न्यूयार्क मे जो मोटर-प्रदर्शनी होनेवाली थी, वह उन मॉडलो के प्रदर्शन के लिए जगह न दे सकेगी, जो बनकर बिकने न लगी हो। इस प्रकार हमारी क्राइ-सलर कारें बहिष्कृत हुईं। हमने आशा लगाई थी कि इनकी नई बना-वट और बढी शक्ति से हम दर्शको को प्रभावित कर सकेंगे, और बढ़ती बिक्री के आधार पर बको से अपने व्यवहार का उद्धार भी कर सकेंगे। हमारी पूँजी मे बहुत टोटा आ गया था, और बिना अतिरिक्त पूँजी के क्राइसलर कारो की निकासी बढाना असम्भव प्रतीत होता था। काम शुरू होने के पहले ही विनाश का भूत हमारे सामने आ खडा हुआ था, और हम सबकी बुरी हालत थी।

अकस्मात् मैंने जो को पुकारा। यह था जे० ई० फील्ड्स जो आगे चलकर क्राइसलर कारपोरेशन का उप-प्रधान हुआ। मैंने कहा, "जो, जाओ और कमोडोर होटल का हॉल किराये पर ले लो। हमारी प्रदर्शनी अवश्य होगी।" मोटर-प्रदर्शनी न्यूयार्क के ग्रैंड सेंट्रल पलस मे होने को थी। परन्तु हम जानते थे कि व्यावसायिक लोग निकटस्थ होटल मे इकट्ठा होते रहते हैं, इस वर्ष कमोडोर होटल की बारी थी।

यद्यपि प्रदर्शनी मे हम नही थे। पर उसका आकर्षण हमने चुरा लिया। प्रातःकाल से रात तक क्राइसलर कारो के चारो तरफ भीड़ जमा रहती। जो लोग मोटरो के पारखी थे, वे भारी दबाव के इजन का महत्त्व समझते थे। परन्तु हमारी कार के निर्माण के पहले वे इसे दौड़ के प्रतियोगियो का शौक मात्र समझते थे। यहाँ वह जन-साधा-रण के उपयोग की वस्तु बनकर अन्य कारों से होड करने के लिए प्रस्तुत थी।

महाजन हमारे पास पहुँचे। कुछ सप्ताहो तक बेतरह भाव-ताव के बाद चेज सिक्योरिटीज कारपोरेशन ने हमे ५०,००,००० डालर उधार दिये। मैक्सवेल कम्पनी—यद्यपि मन मे मैंने उसका नामकरण क्राइसलर कारपोरेशन कर लिया था—अब खतरे के बाहर थी। हमारे पास पूँजी थी, बिकनेवाली कार थी और जागरूक सगठन था।

सन् १९२५ की मोटर-प्रदर्शनी मे क्राइसलर के लिए जगह का कोई प्रश्न न था। एक वर्ष ही मे हमने ३२,००० बेच ली थी और मैक्सवेल की बिक्री मे भी हम लाभ उठा चुके थे। वर्ष के प्रारम्भ मे हम पर ५०,००,००० डालर का कर्ज था। उसके अन्त तक भारमुक्त होकर हमे ४१,१५,००० डालर लाभ के मिले।

सन् १९२५ मे मैक्सवेल कम्पनी का नाम क्राइसलर कारपोरेशन कर दिया गया। सन् १९२७ तक मोटरें बनाने मे हमारा पाँचवाँ स्थान हुआ और हम १,९२,००० मोटरें बेच सके।

• • •

सन् १९२९ मे मैंने निर्णय किया कि मेरे पुत्रो पर उनके ही पसन्द के व्यवसायों के सचालन का दायित्व होना चाहिए। उनका पालन-पोषण न्यूयार्क मे हुआ था, और कदाचित् वे वही रहना चाहते थे। अतएव न्यूयार्क मे ही एक भवन के निर्माण का विचार जन्मा। योरप की सैर मे पेरिस के एक आश्चर्य की याद आई। मैंने भवन-निर्माताओ को आदेश दिया, "हमारा भवन आइफल-टावर से भी ऊँचा बने।" इस प्रकार ७७ खण्ड का क्राइसलर-भवन बनना प्रारम्भ हुआ। भवन बन जाने पर मेरे पुत्र वाल्टर ने उसका प्रबन्ध अपने हाथ मे लिया।

मैंने कहा, "बेहतर है कि भवन की जानकारी प्राप्त करो। यह तुम्हारा ही है, मेरा नही।"

"पिताजी, कहाँ से जानकारी प्रारम्भ करूँ?"

"तहखाने से प्रारम्भ करो, फर्शो पर झाड़ू लगाओ, दफ्तरों को

साफ करो, जो काम दूसरे करते हैं, उन्हें करना स्वय सीखो।" उसने ऐसा ही किया और धीरे-धीरे सब सेवाओं का व्यावहारिक अनुभव प्राप्त करके भवन का प्रबन्ध करने योग्य हो गया।

• • •

इस शती के चौथे दशक के प्रारम्भिक वर्षो मे हमे मन्दी का सामना करना पडा। तगी के कई महीनो मे हमे अपने कारखाने का काम ६० प्रतिशत काटना पडा, क्योकि कारो की मांग घट गई थी। हमें खर्च मे बहुत-सी कटौतियां करनी पडी, परन्तु स्थिति कितनी भी निराशाजनक रही, अन्वेषण-विभाग पर हमने अपना व्यय नही घटने दिया। हमारे अनुसंधानालयो ने इन अधकारमय दिनो मे निर्माण-सम्बन्धी जो-जो आविष्कार किये, उनके चालू होने पर १९३६ और १९३७ में कारो की मांग खूब बढी। इस बिक्री के कारण जो लाभ हुआ वह हमारी कम्पनी को ऋण-मुक्त करने मे सहायक सिद्ध हुआ।

परन्तु इस व्यवसाय मे पूंजी और मशीन से बढकर महत्त्व श्रमिको का है। सन् १९३७ मे क्राइसलर की वेतन-सूची मे ७६,००० श्रमिक दर्ज थे। जो मुझे जानते हैं, वे कभी इस बात को मानने को तैयार न होगे कि मैंने कभी भी इनके आभार को भुलाया हो।

व्यवसाय के मेरे नाम से सम्बन्धित होने पर मैं अपने को गौरवान्वित अवश्य मानता हूं, परन्तु मैं इतना मूर्ख नही जो मैं यह समझूं कि यह संस्था मेरे ही कारण सफल है। यदि हमारी इजीनियरिंग ऊंचे स्तर की है, तो इसका श्रेय जेडर और उसके सहयोगियो को है। हमारी कारो का निर्यात बढ़ा है, तो इसका श्रेय हमारे उप-प्रधान डब्लू० लेडयार्ड मिचेल को है। कोई भी बडी व्यावसायिक सस्था हो, उसका सचालन और विकास एक ही उद्योग मे निष्ठापूर्वक लगे व्यक्तियों की मनसा-वाचा-कर्मणा लगन का प्रतिफल होता है।

यह मुझे सर्वोत्तम ढग से तब प्रत्यक्ष हुआ, जब मैं डेट्रायट की बैठक

मे अपने से छोटे लगभग एक दर्जन सहयोगियो के मध्य सम्मिलित था। सचालन सस्था के प्रधान के नाते मैं बैठक का पितामह था। गर्द और गन्दगी से रक्षा के लिए एप्रन बांधे मेरा श्रमिक जीवन प्रारम्भ हुआ था। के० टी० केलर का प्रारम्भिक जीवन भी, जो सन् १९३७ मे क्राइसलर कारपोरेशन के प्रधान थे, ऐसा ही था। वही कैफियत ज़ेडर, स्केल्टर और ब्रियर की थी। मिचेल तथा उनके बहुत से अन्य सहयोगी इसी प्रकार निम्न श्रेणी के श्रमिक जीवन से आगे बढ़कर व्यवसाय के सर्वोच्च शिखर तक पहुँचे हैं। सीधे-सादे शब्दो मे हम सब अमरीकी श्रमिक ही हैं।

दीर्घायु का संकल्प

(डॉ० आर्नल्ड ए० हुशनेकर की पुस्तक

"दि विल टु लिव" का सार)

इस पुस्तक में, जो अपने ढग की निराली पुस्तक है, यह बात बड़े स्पष्ट रूप से समझाई गई है कि हमारे विचारों तथा हमारी भावनाओं का हमारे स्वास्थ्य पर और हमारे जीवन की अवधि पर कितना गहरा असर पड़ सकता है।

इस पुस्तक के लेखक डॉ० हुशनेकर, बर्लिन के फ्रीडरिख विल्हेल्म विश्वविद्यालय के स्नातक हैं; उन्होंने इस पुस्तक में अपने कथन की पुष्टि में अपने २५ वर्ष के डॉक्टरी के अनुभव से अत्यन्त प्रभावशाली दृष्टान्त दिये हैं।

एक प्रख्यात शल्य-चिकित्सक डॉ० फ्रांसिस पी० कारिगन ने इस पुस्तक पर अपनी सम्मति प्रकट करते हुए कहा है, "यह एक ऐसी पुस्तक है जिसे हर समझदार आदमी पढ़कर अपने स्वास्थ्य तथा कल्याण के लिए लाभ उठा सकता है। इस पुस्तक में ऐसी आधारभूत समस्याओं को हल किया गया है जिनका असर हर आदमी पर पड़ता है।"

दीर्घायु का संकल्प

एक वयोवृद्ध महिला ने, जो अपना जीवन शिक्षा के क्षेत्र मे एक नया मार्ग प्रशस्त करने मे व्यतीत कर चुकी थी, एक बार अपनी एक भयानक बीमारी का हाल सुनाया जो उन्हें अपनी अधेड अवस्था मे हो गई थी। वह जीवन और मृत्यु के बीच हचकोले खा रही थी, अर्ध-चेतना की अवस्था में उनके हाथ-पांव ढीले पड गये थे, इतने मे उन्होने अस्पताल के कमरे के बाहर अपने दो सहयोगियो को आपस मे बात करते सुना।

एक ने दूसरे से बहुत दृढतापूर्वक कहा, "यदि हम रोगिणी के पास तक पहुँच सकें, यदि हम उसे विश्वास दिला सकें कि ससार मे उसकी बडी जरूरत है, तो इसका बचना भी सम्भव होगा।"

शब्द उसके कान तक पहुँचे। उस समय जीवन की विनाशक और रक्षक शक्तियो का सन्तुलित सघर्ष चल रहा था। इन शब्दो ने जीवन के पक्ष मे रोगिणी के दृढ निश्चय को जाग्रत किया। जिस समय निरुत्साह और निराशा के कारण उसकी प्राण-शक्ति क्षीण हो रही थी, उसी समय उसके सहयोगी की हार्दिक सदिच्छा से उसे आश्वासन मिला और वह विनाशक शक्तियो से सघर्ष करने के लिए स्फूर्त हुई।

यदि जीवित रहने की हमारी इच्छा हार्दिक है, यदि हम किसी विशेष उद्देश्य से जीवित रहना चाहते हैं, तो जीवित रहने का संकल्प हमे रोग से सघर्ष करने मे आवश्यक शक्ति प्रदान करता है। हममे

से प्रत्येक के अन्तस्तल मे दो सशक्त स्वाभाविक प्रेरणाएँ काम करती रहती हैं—एक तो जीवित रहने की प्रवल भावना और दूसरी आत्म-हत्या की इच्छा। जीवित रहने की सशक्त प्रेरणा को हमारी ये इच्छाएँ सबल प्रदान करती हैं जिनका संकेत निर्माण, खोज और कार्यपूर्ति की ओर रहता है। इस सिद्धान्त को चिकित्सक सादर स्वीकार करते हैं जब रोग के अपनी चरम-सीमा तक पहुँचने पर वे कहते हैं, "हम जो कुछ कर सकते थे वह हम कर चुके, वाकी रोगी के हाथ मे है।"

आत्महत्या की इच्छा समझ मे कठिनाई से आती है, परन्तु इसके अस्तित्व से इनकार नही किया जा सकता। जब हम किसी के विषय मे कहते हैं कि वह अपना ही सबसे बुरा वैरी है, तो यह वात हम सब के लिए विशेष स्थिति मे थोडी-बहुत सत्य हो जाती है।

यदि कोई व्यक्ति अपने हृदय पर गोली चलाने के लिए प्रस्तुत हो, तो सरलता से समझ में आ जाता है कि वह अपनी आत्महत्या करना चाहता है, दूसरा व्यक्ति रोग द्वारा अपने को धीरे-धीरे मारता है। यह वात कठिनाई से समझ मे आती है। परन्तु होता आम तौर से यही है।

एक वूढा आदमी आँतो के घाव का रोग लेकर मेरे पास चिकित्सा के लिए आया। उसका कहना था कि उसका रोग तीस वर्ष पुराना है। वह रोगमुक्त हो जाये, जीवन में उसकी यही एक आकाक्षा थी।

मैंने पूछा, "मान लो, तुम चगे होकर कल अपनी नीद से उठो—फिर क्या करोगे?"

उसने उत्तर दिया, "मैं जीवन का सुख भोगूँगा।"

मैंने फिर हठपूर्वक पूछा, "कैसे? करोगे क्या?"

घवराकर उसने उत्तर दिया, "कैसे? मैं अन्य लोगो की भाँति सुख मनाऊँगा।"

इससे अधिक वह कुछ वता नही सका। उसके सामने कोई योजना न थी, कोई उद्देश्य न था, किसी महत्त्वपूर्ण काम की पूर्ति के लिए उसे कोई प्रेरणा प्राप्त न थी। तीस वर्ष तक उसका जीवन रोग ही मे वीता

था। व्यवसाय मे उसके सहयोगी उसकी सेवा करते रहे, परिवार के सदस्य उसे अपनी सेवा से सब प्रकार का सुख पहुँचाने का प्रयत्न करते रहे, क्योंकि उनकी समझ मे वह रोगी था। जब वह अपने दफ्तर से घर लौटता तो गरम शोरवे का प्याला उसकी प्रतीक्षा मे उसे तयार मिलता। यदि उसकी आँतो के घाव अच्छे हो जाते, तो गरम शोरवे का प्याला उसके सामने आना वन्द हो जाता, जो उसके प्रति परिवार के प्रेम का प्रतीक था। नही, आँतो मे घावो का बना रहना उसके लिए जरूरी था। प्रेम की प्यास, वे सेवाएँ जो उसके प्रति प्रेम की प्रतीक थी, उस दृढ निश्चय की अपेक्षा उसके लिए अधिक आवश्यक थी जो उसे रोग-मुक्ति की ओर प्रेरित करता, ताकि वह यथाशक्ति वयस्क जीवन मे समाज के प्रति अपने दायित्वो का निर्वाह कर सके। आँतो के घाव के अधिकाश पुराने रोगियो की भाँति पहले वह भावनाओ की अपरिपक्वता का रोगी हुआ, फिर उसे आँतो का रोग लगा। उसने विनाशक स्वभाव के प्रहार की दिशा स्वय अपनी ही ओर मोड ली थी।

वहुत-से रोगी चिकित्सको के दवाखानो की खाक छानकर भी चगे नही होते, उनकी कितनी भी चिकित्सा हो। उनके रोग के लक्षण वहुत-से होते हैं और विचित्र भी। कुछ कमजोरी का अनुभव करते हैं, कुछ को नीद नही आती, कुछ को टाँगो, कन्धो और पीठ मे दर्द हुआ करता है। कुछ घवराये हुए और निराश रहते हैं। परन्तु इन सवके रोग-विवरण मे एक वात की व्यापकता रहती है—ये सव अवर्णनीय और निरतर थकावट से परेशान रहते हैं।

वे वहुधा ईर्ष्या के साथ किसी ऐसे व्यक्ति का जिक्र करते हैं जिसे अथक कार्यशक्ति प्राप्त है, जो खूव खाता है और हजम करता है, जो तुरन्त सो जाता है और ताजा उठता है। फिर अपने वारे मे दु खपूर्वक कहते हैं, "मेरी हालत यह है कि सोते समय जितना थका होता हूँ उससे अधिक थकान मुझे जागने पर जान पडती है।"

ये थके स्त्री-पुरुष यह नही समझ पाते कि क्रियाशील पुरुष अधिक

शक्ति का निर्माण नही करता, वह केवल प्राप्त शक्ति का सदुपयोग करना जानता है। इनकी शक्ति बालू मे बहती नदी के समान बिखरती चलती है। परन्तु शक्ति लुप्त नही होती। भौतिक विज्ञान का नियम है कि शक्ति नष्ट नही होती। तो फिर वह कहाँ जाती है?

चिकित्सा-विज्ञान के उपलब्ध साधनों से चिकित्सक रोग की परीक्षा करते रहते हैं। एक चिकित्सक कहता है कि पित्त का विकार है। दूसरे को नासूर के लक्षण दिखते हैं। तीसरे की दृष्टि मे शरीर किसी विशेष भोज्य का विरोधी है। परन्तु रोगी की एक रोग से मुक्ति हो पाती है तो किसी प्रकार सदैव वह दूसरा रोग अपने लिए तैयार कर लेता है।

इन लोगो मे बुराई की कौन बात है? ऐसा तो नही है कि इनकी शक्तियाँ किसी आन्तरिक सघर्ष मे क्षीण होती रहती हैं?

● ● ●

आन्तरिक सघर्ष से त्रस्त पुरुष गृहयुद्ध से पीडित देश के समान होता है। उसे अपने ही भीतर के विद्रोहियो से लडना पडता है। वह सहायता के लिए चिकित्सक के पास पहुँचता है तो आम तौर से चिकित्सक भी अपने को उतना ही असहाय पाता है जितना कि रोगी स्वय होता है। रोग से मुक्ति तभी सम्भव होती है जब रोगी और चिकित्सक एक-दूसरे के सहयोग से आन्तरिक सघर्ष के कारण और उसके परिणाम की खोज करने मे सफल हों।

एक दिन एक रोगिणी मेरे पास आई और अपनी कुर्सी के सिरे पर बैठकर चिंतित भाव से बोली, "मैं बहुत-से चिकित्सकों को दिखा चुकी हूँ। जान पडता है, मेरा कोई इलाज नही है।"

वह १४ वर्षों से बीमार थी। वह स्त्री-रोगो, हृदय और मस्तिष्क के विशेषज्ञो तथा शल्य-चिकित्सको के पास हो आई थी। प्रत्येक चिकित्सक ने उसके रोग का अलग-अलग निदान बताया था। कोई चिकित्सक उसे रोग के एक लक्षण से मुक्त करने मे सफल हुआ, तो

हराम हो गई और प्रतिरात उन्हे तहखानो की भीड मे इक्ट्ठा होना पडता था। अतएव यह सन्देह किया जाने लगा कि इस परेशानी में उनके मध्य किसी महामारी का प्रकट हो जाना सम्भव है। परन्तु विंस्टन चर्चिल का बयान है, "वास्तव मे इस कठिन शरद् के दौरान मे लन्दनवासियों का स्वास्थ्य औसत से अधिक अच्छा रहा। जब आत्मिक शक्ति जाग्रत होती है, तो कष्ट की सहनशक्ति भी असीम हो जाती है।"

यदि उत्साह से उन्हें प्रेरणा मिलती रहती है और जो कुछ वे करते हैं उसमे उन्हे आस्था रहती है, तो सभी जगह प्रतिदिन लोग अपने-अपने कामो मे शिथिलता का अनुभव किये बिना लगे रहते हैं।

किसी आतरिक समस्या के हल न होने से भावना पर बहुत दिनो तक दबाव पडता रहता है। कभी-कभी विनाश के लक्षण अकस्मात् प्रकट हो जाते हैं। परन्तु ज्यो ही रोगी को भावनाओ के दबाव से मुक्ति मिलती है और रोगी को जीवन का प्रोत्साहन मिलता है त्यो ही चमत्कारक स्वास्थ्य-लाभ दिखाई देने लगता है। इस बात पर विश्वास करना कठिन है कि ऐसा लाभ ओषधि की ही बदौलत होता है।

मेरे दवाखाने के सामने सडक के पार एक पुरुष अपने कमरे मे पडा मर रहा था। मैं उसे देखने के लिए बुलाया गया। उसका अपना पुराना चिकित्सक कही बाहर गया हुआ था। रोगी की अवस्था ६०-७० के बीच थी, वह ओषधि का विशेषज्ञ था और नगर के चिकित्सको मे उसे ऊँचा स्थान प्राप्त था।

उसका भाई मुझे द्वार पर मिला और बडी उग्रता से उसने याचना की, "डॉक्टर साहब, कल प्रात काल तक आप अवश्य रोगी को जीवित रखिये जब तक विवाह की रस्म पूरी न हो जाये। जब तक यह अपने पुत्र का कानूनी अस्तित्व पक्का न कर लें, तब तक इन्हे मरना न चाहिए।"

तब मुझे पता लगा कि अपने चरित्र के लिए प्रसिद्ध इन महाशय का अपने घर की नौकरानी से २० वर्ष से अधिक का सम्बन्ध था।

परन्तु सामाजिक आचरण का उल्लघन स्वीकार करके इन्हें इस स्त्री से विवाह करने का साहस नही हुआ था। इन्होने अपने पुत्र के पालन-पोषण की यथेष्ट व्यवस्था अवश्य कर दी थी, और वह उस समय विश्व-विद्यालय में पढ़ रहा था ताकि वह अपने पिता का ओषधि-सम्बन्धी धन्धा चला सके। परन्तु कानून की दृष्टि मे अपने पिता का पुत्र न घोषित होने पर उसे अपने पिता का नाम और धन्धा विरासत मे नही मिल सकता था।

रोगी के हृदय का रोग अपनी चरम सीमा पर था। मैं रात भर उसके रोग से लड़ता रहा। मुझे कुछ सतोष तभी हुआ जब फेफड़ो मे द्रव पदार्थ की आवाज़ बद हुई। जब पादरी विवाह कराने आया तो रोगी को इतना होश आ चुका था कि वह विवाह की रस्म मे भाग ले सकता।

अब चमत्कार की बात सामने आई। वह ओषधि-विक्रेता दो वर्ष और जीवित रहा और उसने अपने लडके को विश्वविद्यालय का स्नातक होते भी देख लिया। बूढे का स्वास्थ्य बहुत अच्छा तो नही हो सका, परन्तु वह इतना ठीक अवश्य रहा कि कुछ घण्टे अपना धन्धा देख सके और अपने लड़के को ग्राहको से परिचित करा सके। इस प्रकार सतोष और शान्ति के वातावरण मे उसका देहान्त हुआ।

मौत से इतनी लडाइयाँ लड़कर, जिनमे कभी हार हुई कभी जीत, रोगी बूढा पहले मरने के लिए राजी हुआ और फिर जीवित रहने का उसने निश्चय किया, कारण मेरी समझ मे आता है। निस्सन्देह वर्षों तक कडे सामाजिक नियम के उल्लघन में अपने को असमर्थ पाकर वह आतरिक उलझन मे रहा। अपने लडके को स्वीकार करने के सतोष से वचित होने पर उसे अपनी विफलता का बहुत ही कटु अनुभव हुआ।

ज्यो ही उसके भाई ने आवश्यक निर्णय के लिए उसे विवश किया कि उसके सामने जीवन का एक नया आदेश और सन्देश आ गया। पुत्र की सर्वोच्च शिक्षा पूरी होने और धन्धे में उसके भली भाँति लग जाने

हराम हो गई और प्रतिरात उन्हे तहखानो की भीड मे इकट्ठा होना पडता था। अतएव यह सन्देह किया जाने लगा कि इस परेशानी मे उनके मध्य किसी महामारी का प्रकट हो जाना सम्भव है। परन्तु विंस्टन चर्चिल का बयान है, "वास्तव मे इस कठिन शरद् के दौरान मे लन्दनवासियों का स्वास्थ्य औसत से अधिक अच्छा रहा। जब आत्मिक शक्ति जाग्रत होती है, तो कष्ट की सहनशक्ति भी असीम हो जाती है।"

यदि उत्साह से उन्हें प्रेरणा मिलती रहती है और जो कुछ वे करते हैं उसमे उन्हें आस्था रहती है, तो सभी जगह प्रतिदिन लोग अपने-अपने कामो मे शिथिलता का अनुभव किये बिना लगे रहते हैं।

किसी आतरिक समस्या के हल न होने से भावना पर बहुत दिनो तक दबाव पडता रहता है। कभी-कभी विनाश के लक्षण अकस्मात् प्रकट हो जाते हैं। परन्तु ज्यो ही रोगी को भावनाओ के दबाव से मुक्ति मिलती है और रोगी को जीवन का प्रोत्साहन मिलता है त्यो ही चमत्कारक स्वास्थ्य-लाभ दिखाई देने लगता है। इस बात पर विश्वास करना कठिन है कि ऐसा लाभ ओषधि की ही बदौलत होता है।

मेरे दवाखाने के सामने सडक के पार एक पुरुष अपने कमरे मे पडा मर रहा था। मैं उसे देखने के लिए बुलाया गया। उसका अपना पुराना चिकित्सक कही बाहर गया हुआ था। रोगी की अवस्था ६०-७० के बीच थी, वह ओषधि का विशेषज्ञ था और नगर के चिकित्सको मे उसे ऊँचा स्थान प्राप्त था।

उसका भाई मुझे द्वार पर मिला और बडी उग्रता से उसने याचना की, "डॉक्टर साहब, कल प्रात काल तक आप अवश्य रोगी को जीवित रखिये जब तक विवाह की रस्म पूरी न हो जाये। जब तक यह अपने पुत्र का कानूनी अस्तित्व पक्का न कर लें, तब तक इन्हें मरना न चाहिए।"

तब मुझे पता लगा कि अपने चरित्र के लिए प्रसिद्ध इन महाशय का अपने घर की नौकरानी से २० वर्ष से अधिक का सम्बन्ध था।

परन्तु सामाजिक आचरण का उल्लघन स्वीकार करके इन्हे इस स्त्री से विवाह करने का साहस नही हुआ था। इन्होने अपने पुत्र के पालन-पोषण की यथेष्ट व्यवस्था अवश्य कर दी थी, और वह उस समय विश्वविद्यालय में पढ़ रहा था ताकि वह अपने पिता का ओषधि-सम्बन्धी धन्धा चला सके। परन्तु कानून की दृष्टि में अपने पिता का पुत्र न घोषित होने पर उसे अपने पिता का नाम और धन्धा विरासत मे नही मिल सकता था।

रोगी के हृदय का रोग अपनी चरम सीमा पर था। मैं रात भर उसके रोग से लडता रहा। मुझे कुछ सतोष तभी हुआ जब फेफडों मे द्रव पदार्थ की आवाज बंद हुई। जब पादरी विवाह कराने आया तो रोगी को इतना होश आ चुका था कि वह विवाह की रस्म मे भाग ले सकता।

अब चमत्कार की बात सामने आई। वह ओषधि-विक्रेता दो वर्ष और जीवित रहा और उसने अपने लडके को विश्वविद्यालय का स्नातक होते भी देख लिया। बूढे का स्वास्थ्य बहुत अच्छा तो नही हो सका, परन्तु वह इतना ठीक अवश्य रहा कि कुछ घण्टे अपना धन्धा देख सके और अपने लडके को ग्राहको से परिचित करा सके। इस प्रकार सतोष और शान्ति के वातावरण मे उसका देहान्त हुआ।

मौत से इतनी लडाइयाँ लडकर, जिनमे कभी हार हुई कभी जीत, रोगी बूढा पहले मरने के लिए राजी हुआ और फिर जीवित रहने का उसने निश्चय किया, कारण मेरी समझ मे आता है। निस्सन्देह वर्षों तक कडे सामाजिक नियम के उल्लघन मे अपने को असमर्थ पाकर वह आतरिक उलझन मे रहा। अपने लडके को स्वीकार करने के सतोष से वचित होने पर उसे अपनी विफलता का बहुत ही कटु अनुभव हुआ।

ज्यों ही उसके भाई ने आवश्यक निर्णय के लिए उसे विवश किया कि उसके सामने जीवन का एक नया आदेश और सन्देश आ गया। पुत्र की सर्वोच्च शिक्षा पूरी होने और धन्धे में उसके भली भांति लग जाने

मे उसका सहयोग आवश्यक हो गया। औषधि ने उसके गिरते शरीर मे प्राण की रक्षा अवश्य की, परन्तु औषधि ही से उसे जीवन-दान न मिलता। यह उसे जीवित रहने के दृढ निश्चय से ही मिला जो उसे उस रस्म से प्राप्त हुआ जिससे विवाह सम्पन्न हुआ और उसका नाम तथा धन्धा चलाने के लिए उसे एक पुत्र मिला।

o o o

हम सब पर कभी-कभी अचानक बीमारी या मौत का भय सवार होता है। क्या इसके अर्थ हैं कि वास्तव मे हम मरने जा रहे हैं ? बिलकुल नही। इस भय का अर्थ केवल यह होता है कि हमारे अन्तस्तल मे उस समय अपने आत्म-घातक स्वभाव से वार्त्तालाप चल रहा है। क्षणिक इच्छावश कदाचित् हम अपने बोझो और दायित्वो से मुक्त होने के लिए प्रेरित भी हो जायें, क्योकि कोलम्बस के मल्लाहो की भाँति हम कभी-कभी थककर पीछे लौट चलने की इच्छा करने लगते हैं। हम सबके सामने थकान के क्षण आते हैं जब हमारी आशाएँ क्षीण हो जाती हैं और हमारा उत्साह भग हो जाता है।

कठिन रोग के दौरान मे मौत के निकट पहुँचने पर मनुष्य की भावना का क्या रूप हो सकता है इसका विवरण एक बार मुझे हवाई-जहाज चलानेवाली एक सैलानी युवती से मिला। महासागर के ऊपर रात के समय आकाश मे अकेले उडते-उडते वह एक अनोखी तन्द्रा मे मग्न हो गई। उसे ऐसा जान पडा मानो उसका एक मित्र और सहयोगी उडाका, जो महासमर मे गोली का शिकार हो गया था, उसके हाथ पकडे उसकी बगल मे खडा कह रहा है, "मेरे साथ चलो।" उसने कहा या लडकी को ऐसा ही लगा, मानो वह सुन्दर अनन्त आकाश मे चिन्ता और भय से मुक्त होकर शान्ति और सुख के वातावरण मे प्रवेश कर रही है।

उसने कहा, "मुझे अब जाना है, साथ चलती हो न ?" वह जमी

बैठी रही; उसका वायुयान समुद्र पर गरजता पृथ्वी से दूर और सही मार्ग से अलग जा रहा था।

अकस्मात् उसे होश आया। उसने मुझसे कहा, "यदि मैं तुरन्त ही वायुयान को मोड न देती तो दुर्घटना हो जाती, हमारा वायुयान महासागर मे डूब जाता। पेट्रोल समाप्त होने से मरो या ज्वर से—मरने मे कोई फर्क नही आता।"

तुलना उपयुक्त है। इस शान्त और सुचित्त युवती को अपने वायुयान मे बैठे निराशा के क्षण मे जो अनुभव हुआ वह प्राय वैसा ही है जो रोगी को कठिन रोग के मध्य भीषण ज्वर की बेहोशी मे होता है। जब हम आकाश और पृथ्वी के मध्य मिथ्या जगत् मे मँडराते हैं और जब जीवन के सम्बन्ध, अपने प्रियजनो के चेहरे और स्वय हमारे अपने अग ज्वर की धुन्ध में विस्मृत हो जाते हैं, तो मन मे मृत्यु की नग्न इच्छा आती है।

इस अनुभव से वापस लौटने पर रोगी अकसर, डरकर नही, आश्चर्यपूर्वक कहता है, "मैं तो कदाचित् मर ही गया था।" और अकसर ऐसी ही अर्द्ध-जागृति के क्षण मे वह उस समय की इच्छा दुहरा देता है, "मैं तो मरना चाहता था।"

एक दिन प्रकट रूप मे बिलकुल स्वस्थ एक पुरुष मेरे दवाखाने मे आया और बोला, "इस समय मैं अपने को जीवित जैसा नही मरा जैसा मान रहा हूँ।" कुछ महीने बाद वह मर गया और अकसर हम देखते हैं कि कोई व्यक्ति अचानक, किसी चेतावनी बिना, हृदय-रोग का शिकार हो जाता है। परन्तु पता लगता है कि इसके पहले ही अपने वकील से उसने वसीयतनामे के सम्बन्ध मे सलाह ले ली थी या अपना नया जीवन-बीमा करा लिया था।

परन्तु हमारे अन्तस्तल मे घातक स्वभाव से जो अज्ञात संघर्ष चला करता है उसका नकारात्मक परिणाम होना आवश्यक नही है। हम नया प्रोत्साहन लेकर आगे बढते जा सकते हैं। उन लोगो मे जो

स्वभावत जीवन के लिए निश्चय करते हैं या निराश होकर हार मान लेते हैं, भेद केवल उद्देश्य और भावनात्मक स्वास्थ्य का ही जान पड़ता है।

कभी-कभी हमारे सन्देह भी रोग के विरुद्ध सघर्ष करने की आन्तरिक शक्ति क्षीण कर सकते हैं। कई वर्ष हुए एक युवक ने मेरे पास आकर अपनी बाल्यकालीन पक्षाघात-विषयक परीक्षा मुझसे करानी चाही। इस रोग के उसमे कोई लक्षण न थे और मैं यह बताने के लिए विवश हुआ कि उस रोग की सम्भावना की परीक्षा करने का कोई ज्ञात साधन नही है जिसका सन्देह उसे घेरे है। एक वर्ष पश्चात् वह दूसरे चिकित्सक के पास गया और उससे भी पक्षाघात-विषयक परीक्षा की माँग की। उसे फिर आश्वासन दिया गया कि उसे वह रोग नही है। तीसरे वर्ष उसे यह रोग भीषण रूप मे हो ही गया।

ऐसे अनोखे दुश्चिन्त्य रोग का कारण काल्पनिक ही हो सकता है। तो भी एक अधिकारी विशेषज्ञ का कहना है कि सन्देह से शरीर मे एक प्रकार की प्रतिक्रिया होती है जो सन्देह के विरुद्ध अत्यधिक बढ जाती है। अनुमान किया जाता है कि भयभीत तथा पश्चगामी व्यक्तित्व शरीर के भीतर अत्यधिक मात्रा में ए० सी० टी० एच० या उससे सम्बन्धित हारमोन तैयार करने लगता है। इस कारण आंत मे घाव हो जाने की सम्भावना बढ जाती है या बाल्यकालीन पक्षाघात जैसे सक्रामक रोगों की छूत भी लग सकती है।

कभी-कभी असहनीय स्थिति से बचने के लिए ही रोगी असहाय अवस्था की शरण ले लेता है। एक बार कमर झुकाये, काँपते हाथों को हिलाते एक अत्यन्त रोगी पुरुष मेरे पास चिकित्सा के लिए आया, तो मैंने सयोगवश पूछ लिया कि वह बहरा कब हुआ था। उसने मुझे अदाजे से वर्ष बताया। मैंने पूछा कि "क्या विवाह हो गया है?" उसने उत्तर दिया, "हाँ हो गया है।" मैंने पूछा, "क्या उसकी पत्नी चिल्ला-चिल्लाकर उसे कोसती थी?"

वह बोला, "क्या पूछते हैं ? उसका चिल्लाना असहनीय हो गया था।"

एक योरपीय चिकित्सक ने किसी संगीत-प्रेमी बहरी स्त्री पर एक प्रयोग किया। जब वह गाने लगी, तो चुपके-से वह स्वर के साथ पियानो बजाने लगा। एक पंक्ति से दूसरी पंक्ति पर जाते हुए चिकित्सक भिन्न स्वर पर पियानो बजाने लगा। उस बहरी गायिका ने परिवर्तन जानने का संकेत नहीं किया और पूर्ववत् गाती रही, परन्तु नये स्वर में।

बहुत-से ऐसे बहरे मिलते हैं जो उनसे कही गई बात सुन नहीं पाते जब तक वह चिल्लाकर उन्हें न सुनाई जाये, परन्तु यदि उनके विषय में कानाफूसी हो रही हो, तो उसे वह अवश्य पकड लेते हैं। ऐसे बहरेपन को ढोंग बताकर उसका उपहास करना सरल है, परन्तु बहरेपन की वास्तविकता से इनकार नहीं किया जा सकता। यह केवल इस बात की चेतावनी है कि उसका बहरापन उसके घातक स्वभाव के जोर का एक परिणाम है, उसके दबाव में आकर उसने अपने शरीर की एक इन्द्रिय तो गँवा ही दी है।

अवस्था के पहले ही बुढापे के लक्षण प्रत्यक्ष होने पर भी यही चेतावनी मिलती है। जब लडखडाते पग और झुकी कमर का आगमन समय के पहले ही हो जाता है तो हमारी समझ मे आ जाना चाहिए कि वह स्त्री या पुरुष संघर्ष से इतना शीघ्र थक गया है कि वह आत्म-घातक प्रवृत्ति का शिकार हो गया है। हम अवस्था के कारण ही बूढे नहीं होते, घटनाओं की प्रतिकूल भावनात्मक प्रतिक्रिया भी हमे शीघ्र बूढ़ा बना देती है। किसी पुरुष को घाटा हो जाता है और रात-ही-रात में उसके बाल सफेद हो जाते हैं। दूसरा पुरुष हानियाँ सहता रहता है, परन्तु कुछ समय तक संघर्ष करने पर उसे नई और आशाजनक दिशा दिखाई देती है तो वह फिर आगे बढता है। दुर्भाग्य से संघर्ष के परिणाम मे उसके मुख पर कुछ झुर्रियाँ आ जाती हैं, परन्तु वह घातक

प्रवृत्तियो से बिल्कुल दब नही जाता। उलटे, प्रयत्न करके वह सक्रिय उद्योग के नये मार्ग ढूँढ निकालता है।

प्रतिक्रिया के भेद पर अवस्था का प्रभाव होता नही दिखाई देता। एक स्त्री का पति मर जाता है तो वह अपने जीवन का अत मान बैठती है और अपने सकोच, चिडचिडे स्वर और क्रमिक मुरझाहट से साक्षी देती जान पडती है कि वह मृत्यु की प्रतीक्षा मे है। दूसरी स्त्री उससे बडी होकर भी विकास करने लगती है। वह नये पति की खोज मे लगती है, कोई धन्धा प्रारम्भ करती है या ऐसे व्यसनो मे लग जाती है जिनके लिए उसे पहले कोई फुरसत नही मिलती थी। रचनात्मक रूप मे वह जीवित रहने और जीवन के सुख भोगने का दृढ निश्चय प्रकट करती है।

इसके अतिरिक्त यह भी कहा जा सकता है कि रोग द्वारा शरीर अपने को जीवन की कठिनाइयो के, एक प्रकार से, अनुकूल बना लेता है। यह अनुकूलता बहुत मँहगी पडती है। परन्तु ऐसी परिस्थितियाँ आती ही हैं जब बीमार पडना आवश्यक होता है। इस कारण शरीर को सघर्ष से कुछ फुरसत मिलती है, और व्यक्ति को अपनी शक्तियो के पुनस्सगठन का, नये दृष्टिकोण बनाने का, अवसर मिलता है। ऐसी स्थितियो मे बीमारी पराजय की प्रतीक नही होती, वास्तव मे कभी-कभी तो वह हमे ऐसे कर्मों से बचा लेती है जो कदाचित् हमे अपने हित के, अपनी आन्तरिक आकाक्षाओ के, अथवा ईमानदारी या प्रतिष्ठा के किसी मौलिक सिद्धान्त के, विरुद्ध करने पडते, क्योकि उस समय हमे कोई दूसरा मार्ग न दिखाई देता।

एक होनहार युवती अभिनेत्री लन्दन के एक नये तमाशे की तैयारी के दौरान मे पेट की कठिन पीडा से अकस्मात् गिर पडी। आवश्यक शल्य-क्रिया के लिए वह तुरन्त अस्पताल भेज दी गई और उसके सह-योगियो तथा प्रशसको ने उस पर समवेदना की बौछार करनी प्रारम्भ कर दी। उन्हे कितना अफसोस रहा कि तमाशे से उसका नाम काटना पडा और सफलता की ख्याति का मार्ग उसके लिए रुक गया। परन्तु

उसके मित्रों को यह जानकर आश्चर्य हुआ होगा कि अपनी ख्याति के मार्ग के अवरोध पर खेद न करके अस्पताल पहुँचने पर एक प्रकार की मानसिक शान्ति ही उसे मिली यद्यपि पीडा जारी थी। वही जानती थी कि शल्य-क्रिया से उसकी प्रसिद्धि अवरुद्ध नही हुई, उसकी रक्षा ही हुई।

नये तमाशे की तैयारी के दौरान मे उसकी घवराहट वढती गई थी। उसे गलत भूमिका दी गई थी, उसकी पहली सफलता विकसित होने के वदले खतरे मे पड सकती थी, नष्ट भी हो सकती थी। उसकी यह धारणा दृढ हो गई और उसकी निराशा वढती गई। तमाशे में सम्मिलित रहने से उसकी प्रसिद्धि नष्ट होती, तैयारी के दौरान मे भाग निकलने पर उसकी इससे अधिक वदनामी होती।

तमाशा कुछ ही दिनो वाद होने को था, जव एक रात पेट की भयानक पीडा से उसकी नीद खुल गई। उसने अपने को समझाया कि यह हिस्टीरिया का दौरा है, और भूलने का प्रयत्न किया। परन्तु अन्ततः उसे चिकित्सक को वुलाना पडा और उसने वताया कि आंत की अन्धी नली सूजी ही नहीं, फट भी गई है।

अभिनेत्री ने शारीरिक कष्ट सहन करके अपनी आंत की अन्धी नली का सहर्ष वलिदान किया, परन्तु अपनी प्रतिष्ठा वचा ली। वह विलकुल चंगी हो गई। उसे एक नये खेल मे उपयुक्त भूमिका मे अभिनय करने का अवसर मिला और उसके दूसरे अभिनय से उसकी पहली सफलता पुष्ट हुई।

• • •

जव हम किसी मालिक या सहयोगी के विषय मे कहते हैं, "उसे देखकर मेरा जी मचलाता है," तो हमारा कथन शाब्दिक अर्थ के अनुकूल ही होता है। हमे मचलाहट, पेट के दर्द या सिर मे धमक का आभास होता है। देखने मात्र से जो शारीरिक कष्ट होता है वह उतना ही सही है

जितनी वह हँसी जो मनोरजन के कारण आती है या वे आँसू जो रज की हालत मे निकलते हैं। परन्तु जिस भावनात्मक प्रतिक्रिया के कारण हमारा शरीर प्रभावित होता है उसे बदलना हम आसानी से सीख सकते हैं।

जिस परिस्थिति से हमारी भावना पर ठोकर लगती है उसका मुकाबला करने के दो ही मार्ग हैं—उससे लडो या उससे भागो। निर्णय करके अपना मार्ग निश्चित करते ही हम स्वास्थ्य-लाभ के मार्ग पर आ जाते हैं। परन्तु निर्णय का कार्यान्वित होना आवश्यक है। कठिनाई का सामना हमें सत्य-कर्म से करना है।

यदि किसी इन्टरव्यू मे विफल होते हो, क्योकि डर या सदेह के कारण तुम्हारे मुख से सही बात नही निकल सकी, तो तुम्हारा असन्तोष और दबा क्रोध दिन के अन्त तक तुम्हारे सिर की पीडा का कारण हो सकता है। इसके विरुद्ध यदि डर से मुक्त होकर तुम सही कर्म में लगते हो, तो प्रभाव तुम्हारे लिए बहुत स्फूर्तिदायक हो सकता है।

मेरा एक रोगी तीसरे पहर मेरे पास आया और प्रफुल्ल मुद्रा मे बोला, "मैं अत्यन्त हर्ष का अनुभव कर रहा हूँ, वैसा ही हर्ष जो २० वर्ष की अवस्था मे मुझे टेनिस का कठिन खेल पूरा करने पर होता था।"

जो हुआ था वह उसके धन्धे की कोई असाधारण बात न थी। एक सहयोगी ने उसकी प्रिय योजना का विरोध किया था। मेरे रोगी ने उसका विरोध करने के परिणाम पर विचार कर लिया था और निश्चय कर लिया था कि ये परिणाम उसे स्वीकार होगे। अपनी ही चिन्ताओ का सामना करके उसने उनका महत्व अमान्य कर दिया और इस प्रकार वह अपनी योजना के पक्ष मे लडने के लिए स्वतन्त्र हो गया। वह पूर्ण रूप से विश्वस्त होकर सभा मे पहुँचा कि उसकी विजय होगी। सघर्ष के पश्चात् उसे अपना शरीर वैसा ही नौजवान, लचीला

और स्वस्थ लगा जैसा किसी समय किसी कठिन शारीरिक परिश्रम के पश्चात् उसे लगा करता था।

जिन कठिनाइयो का हमें जीवन मे सामना करना पड़ता है, उनमे अधिकाश ऐसी होती हैं जिनमें बाहरी परिस्थितियाँ उतनी बाधक नही होती जितनी कि आन्तरिक शक्तियाँ, जिनसे परामर्श करना, जिन्हें सही राह पर लाना, आवश्यक रहता है। इनकी हम परवाह नहीं करते या इन्हे हम दबा देते हैं, तो यही हमारा मार्ग अवरुद्ध करती हैं।

कभी-कभी जब परिस्थिति के सही मूल्याकन के सघर्ष मे हार निश्चित दिखाई पडे, तो भागने का ही मार्ग श्रेयस्कर होता है। भागना स्वाभाविक है और स्वस्थ भी। जगली पशु हर आक्रमण से वीरतापूर्वक लडने के लिए अपने को विवश नही मानता। ज्ञात वैरी का सामना होने पर वह अपना निर्णय इसी आधार पर करता है कि लडने पर वह जीतेगा या हारेगा। ऐसी परिस्थिति मे, जो अपने मान की न हो, भाग जाना कायरता नही, स्वरक्षा है। हमें किसी परिस्थिति से सफलतापूर्वक भाग निकलने पर उतना ही सतोष होना चाहिए, जितना उससे सफलतापूर्वक लडने मे। दोनो ही मार्ग मान्य हैं, परिस्थिति का सही मूल्याकन ही निर्णय का आधार होना चाहिए।

● ● ●

हम किस प्रकार इस परिस्थिति से भागें जिससे हम लड नही सकते? यथेष्ट आत्म-चिंतन के पश्चात् एक रोगिणी को पता लगा कि जब वह अपनी सास से मिलने जाती थी, तभी उसके सिर और कमर मे दर्द होने लगता था। बुढिया अपने लडके पर अधिकार पाने के लिए सघर्ष-शील थी। वह प्रेम का दिखावा ही करती रही, और भीतर-ही-भीतर वह पत्नी के प्रति अपने बेटे के स्नेह पर आघात करती रही। हमारी

रोगिणी माता-पुत्र के इस संघर्ष की निर्दोष शिकार थी। वह अधिकार जमाना चाहती थी और लडका स्वतन्त्र रहना चाहता था।

युवती पत्नी ने देखा कि न तो वह अपनी सास से लड सकती है, न अपने दापत्य को खतरे मे डाले विना वह अलग ही रह सकती है। हर हालत मे पति अपनी माता और पत्नी के बीच निर्णय करने के लिए विवश हो जाता।

वह परिस्थिति से भाग नही सकती थी तो उसके भावनात्मक प्रभाव से मुक्त होने का उसने प्रयत्न प्रारम्भ किया। अपने को शान्त रखने के लिए बटुए मे एक प्रकार की ओषधि रखने लगी। जब कभी कुढ़न या ग्लानि उसके हृदय मे उमडती तो कमरे के बाहर जाकर एक गोली मुँह मे डाल लेती। गोली की सहायता से सास के सामने वह शान्त रहती और अपने को उदासीन रख पाती। उसे अपने पति के स्नेह का अधिक विश्वास हो गया, क्योकि माता के प्रति स्नेह की प्रति-द्वन्द्विता से उसने अपने को मुक्त कर लिया था। वह बुढिया को ज्यादा अच्छी तरह समझने लगी। कुछ समय बाद उस पर तरस भी खाने लगी, विशेप रूप से तब जब उसकी सास चर्म रोग से परेशान रहने लगी जो कदाचित् उसे अपनी मानसिक व्यथा के कारण हो गया था। फलत. आन्तरिक शक्ति वढने पर वह अपने पति की ज्यादा अच्छी सहधर्मिणी हो सकी और दोनो मे स्नेह के बन्धन इतने पुष्ट हो गए कि माता के प्रति लडके का अपरिपक्व स्नेह उसमे बाधा डालने योग्य न रहा।

दूसरा उदाहरण है एक युवक दाँतसाज का जो अमीर रोगियों की सेवा के लिए बने एक वडे फैशनेबुल चिकित्सालय मे सहायक के काम पर लगा था। उसने शिकायत की कि अपनी नौकरी से वह दुखी है। उसके पित्ताशय मे कष्ट था, उसे चक्कर आते थे, कभी-कभी बेहोश हो जाता था और यह प्रत्यक्ष था कि वह ऐसे काम मे नही लगा रह सकता था जिसके प्रति उसका विरोध रोग के रूप मे प्रकट होने लगा था।

वह लेखक बनना चाहता था। परन्तु उसे अपनी पत्नी और बच्चे की परवरिश भी करनी थी। मैंने उसके रोग की आवश्यक चिकित्सा की परन्तु साथ ही उसे परामर्श दिया कि वह कोई अधिक रोचक काम ढूंढे।

उसने अपनी समस्या हल कर ली। वह सपरिवार एक कस्बे मे जाकर बस गया जहाँ राजधानी की अपेक्षा बहुत कम व्यय से गुजर चल सकती थी। उसका घर छोटा है और उसमे उसने कोई सामान भी नही लगाया है। उसने रोगियो को देखने के लिए सीमित घण्टे रखे हैं—इतने ही कि गुजारे भर की आय उसे हो जाये। बचे समय मे वह पढा-लिखा करता है। उसके पहले उपन्यास का अच्छा स्वागत हुआ और दूसरा पूरा होने के पहले ही अच्छे दामो एक प्रकाशक के हाथ बिक गया है। जीवनचर्या की सरलता उसे खलती नही। यह युवक अब स्वस्थ है और सुखी भी।

ऐसी समस्याएँ जीवन मे बहुत कम आती हैं जिनका हल मिल ही न सके। आम तौर से हम हल की खोज मे इसलिए विफल होते हैं कि सही हल मानने के लिए राजी नही होते—और वह हल है स्थिति से सामजस्य की सक्रिय व्यवस्था, सही हल मानने से इन्कार करने पर हम आत्मघात ही की ओर झुकते हैं।

● ● ●

हममे अधिकांश अपने दायित्वो का निर्वाह करते हैं परन्तु अपनी शक्तियो का सर्वोत्तम उपयोग हम नही कर पाते। प्रधान कारण यह है कि हम उन आन्तरिक प्रेरणाओ की परवाह नहीं करते जो हमे इधर-उधर ले जाती हैं।

बेहतर प्रबन्ध कैसे हो? किस प्रकार हम अपनी जीवनचर्या का सुधार करें जिससे हमारी आन्तरिक शक्तियो का सदुपयोग हो सके और हम अधिक-से-अधिक सुखी और सम्पन्न हो सकें?

उत्तर है कि हम दीर्घायु के सकल्प का विकास करना सीखें।

दीर्घायु का सकल्प इतना प्रवल होता है कि उसकी रक्षा के सम्बन्ध मे हमारे निश्चिन्त रहने की आशका है। परन्तु हम देख चुके हैं कि इस वहुमूल्य जीवन-शक्ति को अवरुद्ध करने के लिए हमारे भीतर घातक शक्तियाँ भी हैं। इन शक्तियों के विरुद्ध जीवन-शक्ति की जागरूक रक्षा न करने से यह क्षीण होकर नष्ट हो सकती है, तभी तो हम देखते हैं लोगो को समय के पहले मरते, अपाहिज जीवन व्यतीत करते या आत्म-हत्या करते।

दीर्घायु का सकल्प कई शक्तियो के समन्वय से प्राप्त होता है। सचरणशील हिमशिला का आठवाँ भाग ही जल के ऊपर दिखाई देता है। इसी प्रकार दीर्घायु की इच्छा-शक्ति का भी अधिकाश हमारी चैतन्यता के अन्तस्तल मे छिपा रहता है। अनजाने ही हम उसे निर्वल करके नष्ट कर सकते हैं। परन्तु उसे हम सशक्त कर सकते हैं, सीचकर उसका विकास भी कर सकते हैं—और यह सब अपनी चैतन्यता के सदुपयोग से।

हमारे जीवन मे भारी मुसीवतें आती ही हैं। पहली आवश्यकता यह है कि हम अपने मानसिक स्वास्थ्य की यथाशक्ति रक्षा करते हुए ही इन मुसीवतो को पार करें। परेशानियो के जमाने मे हमे प्रतिदिन कुछ ऐसा समय निकाल लेना चाहिए जिसमे हम सुचित्त और शान्त रह सकें। इस उद्देश्य से जो मार्ग आम तौर से चुने जाते हैं उनमे मन को शान्ति नही मिलती, केवल उसके प्रभाव मे हम अपनी चिताओ को कुछ भूल जाते हैं। पुरुप मदिरापान करते हैं, घुडदौड या जुआ खेलते हैं, या रात भर ताश खेलते रहते हैं, स्त्रियाँ वाजार चली जाती हैं—दुकानो-दुकानो भाव-ताव करने। परन्तु ये मनोरजन प्रतिक्रिया के रूप मे अपनी अलग ही व्याधियो को जन्म देते हैं। क्या हम सच्चे हृदय से कह सकते हैं कि मनोरजनो से हमे वह ताजगी मिलती है जिसे लेकर हम चिन्तायुक्त परिस्थिति का वेहतर सामना करने योग्य हों?

सही मार्ग के सुझाव इस प्रकार हैं। जब चिन्ता का दबाव बढे तो हवाखोरी के लिए निकल जाओ, ठडा जल पिओ, किसी छोटे बच्चे के साथ खेलने लगो, या घर के किसी काम में लग जाओ। यदि शरद् हो और धूप अच्छी लगती हो तो बाहर निकलकर कुछ देर तक धूप खाओ या अकेले टहलने निकल जाओ। यदि घर के बाहर जाना उचित न जान पडे तो खिडकी से झाँकना ही प्रारम्भ कर दो। चिन्ताएँ तो घर के भीतर ही हैं। बाहर सभी अपनी-अपनी धुन मे मस्त दौडते, चलते, बातें करते दिखाई देंगे। विशाल विश्व की पृष्ठभूमि मे तुम्हें अपनी चिन्ताओं की न्यूनता समझ मे आने लगेगी।

दोपहर के भोजन के समय दैनिक चिताओं से मुक्त होने का अवसर मिलता है। परन्तु जिस प्रकार आम तौर से यह समय विताया जाता है उससे चिन्ता-मुक्ति नही होती। एक महाशय को भोजन के पश्चात् बदहजमी की शिकायत रहने लगी, यद्यपि वह भोजन के पश्चात् कुछ दूर चलकर ही काम के लिए अपनी मेज पर बैठते थे। इनकी आदत झुककर चलने की पड गई थी, मानो ससार भर का बोझ इन पर ही लदा हो। उनका चिन्तित मुख भी पृथ्वी को ही देखता रहता था।

मैंने इनसे कहा, "आप पैदल तो दफ्तर जाते ही हैं, कितने कबूतरों को आप न्यूयार्क के फिफ्थ एवेन्यू मे उडते देखते हैं, इसकी सूचना मुझे देते रहिये।"

मेरी बात सुनकर पहले तो वह चकराये, परन्तु तुरन्त ही सकेत उनकी समझ में आ गया। वह प्रयत्न करने के लिए राजी हो गये।

मैंने उनको छः वर्ष तक नहीं देखा। फिर एक छोटी-सी तकलीफ लेकर वह मेरे पास आये और प्रसन्नतापूर्वक सूचना दी, "मैं कबूतरो को नित्य गिनता रहता हूँ।"

शरीर और मन को मनोरंजन की भी भूख लगती है। इस भूख की अवहेलना होने पर दीर्घायु का सकल्प डगमगा जाता है। यदि चिंता के वातावरण मे हम सोते नहीं, भोजन में सयम नही रखते, काम के

अत्यधिक दबाव और थकान के लक्षणो की परवाह नही करते और अपने को निर्बल होने देते हैं, तो फिर भारी मुसीबत को हम निमन्त्रण ही देते हैं अपनी घातक प्रवृत्तियो की सहायता ही करते हैं।

आत्मघात का सबसे अधिक चिन्तित करनेवाला रूप यह है कि हम उसके दवाव से जितना भी मुक्त होने का प्रयत्न करते हैं हमे उतनी ही नई और हानिकारक भूखें लगती हैं—एक प्याला मदिरा और हो, एक सिगरेट और पी लें, चाकलेट कुछ और खा लें, नीद की एक और गोली ले लें। परन्तु यदि हम भली भाँति समझ जायें कि मदिरा, सिगरेट या नीद की गोली से समस्या हल नही होती, केवल अस्थायी भुलावा ही मिलता है, तभी स्वरक्षा का सही मार्ग मिलता है। एक वार भी आन्तरिक भावनाओ का सही विश्लेपण हो सके, तो आत्मघाती इच्छाओ की तृप्ति के बौद्धिक मार्ग निकाले जा सकते हैं। चिंता और श्रम के वातावरण मे दीर्घायु के सकल्प को समर्थ और सशक्त करने का यही अर्थ है।

• ○ •

परन्तु इसके आगे हमारे सामने जीवन-क्रम की एक दूरदर्शी योजना भी होनी चाहिए। यह है दीर्घायु के दृढ निश्चय का सब उचित ढगो से विकास करना जिससे हम अपना जीवन अधिक से-अधिक सम्पन्न और सुखी बना सकें।

मान लो, बहुत से अन्य लोगो की भाँति, तुम्हारे हृदय मे सरक्षित जीवन व्यतीत करने की आन्तरिक कामना है। परन्तु तुम्हे यही लोग नापसन्द हैं जिनसे तुम स्नेह और सरक्षण की आशा करते हो, क्योकि तुम अपने मे आश्रित रहने की कामना का अस्तित्व बुरा समझते हो। मान लो तुम अपने व्यक्तित्व की इस कमजोरी को स्वीकार कर लेते हो, तो तुम्हे स्नेह की आवश्यकता है। इसे चाहते क्यो हो ? मांगने पर स्नेह मिलना तभी निश्चित है जब स्वय स्नेह का दान करो।

स्नेह-दान सीखना भी किसी नई कला को सीखने के समान है। पहले हम घबराते हैं, कदाचित् डरते भी हैं, वर्षों से बनी आदत को एक ही सकेत से, कभी-कभी के परामर्श से, नहीं बदल सकते। परन्तु कृतज्ञता की आशा किये बिना ही निस्सकोच स्नेह-दान से बदले में स्नेह मिल जायेगा। एक बात पर विश्वास रखो—ज्यो ही तुम स्नेह की आवश्यकता को पहचानकर स्वीकार करते हो वैसे ही तुम स्वतन्त्रता के मार्ग पर पहुँच जाते हो। और जब तुम चिन्तामुक्त हो जाओगे, तो आँतो मे घाव तो होगा ही नही।

जिस प्रकार हम शारीरिक स्वास्थ्य की रक्षा करते हैं उसी प्रकार हम अपने मानसिक स्वास्थ्य की रक्षा करते रहे और अपनी मानवीय शक्तियो का विकास करते रहें तो बीमारी और असामयिक मृत्यु से हम अपनी रक्षा कर सकते हैं। यही हमारी दीर्घायु के संकल्प के आधार हैं। यदि हम जीवन के लिए प्रयत्न करते रहते हैं तो हमे मृत्यु से भयभीत नही होना चाहिए।

हमे उस माता की भाँति न बन जाना चाहिए जो अपने बच्चो के जीवन मे इतनी लीन हो जाती है कि जब बच्चो को उसकी जरूरत नही रहती, तो उसके पास कोई व्यसन नही रह जाता; या ऐसे पुरुष की भाँति जो अपनी नौकरी मे ही व्यस्त रहता है और सेवामुक्त होने पर जीवन के उद्देश्य से अपने को बिलकुल हीन पाता है। यदि हम अपनी शक्तियो का सर्वांगीण विकास करते रहे, अपने को केवल मातृत्व, पितृत्व या वैतनिक सेवा के दायित्वो के भीतर ही सीमित न रखें, तो हमारे सामने जीवन के उद्देश्य तब भी बने रहेगे जब हम वैतनिक सेवा और मातृत्व या पितृत्व के दायित्व से मुक्त हो जायेंगे।

हमारी वर्षगाँठें युवावस्था की अवधि को पीछे धकेलती जाती हैं, तो दीर्घायु के सकल्प को भी क्षीण होते हुए शरीर से चुनौती मिलती जाती है। परन्तु क्या शरीर क्षीण होता है ? या हमारी आदतें, हमारी विचारशैलियाँ, पतनशील होती हैं ?

वृद्धावस्था के भौतिक लक्षणों के सम्बन्ध मे शरीर-विज्ञान-वेत्ता रवनर ने बीस वर्ष हुए एक महत्त्वपूर्ण बात कही थी। रवनर को पता लगा कि आदमी आम तौर से अपनी वृद्धावस्था मे ही पहुँचकर नहीं बूढा होने लगता। शारीरिक बुढापे के प्रथम लक्षण वयस्क जीवन के प्रारम्भ ही मे प्रत्यक्ष होने लगते हैं, जब पढाई समाप्त करके व्यक्ति अपनी पसन्द के व्यवसाय में लग जाता है।

रवनर का कहना है कि कम अवस्था से ही शारीरिक बुढापे के लक्षण तभी दिखने लगते हैं जब व्यक्ति का मानसिक दृष्टि-क्षेत्र सकुचित हो जाता है, वह अपने को रोजी के धन्धे के भीतर ही सीमित कर लेता है और अपने मानसिक विकास की ओर से बिलकुल लापरवाह हो जाता है।

प्रसिद्ध दार्शनिक ओलिवर वेंडल होम्स का कहना था कि लकडी के समान विद्या को भी तभी काम मे लाना चाहिए जब वह पुरानी हो जाये, उसमे अनुभव की पुष्टता आ जाये। परन्तु डॉ० होम्स का यह कदापि तात्पर्य न था कि उसे कभी काम मे लाया ही न जाये। जब तक विद्या अनुभव के सयोग से परिपक्व हो और बुद्धिमानी मे परिवर्तित हो जाये, तब तक अधिकाश लोग सीखना और उसे काम में लाना बन्द कर देते हैं। अधिकाश वयस्को का जीवन, विद्या से नही, पुरानी आदतो से ही प्रेरित रहता है।

पहाडो पर चढने का व्यसन कठिन है, खतरनाक है, इसलिए वह नौजवानो के लिए ही है। परन्तु जो पुरुष पहाडो पर चढता रहता है, वह वृद्धावस्था तक भी इस व्यसन से रस लेता रहता है, ६०-६५ के बहुत से लोग पहाड की चढाई का आनन्द लेते रहते हैं।

जिन मास-पेशियो से हम काम लेते रहते हैं वे बहुत पुरानी होकर ही बूढी होती हैं, परन्तु मस्तिष्क से काम लिया जाता रहे तो उसका बूढा होना कभी भी जरूरी नही। इस विचार से ज्ञान और आनन्द का मार्ग अवरुद्ध होता है कि २०-२५ वर्ष की अवस्था तक पहुँचने पर

सीखने की शक्ति समाप्त हो जाती है, यह विचार आत्मघाती भी है, और बुढापे को निमन्त्रित ही करता है।

जब हम सीखना बन्द कर देते हैं, जब हम नई बातो मे दिलचस्पी लेना बन्द कर देते हैं, तो हम बूढे होने लगते हैं।

जब हम अपने शरीर से काम लेना बन्द कर देते हैं, तो भी हम बूढे होने लगते हैं। शरीर-विज्ञान के अनुसार कोई ऐसी अवस्था निश्चित नही है जब हमे क्रियाशीलता का अन्त कर देना चाहिए। इसलिए कोई ऐसी अवस्था नही जब हमारा अपने को बूढे समझना जरूरी हो।

जिन कलात्मक व्यसनो और हुनरो को हम वयस्क होने पर लापरवाही से त्याग देते हैं, वही जीवन-मार्ग के अन्धकारमय भाग मे हमे सबल देने योग्य हो सकते। यदि हम इन्हें उस भविष्य के लिए पडा रहने दें जब हमे इनमे लगने की फुरसत हो, तो समय के पहले ही हम बुढ़ापे को निमन्त्रित करेंगे। जब हम वडी अवस्था तक पहुँचते हैं, जब जीवन के कठिनतम सघर्ष समाप्त हो जाते हैं और अपने परिश्रम के फल भोगने के लिए हमे फुरसत मिलती है, तो हो सकता है कि भोगने के लिए कोई फल ही न रह जायें। हमने तो इन्हें बहुत पहले से मुरझा जाने दिया है। जीवन-अवधि बढाने का यही अर्थ होता है कि हम अधिक जीवित नही रहते, अधिक देर से मरते ही हैं।

डॉ० हैरी बेंजामिन ने 'अमेरिकन मेडिसिन' नामक पत्रिका मे ठीक ही कहा है कि जीवन मे वर्ष जोडने की नही, वर्षों मे जीवन लाने की ही समस्या है।

प्रतिष्ठा और बुद्धिमानी बुढापे के ही सौभाग्य मे है। कुछ लोग ऊँची अवस्था पाकर भी सठियाते नहीं, जीवन के अन्तिम दिवस तक वे अपनी प्रतिष्ठा और बुद्धिमानी की रक्षा करने मे सफल होते हैं। क्या कारण है? आश्चर्य तो और भी होता है जब अपने 'बुढापे के सौन्दर्य" मे ये अपनी शारीरिक शक्तियाँ भी सुरक्षित रख पाते हैं। वे देख और सुन तो लेते ही हैं, उनके मस्तिष्क सहिष्णु ही नहीं, दयालु

और जागरूक भी बने रहते हैं। ऐसे लोग बहुत कम होते हैं, इसीलिए स्मरणीय भी होते हैं।

हममे बहुतेरे किसी ऐसे ही वयोवृद्ध सम्बन्धी या पारिवारिक हितैषी के स्वभाव की याद करके कृतकृत्य होते हैं, ऐसे महापुरुषो का आशीर्वाद पाकर हम कृतज्ञ होते हैं, यद्यपि हमारी समझ मे नही आता कि उनके इन गुणो का क्या आधार था।

कारण बिलकुल समझ मे आता है। मेरी धारणा है कि वही नर-नारी सुन्दरतापूर्वक बुढापे तक पहुँचते हैं जिन्होने मानसिक परिपक्वता प्राप्त कर ली है। हो सकता है कि ऐसे व्यक्ति को जन्म से ही अच्छी शारीरिक और मानसिक शक्तियाँ मिली हो या उसका लालन-पालन अच्छे वातावरण मे हुआ हो। यह भी सभव है कि जन्म और वातावरण की मुसीबतो या जवानी की भीषण कठिनाइयो पर उसने अपने ही उद्योग से विजय प्राप्त की हो। यदि हमे इनके जीवन-चरित्र का पूरा विवरण मालूम हो जाये तो मुझे विश्वास है कि हमे उनकी उस मानसिक परिपक्वता के आधार का भी पता लग जायेगा जिसने उनके बुढापे को दिव्यता प्रदान की है।

मेरी धारणा है कि प्रतिष्ठा और बुद्धि सहित बूढे होने के लिए हमे पहले अपना विकास करना चाहिए। हमे उन निर्बलताओ से मुक्त होना चाहिए जो बचपन से हमारे साथ रही हैं। उन्हे छिपाने से या यह आशा करने से कि समय पाकर ये आप-ही-आप दूर हो जायेंगी, काम न चलेगा। इच्छा-शक्ति द्वारा हमे जीवन के सिद्धान्तो के अनुकूल बनकर मानसिक परिपक्वता प्राप्त करनी होगी।

दीर्घायु के लिए—उससे पूरा आनन्द लेने के लिए भी—हमे उन शक्तियो को समझना पडेगा, उन पर नियन्त्रण करना पडेगा, जो आयु की अवधि घटाती हैं। कोई भी अवस्था हो, दीर्घायु के सकल्प का विकास करने के लिए समय निकालना आवश्यक है।

....बच्चों से गोदी भरी रहे

(फ्रैंक बी० गिलब्रेथ और अर्नेस्टीन गिलब्रेथ केरी की पुस्तक 'चीपर बाई द डज़न' का सार)

गिलब्रेथ परिवार में बारह बच्चे थे—छ लड़के और छ. लड़कियाँ। बच्चों के पिता को समय का पूरा सदुपयोग करने और हर काम सलीके से करने की धुन थी और उनका विश्वास था कि इतने बड़े परिवार का संगठन भी एक बड़े कारखाने के ढंग पर किया जा सकता है। इन्हीं बारह बच्चों में से एक भाई और एक बहन ने इस पुस्तक में अपने इस रोचक परिवार का चित्रण किया है।

. . . बच्चों से गोदी भरी रहे

पिताजी लम्वे थे, उनका सिर वडा, जवडे भारी और गरदन मोटी थी। वह दुवले नही माने जा सकते थे, क्योंकि तौल मे वह ढाई मन से कुछ अधिक ही थे। परन्तु उन्हें अपनी सफलता पर, अपनी पत्नी पर, अपने परिवार पर, अपनी व्यावसायिक योग्यता पर, पूर्ण आत्म-सतोप रहता था।

पिताजी को असीम स्वाभिमान प्राप्त था। जितनी शक्ति का प्रदर्शन करने के लिए वह प्रस्तुत होते थे, उसके सफल निर्वाह की भी उनमे सन्तुलित क्षमता थी। जर्मनी के जाइस या अमरीका के पियर्स-ऐरो जैसे विशाल कारखानो मे पहुँचकर भी यह घोपणा करने का दम रखते थे कि वह २५ प्रतिशत उत्पादन वढ़ा सकते हैं। जो-कुछ कहते थे, उसे कर भी दिखाते थे।

उनकी सन्तानों की—हम भाई वहनो की—सख्या एक दर्जन तक क्यो पहुँची, इसका एक कारण था हमारे पिताजी का यह विश्वास कि जो-कुछ वह अपनी पत्नी के सक्रिय सहयोग से करेंगे उसमे दोनो अवश्य सफल होगे।

पिताजी दूसरो को जो उपदेश देते थे उस पर स्वय भी हमेशा अमल करते थे और यह वता सकना असम्भव था कि उनका कम्पनी का वैज्ञानिक व्यवस्था का काम कहाँ पर समाप्त होता था और उनका पारिवारिक जीवन कहाँ से आरम्भ होता था। घर हो या वाहर, वह

कार्य-कुशलता के विशेषज्ञ थे। वह अपनी वास्कट के बटन नीचे से ऊपर लगाते, ऊपर से नीचे नही। क्योकि नीचे से ऊपर बटन लगाने मे उन्हें तीन ही सेकण्ड लगते थे जबकि ऊपर से नीचे बटन लगाने मे उन्हें सात सेकण्ड लगते थे। वह हजामत बनाने बैठते तो दाढी मे साबुन दो ब्रशो से लगाते क्योकि ऐसा करने मे वह हजामत मे १७ सेकण्ड की बचत कर लेते थे। न्यूजर्सी राज्य के माटक्लेयर नगर मे हमारा घर वैज्ञानिक व्यवस्था का एक विद्यालय जैसा था जहाँ माता-पिता के सहयोग से जो कुछ हम करते थे उससे हम अपने समय का वैज्ञानिक ढग से सदुपयोग करते थे। समय और शक्ति की बरबादी की गु जाइश वहाँ न थी।

जब हम बच्चे घर के बरतन साफ करते तो पिताजी हमारी हर-कतो के चलचित्र उतारते, यह अध्ययन करने के लिए कि किस प्रकार हम बरतन धोयें जिससे कम-से-कम समय मे, कम-से-कम परिश्रम करके, हम अच्छे-से-अच्छा काम कर सकें। उन्होने हमारे स्नान-घरो में रोज के काम के चार्ट लगा दिये थे जिनमे अपने दाँत साफ करने पर, नहाने पर, बाल सँवरने पर, बिस्तर बिछाने पर और घर की पढाई पूरी करने पर रोज हर बच्चे को सुबह और रात को उस काम के खाने में हस्ताक्षर करना पडते थे। यह एक प्रकार का सैनिक अनुशासन अवश्य था, परन्तु एक दर्जन बच्चो के साथ इस प्रकार का अनुशासन आवश्यक भी था, नही तो घर की सूरत पागलखाने जैसी हो जाती।

कुछ लोग कहा करते थे कि पिताजी के बच्चे इतने अधिक थे कि उन्हे सबका पूरा पता न रहता था। पिताजी स्वय उस समय की एक घटना सुनाया करते थे जब एक बार माताजी उन्हें घर की रखवाली के लिए छोड़ गई थीं। जब वह लौटकर आई तो उन्होंने सबकी खैरियत पूछी।

पिताजी ने उत्तर दिया, "किसी से कोई तकलीफ नही हुई, केवल

एक के अतिरिक्त जो उधर खड़ा है। परन्तु चपत खाकर वह भी ठीक रास्ते पर आ गया है।"

माताजी किसी भी दुर्घटना मे अपना धैर्य नही खोती थी।

उन्होने कहा, "यह हमारा बच्चा नही है, यह तो पड़ोसी का है।"

कभी-कभी हमारा हुल्लड सीमा से बाहर हो जाता। एक बार हम सब अपनी ननिहाल पहुँचे। नाना मोलर का आदेश हुआ, "तुम लोग कोशिश करके केवल दो घण्टे के लिए अपना शोर इतना कम कर दो कि एक हल्की गरज जैसा ही जान पड़े। तुम्हारी नानी के लिए आराम करना सचमुच बहुत जरूरी है।"

पिताजी काम लेने मे सख्त अवश्य थे, परन्तु उन्हे बच्चो को काम मे लगाये रखना आता था। बाल-बुद्धि का आदर करना भी वह जानते थे। उनकी धारणा थी कि अधिकाश वयस्क लोग विद्यालय छोड़ते ही, या उसके पहले से ही, सोचना बन्द कर देते हैं। पिताजी का आग्रह था कि बच्चे शीघ्र ही प्रभावित होते हैं और उनकी जिज्ञासा बहुत तीव्र रहती है। यदि हम उन्हे छोटी ही अवस्था से अपने अनुशासन मे ला सकें तो उनके प्रशिक्षण का हमे असीम क्षेत्र मिल जाये।

बच्चो के प्रेमी होने ही के कारण उन्हे अच्छी सख्या में सतानोत्पादन की लालसा रही। बारह सतानें पाकर भी वह पूर्णत सन्तुष्ट नही हुए। कभी-कभी हम सबको देखकर वह माताजी से कहते

"लिली, कोई चिन्ता की बात नही। तुमने यथाशक्ति अपना काम किया।"

जब कभी पिताजी कही बाहर से लौटकर मोड पर पहुँचते तो परिवार के सब सदस्यो को इकट्ठा करने के लिए सीटी बजाते। आदेश था कि सीटी सुनते ही सब काम छोडकर दौडते हुए इकट्ठा हो जायें, नही तो कठिन दण्ड के भागी होगे। सीटी सुनते ही गिलब्रेथ परिवार के सब बच्चे घर और महन के कोने-कोने से दौडते आते। वह सदैव अपने पास एक घडी रखते थे जो किसी भी समय चलाई और रोकी जाकर

मिनट और सेकड बता सकती थी। कभी-कभी वह इस घडी को यह परीक्षा करने के लिए हाथ मे ले लेते कि कितने शीघ्र हम सब इकट्ठा हो सकते थे। छ सेकड हमारा सबसे कम समय था।

पिताजी ऐसे मौको पर भी बच्चो को इकट्ठा करने के लिए सीटी बजाते जब उन्हे यह पता लगाना होता कि किसने उनका उस्तरा छुआ है या मेज़ पर उनकी स्याही गिराई है। जब काम बाँटना होता या बच्चो को इधर-उधर दौडाना होता, तो भी वह सीटी द्वारा हम सबको जमा करते। परन्तु आम तौर से कोई इनाम देने के लिए ही वह सीटी बजाते और सबसे बढिया भेंट उसको ही मिलती जो उनके सामने सबसे पहले पहुँच जाता। हमे पहले से कभी भी सूचना न रहती कि अच्छी खबर मिलेगी कि बुरी, पिटेंगे कि इनाम पायेंगे।

कभी- कभी हम सदर दरवाज़े पर इकट्ठा होते तो वह कडे शब्दो की बौछार से आरम्भ करते।

गुर्राते हुए वह बोलते, "देखूँ तो तुम्हारे नाखून। साफ हैं ? दाँतो से इन्हे कुतरते रहे हो ? नाखून काटने की जरूरत है ?"

इसके पश्चात् लड़कियो को चमडे के केस मे रखा हुआ नाखूनो की सफ़ाई का पूरा सामान दिया जाता और लडको को चाकू।

या वह गम्भीर मुद्रा मे हम सबसे हाथ मिलाते और हाथ के हाथ से हटने पर हमारे हाथ मे एक-एक चाकलेट आ जाती। या वह पेंसिल के विषय में पूछते और एक दर्जन ऐसी पेंसिलें हम सब को बराबर से बाँट देते जो चाकू लगाये बिना काम देती रहती हैं।

और जब हम उनके गले मे बाँहे डालकर उन्हे देर से आने का उलाहना देते, तो उनका हृदय भर आता और वह कोई उत्तर देने के बजाय हमारे बाल बिथरा देते और हमारे चूतडो पर एक-एक थप मार देते।

● ● ●

जब पिताजी ने माटक्लेयर वाला मकान मोल लिया तो उन्होने बताया कि वह अकिंचन बस्ती मे एक झोपडी जैसा है। उन दिनो हम प्राविडेंस नामक कस्बे मे रहते थे। जब मोटर पर हम प्राविडेंस से माटक्लेयर के लिए रवाना हुए तो दीमको की हर गुमटी वह हमे दिखाते गये।

किसी टुटहे मकान को दिखाकर वह कहते, "देखो, ऐसा ही है हमारा नया मकान। बस उसमें टूटी खिडकियाँ कुछ ज्यादा हैं और सहन भी कुछ छोटा ही है। इतने बड़े परिवार के पालन-पोषण में ही मेरी सब आय समाप्त हो जाती है। ज्यादा हैसियत नही। ऐसे ही घर मे निर्वाह करना होगा।"

जब माटक्लेयर पहुँचे तो वह हमे उस कस्बे के सबसे रद्दी भाग मे ले गये और एक खडहर के सामने गाडी रोक दी जिसमें किसी फकीर का भी गुजर न होता।

माताजी ने आशा की मुद्रा मे कहा, "मजाक कर रहे हो न ?"

'खराबी क्या है ? क्या तुम्हे पसन्द नही ?"

अर्नेस्टीन वोली, "यह बहुत ही गन्दा घर है। मैं तो इस घर के पास भी न फटकूँगी।"

मर्था बोली, "मैं इसकी तरफ आँख उठाकर भी न देखूँ।"

लिल तो सिसकने ही लगी।

माताजी प्रसन्नता की मुद्रा मे बोली, "यदि पुताई हो जाये और जहाँ छेद हैं वहाँ तख्ते लगा दिये जायें, तो बुरा न रहेगा।"

पिताजी हँसकर जेब मे अपनी नोटबुक टटोलने लगे।

यकायक वह चौंककर बोले, "बच्चो, जरा ठहरो। गलत पते पर आ गया। चलो सब लोग मोटर पर बैठो। मैं भी सोच रहा था कि जब मैंने पिछली बार इस घर को देखा था, तब से अब यह अधिक उजडा क्यों दिखाई देता है।"

इस बार हमे वह ईगिल राक वे नामक सडक के ६८वें मकान के सामने ले गये। मकान पुराना अवश्य था, परन्तु ताजमहल जैसा सुन्दर

लगता था—१४ कमरे और दुमजिला कोठा, बाग में एक बारहदरी, मुर्गीखाना, अगूर की बेलो के कुज, गुलाब की झाडियां और दो दर्जन फलो के पेड कोठी के सहन मे। हम समझे कि पिताजी फिर हमे चिढाने की धुन मे हैं।

वह बोले, "यही मकान तुम्हारे लिए है। मैंने पहले तुम्हें इसका सही विवरण नही दिया और दूसरी जगह तुम्हे इसीलिए ले गया कि तुम इसे देखकर प्रसन्न हो जाओ, और नुक्ताचीनी न करने लगो।"

● ● ●

माटक्लेयर के घर मे पहुँचने के एक वर्ष पहले ही पिताजी ने अपनी पहली मोटरकार खरीद ली थी। पेचीदा मशीनों के काम करने के ढग में उन्नति के सुझाव देकर ही यह अपनी रोजी कमाते थे, परन्तु मोटर-कार की मशीनरी को समझने की कोशिश उन्होने कभी नही की। जब हैंडिल लगाते तो वह झटका मारता, जब मशीन के भीतरी भाग की जांच करते तो वह उनके मुँह पर मोबिल-आयल का छिडकाव करती, जब गियर बदलते तो वह भयकर गर्जना करती। पियर्स-ऐरो कारखाने की बनी गाड़ी में दो रबड के भोपू लगे थे और एक बिजली का। पिताजी जब किसी से आगे गाडी निकलना चाहते हो सभी को एक साथ बजा देते।

सच तो यह है कि पिताजी को मोटर चलाना आता ही न था। परन्तु वह मोटर को तेजी से ही दौडाते थे। उनकी दौड से हम सब तो भयभीत होते ही थे, परन्तु माताजी विशेष रूप से भयभीत हो जाती थीं।

दांत भींचकर धीमे स्वर मे वह पिताजी से कहती, "फ्रैंक, इतना तेज न चलाओ।" परन्तु पिताजी सुना अनसुना कर देते।

स्वरक्षा के लिए हमें कई व्यवस्थाएँ चालू करनी पडी।

हम लोग अपने मे से किसी को बाईं ओर की सड़को से आनेवाली

मोटरो पर नजर रखने के लिए तैनात करते। दूसरे को इसी प्रकार दाईं ओर की चौकसी सुपुर्द करते। और तीसरा पीछे की सीट मे बैठकर शीशे की खिडकी से पीछे से आनेवाली मोटरो की खबर रखता।

माताजी की वगल मे और सामने की सीट पर बैठे बच्चो का काम था कि जव हमारी कार को सामने वाली कार के आगे निकलना हो तो वे पिताजी को सूचना दें।

चौकसी करनेवाला चिल्लाता, 'आप आगे बढा सकते हैं।"

पिताजी चिल्लाते, "अपना हाथ निकालकर सकेत करो।"

आदेश सुनते ही माताजी और गोद के बच्चे को छोडकर हम सव अपने ग्यारह हाथ मोटर के बाहर दोनो ओर निकाल देते—सामने की सीट से, पीछे की सीट से और वीच मे पडी बच्चों की कुर्सियो से। हम कही चूकते नही थे, तो भी पिताजी की कार मुण्डेरो से रगडती हुई, मुर्गियो को कुचलती हुई और पौधो को गिराती हुई आगे वढती।

कार का हुड खुलने पर ही हम सव उसमे समा पाते थे। इस प्रकार जव हमारी कार किसी अपरिचित गाँव से होकर गुजरती तो वहां के निवासियो के लिए हम एक तमाशे का दृश्य वन जाते। राह-गीर वगल की गलियो मे इक्ट्ठा हो जाते और बच्चे कन्धो पर चढकर हमारा तमाशा देखने का आग्रह करते।

यदि कोई पिताजी से हँसी में पूछता, "भाई साहव, ये गाजरें आपने कैसे उगाईं, जरा हमें भी तो तरकीव वताइये।"

तो पिताजी उससे ऊँचे स्वर मे कहते, "ये! ये तो थोडे ही हैं। तुमने वे तो अभी देखे ही नही हैं जिन्हे मैं घर पर छोड आया हूँ।"

"साहव, इन सव बच्चो को आप खिलाते-पिलाते कैसे हैं?"

पिताजी एक क्षण सोचते। फिर पीछे की ओर मुडकर इस प्रकार कहते मानो यह वात उनकी समझ मे अभी-अभी ही आई हो और वह उसे सभी लोगो को सुनना चाहते हो.

"आप को मालूम होना चाहिए कि दर्जन के हिसाब से ये हमें सस्ते पड़ते हैं।"

इतना सुनते ही गोष्ठी के सब सदस्य हँस पड़ते और पिताजी का यही उद्देश्य होता था। जब चुंगी के फाटक पर पहुँचते, सिनेमा देखने जाते या गाड़ी अथवा नाव के टिकट लेते तो दर्जन का भाव-ताव अवश्य करते।

चुंगी के फाटक पर तैनात आदमी के बारे मे अगर वह यह भाँप लेते कि वह आयर्लैंड का है, तो उससे कहते, "क्या मेरे आइरिशमेन दर्जन के हिसाब से सस्ते पड़ते हैं ?"

"आयर्लैंड के अलावा और कहाँ के हो सकते हैं। ईश्वर तुम्हारा भला करें। आयर्लैण्डवाले ही इतने लाल बालो वाले बच्चे पैदा करके पाल सकते हैं। खुशी से आगे बढ़िये।"

आगे बढ़ते हुए माताजी पिताजी पर छींटा कसती, "यदि यह व्यक्ति जान जाता कि तुम स्कॉटलैण्ड के हो तो वह डंडा लेकर तुम्हारी कजूस खोपड़ी पर चिपका देता।"

नित्य-कर्म के लिए माता-पिता पेट्रोल पम्प के शौचालयो को गन्दा समझते थे। चूँकि पेट्रोल पम्प के शौचालय इस्तेमाल करने का कोई सवाल नहीं उठता था इसलिए जब कभी हम मोटर पर बाहर जाते तो हम सब शौच से निवृत्त होने के लिए जगल की शरण लेते। पिताजी की मोटर की बेतहाशा दौड़ से या तो हम सहम जाते थे, अथवा हम १४ व्यक्तियो के शौच के समय एक-दूसरे से अलग थे। हर सूरत मे हमे जहाँ भी कोई उपयुक्त कुंज दिखाई देता, वहीं हम रुक जाते।

पिताजी भल्ला कर कहते, "कोई पेड़ खोजने की इतनी चिन्ता तो कुत्ते भी नहीं करते।"

● ● ●

लडकपन मे पिताजी की आकाक्षा इमारत के इजीनियर बनने की थी और उनकी विधवा माता चाहती थी कि वह मसाचुसेट्स की इस्टीच्यूट ऑफ टेक्नालोजी मे भरती हो जायें। परन्तु हाई स्कूल की परीक्षा मे उत्तीर्ण होने तक उनकी समझ मे आया कि उनका परिवार इतनी ऊँची पढाई का खर्च बरदाश्त न कर सकेगा। अतएव अपनी माता से परामर्श लिये बिना ही वह मेमार की सहायता के लिए बेलदारी करने लगे।

पिताजी ने जब निर्णय कर ही लिया तो हमारी दादी गिलब्रेथ ने भी उनका निर्णय स्वीकार किया। सयुक्त राज्य अमरीका के प्रसिद्ध प्रेसिडेंट लिकन का जीवन लोहे की रेल की पटरियो की कटाई ही से प्रारम्भ हुआ था।

उनकी माता ने इतना अवश्य कहा, "परन्तु यदि तुम्हें बेलदार ही होना है तो भगवान् के लिए किसी अच्छे की बेलदारी करना।"

काम के पहले सप्ताह ही मे पिताजी ने ईंटें बेहतर ढग से और शीघ्र जोडने के इतने सुझाव दे डाले कि मिस्त्री ने उन्हे निकाल देने की बार-बार धमकी दी।

मिस्त्री ने उन्हे डाँटा, "तुम यहाँ काम सीखने आये थे तो ईश्वर के लिए हमे सिखाने का प्रयत्न न करो।"

ऐसी गोलमोल धमकियो से पिताजी कभी विचलित नही हुए। उनकी तो बस एक ही धुन थी कि काम करते समय हाथ किस तरह चलाये जायें कि समय सबसे कम लगे। अतएव वर्ष के भीतर ही वह एक ऐसा पाड बाँधने में सफल हुए जिसके सहारे वह जुडाई के काम मे सबसे तेज माने जाने लगे। उनके पाड का सिद्धान्त यह था कि ईंट और गारा उस स्तर पर रहे जिस पर दीवार बन रही हो। अन्य मेमारों को ईंट और गारे के लिए झुकना पडता था।

मिस्त्री ने झिडकी दी, "तुम फुर्तीले नही हो, तुम इतने सुस्त हो कि ठीक से बैठ नही सकते।"

परन्तु मिस्त्री ने पिताजी के पाड के ढग के सभी पाड वँधवाये और उन्हें सुझाव दिया कि अपने पाड का नमूना वह मेकैनिक्स इस्टीच्यूट को भेज दें। थोडे ही अरसे के भीतर मिस्त्री की सिफारिश से पिताजी अपने चुने हुए आदमियो के मिस्त्री वना दिये गए। काम मे उन्होंने इतनी तेजी दिखाई कि वह सुपरिंटेंडेंट नियुक्त हुए। और फिर स्वय ठेकेदारी करने लगे। २७ वर्ष की अवस्था तक पहुँचने पर तीन नगरो में—न्यूयॉर्क, वोस्टन और लन्दन मे—उनके दफ्तर खुल गये।

कैलिफोर्निया राज्य के ओकलैंड नामक नगर के एक सम्पन्न घराने में हमारी ननिहाल थी। उन्नीसवी शती के अन्तिम दशक मे सयुक्त राज्य अमरीका के सम्पन्न परिवारो की लडकियाँ आवश्यक संरक्षण मे योरप की सैर के लिए निकलती थी। ऐसी ही एक सैर में मेरी माता की पिताजी से मुलाकात हो गई थी।

जव पिताजी कैलिफोर्निया गये और माताजी के घरवालों ने उन्हें परिवार से मिलने के लिए चाय पर वुलाया तो उस समय एक कारीगर वैठक मे नया आतिशदान वना रहा था। पिताजी जव उस कमरे से होकर ले जाये गये तो कारीगर को काम करते देखकर रुक गये।

वार्तालाप के ढग पर पिताजी ने प्रारम्भ किया, "ईंट जोडना भी एक रोचक काम है। मुझे यह सरल ही नही, अत्यन्त सरल जान पडता है। मालूम नही कारीगर क्यो कहते हैं कि यह कोई हुनर का काम है। मैं शर्त वदता हूँ कि कोई भी व्यक्ति यह काम कर सकता है।"

माताजी के पिता ने कहा, "गिलब्रेथ साहव, इधर आइये। हमारी चाय वरामदे मे ही होगी।"

परन्तु पिताजी को चाय की चिन्ता न थी। न्यू इंगलैंड के निवासियो के खास लहजे में वह कहते गये, "काम ही क्या है—ईंट उठाओ, उस पर कुछ गारा चढाओ और उसे आतिशदान पर रखते चलो।"

मेमार ने घूमकर पूरव से आये हुए इस हट्ट-कट्टे सजीले जवान को ऊपर से नीचे तक घूरा।

पिताजी ने उस व्यक्ति पर अपनी कृपादृष्टि डालते हुए कहा, "भले आदमी, तुम पर कोई लाछन की बात नही है।"

मेमार विगडकर बोला, "कहते हो काम सरल है, जरा हाथ लगाकर देखो तो।" और उसने अपनी कन्नी पिताजी के हाथ मे बढा दी।

पिताजी ऐसी चुनौती की प्रतीक्षा ही मे थे। उन्होने हसकर कन्नी हाथ मे ली। उन्होने ईट उठाई, हाथ मे ठीक ढग से रखी, कन्नी को चक्कर देकर उस पर गारा उन्होने बिछाया, ईंट जगह पर रखी, फालतू गारा घसीट लिया, दूसरी ईट उठाई, उसे हाथ मे लिया और गारा उस पर बिछाने ही को थे कि मेमार ने आगे वढकर अपनी कन्नी उनसे वापस ले ली।

पिताजी की पीठ पर सस्नेह थपकी देकर वह बोला, "वस इतना ही काफी है, पुराने उस्ताद हो। पूरव के वांके हो सकते हो, परन्तु तुमने जीवन काल मे हजारो ईंटें बिछाई हैं। तुम इस बात से इनकार भी करोगे तो नही मानूंगा।"

पिताजी ने अनमने भाव से एक उजले रूमाल से अपने हाथ साफ कर लिये और बोले, "भले आदमी, काम बिलकुल सरल है।"

हमने माताजी से पूछा, "इन पर आपके परिवार के सदस्यो ने पिताजी के बारे मे क्या राय कायम की ?"

पिताजी इस समय अतीव प्रसन्न मुद्रा मे थे। माताजी ने पिताजी की ओर कनखियो से देखते हुए कहा, "मेरी समझ मे तो कभी कुछ आया नही, परन्तु मेरे घरवाले इन्हे देखकर वहुत खुश हुए। मेरे पिता ने कहा कि ईंटें जोडकर इन्होने कोई तमाशा नही दिखाया। तुम्हारे पिता ने इसी ढग से उन सबको प्रत्यक्ष कर दिया कि अपने हाथ के परिश्रम से ही यह अपनी रोजी कमाते हैं।"

● ● ●

माता कैलिफोर्निया विश्वविद्यालव से मनोविज्ञान लेकर स्नातक ही नहीं हुई थी, सर्वोच्च नम्बर पाने पर उन्हें 'फाई वीटा काप्पा' की सयुक्त राज्य अमरीका की सर्वोच्च शैक्षिक उपाधि भी मिली थी। यो माताजी ने मनोवैज्ञानिक होकर और पिताजी ने कोई भी काम करते समय हाथो की क्रिया का वैज्ञानिक अध्ययन करने पर आपस मे निर्णय किया कि दोनो प्रवन्ध के मनोविज्ञान के नये क्षेत्र और वच्चो से भरे-पूरे परिवार के मनोवैज्ञानिक प्रवन्ध के पुराने क्षेत्र का व्यावहारिक अनुभव प्राप्त करें। उनका विश्वास था कि जो सिद्धान्त कारखाने मे सफल हो सकते हैं वही घर में भी कार्यान्वित हो सकते हैं। इसीलिए माता-पिता ने स्वामी-सेवक वोर्ड के ढग पर एक परिवार-परिषद् का निर्माण किया।

हर रविवार को तीसरे पहर इस परिषद् की वैठक होती थी। कभी-कभी इसमे चीखने-चिल्लाने की मात्रा अत्यधिक वढ जाती थी। परन्तु इम वैठक मे अच्छे निर्णय भी होते थे। पारिवारिक खरीदारी समितियां नियमानुसार निर्वाचित होकर भोजन, वस्त्र और आराइश तथा खेल के सामान की खरीदारी का प्रवन्ध करती थी। उपयोगिता समिति नल और विजली के दुरुपयोग पर एक सेंट का जुर्माना लगाती थी। योजना समिति योजना के अनुसार काम की पूर्ति की देखभाल करती थी। जेव खर्च की मात्रा परिषद् से नियत होती थी और दण्ड तथा पुरस्कार देना भी परिषद् का ही काम था। खरीदारी समिति ने एक दुकान तय कर ली थी जहां वह वनयायन से वेसवाल के दस्ताने तक सभी वस्तुएँ थोक भाव पर खरीदती थी, एक दूसरी समिति फलो और तरकारियो के डब्बे सीधे कारखाने से वडी मात्रा मे खरीदती थी।

परिषद् से ही काम की पूर्ति के ठेके नीलाम होते थे। एक वार लिल वहन आठ ही वर्ष की थी कि ४७ सेंट पर मकान के पिछले भाग मे एक लम्वी ऊँची जाली को रगने की वोली उसके नाम छूटी, क्योंकि

पारिश्रमिक की मात्रा उसकी ही सबसे कम थी। नियमानुसार उसे काम मिल गया।

माताजी ने पिताजी से कहा, "लडकी इतनी छोटी है कि अकेले इतना भारी काम न कर सकेगी इसे अकेले यह काम न दो।"

पिताजी ने कहा, "हुश, उसे धन का मूल्य और वचन का पालन सीखना है, उसे अकेले ही काम करने दो।"

लिल को काम पूरा करने मे १० दिन लगे। वह प्रतिदिन स्कूल के पश्चात् काम करती और शनिवार तथा रविवार को दिन भर काम में लगती। उसके हाथो मे फफोले पड गये और कई रात वह इतनी थक गई कि उसे नीद नही आ सकी। पिताजी भी इतने चिंतित हुए कि वह भी नही सोये। परन्तु वह उसे अपने वचन का निर्वाह करने के लिए प्रोत्साहित करते रहे।

जब लिल अपना काम पूरा कर चुकी तो पिताजी के सामने रोती हुई आई और बाली, "काम पूरा हो गया है। आशा है आप सन्तुष्ट हैं। अब मुझे अपने ४७ सेंट मिल सकते हैं?"

पिताजी ने रकम गिनी और बोले, "बेटी, रो मत। तुम अपने पिता को जो कुछ भी समझो, मैंने यह तुम्हारे भले ही के लिए ही किया। अपने तकिये के नीचे तुम्हे मेरे स्नेह का प्रतीक मिलेगा।"

तकिये के नीचे उसे स्केटो की एक सुन्दर जोडी मिली।

• • •

एक दिन पिताजी दो ग्रामोफोन और उनके साथ रिकार्डो के बडल लिये घर पहुँचे। सदर सीढ़ी पर पहुँचते ही उन्होंने हमे इकट्ठा करने के लिए सीटी बजाई और हमने उन्हे सामान उतारने मे सहायता दी।

बोले, "बच्चो, मैं तुम्हारे लिए बहुत बढिया तमाशे की चीज़ लाया हूँ। दो ग्रामोफोन हैं और इन पर लगाने के लिए ये सब प्यारे-से रिकार्ड हैं।"

"परन्तु हमारे पास, पिताजी, एक ग्रामोफोन तो है ही।"

"मैं जानता हूँ, परन्तु वह ग्रामोफोन नीचे के कमरो के लिए ही है, अब ऊपर्ले खण्ड मे दो ग्रामोफोन लगेंगे। कितना आनन्द रहेगा। एक ग्रामोफोन लडकियो के स्नानगृह मे लगेगा, दूसरा लडको के स्नानगृह में। नगर मे हमारा ही ऐसा घर होगा जिसके प्रत्येक स्नानगृह मे ग्रामोफोन बजा करे। और जब तुम नहा रहे होगे, या मजन कर रहे होगे या किसी अन्य काम से स्नानगृह मे होगे तब अपना ग्रामोफोन खोल दोगे।"

ऐन ने पूछा, "ये रिकार्ड कैसे हैं ?"

पिताजी ने कहा, "ये रिकार्ड बडे रोचक हैं। इनमे तुम्हें फ्रान्सीसी और जर्मन भाषा के पाठ सुनने को मिलेंगे। इन पाठो को ध्यानपूर्वक सुनना आवश्यक नहीं है। केवल रिकार्डों को बोलने दो। सुनते-सुनते बहुत-कुछ सीख जाओगे।"

"सच !"

पिताजी ने अब कूटनीति और मनोविज्ञान का मार्ग छोड दिया और बोले

"चुप रहो और सुनो। मैंने इस सामान पर १६० डालर खर्च किये हैं और तुम्हें इससे काम लेना है। यदि ये दोनो ग्रामोफोन प्रात-काल तुम्हारे उठने के समय से नाश्ते के समय तक नही बजते रहेंगे, तो तुम्हे अपनी सफाई मेरे सामने पेश करनी होगी।"

थोडे दिनो ही के भीतर हम कच्ची-पक्की फ्रान्सीसी और जर्मन भाषाएँ बोलने लगे। दस वर्ष तक हमारे माटक्लेयर भवन के ऊपर्ले खण्ड पर ग्रामोफोन अपने पाठ हमे पढाते रहे।

इन्ही दिनो पिताजी रेमिंगटन टाइपराइटर कम्पनी के परामर्श-दाता नियुक्त हुए और काम करते समय शरीर के अगो की क्रिया के आधार पर उन्होने ससार का सबसे तेज टाइपिस्ट तैयार करने मे सहायता दी।

पिताजी ने एक दिन कहा, "कोई भी व्यक्ति तेज टाइप करना सीख सकता है। मैं तो एक बच्चे को भी 'टच सिस्टम' से दो सप्ताह मे टाइप करना सिखा सकता हूँ।"

दूसरे दिन वह एक नया टाइपराइटर ले आये और उसके साथ एक सुनहरा चाकू तथा इगरसोल घडी भी। उन्होने यह सामान खोलकर उसे खाने की मेज पर सजा दिया। सूचना दी कि दो सप्ताह मे जो टाइप करने मे सबसे तेज निकलेगा उसे टाइपराइटर इनाम मे मिलेगा। अवस्था मे छोटे-बडे का खयाल करके अवधि और तेजी का मात्रा-भेद कर दिया जायेगा। इन आधारो पर चाकू और घडी का इनाम बँटेगा।

विल ने पूछा, "डैडी, आप 'टच सिस्टम' से टाइप करना जानते है?"

"मैं सिखाना ही जानता हूँ। दो सप्ताह मे बच्चे तक को सिखा सकता हूँ। कहते हैं कि प्रसिद्ध गवैये कारूसी का सगीत-शिक्षक स्वय नही गा सकता था। तुम्हे अपने प्रश्न का उत्तर मिल गया?"

विल ने कहा, "मालूम तो होता है।"

पिताजी ने कागज पर टाइपराइटर के की-बोर्ड का नक्शा बना लिया था। टाइपराइटर छूने की अनुमति तब तक किसी को नही मिली, जब तक हमने सब अक्षरो को आगे-पीछे रट नही लिया और अक्षरो से उँगलियो का सम्बन्ध हमे याद नही हो गया। याद कराने के लिए हमारी उँगलियाँ रगीन खडिया से रग दी गई। छोटी उँगलियाँ नीली हो गई, तर्जनियाँ लाल कर दी गई और इसी प्रकार बाकी दो-दो उँगलियो को भी अलग अलग-अलग रग मिले। यही रग नक्शे के अक्षरो को भी मिल गये। दो दिन के भीतर रग के अनुसार अपनी उँगलियाँ नक्शे के अक्षरो पर रखना हमने याद कर लिया। अर्नेस्टीन सबके आगे बढ गई और उसे टाइपराइटर पर बैठने का सबसे पहला मौका मिला। उसने बडे आत्म-विश्वास से अपनी कुर्सी टाइपराइटर के

सामने लगा ली और हम सब बड़ी उत्सुकता से उसे घेरकर खड़े हो गये।

वह रुग्रांसी होकर बोली, "डैडी, यह उचित नहीं, आपने तो अक्षरो को सादी टोपियो से छिपा दिया है।"

सिखाने के लिए अब टाइपराइटर के अक्षरो पर सादी टोपी चढाने का चलन हो गया है, परन्तु यह विचार पहली बार पिताजी के मस्तिष्क मे आया था और उन्होंने रेमिंगटन कम्पनी को आर्डर देकर टोपियाँ बनवाई थी।

पिताजी ने कहा, "तुम्हे देखने की आवश्यकता नहीं, केवल कल्पना कर लो कि टाइपराइटर का की-बोर्ड उसी प्रकार रँगा है जिस प्रकार नक्शा रँगा हुआ था और जैसे नक्शे पर उँगलियाँ तुम चलाती थी वैसे ही यहाँ भी चलाओ।"

अर्न ने प्रारम्भ तो धीमा ही किया, परन्तु जब उगलियाँ स्वभावत. एक 'की' से दूसरी की' पर कूदने लगी, तो उसकी टाइपिंग की रफ्तार बढने लगी। पिताजी एक हाथ मे पेंसिल और दूसरे हाथ मे नक्शा लिये उसके पीछे खड़े रहे। जब कभी वह भूल करती तो उसके सिर पर पेंसिल की नोक पड़ती।

"मारिये नही, डैडी, चोट लगती है।"

"चोट देना आवश्यक है। तुम्हारा सिर तुम्हारी उगलियो को भूल करने से बचाये, यही आदेश मैं उसे देता रहता हूँ।"

दो सप्ताह समाप्त होते-होते छ वर्ष से ऊपर के सभी बच्चे और माताजी 'टच सिस्टम' से टाइप करना भली प्रकार सीख गई। पिताजी तो अर्नेस्टीन को राष्ट्रीय प्रतियोगिता मे सम्मिलित करना चाहते थे, यह दिखाने के लिए कि एक छोटी लड़की टाइप करने मे कितनी तेज है। परन्तु माताजी ने उनका प्रस्ताव बात-ही-बात मे रद्द कर दिया।

माताजी ने कहा, "आपका यह विचार जरूरत से ज्यादा अच्छा है। अर्नेस्टीन के स्नायु उत्तेजित हैं और बच्चे अभी से ही काफी

घमण्डी हो गये हैं। प्रतियोगिता मे भरती होना इनके लिए हानिकारक हो सकता है।"

• • •

पिताजी के मतानुसार खाने मे समय की बरबादी रोकना सम्भव नही था। यही धारणा उनकी नित्यकर्म तथा कपडे पहनने के सम्बन्ध मे थी। वह प्रत्येक क्षण का सदुपयोग चाहते थे। अतएव भोजन के समय वह कुछ शिक्षा अवश्य देते रहते थे। उनका मौलिक नियम था कि किसी ऐसे विषय पर बात न हो जो सबकी दिलचस्पी की न हो। और पिताजी को ही यह निर्णय करने का अधिकार था कि कौन विषय सबकी दिलचस्पी का हो सकता है।

एन ने एक बार प्रारम्भ किया, "सच कहूँ, हमारी इतिहास की कक्षा मे एक महामूर्ख लडका है।"

अर्नेस्टीन ने पूछा, "क्या वह आकर्षक भी है ?"

पिताजी बोल पडे, "यह विषय सबकी दिलचस्पी का नही है।" मार्ट ने कहा, "मुझे दिलचस्पी है।" पिताजी ने सूचना दी, "परन्तु मैं तो बिलकुल ऊब जाता हूँ। यदि एन ने इतिहास की कक्षा मे दो सिर का कोई लडका देखा होता तो यह बात सबकी दिलचस्पी की हो सकती थी।"

आम तौर से भोजन प्रारम्भ होने पर माताजी तो मेज के एक सिरे मे भोजन की तश्तरियाँ बाँटा करती और पिताजी दूसरे सिरे पर उस दिन के वार्तालाप का विषय निश्चय करते।

एक दिन आपने सूचना दी, "आज मुझे एक इजीनियर मिला जो हाल ही मे भारत से लौटकर आया है।" हम जानते थे कि जब तक भोजन चलेगा, तब तक भारत के विषय मे मामूली बातें भी उनकी दृष्टि मे सबकी दिलचस्पी की होगी और न्यूजर्सी राज्य के माटक्लेयर की घटनाएँ उनके किसी मतलब की न होगी। हाँ, प्रगति के अध्ययन

से सम्वन्धित कोई भी वात उनकी दृष्टि में असाधारण रूप से सवकी दिलचस्पी की हो सकती थी।

एक दिन भोजन के समय पिताजी ने सूचित किया, "मैं तुम्हे सिखाना चाहता हूँ कि कैसे जवानी ही दहाई सख्याओ का गुणनफल वताया जा सकता है।"

एन ने कहा, "यह कोई सवकी दिलचस्पी की वात नही है।"

पिताजी ने शान्तिपूर्वक आदेश दिया, "जो समझते हैं कि यह वात सवकी दिलचस्पी की नही है वे भोजन की मेज से उठ जायें। इतना वता दूँ कि आज भोजन से वाद मुँह मीठा करने के लिए सेव की वर्फी मिलेगी।"

अव कौन जाता!

पिताजी ने कहा, "जान पडता है कि सभी को दिलचस्पी है। इसलिए मैं वताये देता हूँ कि गुणनफल जवानी कैसे निकाला जाता है।"

वच्चो की समझ को देखते हुए उनकी वात पेचीदा अवश्य थी और २५ तक सव अकों के वर्गफल याद करने आवश्यक थे, परन्तु पिताजी धीरे-धीरे आगे वढे और दो महीनों के भीतर वड़े वच्चो ने यह खेल सीख लिया।

जितनी देर माताजी खाना निकाल-निकालकर तश्तरियो मे सजाती थी, उतनी देर पिताजी जवानी गुणनफल पूछते जाते थे।

"उन्नीस गुणा सत्रह ?"

"तीन सौ तेइस।"

"सही, शावाश, विल।"

"वावन गुणा वावन ?"

"सत्ताइस सौ चार।"

"ठीक, शावाश, वेटी मर्था।"

उन दिनो डैन पाँच वर्ष का था और जैक तीन वर्ष का। एक रात भोजन के समय पिताजी ने डैन से २५ तक के वर्गफल पूछने

प्रारम्भ किये । याद ही करने की बात थी, जबानी सवाल नही लगाने थे ।

पिताजी ने पूछा, "सोलह गुणा सोलह ?"

माताजी के पास ऊँची कुर्सी पर बैठा जैक तुरन्त उत्तर बोल उठा, "दो सौ छप्पन ।"

पहले तो पिताजी झल्लाये क्योकि वह यह समझे कि बडे बच्चे उसे बता रहे हैं ।

वह बोले, "मैं डैन से पूछ रहा हूँ । बडे बच्चो, तुम अपना तमाशा न दिखाओ ।" तब उन्होने प्रश्न दुहराया ।

पिताजी ने धीरे से पूछा, "बेटा जैकी, तुमने क्या कहा था ?"

"दो सौ छप्पन ।"

पिताजी ने एक सिक्का अपनी जेब से निकाला और गम्भीर हो गये ।

"मैं तो बडे बच्चो से ही जबानी हिसाब के प्रश्न पूछता था । क्या तुमने वर्गफल रटे हैं ?"

जैकी समझा नही कि उसने भला किया कि बुरा, परन्तु उसने गरदन हिला दी ।

"यदि बेटा जैकी तुम बता सको कि सत्रह गुणा सत्रह क्या होता है, तो यह सिक्का तुम्हारा ।"

जैक ने कहा, "जरूर, डैडी, दो सौ नवासी ।"

पिताजी ने सिक्का उसे इनाम मे दे दिया और माताजी की ओर बडे गर्व से देखा ।

बोले, "हम इस बच्चे का बेहतर पालन-पोषण करेंगे ।"

० ० ०

माटक्लेयर मे हमारा परिवार सबसे बडा था । हमारे बाद ब्रूस परिवार का नम्बर आता था जिसमे आठ बच्चे थे । माताजी और श्रीमती ब्रूस मे घनिष्ठ मित्रता थी । एक बार किसी राष्ट्रीय संतति-संयम संस्था से सम्बन्धित न्यूयार्क की एक महिला वहाँ एक शाखा खोलने के लिए

आई तो किसी ने मजाक में उनसे श्रीमती ब्रूस का जिक्र कर दिया।

माताजी की सखी ने श्रीमती मेवेन से कहा, "आपसे सहयोग करने मे मुझे बहुत प्रसन्नता होती, परन्तु आप देखती हैं कि मेरे स्वयं बहुत से बच्चे हैं। अतएव माटक्लेयर मे सन्तति-सयम के प्रचार का नेतृत्व करने योग्य मैं न हो सकूंगी। हां, इस योग्य मैं एक अन्य महिला को जानती हूं। उनका घर यथेष्ट बडा है जहां गोष्ठियां सम्भव होगी। आप श्रीमती फ्रैंक गिलब्रेथ से मिलिये। उन्हे सार्वजनिक सेवा मे रुचि है और वह ऊंची शिक्षा भी प्राप्त कर चुकी हैं।"

जब यह महिला माताजी से मिलीं और उनसे कहा कि आप माट-क्लेयर में सन्तति-सयम का प्रचार करें, तो माताजी ने निश्चय किया कि इस मज़ाक मे पिताजी को सम्मिलित कर लेना चाहिए और उन्हें बुला लिया।

जब माताजी ने इन महिला को पिताजी का परिचय दिया तो पिताजी बोले, "आप एक उदात्त लक्ष्य की सेवा मे लगी हैं। मुझे आपसे मिलकर बहुत खुशी हुई।" फिर बडे कमरे में पहुंचकर उन्होंने हम सब को इकट्ठा करने की सीटी बजाई। सीटी बजते ही चारों ओर से भागते हुए कदमो की गूंज आने लगी। दरवाजे फटाफट बन्द हुए। सीढियो से फिसलने की नौबत आ गई। कमरा भर गया और हम बगल के बैठके मे भरने लगे।

पिताजी ने अपनी स्टाप-वाच जेब मे रखते हुए कहा, "नौ सेकण्ड ही लगे। रिकार्ड से तीन सेकण्ड कम।"

श्रीमती मेवेन बोली, "धन्य हैं ये देवदूत! ये हैं कौन? शीघ्र बताइये। यह कोई स्कूल है क्या? नही...ये तो आप दोनों के चित्र जान पडते हैं।" माताजी की ओर देखकर बोलीं, "आप कितनी बेचारी हैं।" और इतना कहते-कहते वह चल दी।

हम अपनी गर्मियाँ मसाचुसेट्स के नाटुकेट नगर मे बिताते थे। वहाँ पिताजी ने एक टुटही कुटी तथा दो प्रकाशगृह मोल लिये थे और प्रकाशगृहो को इस प्रकार हटा दिया था कि दोनो कुटी के दो ओर हो गये थे। एक प्रकाशगृह को वह और माताजी दफ्तर और छोटे बच्चो के शयनगृह के काम मे लाते थे। दूसरे मे तीन बडे बच्चों के सोने का प्रबन्ध था। वह कहते थे कि माताजी को देखकर उन्हे एक बुढिया की याद आती थी जो ऐसे ही घर मे रहती थी। इसलिए उन्होने कुटी का नाम 'शू' (जूता) रख दिया था।

नाटुकेट काड अन्तरीप के सिरे पर एक द्वीप पर स्थित है। जब हमने वहाँ जाना प्रारम्भ किया तब टापू तक मोटर ले जाना मना था। इसलिए हम अपनी पियर्स-ऐरो मोटर को मसाचुसेट्स राज्य के न्यू वेडफोर्ड नगर के एक गराज मे छोड देते थे। कुछ समय पश्चात् मोटर ले जाना वर्जित नही रहा, तो हम कार को 'गे हेड' या 'सकटी' जहाज पर ले जाते थे जो द्वीप तक चला करते थे।

जहाज हो या मोटर, सबसे बडी समस्या मर्था की कैनरी पक्षियो की रहनी, जिन्हे उसने अपने सण्डे स्कूल मे अच्छा पाठ पढ़ने पर इनाम मे पाया था। पिताजी के अतिरिक्त ये पक्षी हम सबको प्यारे थे। वह कहते थे कि इनकी गन्ध इतनी बुरी होती है कि सैर का मजा किरकिरा हो जाता है।

एक बार यात्रा मे जहाज के पिछले भाग पर फ्रेड पिंजडा लिये खडा था, और पिताजी कार को जहाज पर चढा रहे थे। किसी प्रकार तार की खिडकी खुल गई और चिडियाँ उड गईं। पहले वे किनारे पर पडे लट्ठो पर बैठी, फिर फुदककर एक गोदाम की छत पर पहुँच गईं। जब पिताजी मोटर को ठिकाने से लगाकर जहाज की छत पर आये तो उन्होने तीन छोटे बच्चो को सिसकते देखा।

उन्होंने इतना शोर मचाया कि कप्तान ने सुन लिया और पिताजी के निकट पहुँचकर उसने पूछा

"गिलग्रेय साहब, अब क्या परेशानी है ?"

पिताजी ने देखा कैनरी पक्षियो से पीछा छुडाने का अच्छा मौका है। बोले, "कुछ नहीं, कप्तान साहब आप जहाज जब चाहें छोड दें।"

कप्तान ने हठपूर्वक कहा, "कोई मुझे जहाज छोडने का आदेश नही दे सकता।" वह फ्रेड की ओर झुककर बोला, "क्यों बेटा, क्या बात है ?"

फ्रेड चिल्लाया, "मेरी कैनरियाँ उड गई।"

कप्तान बोला, "मैं बच्चो का रोना सहन नही कर सकता।" और अपने स्थान पर पहुँचकर आवश्यक आदेश देने लगा।

चार मल्लाह केकड़ो के जाल लेकर गोदाम की छत पर चढ गये, तो चिड़ियाँ छत से तटवर्ती घाट पर पहुँच गईं, वहाँ से उडीं तो जहाज के रस्सो पर जा टिकी, पीछा किये जाने पर गोदाम की छत पर फिर जा पहुँची, और अन्तत गायब हो गई। कप्तान ने हार मानकर कहा

"गिलग्रेय साहब, अफसोस है, जान पड़ता है कि कनरियों को लिये विना ही जहाज छोडना पडेगा।"

पिताजी प्रसन्नतापूर्वक बोले, "आपकी बडी मेहरबानी है।"

अगले दिन जब हम अपनी कुटी में बस गये, तो कप्तान से फ्रेड के नाम हमे एक डिब्बा मिला। डिब्बे के ऊपर कुछ छेद बने थे।

पिताजी उदास होकर बोले, "बताने की जरूरत नहीं। गन्ध से ही मुझे पता लग गया है।" मिठाई हमे कैनरी से अधिक प्रिय थी।

पिताजी ने नान्टुकेट पहुँचने के पहले हमें वचन दे दिया था कि यहाँ कोई पढाई-लिखाई न होगी, भाषा के रिकार्ड नहीं बजेंगे, पाठ्य-पुस्तकें नही होंगी। उन्होने अपने वचन का पालन किया, यद्यपि हमे पता लग गया कि हमारी अनुपस्थिति मे उन्होंने हमे परोक्ष रूप मे पढाने की व्यवस्था कर ली थी।

उदाहरण के लिए, एक दिन तार के सकेतो की बात आई जिसे

मोर्स कोड कहते हैं, एक दिन दोपहर को भोजन के समय आपने सूचना दी

"अध्ययन बिना ही तुम यह कोड सीख जाओगे।"

हमने कहा कि जब तक स्कूल न खुले तब तक हम कुछ नही सीखेंगे, कोड भी नही।

पिताजी ने कहा, "मेहनत की कोई बात ही नही। जो पहले सीख जायेंगे उन्हें इनाम मिलेंगे। जो नही सीखेंगे, उन्हें न सीखने का अफसोस होगा।"

भोजन के पश्चात् काले रग का एक डिब्बा और छोटा-सा ब्रश लेकर वह शौचालय मे घुस गये और उसे भीतर से कसकर बन्द कर लिया।

शौचालय की बैठक के सामने ही उन्होने वर्णमाला के सामने कोड-चिह्न रग से बना दिये। बैठो तो सामने ही दो फुट के फासले पर तुम्हे कोड के चिह्न दिखाई दें। आँखें बन्द करने पर ही इन चिह्नो से मुक्ति सम्भव थी।

अगले तीन दिन तक वह अपने ब्रश और पेंट से काम लेते रहे। कुटी के प्रत्येक कमरे मे जहाँ भी उन्हे सफेदी पुती मिली, शयन-गृहो की छतो के नीचे भी, मोर्स कोड के चिह्न उन्होने रग दिये। बरामदे और भोजन-गृह मे कोड के गुप्त सन्देश भी उन्होने पेंट कर दिये।

हमने उनसे पूछा, "डैडी, ये सन्देश कहते क्या हैं ?"

भेद की मुद्रा मे बोले, "बहुत-सी बातें हैं, भेद की और हास्य की भी।"

हमने कागज के टुकडो पर मोर्स कोड के चिह्नो की नकल कर ली। फिर इन कागज की सहायता से पिताजी द्वारा रग से लिखे गये सदेशो का अनुवाद करने मे हम जुट गये। पिताजी चिह्न अकित करने मे जुटे रहे, मानो उन्हे हमारा ध्यान ही न था। परन्तु उन्होने कोई भूल नहीं की।

एक सन्देश के मकेत-चिह्नों का अर्थ लगाया तो हमारी भूलें हमारे उपहास का कारण बनी।

एन बोली, "पिताजी के श्लेष भी कितने बेढब हैं। यह वाक्य तो देखो। इसी को तो पिताजी हास्य की बात कहते हैं—वी इट एवर सो वबुल देर्स नो प्लेस लाइक कॉव (आशय यह था कि कब्र से बढकर कोई जगह नही, वह कितनी भी मामूली हो। परन्तु यदि मोटे अक्षरों मे छपे तीन शब्दो के रूप होते वि, गम्बुल और टोद तो वाक्य निरर्थक न होता।)

हमने एक वाक्य और टटोल लिया, "ह्वेन इगोराद्म इज ब्लिस टिज फाली टु वि ह्वाइट (आशय यह था कि यदि मूढता से आनन्द मिलता हो तो बुद्धिमान होना मूर्खता है। परन्तु यदि मोटे अक्षरो में छपे दो शब्दो के रूप होते इग्नोरम और वाइज तो वाक्य निरर्थक न होता।)

एक और था, "टू मैगाट्स वर फाइटिंग इन डेड अर्नेस्ट। "परन्तु माताजी ने पिताजी से यह वाक्य मिटवा दिया।

पिताजी झेंपते हुए हँसे और बोले, "अच्छी बात है, गालकिन, परन्तु वाक्य का प्रयोजन तो सिद्ध हो ही गया है।"

इसके बाद प्राय प्रतिदिन पिताजी एक कागज के टुकडे पर मोर्स कोड मे अकित सन्देश भोजन की मेज पर छोड़ देते। यह सन्देश इस प्रकार होता, "जो सबसे पहले इसे पढ ले वह मेरे कमरे की खूँटी पर टँगे मेरे लिनेन के जाँघिये की दाहिनी जेब टटोले।"

जाँघिए की जेब मे इनाम की कोई वस्तु होती—कोई मिठाई होती, या पच्चीस सेंट का सिक्का होता, या कूपन होता जिसे लेकर चाकलेट का शरबत पिया जा सकता था।

पिताजी की योजना के अनुसार हम लोग कुछ ही सप्ताहो के भीतर मोर्स कोड थोडा बहुत जान गये। इतना जान गये कि मक्खन की प्लेट पर काँटे बजाकर हम एक-दूसरे को अपने सन्देश देने लगे।

जब हम एक दर्जन भाई-बहन इस प्रकार अपने-अपने सन्देश प्रसारित करने लगते तो हमारा यह सारा मिला-जुला शोर असहनीय हो जाता था।

दीवारो की लिखाई हमे कोड सिखाने में इतनी सफल हुई कि उसी ढग पर उन्होने हमे ज्योतिप सिखाने का निश्चय किया। सबसे पहले उन्हें हममे आवश्यक जिज्ञासा पैदा करनी थी। इसलिए कैमरे के स्टैड पर उन्होने एक दूरबीन लगा दी। वह इसे रात के समय सहन मे लगा देते और तारो की ओर देखते। हम उन्हे घेर लेते और मांग करते कि हमे भी दूरबीन से देखने दिया जाये।

वह कहते, "मुझे तग न करो। बच्चो, मुझे जान पडता है कि दोनो तारे एक-दूसरे से लड जायेंगे। नही, नही, ये कितने निकट हैं।"

हम हठ करते, "डैडी, हमे देखने का मौका दीजिये।"

अन्तत. विवशता की मुद्रा बनाये वह हमें दूरबीन से देखने का मौका देते। शनि के चारो ओर का घेरा हमने देख लिया। बृहस्पति के तीनो चांद देख लिये और अपने चांद के ज्वालामुखी भी हमे दिखाई दे गये।

तत्पश्चात् नक्षत्रो, नीहारिकाओ और सूर्यग्रहणो के लगभग सौ फोटोग्राफ उन्होने फर्श के निकट दीवार पर टांग दिये। उन्होने बताया कि यदि ये चित्र ऊपर यथास्थान लगते तो छोटे बच्चे उनसे लाभान्वित न हो पाते।

दीवार मे कुछ जगह बच रही तो पिताजी के मस्तिष्क मे उसे भरने के लिए यथेष्ट सामग्री थी। उन्होने ग्राफ पेपर का एक बडा-सा ताव लगा दिया जिस पर एक हजार लकीरें ऊपर से नीचे और दूसरी एक हजार लकीरें दांये से बांये एक दूसरे को काटती थी। यो उसमे दस लाख छोटे-छोटे वर्ग बन गये।

पिताजी बोले, "तुम अकसर लोगो से दस लाख की बात सुनते हो, बहुत कम लोगो ने दस लाख चीजो को एक ही साथ देखा होगा। यदि

किसी के पास दस लाख डालर हैं तो जितने यहाँ वर्ग हैं, उतने ही उसके पास डालर हैं।"

विल ने पूछा, "डैडी, आपके पास दस लाख डालर हैं ?"

पिताजी कुछ उदासी से बोले, "नहीं बेटा, मेरे पास दस लाख बच्चे हैं। किसी-न-किसी समय हमे दो निधियो मे से एक का चुनाव करना होता है।"

• • •

पिताजी और माताजी दोनो प्रारम्भ से ही बडे परिवार के इच्छुक थे और कदाचित् ही कोई ऐसा वर्ष खाली गया हो जब उन्हें एक शिशु न प्राप्त हुआ हो। अपने विवाह के दिन ही दोनों ने एक दर्जन की योजना पक्की कर ली थी और उतने ही मिले—छ लडके और उतनी ही लडकियाँ। परन्तु इतने बच्चे होने मे १७ वर्ष लगे। पिताजी को कुछ खेद रहा कि जुडिया या अधिक बच्चे एक साथ नही जन्मे। उन्हे इस बात मे बिलकुल सन्देह नहीं था कि बडे परिवार के पालन मे सबसे अधिक खूबी तभी रहती है जब किसी प्रकार एक साथ बच्चो का जन्म हो जाये।

अन्तिम बच्चे के जन्म के पहले माताजी कभी प्रजनन के लिए अस्पताल नही गईं। बारहवी सतति जेन को जून १९२२ मे जन्म लेना था जब हमे नाटुकेट मे रहना था। माताजी ने प्रण कर लिया था कि ग्रीष्म ऋतु मे उनके किसी बच्चे का जन्म न होगा, क्योंकि वहाँ का प्रवन्ध दकियानूसी था। अतएव वह नाटुकेट अस्पताल मे भरती होने के लिए राजी हो गईं।

माताजी दस दिन तक अस्पताल मे रही, तो पिताजी बहुत दुखी रहे।

अस्पताल मे माताजी से मिलने गये तो बोले, "मैं चाहता हूँ कि जब तक यथेष्ट पुष्ट न हो जाओ तब तक यही ठहरो।" साथ ही यह भी

कह गये, "जब घर आओगी तभी मेरा मन लगेगा। तुम्हारी गैरहाजिरी मे मुझसे कोई काम पूरा नही होता।"

माताजी को अस्पताल का प्रबन्ध बहुत अच्छा लगा। बोली, "बारहवें शिशु के जन्म तक मुझे इस अनुभव के लिए रुकना पडा कि प्रजनन के लिए अस्पताल घर के मुकाबले में कही अधिक अच्छा रहता है।"

जब पिताजी गोद-भरी माताजी के साथ घर पहुँचे, तो अवस्था के हिसाब से उन्होने हम सबको एक कतार मे खडा किया। पालने मे पडी जेन सबके अन्त मे थी।

फिर खुद सैनिक अफसर की भाँति कतार का मुआयना करके गर्व-पूर्वक बोले, "मैं कह सकता हूँ कि यह भीड देखने मे बुरी नही है। लिली, लो इन्हे सँभालो। अब पूर्ण विराम लगता है। तुमने यह सोच लिया है न कि अगले वर्ष तुम्हे इस पालने की जरूरत नही होगी ?"

माताजी ने कहा, "मैं भी यही सोच रही थी। अब तो यह फालतू ही होगा।"

पिताजी ने उनकी कमर मे बाँह डाल दी और माताजी की आँखो मे आँसू आ गये।

० ० ०

एन के हाईस्कूल की सर्वोच्च कक्षा मे पहुँचने के समय तक पिताजी की यह धारणा पुष्ट हो गई कि होठो मे लाली लगानेवाली और छोटे मोजे पहननेवाली उस जमाने की लडकियाँ तबाही के ही मार्ग पर जाती हैं।

वह पूछा करते, "आजकल की लडकियो को हो क्या गया है ? वे जानती नही कि उनकी क्या गति होगी जो महीन रेशम के मोजे और घुटने के ऊपर तक छोटा साया पहने घूमती फिरती हैं ?"

जब हमारी बडी बहनें वयस्क होकर समवयस्क लडको से मिलने

लगी तो पिताजी उनके साथ रहने की हठ करने लगे। यदि वह स्वयं साथ न जा सकते तो अपनी जगह छोटे भाई फ्रैंक या बिल को उनके साथ कर देते।

अर्नेस्टीन ने एक दिन पिताजी से कहा, "जब हमें किसी मित्र से मिलना होता है तो हमारे साथ किसी का होना बुरा लगता ही है। तिस पर मोटर की पिछली सीट पर छोटा भाई ऐंठता और हँसता साथ चले, तब तो असहनीय हो जाता है। पता नहीं, स्कूल के लडके हमें क्यो तंग करते हैं।"

पिताजी ने कहा, "तुम्हे पता नही भी है तो मुझे अवश्य ही है। इसीलिए तो हम साथ रहते हैं।"

बहनो ने माताजी से शिकायत की। एन ने कहा, "पिताजी की भाँति सन्देहशील होने पर हमारा तो सर्वनाश है, इसके अर्थ हैं यौवन का दुरुपयोग।" परन्तु माताजी ने पिताजी का ही पक्ष लिया।

जब कही नाच होता तो दीवार के सहारे पिताजी अकेले बैठ जाते, वाद्य यन्त्रो से बहुत दूर और अपने कागज देखते रहते। पहले तो किसी ने उनकी ओर ध्यान नही दिया। परन्तु कुछ महीनो पश्चात् वह नाचघर के स्थायी सदस्य मान लिये गये और लडके-लडकियाँ, अपनी व्यवस्था के प्रतिकूल, उन्हें खिलाने-पिलाने लगीं। और पिताजी किसी भी मडली मे हो, आकर्षक होने मे वह चूके नही।

एक रात एन ने देखा कि एक भीड पिताजी को घेरे हुए है, सो उसने अपनी बहन अर्नेस्टीन के कान मे कहा, "देखती नहीं, क्या हो रहा है ? पिताजी तो हाई स्कूल के नाचघर के बाँके बन गये हैं।"

अगले दिन रविवार को हम सब भोजन के लिए इकट्ठे हुए तो पिताजी ने हमारे साथ न रहने का निश्चय प्रकट किया। अपनी लड-कियो से बोले, "अभी तक मैं घाव की तरह तुम्हारे साथ रहा। अब यह काम असहनीय हो गया है। इन लोगों ने मुझे अपना तमाशा बना लिया है। लडके मेरी पीठ थपथपाते हैं और लडकियाँ मेरे गाल नोच-

कर मुझसे अपने साथ नाचने का प्रस्ताव करती हैं। मुझे इन्होंने एक खुरपेंची परन्तु निर्दोष मूर्ख मान रखा है।"

फिर माताजी को सम्बोधित करके बोले, "मालकिन, तुम्हारा कोई कसूर नही, परन्तु हमारी मुसीबत बहुत कम हो जाती, यदि हमारे पुत्र ही पुत्र होते।"

कोई काम करने के लिए हाथो को किस ढग से चलाना सबसे अधिक उचित होता है—इस विशेष ज्ञान का प्रचार करने के लिए वह चित्र भी तैयार कराया करते थे। इन चित्रो और उनके साथ के लेखो के कारण कभी-कभी हमे अपने मित्रों के बीच या विद्यालय मे स्वरक्षा के लिए विवश होना पडता था, विशेष रूप से तब जब हमारे अध्यापक इन लेखों से हमारे स्नानगृह मे लगे हुए चार्टो, भाषा के रिकार्डों और पारिवारिक परिषद के निर्णयो के उद्धरण सुनाते। हम लजाते और घबराते और भगवान् से मनाते कि पिताजी जूते बेचते होते और हमसे भिन्न उनके एक-दो ही बच्चे होते तो हम अधिक भाग्यशाली होते।

चलचित्र का एक छायाकार नाटुकेट आकर हम लोगो से मिला और उसने चलचित्र बनाने की एक योजना पिताजी के सामने रखी। छायाकार पर विश्वास करके वह राजी भी हो गये। कुटी के बाहर समुद्र-तट के निकट उगी हुई घास पर खाने की मेज और कुर्सियां लगा दी गईं, क्योंकि छायाकार ने कहा कि वहाँ प्रकाश की समुचित सुविधा उसे मिलेगी। मक्खियों के बीच हमने भोजन किया और छायाकार हमारा चलचित्र लेता रहा। सिनेमाघरो मे जिस शीर्षक से चित्र प्रदर्शित किया गया वह था ' समय का सदुपयोग करनेवाले फ्रैंक बी० गिलब्रेथ, सपरिवार भोजन करते हुए। जितना समय हमे भोजन मे लगा उसका दसवाँ भाग चलचित्र के प्रदर्शन मे लगा। इसका प्रभाव दर्शकों पर इस प्रकार पडा कि मेज पर हमने दौड लगाई, चारो ओर तश्तरियो को तेजी से इधर-उधर किया, भेडियो के समान भोजन चट किया और ४५ सेकड के भीतर मेज से भाग भी गये। चित्र की पृष्ठ-

भूमि मे घर के कपडे सूख रहे थे, जिनमे बहुत-सी बच्चो की तिकोनियाँ भी थी। यह पृष्ठभूमि भी छायाकार के मतलब की थी। नाटुकेट के ड्रीमलैंड थियेटर मे हमने यह चलचित्र देखा और हास्य-नाटक से अधिक हँसी के फव्वारे छूटते देखे। प्रत्येक दर्शक घूमकर हमारी ओर देखता था।

हम दोहराते रहे, "हे भगवान्, यह चलचित्र माटक्लेयर मे न दिखाया जाये, नहीं तो हमारा स्कूल जाना असम्भव हो जायेगा।"

हमारे यहाँ कभी-कभी मेहमान भोजन करने बैठ जाते। पिताजी का सिद्धान्त था कि मेहमान तभी सुखी होते हैं जब उनके साथ परिवार के सदस्यो-जैसा बर्ताव हो। माताजी का कहना था और अन्ततः पिताजी को भी उनसे सहमत होना पडा, कि वही मेहमान हमारे यहाँ घर जैसे सुख का अनुभव कर सकता है जिसके एक दर्जन संतानें हों और जो स्वयं भी समय के सदुपयोग के विशेषज्ञ हो।

पिताजी के आदर-सत्कार मे बनावट और उलझन का अभाव रहता और हम सब उनका अनुकरण करते।

एक बार कोलम्बिया विश्वविद्यालय की एक प्राध्यापिका हमारी मेहमान हुईं। खाने पर वह देर से पहुँचीं, तो हम लोगो का साथ देने के लिए वह भोजन करने मे शीघ्रता करने लगी; फ्रेड ने उनसे कह दिया, "सुअर की भाँति चकोतरा न चबाइये। यदि हम जल्दी भोजन समाप्त कर लेंगे तो आपकी प्रतीक्षा करते रहेंगे।"

किसी अन्य मेहमान से डैन एक बार कह बैठा, "मुझे अफ़सोस है कि जब तक आप सेम की तश्तरी समाप्त न कर लेंगी, तब तक फल और मिठाई आपके पास नहीं पहुँचेगी। पिताजी इस बात की अनुमति नहीं देते। वह कहा करते हैं, जितना प्रतिदिन हमारे घर में फिक जाता है उतने मे बेलजियम में एक परिवार सप्ताह भर गुजर करता है।"

एक बार बात काटकर लिल बोल उठी, "पिताजी, फ्रेमनविल साहब जो-कुछ कह रहे हैं, क्या वह आपकी समझ मे सबकी दिलचस्पी की बात है?"

माता-पिता, अधिकाश मेहमान भी, हँसकर हमारी इन बदतमीजियो को टाल देते थे।

कभी-कभी भोजन के पश्चात् पिताजी का पेट गडगडाता और जब कोई मेहमान न होता, तो हम उन्हे चिढाते। इसलिए अगली बार पेट गडगडाने पर वह घबराहट का दिखावा करते और हममे से किसी की ओर देखते। एक बार बिल की ओर देखकर बोले, "बिल माफ करो, इस समय मेरा गाने का कोई इरादा नही है।"

एक दिन रसेल एलन नामक एक नौजवान इजीनियर रात के समय हम लोगो के साथ भोजन करने आये। मेज के सामने ऊँची कुर्सी पर बैठे जैक ने भोजन करते-करते इतनी जोर की डकार ली कि आश्चर्य से सबने अकस्मात् बात बन्द कर दी। सबसे चकित तो जैक था ही। घबराहट का उसने भी दिखावा किया और अपने मेहमान की तरफ हाथ बढाकर पिताजी की तरह बोला. "एलन साहब, माफ कीजिये, इस समय मेरा इरादा गाने का नही है।"

जब मेहमान उपस्थित न होते तो पिताजी हमारी भोजन-क्रिया के अनुशासन मे लगते। जब कभी उनके निकट बैठा हुआ कोई बच्चा जरूरत से बडा कौर मुँह में रखता तो पिताजी अपनी मुडी उँगली की ठोकर दोषी के सिर पर जमाते।

माताजी विरोध करती, "फ्रैंक, सिर पर न मारा करो।"

पिताजी की उँगलियाँ भी चोट से दुखती। उन्हे रगडकर कहते, "ठीक कहती हो। पीटने के लिए शरीर के मुलायम भाग भी तो हैं।"

यदि दोषी मेज के दूसरे छोर पर माताजी के निकट हुआ और पिताजी का हाथ वहाँ तक न पहुँच सका, तो खोपडी के दण्ड के लिए वह सकेत करते। माताजी ने कभी हम पर सख्ती नही की और न कभी धमकी ही दी। अतएव वह पिताजी के सकेत की परवाह न करतीं। तब पिताजी दोषी के निकट बैठे बच्चे की ओर देखते और दण्ड देने का आदेश देते। कहते, "मेरे आशीर्वाद के साथ।"

किसी की कोहनी यदि मेज पर रखी होती तो उसकी कलाई पकड़कर उसका हाथ उठाकर इतने जोर से मेज पर पटक दिया जाता कि तश्तरियाँ नाच उठती।

खोपड़ी और कोहनी मे चोट पहुँचाने का परिवार मे चलन-जैसा हो गया। केवल माताजी इससे अलग रहती। छोटे-से-छोटे बच्चे को इस प्रकार का दण्ड देना आता था और बदला पाने की उसे चिन्ता न रहती थी। क्योंकि यह सब तो पिताजी के आदेश से ही होता था। भोजन के दौरान मे बराबर हम एक-दूसरे को, अपने मौके के लिए, ताकते रहते। पिताजी को अपनी कोहनी की फिक्र रहती, परन्तु कभी-कभी वह भी भूल जाते थे। किसी की कोहनी पटकने पर दण्ड देनेवाला गौरवान्वित होता था। अगर पिताजी की कोहनी पटकने का मौका किसी को मिल गया, तब समझ लीजिये उसने सब पर बाजी मार ली।

जब पिताजी इस प्रकार पकड़ जाते तो बहुत परेशानी दिखाते। ऐसा जताते मानो उन्हे बहुत पीड़ा हुई हो। दांत भींचकर सी-सी करते, कोहनी रगड़ते और कहते कि अब भोजन के लिए उनकी बाँह बेकार हो गई है।

घर मे पिताजी का दफ्तर बच्चो से भरा रहता और जब कभी निपुणता के विशेषज्ञ की हैसियत से समुचित फीस लेकर वह किसी कारखाने का निरीक्षण करने जाते तो अक्सर हाथ मे पेंसिलें और नोटबुकें लिये हम उनके पीछे लग लेते। इसलिए जब कभी हम वर्ष मे एक-दो बार उनके निरीक्षण का अभिनय करते तो पिताजी बहुत खुश होते और ऐसे अवसरो पर माता-पिता दोनो छुट्टी-सी मनाते।

फ्रैंक अपनी कमर पर दो तकिये बांधे और अपने सिर के पीछे चटाई की हैट रखे पिताजी का अभिनय इस प्रकार करता कि हम उनके नेतृत्व मे कारखाने का निरीक्षण कर रहे है। सीने पर रुई की पोटलियां और सिर पर फूलदार हैट रखकर अर्नेस्टीन माताजी की नकल करती। एन कारखाने के मैनेजर का और बाकी बच्चे स्वाभाविक अभिनय करते।

एक-दूसरे के पीछे और सटे हम दो वार कमरे का चक्कर लगाते, जैसे हम कारखाने मे घुस रहे हो। मैनेजर के रूप में एन पिताजी की भूमिका मे फ्रैंक का स्वागत करती और उससे हाथ मिलाती।

मैनेजर की भूमिका मे एन कहती, "वडे दिन की वधाई। देखिये आपके पीछे कौन लोग अन्दर आये है। ये आपके वच्चे हैं? आप निरीक्षण करने आये हैं या वच्चो को सैर कराने?"

माताजी की भूमिका मे अर्नेस्टीन गरम होकर कहती, "ये वच्चे मेरे हैं, और हम वच्चो को सैर कराने नही लाये है।"

पिताजी की भूमिका मे फ्रैंक मुस्कराकर कहता, "आपको मेरे ये छोटे मगोल पसन्द हैं? दर्जन के हिसाव से सस्ते पडते हैं, जानते हैं आप? रखूँ सबको आपके पास?"

एन कहती, "इन्हे आप घर ही मे रखिये। इनसे कहिये कि हमारी मशीनो पर कूद-फाँद न करें।"

इस अभिनय मे कदाचित् ही कभी कुछ फर्क हुआ हो।

तमाशे के पश्चात् पिताजी जोस और वोस दो चारणो का अभिनय स्वय ही करते। अपने निचले होठ को बाहर निकालकर और हाथो को घुटनों तक लटकाकर वह कमरे मे चक्कर लगाते।

देहाती अग्रेज़ी मे उनका अभिनय होता। जोंस की भूमिका मे वह वोस से पूछते, "जानते हो तरवूज़ मे पानी कहाँ से आता है?"

और वोस की भूमिका मे जोस को उत्तर देते, "मैं नही जानता, तुम तरवूज़ मे पानी किस तरह पहुँचाते हो?"

"और तुम इन्हें वसत मे क्यो बोते हो?" इतना कहकर पिताजी अपने घुटने एक-दूसरे से लडाते, अपने मुख के सामने दोनो वाँहों को जोडते और हास्य की मुद्रा मे "याक! याक!" कहते-कहते अपना सिर दाहिने-वाँये मटकाते।

तमाशा समाप्त होने पर पिताजी अपनी घडी देखते और डाँटने लगते, "सोने का समय न जाने कव का हो चुका है। क्यो मेरे बनाये

नियमो का पालन नही किया जाता ? बडे बच्चो को एक घण्टे पहले सो जाना चाहिए था और छोटो को तीन घण्टे पहले।"

माताजी की बाँह मे हाथ डालकर कहते, "अभिनय करते-करते मेरा गला मेंढक के समान पड गया है। मीठे ठडे चाकलेट और आइस-क्रीम सोडा से ही तृप्ति सभव है। बच्चो, तुम सो रहो। मालकिन, हम-तुम दुकान चलें। गले के कारण झपकी आना भी असम्भव है।"

हम चिल्ला उठते, "पिताजी, हमे भी ले चलिये। हमारे गले भी मेढक जैसे पड गये हैं, हम एक झपकी भी सोने के लिए तैयार नही।"

अनिच्छा का दिखावा करके वह अन्तत हमे अपने साथ ले जाने के लिए राजी हो जाते। वह बुडबुडाकर कहते, "१५-१५ सेंट की तेरह बोतलें सोडे की। भविष्य सामने साफ दिखाई दे रहा है। कुछ आगे बढने पर निर्धन-गृह की शरण लेनी होगी।"

• • •

हम बच्चो को पता न था, परन्तु वर्षों मे पिताजी को हृदय का रोग था और बडी लडकियो के कॉलेज जाने की अवस्था तक पहुँचते ही डा० बर्टन ने उनसे कह दिया कि मृत्यु निकट आ गई है। हमें जान पडा कि पिताजी दुबले हो गये थे। २५ वर्ष मे पहली बार वे ढाई मन मे कम हो गये थे। वह हँसते थे कि उन्हे अपने पैर फिर दिखलाई देना कैसा अजीब-सा लगता था। उनके हाथ कुछ काँपने लगे थे और उनके चेहरे का रग कुछ पीला पट गया था। कभी-कभी जब बडे लडको के साथ बेसबाल खेलते या बाब तथा जेम के साथ फर्श पर लोट लगाते तो अकस्मात् यह कहकर रुक जाते कि बहुत हो चुका, अब थक गया हूँ। जब उठकर चलते तो उनके पैर कुछ लडखड़ाते।

वह ५५ वर्ष के ही थे कि उनमें बुढापे के लक्षण प्रत्यक्ष होने लगे। निस्सदेह हमे यह कभी पता न था कि मौत से पहले ही वह मरने की तैयारी कर चुके होंगे।

वाव और जेन के जन्म के पहले ही उन्हे अपने हृदय की खरा
का पता लग गया था। उनकी माताजी से इस विपय पर वात
हुई, वैधव्य की सभावना पर भी चर्चा रही।

पिताजी के मन की वात माताजी जानती थी। उन्होने पतिदेव
कहा, "बारह बच्चो से उतनी ही तकलीफ होती है जितनी दम से
सकती है। अतएव मुझे तो अपने निश्चय की पूर्ति करनी है।"

हृदय रोग भी उनके इस निश्चय का एक कारण था कि घर
सगठन निपुणता के आधार पर हो, जिससे निगरानी विना भी उस
सचालन हो सके और बडे अपने से छोटो का दायित्व-भार सँभाल सकें
वह जानते थे कि माताजी पर दायित्व का भार पडना है और वह यथ
सम्भव यह भार हलका करना चाहते थे।

डॉ० वर्टन ने पिताजी से कहा, "अन्त कल हो या छ. महीने वाद
काम वन्द करके आराम करो तो अधिक-से-अधिक एक वर्ष और।"

पिताजी ने कहा, "यह न समझो कि मैं घवरा जाऊँगा, मैं अत्यधि
व्यस्त हूँ।"

घर जाकर वोस्टन के मस्तिष्क विशेषज्ञ को उन्होंने पत्र लिख
जिसमे हारवर्ड विश्वविद्यालय को अपना मस्तिष्क दान करने का वच
दिया। इसके पश्चात् मृत्यु का विचार एकदम मन के वाहर कर दिया
आठ महीने पश्चात् विश्व शक्ति सम्मेलन और अन्तर्राष्ट्रीय प्रवन्ध सम्मे
लन क्रमश इंगलिस्तान और चेकोस्लोवाकिया मे होने थे। पिताजी
दोनो में वोलने का निमन्त्रण स्वीकार किया। योरप-यात्रा के ती
दिन पहले उनकी मृत्यु हुई।

न्यूयार्क जानेवाली गाडी की प्रतीक्षा करते करते उन्होंने स्टेशन
माताजी को फोन किया। बातचीत के बीच ही मे माताजी ने धमा
की आवाज सुनी और फोन की वात वन्द हो गई।

शनिवार का प्रात काल था। छोटे बच्चे सहन मे खेल रहे थे
अधिकाश वडे वच्चे खरीदारी समिति के सदस्यो की हैसियत

खरीदारी के लिए बाजार गये हुए थे। छ-सात पड़ोसी अपनी-अपनी मोटरो पर हम सबको इकट्ठा करने के लिए निकल पड़े।

उन्होंने प्रत्येक से कहा, "तुम्हारी मा ने तुम्हे बुला भेजा है। कोई दुर्घटना हो गई है।"

जब हम घर पर पहुँचे तो पिताजी की मृत्यु का समाचार मिला। सडक के किनारे १५ या २० मोटरें खड़ी थी। जैक पगडडी के निकट छत पर बैठा था। आँसू पोछते-पोछते उसका मुँह मैला हो गया था।

सिसकते हुए वह बोला, "हमारे डैडी मर गये।"

पिताजी हमारे व्यक्तित्व के अश थे और उनकी मृत्यु से इन अश की भी मृत्यु हो गई।

पिताजी की मृत्यु के बाद माताजी मे विशेष परिवर्तन हुआ। उनकी आकृति बदल गई और उनका रहन-सहन भी। विवाह के पहले माताजी के सब निर्णय माता-पिता की ओर से होते थे। विवाह के पश्चात् ये निर्णय उनके पतिदेव की ओर से होने लगे। पिताजी ही का सुझाव था कि उनके एक दर्जन बच्चे हो और दोनो निपुणता के विशेषज्ञ बनें। यदि उनकी दिलचस्पी टोकरियाँ बुनने या मस्तिष्क-विज्ञान मे होती तो वह अपने पति का उसी प्रकार अनुसरण करती।

जब तक पिताजी जीवित रहे तब तक माताजी मोटर तेजी से चलाने मे डरती रही और हवाई जहाज मे भी। रात मे अकेले चलने मे भी वह घबराती थीं। जब बादल गरजें और बिजली कड़के तो काम बन्द करके वह किसी अँधेरी कोठरी मे घुस जायें। जब भोजन के समय कोई बात बिगड जाती तो वह रो पडती और भोजन-गृह मे हट जाती। सार्वजनिक सभाओ मे बोलना पडता तो डरते-डरते ही बोलती।

अकस्मात् वह भय से मुक्त हुई क्योकि उन्हें डरानेवाला अब कोई न रह गया था। अब कोई भी दुर्घटना उन्हे विचलित नही कर सकती थी, क्योकि सबसे भीषण दुर्घटना का उन्हे अनुभव हो चुका था। इस घटना के पश्चात् हममे से किसी ने भी उन्हें रोते नही देखा।

पिताजी की मृत्यु के दो दिन बाद जब मृतात्मा को
फूलों की सुगन्ध अभी घर मे बसी ही हुई थी कि माताजी ने
परिषद की बैठक बुलाई और हमसे कहा कि यदि हम स
करें तो वह हमारे पिताजी के काम को जारी रखें। वह बोर

"यदि मेरी वापसी तक तुम घर के प्रबन्ध का जिम्म
उसी जहाज से यात्रा पर चली जाऊँ जिससे तुम्हारे पिता
तजवीज थी। मैं उनकी ओर से लदन और प्राग मे भाष
मेरा विचार है कि यही तुम्हारे पिता की इच्छा थी, पर नि
करना है।"

अर्नेस्टीन और मर्था ऊपर के खड पर पहुँचकर माताजी
बाँधने लगी। एन भोजन बनाने रसोईघर मे चली गई।
बिल पुरानी मोटरो के दुकानदारो से अपनी मोटर का सौदा
लिए नगर की ओर चल पडे।

लिल ने लडको को पुकारकर कहा, "उनसे कहो कि बदले
ठेला ले आयें, यह मोटर तो पिताजी के अतिरिक्त किसी और
चलती नही।"

• ○ •

किसी ने एक बार पिताजी से पूछा, "आखिर आप समय क
किसलिए करना चाहते हैं? आप बचे समय का क्या करेंगे?"

पिताजी ने उत्तर दिया, "काम के लिए यदि तुम उसे सबसे
पसन्द करते हो, नही तो शिक्षा, सौन्दर्य की रसानुभूति, कल
आनन्द के लिए।" फिर अपने चश्मे के ऊपर से झाँकते हुए
मुद्रा में अपने जोड दिया, "मदिरा की प्याली पीकर नशे मे